स्वाध्याय माला

❖ स्वाध्याय माला

❖ संस्करण : सितम्बर, 2017, 3100 प्रतियाँ

(सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित)

❖ मूल्य : 50/-

❖ अर्थ-सहयोगी :
समता युवा संघ, बीकानेर

❖ प्रकाशक :
साधुमार्गी पब्लिकेशन

❖ पुस्तक प्राप्ति स्थल :
श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
श्री जैन पी.जी. कॉलेज के सामने, नोखा रोड़,
बीकानेर- 334401 (राज.)
दूरभाष : 0151-2270261, 3292177, 2270359 (Fax)
visit us : www.sadhumargi.com
e-mail : publications@sadhumargi.com

❖ आवरण सज्जा व मुद्रक :
तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर
दूरभाष : 9314962474/75

प्रस्तावना

स्वाध्याय एक उत्तम तप है। इससे आत्मा बहुत प्रभावित होती है। यह तप कषायों को मंद करके आत्मा में शांत और सुखद वातावरण तैयार करता है। ज्ञान के खजाने का सौंदर्य देखने के लिए स्वाध्याय आवश्यक है। स्वाध्यायी आत्म स्वरूप को समझ जाता है जिससे उसकी बुद्धि का विकास होता है और विनय-विवेक जागृत होता है। फलस्वरूप अनादिकाल से जीवन में रहे हुए काम, क्रोध, मोहादि विकार जड़ मूल से नष्ट हो जाते हैं और केवलज्ञान का महाप्रकाश प्रकट हो जाता है।

परम श्रद्धेय परमागम रहस्य ज्ञाता **आचार्य श्री 1008 श्री रामलालजी म.सा.** स्वाध्याय के फलस्वरूप चतुर्विध संघ के शिरोमणि बने हैं और चतुर्विध संघ को आत्म उन्नति हेतु स्वाध्याय करने की प्रेरणा देते रहते हैं। इस प्रेरणा से प्रेरित होकर संघ ने स्वाध्याय माला में निम्नोक्त आगमों एवं भक्तामरादि स्तोत्रों का संकलन किया है।

श्रीमद् सूयगडांग सूत्र के छठे अध्ययन में गणधर श्री सुधर्मा स्वामी द्वारा की गई भगवान महावीर की स्तुति है जो 'पुच्छिंसु णं' के नाम से प्रसिद्ध है। यद्यपि आत्म स्वरूप में स्थित भगवान महावीर के केवलज्ञानादि की संपूर्ण तुल्यता के दृष्टांत मिलना असंभव है किन्तु श्री सुधर्मा स्वामी ने संसार की सर्वश्रेष्ठ वस्तुओं की उपमा देकर भगवान महावीर जैसे पर्वतों में मेरु पर्वत, रसों में इक्षु रस, वनों में नंदन वन, दानों में अभयदान आदि संसार की श्रेष्ठ वस्तुओं से भी भगवान महावीर का ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और आत्म आनंद अनंत गुणा श्रेष्ठ है।

'पुच्छिंसु णं' का स्वाध्याय करके भव्य प्राणी आनंदित होते हैं और अनंत कर्मों की निर्जरा करते हैं।

श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र जैनागमों के सर्वाधिक पढ़े जाने वाले आगमों में से एक है। आवश्यक सूत्र के पश्चात् इसी सूत्र की वाचना दी जाती है। इसमें सम्पूर्ण साध्वाचार संक्षेपत: समाहित है। इसको कण्ठस्थ करने की परम्परा भी व्यापक रूप से विद्यमान है। विविध स्थानों से इसका प्रकाशन हुआ है। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ से भी इसका प्रकाशन पूर्व में अनेक बार हुआ है। प्रस्तुत संस्करण पूर्व के सभी संस्करणों से भिन्न होने के कारण अपने आप में विशिष्ट है। इसकी विशिष्टता का कारण इस संस्करण के पूर्व हुई गहन आगमिक शोध है। आगमों के निगूढ ज्ञाता, परम आराध्य आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के सानिध्य में हुई इस शोध से इस सूत्र के मूलपाठ के विषय में अनेक प्रामाणिक एवं शुद्ध मूल-पाठों का निर्णय हुआ। प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों, टीकाओं, चूर्णिओं एवं अन्य अनेकानेक ग्रन्थों के आधार से अनेक आगमिक शुद्ध पाठों का सम्यग् निर्णय हुआ। मूलपाठ की शुद्धता के संदर्भ में हुए उन उत्तम निर्णयों का ज्ञान प्राप्त कर हमारा मन आनन्द विभोर हो गया। तदनुसार श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के अब तक के प्रकाशित संस्करणों से कहीं अधिक शुद्धतर संस्करण को पाठकों के करकमलों में सौंपते हुए हम हर्षानुभूति कर रहे हैं। पाठ निर्णयों सम्बन्धी विस्तृत विवेचन काफी तकनीकी एवं अति विस्तृत होने से यहाँ नहीं दिया गया है। तद्विषयक विशेष जिज्ञासु पाठक 'श्री दशवैकालिक सुत्तं' का विद्वत्संस्करण देखें। आगमों में रूचिशील श्रावकवर्ग श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के इस स्वाध्याय संस्करण का स्वाध्याय करके महान कर्म निर्जरा के कार्य में प्रवृत्त होंगे।

उववाई सूत्र की सिद्ध स्तवना में सिद्धों की अवगाहना, क्षेत्र, आनंद घन आदि सिद्ध आत्मा का स्वरूप साधक को भाव विभोर कर देता है। सिद्धों की महान सुख राशि संपूर्ण आकाश में समा नहीं सकती है। इस सुख राशि को गणित मार्ग से अद्‌भुत तरीके से बताया गया है।

सुख विपाक में सुबाहुकुमारादि दस महान् आत्माओं का वर्णन है जिन्होंने सुपात्रदान देकर राजसी ऐश्वर्यादि की ही प्राप्ति नहीं की बल्कि संसार भी परिमित कर लिया और आध्यात्मिक उन्नति के लिए भगवान महावीर से दीक्षा लेकर छह काया के रक्षक बन गये।

श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र में भगवान महावीर की अंतिम अनमोल वाणी है। इसमें धर्म कथाएँ हैं, उपदेश है, तत्त्व चर्चाएँ हैं एवं त्याग वैराग्य की धाराएँ है। इस आगम का सम्यक् प्रकार से अध्ययन करके हृदयंगम करने वाला सम्यक्दृष्टि साधक शीघ्र ही भव सागर को पार कर लेता है।

नंदी सूत्र में मोक्ष के प्रथम अंग ज्ञान का विस्तार से वर्णन है। ज्ञान रूप नंदी अर्थात् आनंद को देने वाले इस सूत्र का स्वाध्याय कई साधु-साध्वी और श्रावक-श्राविकाएँ प्रतिदिन करते हैं।

अणुत्तरोववाइयदसा सूत्र में आत्म साधना की दृढ़ प्रतिज्ञा का पालन करने वाले तप लक्ष्मी से शोभित धन्ना अणगार की महादुष्कर साधना और उनके तपरूप लावण्य का शब्द चित्र है। अनुत्तर विमान में ही उत्पन्न होने वाले उत्तमोत्तम साधना के धारक अभयकुमार आदि 32 पवित्रात्माओं का भी वर्णन पढ़कर स्वाध्यायी अहोभाव से भर कर धन्य-धन्य कह उठते हैं।

तत्त्वार्थ सूत्र नामक ग्रंथ में जैन दर्शन के मूल नौ तत्वों का परिचय सरल शैली में दिया गया है।

भक्तामर स्तोत्र में भक्ति रस का क्षीर सागर लहरा रहा है। सच्चे हृदय से इस स्तोत्र द्वारा तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का गुणग्राम करने वाले भक्त के चरणों में आध्यात्मिक वैभव अपने आप उपस्थित होता है।

कल्याण मंदिर स्तोत्र में श्री पार्श्वनाथ भगवान की स्तुति है। विशुद्ध हृदय से लय बद्ध राग से की गई तीर्थंकर भगवान की इस स्तुति से आत्मा में जो गुण पैदा होते हैं, वे चिरकाल तक आत्मा को शांति पहुँचाते हैं।

रत्नाकर पंचविंशति में आचार्य श्री रत्नाकर तीर्थंकर भगवान के समक्ष अपने हाल को प्रकट करते हुए कहते है कि मेरी आयु घट रही है किन्तु पापमति नहीं घट रही है। मैं क्रोध, मान, माया, लोभ से ग्रस्त हूँ इत्यादि। किन्तु अब मुझे कुछ नहीं चाहिए, सिर्फ बोधिरत्न। इस स्तोत्र का बार-बार स्वाध्याय करने से हममें भी दोष प्रकट करने की क्षमता उत्पन्न होगी और लघुता गुण का विकास होगा।

चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र अमितगति द्वात्रिंशितिका, उपसर्गहर स्तोत्र और वैराग्यकुलकम को पढने-बोलने और चिंतन करने पर राग-द्वेष रूपी रोग दूर होते हैं।

लघु साधु वंदना और बड़ी साधु वंदना का नियमित पाठ आध्यात्मिक विचारों को पल्लवित करता है। इसमें वर्णित महापुरुषों का जीवन चरित्र चलचित्र की भाँति आँखों के सामने चलता रहे तो मनोमस्तिष्क पावन हो जाता है।

मेरी भावना का प्रतिदिन स्वाध्याय करके, उन्हीं भावों से भावित रहने वाले का जीवन कमल के समान निर्लिप्त रहता है।

संघ समर्पणा गीत के माध्यम से संघ पर न्यौछावर होने के भावों की जो प्रेरणा मिलती है वह अद्वितीय है।

बृहदालोयणा भूल को स्वीकार करने की योग्यता उत्पन्न करती है। इस योग्यता की अभिवृद्धि होती है प्रत्याख्यान सूत्र से। प्रत्याख्यान से जीवन गौरवान्वित होता है। व्रत-प्रत्याख्यान के बिना जीवन कागज की नाव के समान होता है जो पार तक नहीं पहुँचाती है।

स्वाध्याय माला में साधकों की साधना के लिए पर्याप्त सामग्री है। शास्त्रों और स्तोत्रों का भी भावपूर्वक अध्ययन करने से आत्मा शांत रस में लीन होकर भक्ति की गहराई में डूबती है जिससे आध्यात्मिक शक्तियों का संचार होता है। इसलिए लाखों भक्त बड़ी श्रद्धा के साथ इनका नियमित पाठ करके सुख की अनुभूति करते हैं।

आशा है संघ का यह प्रकाशन ज्ञान वृद्धि व कर्म निर्जरा में सहयोगी होगा। इसी भावना के साथ.....

संयोजक
आगम एवं तत्त्व प्रकाशन समिति
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

संघ के प्रति अहोभाव

हे पितृ तुल्य संघ ! हे आश्रयदाता संघ !

संसार के प्रत्येक जीव की रक्षा हेतु सतत् प्रयत्नरत संघ ! तुम्हारी शीतल छाँव तले हम तप-त्याग से युक्त आध्यात्मिक, सुखद जीवन जी रहे हैं। तुम्हारे ही आश्रय में रहकर हमनें अपने नन्हें चरणों को आध्यात्मिकता की दिशा में आगे बढ़ाया है। तुमने ही हमें आत्मा के अन्वेषण हेतु प्रेरित किया। तुम्हारी ही प्रेरणा से प्रेरित होकर हमने अपने जीवन को सन्मार्ग की ओर आगे बढ़ाया है, इस हेतु हम संघ का अभिवादन करते हैं।

*संघ ने हमें इस साहित्य **'स्वाध्याय माला''** के माध्यम से संघ सेवा का अनुपम अवसर प्रदान किया। इस हेतु हम अपने आप को सौभाग्यशाली समझते हैं। हम अन्तर्भावना से संघ का आभार व्यक्त करते हुए यह विश्वास करते हैं कि भविष्य में भी परम उपकारी संघ, शासन हमें सेवा का अवसर प्रदान करता रहेगा।*

।।सेवा है यज्ञकुण्ड समिधा सम हम जलें।।

निवेदक

समता युवा संघ, बीकानेर

विषयानुक्रमणिका

क्रं.सं.	विषय	पेज नं.
1.	अस्वाध्यायिक	11
2.	पुच्छिंसु णं	17
3.	उववाई-सूत्र की बाईस गाथाएँ	19
4.	श्री सुखविपाक-सूत्र	21
5.	उच्चारण सम्बन्धी निर्देश	33
6.	दशवैकालिक सूत्र	35
7.	श्री उत्तराध्ययन सूत्र	99
8.	श्री नन्दि-सूत्रम्	273
9.	अणुत्तरोववाइयदसाओ	319
10.	मोक्ष-मार्ग	335
11.	वैराग्यकुलकम्	339
12.	तत्त्वार्थ-सूत्रम्	342
13.	भक्तामरस्तोत्रम्	357
14.	श्री कल्याणमन्दिर-स्तोत्रम्	367
15.	रत्नाकर-पञ्चविंशति:	375
16.	श्री चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तोत्रम्	378

17.	श्रीअमितगतिसूरिविरचिता भावनाद्वात्रिंशतिका	380
18.	उपसर्गहर-स्तोत्रम्	383
19.	लघु-साधु वन्दना	384
20.	बड़ी-साधु वन्दना	385
21.	बृहदालोयणा	396
22.	मेरी-भावना	419
23.	संघ-समर्पणा	421
24.	प्रत्याख्यान-सूत्र	423
25.	सूत्र पढ़ने की तालिका	426

अस्वाध्यायिक

निम्नलिखित बत्तीस अस्वाध्यायिक के कारणों को टालकर स्वाध्याय करना चाहिए।

अंतरिक्ष संबंधी 10 अस्वाध्यायिक

क्र.	नाम	अंतरिक्ष संबंधी 10 अस्वाध्याय	काल मर्यादा
1.	उल्कापात	रेखायुक्त (पीछे पूँछ के समान) या प्रकाश युक्त तारे का गिरना	एक प्रहर तक
2.	दिग्दाह	किसी दिशा में महानगर जलने के समान ऊपर प्रकाश नीचे अधंकार दिखाई देना	एक प्रहर तक
3.	गर्जित	मेघ गर्जना होना	दो प्रहर तक
4.	विद्युत	बिजली चमकना	एक प्रहर तक

नोटः- सूर्य के साथ आर्द्रा नक्षत्र के योग से लेकर स्वाति नक्षत्र के योग होने तक मेघ गर्जना और बिजली चमकना संबंधी अस्वाध्यायिक नहीं माना जाता। आर्द्रा नक्षत्र से स्वाति नक्षत्र का काल तारीख के हिसाब से 21 जून से 25 अक्टूबर के लगभग होता है।

5.	निर्घात	बादल के होने पर या न होने पर व्यन्तर कृत महागर्जना के समान ध्वनि का होना। वर्तमान में बिजली कड़कना/गिरना इसके अन्तर्गत माना जाता है।	आठ प्रहर तक

6. यूपक	शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया व तृतीया को रात्रि की प्रथम पौरुषी पर्यन्त। ये पक्खी के बाद की तीन रात्रियाँ समझना, चाहे पक्खी चतुर्दशी की हो या अमावस्या की।	प्रहर रात्रि तक
7. यक्षादीप्त	आकाश में एक दिशा में बीच-बीच में (एक-एक कर) व्यन्तर (देवता) कृत विद्युत् के समान प्रकाश होना	एक प्रहर तक
8. धूमिका	काली धूँवर (अंधकार युक्त, धुँए के समान) का आना	जब तक रहे
9. महिका	श्वेत धूँवर का आना	जब तक रहे
10. रज उद्घात	चारों दिशाएँ धूल से भर जाने पर सब ओर अंधकार जैसा दिखाई दे (त्रचाहे वायु हो या न हो)	जब तक रहे

(दग्दाह एवं यक्षादीप्त वर्तमान में कम दृष्टिगोचर होते हैं)

औदारिक संबंधी अस्वाध्यायिक

11-13.हड्डी,
रक्त, माँस

''तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय संबंधी अस्वाध्यायिक''

✻	रक्त सहित चर्म, रुधिर, माँस, अस्थि, अण्डा, अण्डे का कलल या पशु-पक्षी	तीन प्रहर तक

	का शव आदि साठ हाथ के भीतर पड़े हो तो उपर्युक्त सभी जब से जीव रहित हुए तब से (चर्म, रूधिर, माँस आदि के रहने पर भी तीन प्रहर के बाद अस्वाध्यायिक नहीं रहता)	
✻	किसी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय (बड़ी कायवाले) की जहाँ घात (तिर्यञ्च या मनुष्य के द्वारा) हुई हो तो वहाँ चारों ओर साठ हाथ तक (कम से कम 3 प्रहर टालना आवश्यक है, चाहे सूर्योदय हो भी गया हो)	अगला सूर्योदय न होवे तब तक
✻	पका हुआ मांस अस्वाध्यायिक नहीं है।	
✻	साठ हाथ के भीतर जर वाले पशुओं की प्रसूति हो जर गिरने के बाद	जर गिरे तब तक तीन प्रहर तक
✻	साठ हाथ के भीतर बिना जर वाले पशुओं की प्रसूति के बाद	तीन प्रहर तक

''गर्भज मनुष्य संबंधी अस्वाध्यायिक''

✻	सौ हाथ के भीतर रक्त सहित चर्म, खून, माँस यदि पड़े हो तो ये पदार्थ जब से जीव रहित हुए, तब से (उसके बाद नहीं, चाहे वह पदार्थ वहाँ पड़ा हो या न हो)	आठ प्रहर तक
✻	जिस गली/गृहपंक्ति में से शव जब तक नहीं निकाला जाए तब तक उस गली/गृहपंक्ति में अस्वाध्यायिक रहता है।	

✲	मनुष्य की हड्डी सौ हाथ के भीतर होता जब से जीव रहित हुई तब से (12 वर्ष के बाद अस्वाध्यायिक नहीं। 12 वर्ष के पहले ही यदि अस्थि जली हुई हो या वर्षा आने से धुल गई हो तो जलने व धुलने के बाद अस्वाध्यायिक नहीं रहता)		बारह वर्ष तक
✲	खून यदि विवर्ण हो गया हो यानि उसकी पर्याय/रंग बदल गया हो तो अस्वाध्यायिक नहीं होता		
✲	बालक-बालिका के जन्म के क्रमशः सात और आठ दिन तक 100 हाथ के भीतर अस्वाध्यायिक माना जाता है।		
14.	अशुचिसामन्त	मल, मूत्र, कलेवर आदि अशुभ पदार्थ	दिखाई दे या उनकी दुर्गन्ध आये
15.	श्मशानसामन्त	श्मशान भूमि के चारों ओर	100-100 हाथ तक
16.	चन्द्रग्रहण	चन्द्रग्रहण जिस क्षेत्र में दिखे वहाँ	जघन्य 8 प्रहर और उत्कृष्ट 12 प्रहर तक
17.	सूर्यग्रहण	सूर्यग्रहण जिस क्षेत्र में दिखे वहाँ	जघन्य 12 प्रहर और उत्कृष्ट 16 प्रहर तक

चंद्रग्रहण, सूर्यग्रहण जिस क्षेत्र में दिखे वहाँ अस्वाध्यायिक समझना।

18.	पतन	प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, राज्यपाल, मुख्यमंत्री के कालगत हो जाने पर जिस क्षेत्र में वातावरण विक्षोभ हो तो	जब तक विक्षोभ रहे
19.	राजव्युद्गह	युद्ध भूमि के आसपास	जब तक युद्धजनित क्षोभ रहे
20.	उपाश्रय में औदारिक शरीर	उपाश्रय की सीमा में तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय या मनुष्य का शव पड़ा रहे	जब तक शव पड़ा रहे तब तक
21-28.	चार पूर्णिमा और इसके बाद की प्रतिपदा	आषाढ़, आश्विन, कार्तिक व चैत्र इन चारों पूर्णिमाओं को तथा इन पूर्णिमा के बाद की प्रतिपदाओं को	दिन-रात

* जिस दिन पंचांग (कैलेण्डर) में पूनम व प्रतिपदा बताई हो उस दिन अस्वाध्यायिक मानना।
* यदि दो पूनम हो तो दोनों पूर्णिमा को अस्वाध्यायिक मानना, प्रतिपदा को नहीं।
* यदि दो प्रतिपदा हो तो प्रथम प्रतिपदा और पूर्णिमा को अस्वाध्यायिक मानना।

✻ यदि पूर्णिमा क्षय हो तो चतुर्दशी और प्रतिपदा को अस्वाध्यायिक मानना।

✻ यदि प्रतिपदा क्षय हुई हो तो चतुर्दशी व पूर्णिमा को अस्वाध्यायिक मानना।

29-32. संधि समय	सूर्योदय एवं सूर्यास्त, मध्याह्न व अर्धरात्रि इन चार सन्ध्याओं में	एक-एक मुहूर्त्त

(सूर्योदय एवं सूर्यास्त के पूर्व व पश्चात् आधा-आधा मुहूर्त्त और दिन व रात्रि के मध्य भाग के पूर्व व पश्चात् आधा-आधा मुहूर्त्त तक अस्वाध्यायिक माना जाता है।)

कालिक सूत्र-11 अंग, 4 छेद तथा मूल सूत्र में एक उत्तराध्ययन सूत्र। उपांग सूत्र में जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, चंद्रप्रज्ञप्ति, निरयावलिया पंचक (निरयावलिया, कप्पवडंसिया, पुप्फिया, पुप्फचूलिया, वण्हिदसा)। शेष सभी उत्कालिक सूत्र हैं। किन्तु 32वाँ आवश्यक सूत्र नोकालिक-नोउत्कालिक सूत्र है।

कालिक सूत्र का स्वाध्याय दिन एवं रात्रि के प्रथम एवं अंतिम प्रहर में एवं उत्कालिक सूत्र का स्वाध्याय किसी भी समय अस्वाध्यायिक के कारणों को टालकर करना चाहिए। उत्काल में कालिक सूत्र की वाचना 9 गाथा से अधिक नहीं दी जा सकती। स्वाध्याय का वाचन करने के पश्चात् 'आगमे तिविहे' का पाठ बोलें। एक प्रहर लगभग 3 घंटे का होता है।

✻ ✻ ✻

पुच्छिंसु णं

पुच्छिंसु णं समणा माहणा य, अगारिणो या पर-तित्थिया य।
से के इणेगंतहिय धम्ममाहु, अणेलिसं साहु समिक्खयाए।।1।।
कहं च णाणं कह दंसणं से, सीलं कहं णायसुयस्स आसी।
जाणासि णं भिक्खु जहातहेणं, अहासुयं बूहि जहा णिसंतं।।2।।
खेयण्णए से कुसले महेसी, अणंतणाणी य अणंतदंसी।
जसंसिणो चक्खुपहे ठियस्स, जाणाहि धम्मं च धिइं च पेहि।।3।।
उड्ढं अहे य तिरियं दिसासु, तसा य जे थावर जे य पाणा।
से णिच्चणिच्चेहि समिक्ख-पण्णे, दीवे व धम्मं समियं उदाहु।।4।।
से सव्वदंसी अभिभूयणाणी, णिरामगंधे धिइमं ठियप्पा।
अणुत्तरे सव्वजगंसि विज्जं, गंथा अतीते अभए अणाऊ।।5।।
से भूइपण्णे अणिएअचारी, ओहंतरे धीरे अणंतचक्खू।
अणुत्तरं तप्पइ सूरिए वा, वइरोयणिंदे व तमं पगासे।।6।।
अणुत्तरं धम्ममिणं जिणाणं, णेया मुणी कासव आसुपण्णे।
इंदे व देवाण महाणुभावे, सहस्सणेया दिवि णं विसिट्ठे।।7।।
से पण्णया अक्खयसागरे वा, महोदही वा वि अणंतपारे।
अणाइले वा अकसाइ मुक्के, सक्के व देवाहिवई जुइमं ।।8।।
से वीरिएणं पडिपुण्णवीरिए, सुदंसणे वा णगसव्वसेट्ठे।
सुरालए वासि-मुदागरे से, विरायए णेगगुणोववेए ।।9।।
सयं सहस्साण उ जोयणाणं, तिकंडगे पंडगवेजयंते।
से जोयणे णव-णवइ सहस्से, उद्धुस्सितो हेट्ठ सहस्समेगं।।10
पुट्ठे णभे चिट्ठइ भूमि-वट्ठिए, जं सूरिया अणुपरि-वट्टयंति।
से हेमवण्णे बहुणंदणे य, जंसि रइं वेदयंति महिंदा।।11।।
से पव्वए सद्दमहप्पगासे, विरायइ कंचणमट्ठवण्णे।
अणुत्तरे गिरिसु य पव्वदुग्गे, गिरिवरे से जलिए व भोमे।।12।।
महीइ मज्झंमि ठिए णगिंदे, पण्णायते सूरिए सुद्ध लेसे।
एवं सिरीए उ स भूरि-वण्णे, मणोरमे जोयइ अच्चिमाली।।13।।
सुदंसणस्सेव जसो गिरिस्स, पवुच्चइ महतो पव्वयस्स।
एतोवमे समणे णायपुत्ते, जाइ-जसो-दंसण-णाण-सीले।।14।।

गिरिवरे वा णिसहाययाणं, रुयए व सेट्ठे वलयायताणं।
तओवमे से जगभूइपण्णे, मुणीण मज्झे तमुदाहु पण्णे।।15।।
अणुत्तरं धम्म-मुईरइत्ता, अणुत्तरं झाणवरं झियाइं।
सुसुक्कसुक्कं अपगंडसुक्कं, संढिंदुएगंतवदातसुक्कं।।16।।
अणुत्तरग्गं परमं महेसी, असेसकम्मं स विसोहइत्ता।
सिद्धिं गइं साइ-मणंत पत्ते, णाणेण सीलेण य दंसणेण।।17।।
रुक्खेसु णाए जह सामली वा, जंसि रइं वेदयंति सुवण्णा।
वणेसु वा णंदण-माहु सेट्ठं, णाणेण सीलेण य भूइपण्णे।।18।।
थणियं व सद्दाण अणुत्तरे उ, चंदो व ताराण महाणुभावे।
गंधेसु वा चंदण-माहु सेट्ठं, एवं मुणीणं अपडिण्ण-माहु।।19।।
जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे, णागेसु वा धरणिंद-माहु सेट्ठे।
खोओदए वा रसवेजयंते, तवोवहाणे मुणिवेजयंते ।।20।।
हत्थीसु एरावण-माहु णाए, सीहो मियाणं सलिलाण गंगा।
पक्खीसु वा गरुले वेणुदेवे, णिव्वाणवादीणिह णायपुत्ते।।21।।
जोहेसु णाए जह वीससेणे, पुप्फेसु वा जह अरविंदमाहु।
खत्तीण सेट्ठे जह दंत-वक्के, इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे।।22।।
दाणाण सेट्ठं अभय-प्पयाणं, सच्चेसु वा अणवज्जं वयंति।
तवेसु वा उत्तमं बंभचेरं, लोगुत्तमे समणे णायपुत्ते ।।23।।
ठिईण सेट्ठा लवसत्तमा वा, सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा।
णिव्वाणसेट्ठा जह सव्वधम्मा, ण णायपुत्ता परमत्थि णाणी।।24।।
पुढोवमे धुणइ विगयगेही, ण सण्णिहिं कुव्वइ आसुपण्णे।
तरिउं समुद्दं च महाभवोघं, अभयंकरे वीर अणंतचक्खू।।25।।
कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थं अज्झत्थदोसा।
एयाणि वंता अरहा महेसी, ण कुव्वइ पावं ण कारवेइ।।26।।
किरियाकिरियं वेणइयाणुवायं, अण्णाणियाणं पडियच्च ठाणं।
से सव्ववायं इइ वेयइत्ता, उवट्ठिए संजम दीहरायं।।27।।
से वारिया इत्थि सराइभत्तं, उवहाणवं दुक्खखयट्ठयाए।
लोगं विदित्ता आरं परं च, सव्वं पभू वारिय सव्ववारं।।28।।
सोच्चा य धम्मं अरहंतभासियं, समाहियं अट्ठपदोवसुद्धं।
तं सद्दहाणा य जणा अणाऊ, इंदा व देवाहिव आगमिस्संति।।29।।

उववाई-सूत्र की बाईस गाथाएँ

कहिं पडिहया सिद्धा? कहिं सिद्धा पइट्ठिया?।
कहिं बोंदिं चइत्ता णं, कत्थ गंतूण सिज्झइ।।1।।

अलोगे पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्ठिया।
इहं बोंदिं चइत्ता णं, तत्थ गंतूण सिज्झइ।।2।।

जं संठाणं तु इहं, भवं चयंतस्स चरिमसमयम्मि।
आसी य पएसघणं, तं संठाणं तहिं तस्स।।3।।

दीहं वा हस्सं वा, जं चरिमभवे हवेज्ज संठाणं।
तत्तो तिभागहीणा, सिद्धाणोगाहणा भणिया।।4।।

तिण्णि सया तेत्तीसा, धणुत्तिभागो य होइ बोद्धव्वो।
एसा खलु सिद्धाणं, उक्कोसोगाहणा भणिया।।5।।

चत्तारि य रयणीओ, रयणितिभागूणिया य बोद्धव्वा।
एसा खलु सिद्धाणं, मज्झिम ओगाहणा भणिया।।6।।

एक्का य होइ रयणी, साहीया अंगुलाइँ अट्ठ भवे।
एसा खलु सिद्धाणं, जहण्ण ओगाहणा भणिया।।7।।

ओगाहणाएँ सिद्धा, भवत्तिभागेण होंति परिहीणा।
संठाण-मणित्थंथं, जरामरणविप्पमुक्काणं ।।8।।

जत्थ य एगो सिद्धो, तत्थ अणंता भवक्खयविमुक्का।
अण्णोण्णसमोगाढा, पुट्ठा सव्वे य लोगंते ।।9।।

फुसइ अणंते सिद्धे, सव्वपएसेहिँ णियमसो सिद्धो।
ते वि अंसखेज्जगुणा, देसपएसेहिँ जे पुट्ठा।।10।।

असरीरा जीवघणा, उवउत्ता दंसणे य णाणे य।
सागार-मणागारं, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं।।11।।

केवलणाणुवउत्ता, जाणंती सव्वभावगुणभावे।
पासंति सव्वओ खलु, केवलदिट्ठीहिऽणंताहिं।।12।।

णवि अत्थि माणुसाणं, तं सोक्खं ण वि य सव्वदेवाणं।
जं सिद्धाणं सोक्खं, अव्वाबाहं उवगयाणं ।।13।।

जं देवाणं सोक्खं, सव्वद्धापिंडियं अणंतगुणं।
ण य पावइ मुत्तिसुहं, णंताहिँ वि वग्गवग्गूहिं।।14।।

सिद्धस्स सुहो रासी, सव्वद्धापिंडिओ जइ हवेज्जा।
सोऽणंतवग्गभइओ, सव्वागासे ण माएज्जा।।15।।

जह णाम कोइ मिच्छो, णगरगुणे बहुविहे वियाणंतो।
ण चएइ परिकहेउं, उवमाएँ तहिं असंतीए।।16।।

इय सिद्धाणं सोक्खं, अणोवमं णत्थि तस्स ओवम्मं।
किंचि विसेसेणेत्तो, ओवम्ममिणं सुणह वोच्छं।।17।।

जह सव्वकामगुणियं, पुरिसो भोत्तूण भोयणं कोई।
तण्हाछुहाविमुक्को, अच्छेज्ज जहा अमियतित्तो।।18।।

इय सव्वकालतित्ता, अतुलं निव्वाण-मुवगया सिद्धा।
सासयमव्वाबाहं, चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ।।19।।

सिद्धत्ति य बुद्धत्ति य, पारगयत्ति य परंपरगयत्ति।
उम्मुक्ककम्मकवया, अजरा अमरा असंगा य।।20।।

णिच्छिण्ण-सव्व-दुक्खा, जाइ-जरा-मरण-बंधण-विमुक्का।
अव्वाबाहं सुक्खं, अणुहोंती सासयं सिद्धा।।21।।

अतुल-सुह-सागर-गया, अव्वाबाहं अणोवमं पत्ता।
सव्वमणागयमद्धं, चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता।।22।।

* * *

श्री सुखविपाक-सूत्र

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं णयरे होत्था। रिद्धित्थिमियसमिद्धे गुणसिलए-चेइए। सुहम्मे अणगारे समोसढे। जंबू जाव पज्जुवासइ एवं वयासी-जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं अयमट्ठे पण्णत्ते। सुहविवागाणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते?

तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी-एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता। तं जहा-

सुबाहू भद्दणंदी य सुजाए, सुवासवे तहेव जिणदासे।
धणवई य महब्बले, भद्दणंदी महचंदे वरदत्ते।।

जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता। पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स सुहविवागाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी-

(1) एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिसीसे णामं णयरे होत्था, रिद्धित्थिमियसमिद्धे। तत्थ णं हत्थिसीसस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए एत्थ णं पुप्फकरंडए णामं उज्जाणे होत्था। सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे, रम्मे नंदणवणप्पगासे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे। तत्थ णं कयवण - मालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था, दिव्वे।

तत्थ णं हत्थिसीसे णयरे अदीणसत्तू णामं राया होत्था। महया हिमवंते, रायवण्णओ। तस्स णं अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीपामोक्खं देवीसहस्सं ओरोहे यावि होत्था।

तए णं सा धारिणी देवी अण्णया कयाइं तंसि तारिसगंसि वासभवणंसि सीहं सुमिणे, जहा मेह-जम्मणं तहा भाणियव्वं। णवरं सुबाहुकुमारे जाव अलं भोगसमत्थे यावि जाणंति, जाणित्ता अम्मापियरो पंच पासाय-वडिंसग-सयाइं करेंति, अब्भुग्गय-मूसिय-पहसिय विव भवणं। एवं जहा महब्बलस्स रण्णो। णवरं पुप्फचूला पामोक्खाणं पंचण्हं रायवर-कण्णा-सयाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हावेइ। तहेव पंचसयाइं दाओ जाव उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणमत्थेहिं जाव विहरइ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे। परिसा णिग्गया। अदीणसत्तू जहा कोणिए णिग्गए। सुबाहुकुमारे वि जहा जमाली तहा रहेणं णिग्गए। जाव धम्मो कहिओ। राया परिसा य पडिगया।

तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ-तुट्ठे, उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ वंदित्ता णमंसइ णमंसित्ता एवं वयासी-सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते! णिग्गंथं पावयणं, एवं रोएमि णं भंते! णिग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते! णिग्गंथं पावयणं, एवमेयं भंते! तहमेयं भंते! अवितहमेयं भंते! असंदिद्धमेयं भंते! पडिच्छियमेयं भंते! इच्छिय- पडिच्छियमेयं भंते! जं णं तुब्भे वदहत्ति कट्टु एवं वयासी- जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-सत्थवाहप्पभइओ मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया। णो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वयाइं सत्तसिक्खा-वयाइं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि। 'अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह।'

तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वयाइं, सत्तसिक्खा-वयाइं, दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता तमेव रहं दुरूहइ, दुरूहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे जाव एवं वयासी-अहो णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे, कंते कंतरूवे, पिए पियरूवे, मणुण्णे मणुण्णरूवे, मणामे मणामरूवे, सोमे सुभगे पियदंसणे

सुरूवे। बहुजणस्स वि य णं भंते! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठेरूवे ५ सोमे जाव सुरूवे। साहुजणस्स वि य णं भंते! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठेरूवे ५ जाव सुरूवे। सुबाहुणा भंते! कुमारेणं इमा एयारूवा उराला माणुस्सरिद्धि किण्णा लद्धा? किण्णा पत्ता? किण्णा अभिसमण्णागया? को वा एस आसी पुव्वभवे जाव किं णामए वा? किं गोत्तए वा? किं वा दच्चा? किं वा भोच्चा? किं वा समायरित्ता? कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आयरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा णिसम्म सुबाहुकुमारेणं इमेया रूवा उराला माणुस्सरिद्धी, लद्धा, पत्ता, अभिसमण्णागया?

एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे णामं णयरे होत्था, रिद्धित्थिमियसमिद्धे वण्णओ। तत्थ णं हत्थिणाउरे णयरे सुमुहे णामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे दित्ते जाव अपरिभूए। तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसे णामं थेरे, जाइसंपण्णे जाव पंचहिं समणसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिणाउरे णयरे जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हइ उग्गिण्हित्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी सुदत्ते णामं अणगारे उराले जाव तेउलेसे मासं मासेणं खममाणे विहरइ।

तए णं से सुदत्ते अणगारे मासखमण-पारणगंसि पढमाए

पोरिसीए सज्झायं करेइ, जहा गोयमसामी तहेव धम्मघोसे थेरे आपुच्छइ जाव अडमाणे सुमुहस्स गाहावइस्स गिहं अणुपविट्ठे। तए णं से सुमुहे गाहावई सुदत्तं अणगारं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे, आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता, पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करित्ता सुदत्तं-अणगारं सत्तट्ठ-पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयहत्थेणं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिलाभेस्सामि त्ति कट्टु तुट्ठे पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिए वि तुट्ठे।

तए णं तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं, पडिग्गाहगसुद्धेणं, तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं, सुदत्ते अणगारे पडिलाभिए समाणे संसारे परित्तीकए। मणुस्साउए णिबद्धे, गिहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा- वसुहारा वुट्ठा[1] दसद्धवण्णे कुसुमे णिवाइए[2] चेलुक्खेवे कए[3] आहयाओ देवदुंदुहीओ[4] अंतरा वि य णं आगासंसि अहो दाणं अहो दाणं घुट्ठे[5] य। तए णं हत्थिणाउरे णयरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एव-माइक्खइ एवं भासइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ ''धण्णे णं देवाणुप्पिया! सुमुहे गाहावई जाव तं धण्णे णं देवाणुप्पिया! सुमुहे गाहावई''।

तए णं से सुमुहे गाहावई बहूइं वाससयाइं आउयं पालेइ,

पालित्ता, कालमासे कालं किच्चा इहेव हत्थीसीसे णयरे अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णे। तए णं सा धारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा उहीरमाणी उहीरमाणी तहेव सीहं पासइ। सेसं तं चेव जाव उप्पिं पासाए विहरइ, तं एवं खलु गोयमा ! सुबाहुणा कुमारेणं इमा एयारूवा माणुस्स-रिद्धी लद्धा, पत्ता अभिसमण्णागया।

पभू णं भंते ! सुबाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए? हंता पभू। तए णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता, णमंसित्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तए णं से समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइं हत्थिसीसाओ णयराओ पुप्फकरंडयाओ उज्जाणाओ कयवण-मालप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवय-विहारं विहरइ। तए णं से सुबाहुकुमारे समणोवासए जाए अभिगय-जीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ।

तए णं से सुबाहुकुमारे अण्णया कयाइं चाउद्दसट्ठ- मुद्दिट्ठ- पुण्ण-मासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणं भूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता, दब्भ-संथारगं संथरेइ, संथरित्ता, दब्भ-संथारगं दुरूहइ, दुरूहित्ता, अट्ठमभत्तं पगिण्हइ, पगिण्हित्ता, पोसहसालाए पोसहिए अट्ठमभत्तिए पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ।

तए णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स पुव्वरत्ता-वरत्तकाले

धम्म-जागरियं जागरमाणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे–धण्णा णं ते गामागर-णगर जाव सण्णिवेसा, जत्थ णं समणे भगवं महावीरे विहरइ, धण्णा णं ते राईसर जाव सत्थवाहप्पभइओ जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयंति,धण्णा णं ते राईसर जाव सत्थवाहप्पभइओ जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं पडिसुणंति। तं जइ णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छेज्जा जाव विहरेज्जा। तए णं अहं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वएज्जा।

तए णं समणे भगवं महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं अज्झत्थियं जाव वियाणित्ता पुव्वाणुपव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे णयरे जेणेव पुप्फकरंडे उज्जाणे जेणेव कयवण- मालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। परिसा राया णिग्गया। तए णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स तं महया जहा पढमं तहा णिग्गओ। धम्मो कहिओ। परिसा राया पडिग्गया। तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे। जहा मेहो तहा अम्मापियरो आपुच्छइ। णिक्खमणाभिसेओ तहेव जाव अणगारे जाए इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी।

तए णं से सुबाहू अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं

अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठमतवोविहाणेहिं अप्पाणं भावित्ता बहूइं वासाइं सामण्ण-परियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाइं छेदित्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववण्णे।

से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिइ, लभिहित्ता, केवलं बोहिं बुज्झिहिइ, बुज्झिहित्ता, तहारूवाणं थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वइस्सइ। से णं तत्थ बहूइं वासाइं सामण्ण-परियागं पाउणिहिइ, पाउणिहित्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सणंकुमारे कप्पे देवत्ताए उववण्णे। से णं ताओ देवलोगाओ माणुस्सं जाव पव्वज्जा। बंभलोए। तओ माणुस्सं। महासुक्के। तओ माणुस्सं। आणए देवे। तओ माणुस्सं। तओ आरणे। तओ माणुस्सं। तओ सव्वट्ठ-सिद्धे।

से णं तओ अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे जाव अड्ढे जहा दढपइण्णे सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं करिहिइ। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।।त्ति बेमि।।

।। सुहविवागस्स पढमं अज्झयणं समत्तं ।।1।।

बीयं अज्झयणं-भद्दणंदी

(2) बिइयस्स उक्खेवो। एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं उसभपुरे णयरे। थूभकरंडगं उज्जाणं। धण्णो जक्खो। धणवहो राया। सरस्सई देवी। सुमिणदंसणं कहणं, जम्मं बालत्तणं कलाओ य जोव्वणं पाणिग्गहणं, दाओ पासाया य भोगा य।।

जहा सुबाहुस्स णवरं भद्दणंदी कुमारे। सिरीदेवी-पामोक्खाणं पंचसया। सामिस्स समोसरणं। सावगधम्मं पडिवज्जे, पुव्वभव पुच्छा। महाविदेहे वासे पुंडरीगिणी णगरीए, विजए कुमारे, जुगबाहू तित्थयरे पडिलाभिए। मणुस्साउए णिबद्धे इह उववण्णे। सेसं जहा सुबाहुस्स जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिणिव्वाहिइ, सव्वदुक्खाणमंतं करेहिइ। एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं बिइयस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।।त्ति बेमि।।

।। सुहविवागस्स बीयं अज्झयणं समत्तं ।।2।।

तइयं अज्झयणं-सुजाए

(3) तच्चस्स उक्खेवो। वीरपुरं णयरं। मणोरमे उज्जाणे। वीरकण्हे (जक्खे), मित्ते राया, सिरीदेवी, सुजाए कुमारे, बलसिरी-पामोक्खाणं पंचसया। सामी समोसरिए, पुव्वभव पुच्छा, उसुयारे णयरे, उसभदत्ते गाहावई, पुप्फदंते अणगारे पडिलाभिए, मणुस्साउए णिबद्धे, इह उववण्णे जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ।।त्ति बेमि।।

।। सुहविवागस्स तइयं अज्झयणं समत्तं ।।3।।

चउत्थं अज्झयणं-सुवासवे

(4) चउत्थस्स उक्खेवो। विजयपुरं णयरं, णंदणवणे उज्जाणे, असोगो जक्खो, वासवदत्ते राया, कण्हसिरीदेवी, सुवासवे कुमारे, भद्दा-पामोक्खाणं पंचसया, जाव पुव्वभवपुच्छा, कोसंबी णयरी, धणपालो राया, वेसमणभद्दे अणगारे पडिलाभिए, इह उववण्णे जाव सिद्धे।।त्ति बेमि।।

।। सुहविवागस्स चउत्थं अज्झयणं समत्तं ।।4।।

पंचम अज्झयणं-जिणदासे

(5) पंचमस्स उक्खेवो। सोगंधिया णयरी, णीलासोगे उज्जाणे, सुकालो जक्खो, अप्पडिहओ राया, सुकण्हादेवी, महचंदे कुमारे, तस्स अरहदत्ता भारिया, जिणदासो पुत्तो, तित्थयरागमणं, जिणदासो पुव्वभव- पुच्छा। मज्झमिया णयरी, मेहरहे राया, सुधम्मे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे।।त्ति बेमि।।

।। सुहविवागस्स पंचमं अज्झयणं समत्तं ।।5।।

छट्ठं अज्झयणं-धणवई

(6) छट्ठस्स उक्खेवो। कणगपुरं णयरं। सेयासोए उज्जाणे। वीरभद्दो जक्खो। पियचंदो राया। सुभद्दा देवी। वेसमणे कुमारे जुवराया। सिरीदेवी पामोक्खाणं पंचसया, तित्थयरागमणं, धणवई जुवरायपुत्ते जाव पुव्वभवपुच्छा मणिवइया णयरी, मित्ते राया, संभूइविजए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे।।त्ति बेमि।।

।। सुहविवागस्स छट्ठं अज्झयणं समत्तं ।।6।।

सत्तमं अज्झयणं-महब्बले

(7) सत्तमस्स उक्खेवो। महापुरं णयरं। रत्तासोगे उज्जाणे। रत्तपाओ जक्खो। बले राया। सुभद्दा देवी। महब्बले कुमारे, रत्तवई पामोक्खाणं पंचसया। तित्थयरागमणं जाव पुव्वभव पुच्छा। मणिपुरे णयरे। णागदत्ते गाहावई। इंददत्ते अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे।।त्ति बेमि।।

।। सुहविवागस्स सत्तमं अज्झयणं समत्तं ।।7।।

अट्ठमं अज्झयणं-भद्दणंदी

(8) अट्ठमस्स उक्खेवो। सुघोसे णयरे। देवरमणे उज्जाणे। वीरसेणो जक्खो। अज्जुणो राया। रत्तवई देवी। भद्दणंदी कुमारे। सिरीदेवी-पामोक्खाणं पंचसया जाव पुव्वभव पुच्छा। महाघोसे णयरे, धम्मघोसे गाहावई। धम्मसीहे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे।।त्ति बेमि।।

।। सुहविवागस्स अट्ठमं अज्झयणं समत्तं ।।8।।

णवमं अज्झयणं-महचंदे

(9) णवमस्स उक्खेवो। चंपा णयरी। पुण्णभद्दे उज्जाणे। पुण्णभद्दो जक्खो। दत्ते राया। रत्तवई देवी। महचंदे कुमारे जुवराया। सिरिकंता-पामोक्खाणं पंचसया जाव पुव्वभव पुच्छा। तिगिच्छा णयरी। जियसत्तु-राया। धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे।।त्ति बेमि।।

।। सुहविवागस्स णवमं अज्झयणं समत्तं ।।9।।

दसमं अज्झयणं-वरदत्ते

(10) दसमस्स उक्खेवो। एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं साइए णामं णयरे होत्था। उत्तरकुरू उज्जाणे, पासामिओ जक्खो। मित्तणंदी राया। सिरीकंता देवी। वरदत्ते कुमारे। वीरसेणा-पामोक्खाणं पंचदेवीसया। तित्थयरागमणं, सावगधम्मं, पुव्वभव पुच्छा। सयदुवारे णयरे। विमलवाहणे राया। धम्मरुई अणगारे पडिलाभिए, मणुस्साउए णिबद्धे, इहं उववण्णे, सेसं जहा सुबाहुस्स, चिंता जाव पवज्जा, कप्पंतरिए जाव सव्वट्ठसिद्धे। तओ महाविदेहे जहा दढपइण्णे जाव सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिणिव्वाहिइ सव्व दुक्खाण-मंतं करेहिइ। एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।। त्ति बेमि।। सेवं भंते ! सेवं भंते!

।। सुहविवागस्स दसमं अज्झयणं समत्तं ।।10।।

णमो सुयदेवाए। विवाग-सुयस्स दो सुयक्खंधा-दुह विवागो य सुहविवागो य। तत्थ दुहविवागे दस अज्झयणा एक्क-सरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति एवं सुह-विवागे वि। सेसं जहा आयारस्स।

।। इति सुखविपाकसूत्रम् सम्पूर्णम्।।

दशवैकालिक के उच्चारण सम्बन्धी निर्देश

1. जहाँ 'ऽ' या 'ऽऽ' अवग्रह चिह्न है, वहाँ अवग्रह चिह्न सम्बन्धी कोई उच्चारण नहीं होता है। अवग्रह चिह्न मात्रा सन्धि बताने के लिए है। अतः 'ऽ' या 'ऽऽ' के स्थान पर अ अथवा आ का उच्चारण नहीं होगा। यथा- नामऽज्झयणं (अध्य.-4, गाथा-1) यथा- नाऽऽलिहेज्जा (अध्य.-4 गाथा-30)।

2. इस मूलपाठ में कुछ स्थानों पर ए अथवा ओ को ऍ (चन्द्र सहित) अथवा ऑ (चन्द्र सहित) के रुप में अंकित किया गया है। इसका कारण आगे स्पष्ट किया जा रहा है। संस्कृत भाषा में स्वरों का उच्चारण तीन प्रकार से माना गया है यथा- स्व, दीर्घ एवं प्लुत। स्व स्वर के उच्चारण में अल्प समय लगता है, दीर्घ में उससे अधिक एवं प्लुत में उससे भी अधिक। इसे मुर्गे की बांग के उदाहरण से समझाया गया है यथा- मुर्गे की बांग को कुकूकूऽ माना जाय तो प्रथम कु के उच्चारण में अल्प समय लगता है उतना समय स्व स्वर के उच्चारण का है। द्वितीय कू के उच्चारण में अधिक समय लगता है उतना समय दीर्घ स्वर के उच्चारण में तथा तृतीय कूऽ के उच्चारण में और अधिक समय लगता है उतना समय प्लुत स्वर के उच्चारण में लगता है। संस्कृत में ए तथा ओ को स्व स्वर के रुप में उच्चारण मान्य

नहीं है जबकि प्राकृत (या अर्धमागधी) में ए तथा ओ का कहीं दीर्घ स्वर के रुप में तो कहीं ह्स्व स्वर के रुप में भी माना है। यहाँ प्रस्तुत श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के पाठों में भी जहाँ छन्द की दृष्टि से ए तथा ओ का ह्स्व उच्चारण करना अपेक्षित है वहाँ ऍ अथवा ऑ अंकित हैं, उसका तात्पर्य यह समझना चाहिए कि उन स्थलों पर इन स्वरों का ह्स्व उच्चारण करना है, यथा- 'समाऍ पेहाऍ परिव्वयंतो' (अध्य.-2 गाथा-4), 'भुंजंतॉ भासंतो' (अध्य.-4 गाथा-43)।

3. इसी प्रकार जहाँ 'इँ' अथवा 'हिँ' (चन्द्र सहित अनुस्वार) अंकित है वहाँ इन वर्णो का हृस्व उच्चारण करना है। यथा:- 'पाण भूयाइँ हिंसई' (अध्य.-4 गाथा-36), 'ससरक्खेहिँ पाएहिं' (अध्य.-5 उद्दे.-1 गाथा-7) इत्यादि।

4. पूर्व प्रचलित पाठों से यहाँ प्रदत्त पाठों की यथास्थान भिन्नता को देखकर पाठक व्यामोहित न होवें एवं इस शुद्ध पाठ को ही कण्ठस्थ करें व इसी का स्वाध्याय करें।

* * *

दसवेयालियसुत्तं
(दशवैकालिक सूत्र)

पढमं दुमपुप्फियऽज्झयणं

धम्मो मंगलमुक्कट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो।।1।।

जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियई रसं।
न य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं।।2।।

एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो।
विहंगमा व पुप्फेसु, दाणभत्तेसणे रया।।3।।

वयं च वित्तिं लब्भामो, न य कोइ उवहम्मई।
अहागडेसु रीयंते, पुप्फेसु भमरा जहा।।4।।

महुकारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया।
नाणापिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो।।5।।

त्ति बेमि।

।। पढमं दुमपुप्फियऽज्झयणं समत्तं।।1।।

बिइयं सामण्णपुव्वगऽज्झयणं

कहं नु कुज्जा सामण्णं, जो कामे न निवारए।
पए पए विसीयंतो, संकप्पस्स वसं गओ ?।।1।।
वत्थ-गंधमलंकारं, इत्थीओ सयणाणि य।
अच्छंदा जे न भुंजंति, न से चाइ त्ति वुच्चइ।।2।।
जे य कंते पिए भोए, लद्धे विप्पिट्ठि कुव्वई।
साहीणे चयई भोए, से हु चाइ त्ति वुच्चई।।3।।
समाएँ पेहाएँ परिव्वयंतो, सिया मणो नीसरई बहिद्धा।
न सा महं नो वि अहं पि तीसे, इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं।।4।।
आयावयाही चय सोगमल्लं, कामे कमाही कमियं खु दुक्खं।।
छिंदाहि दोसं विणएज्ज रागं, एवं सुही होहिसि संपराए।।5।।
पक्खंदे जलियं जोइं, धूमकेउं दुरासयं।
नेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे।।6।।
धिरत्थु ते जसोकामी, जो तं जीवियकारणा।
वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे।।7।।
अहं च भोगरायस्स, तं च सि अंधगवण्हिणो।
मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर।।8।।
जइ तं काहिसि भावं, जा जा दच्छसि नारिओ।
वायाइद्धो व्व हढो, अट्ठियप्पा भविस्ससि।।9।।
तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाए सुभासियं।
अंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ।।10।।

एवं करेंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा।
विणियट्टंति भोगेसु, जहा से पुरिसोत्तिमो।।11।।
त्ति बेमि।

।। बिइयं सामण्णपुव्वगऽज्झयणं समत्तं।।2।।

तइयं खुड्डियायारकहऽज्झयणं

संजमे सुट्ठियप्पाणं, विप्पमुक्काण ताइणं।
तेसिमेयमणाइण्णं, निग्गंथाण महेसिणं।।1।।
उद्देसियं कीयगडं, नियागं अभिहडाणि य।
राइभत्ते सिणाणे य, गंध मल्ले य वीयणे।।2।।
सन्निही गिहिमत्ते य, रायपिंडे किमिच्छए।
संबाहण दंतपहोवणा य, संपुच्छण देहपलोयणा य।।3।।
अट्ठावए य नाली य, छत्तस्स य धारणट्ठाए।
तेगिच्छं पाहणा पाए, समारंभं च जोइणो।।4।।
सेज्जायरपिंडं च, आसंदी पलियंकए।
गिहंतरनिसेज्जा य, गायस्सुव्वट्टणाणि य।।5।।
गिहिणो वेयावडियं, जा य आजीववित्तिया।
तत्तानिव्वुडभोइत्तं, आउरस्सरणाणि य।।6।।
मूलए सिंगबेरे य, उच्छुखंडे अणिव्वुडे।
कंदे मूले य सच्चित्ते, फले बीए य आमए।। 7।।
सोवच्चले सिंधवे लोणे, रुमालोणे य आमए।
सामुद्दे पंसुखारे य, कालालोणे य आमए।।8।।

धूवणेत्ति वमणे य, वत्थीकम्म विरेयणे।
अंजणे दंतवणे य, गायाभंग विभूसणे।।9।।
सव्वमेयमणाइण्णं, निग्गंथाण महेसिणं।
संजमम्मि य जुत्ताणं, लहुभूयविहारिणं।।10।।
पंचासवपरिन्नाया, तिगुत्ता छसु संजया।
पंचनिग्गहणा धीरा, निग्गंथा उज्जुदंसिणो।।11।।
आयावयंति गिम्हेसु, हेमंतेसु अवंगुता।
वासासु पडिसंलीणा, संजया सुसमाहिया।।12।।
परीसहरिऊदंता, धुयमोहा जिइंदिया।
सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा ,पक्कमंति महेसिणो।।13।।
दुक्कराइं करेत्ता णं, दूसहाइं सहेत्तु य।
केइत्थ देवलोगेसु, केइ सिज्झंति नीरया।।14।।
खवेत्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य।
सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता, ताइणो परिनिव्वुड।।15।।

त्ति बेमि।

।। तइयं खुड्डियायारकहऽज्झयणं समत्तं।।3।।

चउत्थं छज्जीवणियऽज्झयणं

सुयं मे आउसं! तेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु छज्जीवणिया नामऽज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती।।1।।

कयरा खलु सा छज्जीवणिया नामऽज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती ?।।2।।

इमा खलु सा छज्जीवणिया नामऽज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती। तं जहा- पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया तसकाइया।।3।।

पुढवि चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढो सत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं।।4।।

आउ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढो सत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं।।5।।

तेउ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढो सत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं।।6।।

वाउ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढो सत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं।।7।।

वणस्सइ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढो सत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं, तं जहा-अग्गबीया, मूलबीया, पोरबीया, खंधबीया, बीयरुहा, सम्मुच्छिमा, तणलया वणस्सइकाइया, सबीया, चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढो सत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं।।8।।

से जे पुण इमे अणेगे बहवे तसा पाणा तं जहा- अंडया,

पोयया, जराउया, रसया, संसेइमा, सम्मुच्छिमा, उब्भिया, उववाइया, जेसिं केसिंचि पाणाणं अभिक्कंतं पडिक्कंतं संकुचियं पसारियं रुयं, भंतं, तसियं, पलाइयं, आगइ-गइविन्नाया, जे य कीड-पयंगा, जा य कुंथु-पिवीलिया, सव्वे बेइंदिया, सव्वे तेइंदिया, सव्वे चउरिंदिया, सव्वे पंचिंदिया, सव्वे तिरिक्खजोणिया, सव्वे नेरइया, सव्वे मणुया, सव्वे देवा, सव्वे पाणा परमाहम्मिया, एसो खलु छट्ठो जीवनिकाओ तसकाओ त्ति पवुच्चइ।।9।।

इच्चेएहिं छहिं जीवनिकाएहिं नेव सयं दंडं समारंभेज्जा, नेवऽन्नेहिं दंडं समारंभावेज्जा, दंडं समारंभंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि।।10।।

पुढविक्कातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहि पण्णत्ते।
अणभिगतपुण्ण-पावो ण सो उवट्ठावणाजोग्गो।।11।।

आउक्कातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहि पण्णत्ते।
अणभिगतपुण्ण-पावो ण सो उवट्ठावणाजोग्गो।।12।।

तेउक्कातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहि पण्णत्ते।
अणभिगतपुण्ण-पावो ण सो उवट्ठावणाजोग्गो।।13।।

वाउक्कातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहि पण्णत्ते।
अणभिगतपुण्ण-पावो ण सो उवट्ठावणाजोग्गो।।14।।

वणस्सतिकातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहि पण्णत्ते।
अणभिगतपुण्ण-पावो ण सो उवट्ठावणाजोग्गो।।15।।

तसकातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहि पण्णत्ते।
अणभिगतपुण्ण-पावो ण सो उवट्ठावणाजोग्गो।।16।।

पुढविक्कातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहि पण्णत्ते।
अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उवट्ठावणे जोग्गो।।17।।

आउक्कातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहि पण्णत्ते।
अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उवट्ठावणे जोग्गो।।18।।

तेउक्कातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहि पण्णत्ते।
अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उवट्ठावणे जोग्गो।।19।।

वाउक्कातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहि पण्णत्ते।
अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उवट्ठावणे जोग्गो।।20।।

वणस्सतिकातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहि पण्णत्ते।
अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उवट्ठावणे जोग्गो।।21।।

तसकातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहि पण्णत्ते।
अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उवट्ठावणे जोग्गो।।22।।

पढमे भंते! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं। सव्वं भंते! पाणाइवायं पच्चक्खामि, से सुहुमं वा, बायरं वा, तसं वा, थावरं वा, नेव सयं पाणे अइवाएज्जा, नेवऽन्नेहिं पाणे अइवायावेज्जा, पाणे अइवायंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि। पढमे भंते! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं।।23।।

अहावरे दोच्चे भंते! महव्वए मुसावायाओ वेरमणं। सव्वं भंते! मुसावायं पच्चक्खामि, से कोहा वा, लोहा वा, भया वा, हासा वा। नेव सयं मुसं वएज्जा, नेवऽन्नेहिं मुसं वायावेज्जा, मुसं वयंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि। दोच्चे भंते! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं।।24।।

अहावरे तच्चे भंते! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमणं। सव्वं भंते! अदिन्नादाणं पच्चक्खामि, से गामे वा, नगरे वा, रन्ने वा, अप्पं वा, बहुं वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा। नेव सयं अदिन्नं गेण्हेज्जा, नेवऽन्नेहिं अदिन्नं गेण्हावेज्जा, अदिन्नं गेण्हंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि। तच्चे भंते! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं।।25।।

अहावरे चउत्थे भंते! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं। सव्वं भंते! मेहुणं पच्चक्खामि, से दिव्वं वा, माणुस्सं वा, तिरिक्खजोणियं वा। नेव सयं मेहुणं सेवेज्जा, नेवऽन्नेहिं मेहुणं सेवावेज्जा, मेहुणं सेवंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं,

मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि। चउत्थे भंते! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं।।26।।

अहावरे पंचमे भंते! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं। सव्वं भंते! परिग्गहं पच्चक्खामि, से अप्पं वा, बहुं वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा। नेव सयं परिग्गहं परिगेण्हेज्जा, नेवऽन्नेहिं परिग्गहं परिगेण्हावेज्जा, परिग्गहं परिगेण्हंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि। पंचमे भंते! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं।।27।।

अहावरे छट्ठे भंते! वए राईभोयणाओ वेरमणं। सव्वं भंते! राईभोयणं पच्चक्खामि, से असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा। नेव सयं राइं भुंजेज्जा, नेवऽन्नेहिं राइं भुंजावेज्जा, राइं भुंजंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि। छट्ठे भंते! वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं।।28।।

इच्चेयाइं पंच महव्वयाइं राईभोयणवेरमणछट्ठाइं अत्तहियट्ठयाए उवसंपज्जित्ता णं विहरामि।।29।।

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, दिया वा, राओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, एगओ वा, परिसागओ वा, से पुढविं वा, भित्तिं वा, सिलं वा, लेलुं वा, ससरक्खं वा कायं, ससरक्खं वा वत्थं, हत्थेण वा, पाएण वा, अंगुलियाए वा, कट्ठेण वा, कलिंचेण वा, सलागाए वा, नाऽऽलिहेज्जा, न विलिहेज्जा, न घट्टेज्जा, न भिंदेज्जा, अन्नं नाऽऽलिहावेज्जा, न विलिहावेज्जा, न घट्टावेज्जा, न भिंदावेज्जा, अन्नं पि आलिहंतं वा, विलिहंतं वा, घट्टंतं वा, भिंदंतं वा, न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि।।30।।

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, दिया वा, राओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, एगओ वा, परिसागओ वा, से उदगं वा, ओसं वा, हिमं वा, महियं वा, करगं वा, हरतणुगं वा, सुद्धोदगं वा, उदओल्लं वा कायं, उदओल्लं वा वत्थं, ससणिद्धं वा कायं, ससणिद्धं वा वत्थं, नाऽऽमुसेज्जा, न संफुसेज्जा, न आवीलेज्जा, न पवीलेज्जा, न अक्खोडेज्जा, न पक्खोडेज्जा, न आयावेज्जा, न पयावेज्जा, अन्नं नाऽऽमुसावेज्जा, न संफुसावेज्जा, न आवीलावेज्जा, न पवीलावेज्जा, न अक्खोडावेज्जा, न पक्खोडावेज्जा, न आयावेज्जा, न पयावेज्जा, अन्नं पि आमुसंतं वा, संफुसंतं वा, आवीलंतं वा, पवीलंतं वा,

अक्खोडेंतं वा, पक्खोडेंतं वा, आयावेंतं वा, पयावेंतं वा, न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि।।31।।

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, दिया वा, राओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, एगओ वा, परिसागओ वा, से अगणिं वा, इंगालं वा, मुम्मुरं वा, अच्चिं वा, जालं वा, अलायं वा, सुद्धागणिं वा, उक्कं वा, न उंजेज्जा, न घट्टेज्जा, न उज्जालेज्जा, न निव्वावेज्जा, अन्नं न उंजावेज्जा, न घट्टावेज्जा, न उज्जालावेज्जा, न निव्वावेज्जा, अन्नं पि उंजंतं वा, घट्टंतं वा, उज्जालंतं वा, निव्वावंतं वा, न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि।।32।।

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, दिया वा, राओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, एगओ वा, परिसागओ वा, से सिएण वा, विहुवणेण वा, तालियंटेण वा, पत्तेण वा, साहाए वा, साहाभंगेण वा, पेहुणेण वा, पेहुणहत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकण्णेण वा, हत्थेण वा, मुहेण वा, अप्पणो वा कायं, बाहिरं वा वि पोग्गलं, न फुमेज्जा, न वीएज्जा, अन्नं न फुमावेज्जा, न वीयावेज्जा, अन्नं पि फुमंतं वा,

वीयंतं वा, न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि।।33।।

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, दिया वा, राओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, एगओ वा, परिसागओ वा, से बीएसु वा, बीयपइट्ठिएसु वा, रूढेसु वा, रूढपइट्ठिएसु वा, जाएसु वा, जायपइट्ठिएसु वा, हरिएसु वा, हरियपइट्ठिएसु वा, छिन्नेसु वा, छिन्नपइट्ठिएसु वा, सच्चित्तकोलपडिनिस्सिएसु वा, न गच्छेज्जा, न चिट्ठेज्जा, न निसीएज्जा, न तुयट्टेज्जा, अन्नं न गच्छावेज्जा, न चिट्ठावेज्जा, न निसीयावेज्जा, न तुयट्टावेज्जा, अन्नं पि गच्छंतं वा, चिट्ठंतं वा, निसीयंतं वा, तुयट्टंतं वा, न समणुजाणेज्जा। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि करेंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि।।34।।

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, दिया वा, राओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, एगओ वा, परिसागओ वा, से कीडं वा, पयंगं वा, कुंथुं वा, पिवीलियं वा, हत्थंसि वा, पायंसि वा, बाहुंसि वा, ऊरुंसि वा, उदरंसि वा, सीसंसि वा, वत्थंसि वा, पडिग्गहंसि वा, कंबलंसि वा, पायपुंछणंसि वा, रयहरणंसि वा, गोच्छगंसि वा, उंडुयंसि वा,

दंडगंसि वा, पीढगंसि वा, फलगंसि वा, सेज्जंसि वा, संथारगंसि वा, अन्नयरंसि वा, तहप्पगारे उवगरणजाए तओ संजयामेव पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय एगंते अवणेज्जा, नो णं संघायमावज्जेज्जा।।35।।

अजयं चरमाणो उ, पाण-भूयाइँ हिंसई।
बंधई पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं।।36।।

अजयं चिट्ठमाणो उ, पाण-भूयाइँ हिंसई।
बंधई पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं।।37।।

अजयं आसमाणो उ, पाण-भूयाइँ हिंसई।
बंधई पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं।।38।।

अजयं सुयमाणो उ, पाण-भूयाइँ हिंसई।
बंधई पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं।।39।।

अजयं भुंजमाणो उ, पाण-भूयाइँ हिंसई।
बंधई पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं।।40।।

अजयं भासमाणो उ, पाण-भूयाइँ हिंसई।
बंधई पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं।।41।।

कहं चरे? कहं चिट्ठे? कहमासे? कहं सुवे?।
कहं भुंजंतों भासंतो, पावं कम्मं न बंधई?।।42।।

जयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सुवे।
जयं भुंजंतों भासंतो, पावं कम्मं न बंधई।।43।।

सव्वभूयऽप्पभूयस्स, सम्मं भूयाइँ पासओ।
पिहियासवस्स दंतस्स, पावं कम्मं न बज्झइ।।44।।

पढमं नाणं तओ दया, एवं चिट्ठइ सव्वसंजए।
अन्नाणी किं काहिति?, किं वा नाहिइ छेय पावगं?।।45।।

सोच्चा जाणइ कल्लाणं, सोच्चा जाणइ पावगं।
उभयं पि जाणई सोच्चा, जं छेयं तं समायरे।।46।।

जो जीवे वि न याणति, अजीवे वि न याणति।
जीवाऽजीवे अयाणंतो, कह सो नाहिइ संजमं?।।47।।

जो जीवे वि वियाणति, अजीवे वि वियाणति।
जीवाऽजीवे वियाणंतो, सो हु नाहिइ संजमं।।48।।

जया जीवमजीवे य, दो वि एए वियाणई।
तया गइं बहुविहं, सव्वजीवाण जाणई।।49।।

जया गइं बहुविहं, सव्वजीवाण जाणई।
तया पुण्णं च पावं च, बंधं मोक्खं च जाणई।।50।।

जया पुण्णं च पावं च, बंधं मोक्खं च जाणई।
तया निव्विंदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे।।51।।

जया निव्विंदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे।
तया जहति संजोगं, सऽब्भिंतर-बाहिरं।।52।।

जया जहति संजोगं, सऽब्भिंतर-बाहिरं।
तया मुंडे भवित्ताणं, पव्वाइ अणगारियं।।53।।

जया मुंडे भवित्ताणं, पव्वाइ अणगारियं।
तया संवरमुक्कट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं।।54।।

जया संवरमुक्कट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं।
तया धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलुसं कडं।।55।।

जया धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलुसं कडं।
तया सव्वत्तगं नाणं, दंसणं चाभिगच्छई।।56।।

जया सव्वत्तगं नाणं, दंसणं चाभिगच्छई।
तया लोगमलोगं च, जिणो जाणइ केवली।।57।।

जया लोगमलोगं च, जिणो जाणइ केवली।
तया जोगे निरुंभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जई।।58।।

जया जोगे निरुंभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जई।
तया कम्मं खवित्ताणं , सिद्धिं गच्छइ नीरओ।।59।।

जया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ।
तया लोगमत्थयत्थो, सिद्धो भवइ सासओ।।60।।

सुहसायगस्स समणस्स, सायाउलगस्स निगामसाइस्स।
उच्छोलणापहोविस्स, दुलहा सोग्गई तारिसगस्स।।61।।

तवोगुणपहाणस्स, उज्जुमइ-खंति-संजमरयस्स।
परीसहे जिणंतस्स, सुलहा सोग्गई तारिसगस्स।।62।।

इच्चेयं छज्जीवणियं, सम्मद्दिट्ठी सया जए।
दुलहं लभित्तु सामण्णं, कम्मुणा ण विराहेज्जासि।।63।।

त्ति बेमि।।

।। चउत्थं छज्जीवणियऽज्झयणं समत्तं ।।

पंचमं पिंडेसणऽज्झयणं

पढमो उद्देसओ

संपत्ते भिक्खकालम्मि, असंभंतो अमुच्छिओ।
इमेण कमजोगेण, भत्त-पाणं गवेसए।।1।।

से गामे वा नगरे वा, गोयरग्गगओ मुणी।
चरे मंदमणुव्विग्गो, अव्वक्खित्तेण चेयसा।।2।।

पुरओ जुगमायाए, पेहमाणो महिं चरे।
वज्जेंतो बीय-हरियाइं, पाणे य दग-मट्टियं।।3।।

ओवायं विसमं खाणुं, विज्जलं परिवज्जए।
संकमेण न गच्छेज्जा, विज्जमाणे परक्कमे।।4।।

पवडंते व से तत्थ, पक्खुलंते व संजए।
हिंसेज्ज पाण-भूयाइं, तसे अदुव थावरे।।5।।

तम्हा तेण न गच्छेज्जा, संजए सुसमाहिए।
सइ अन्नेण मग्गेण, जयमेव परक्कमे।।6।।

इंगालं छारियं रासिं, तुसरासिं च गोमयं।
ससरक्खेहिँ पाएहिं, संजओ तं न अक्कमे।।7।।

न चरेज्ज वासेॅ वासंते, महियाए व पडंतिए।
महावाए व वायंते, तिरिच्छसंपाइमेसु वा।।8।।

न चरेज्ज वेससामंते, बंभचेरवसाणुए।
बंभयारिस्स दंतस्स, होज्जा तत्थ विसोत्तिया।।9।।

अणाययणे चरंतस्स, संसग्गीए अभिक्खणं।
होज्ज वयाणं पीला, सामण्णम्मि य संसओ।।10।।

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दोग्गइवड्ढणं।
वज्जए वेससामंतं, मुणी एगंतमस्सिए।।11।।

साणं सूइयं गाविं, दित्तं गोणं हयं गयं।
संडिब्भं कलहं जुद्धं, दूरओ परिवज्जए।।12।।

अणुन्नए नावणए, अप्पहिट्ठे अणाउले।
इंदियाइं जहाभागं, दमइत्ता मुणी चरे।।13।।

दवदवस्स न गच्छेज्जा, भासमाणो य गोयरे।
हसंतो नाभिगच्छेज्जा, कुलं उच्चावयं सया।।14।।

आलोयं थिग्गलं दारं, संधिं दगभवणाणि य।
चरंतो न विणिज्झाए, संकट्ठाणं विवज्जए।।15।।

रण्णो गहवईणं च, रहस्साऽऽरक्खियाण य।
संकिलेसकरं ठाणं, दूरओ परिवज्जए।।16।।

पडिकुट्ठकुलं न पविसे, मामगं परिवज्जए।
अचियत्तकुलं न पविसे , चियत्तं पविसे कुलं।।17।।

साणी-पावारपिहियं, अप्पणा न अवंगुणे।
कवाडं नो पणोल्लेज्जा , ओग्गहं सि अजाइया।।18।।

गोयरग्गपविट्ठो उ, वच्च-मुत्तं न धारए।
ओवासं फासुयं नच्चा, अणुन्नविय वोसिरे।।19।।

नीयदुवारं तमसं, कोट्ठगं परिवज्जए।
अचक्खुविसओ जत्थ, पाणा दुप्पडिलेहगा।।20।।

जत्थ पुप्फाइँ बीयाइं, विप्पइण्णाइँ कोट्ठए।
अहुणोवलित्तं ओल्लं, दट्ठूणं परिवज्जए।।21।।

एलगं दारगं साणं, वच्छगं वा वि कोट्ठए।
उल्लंघिया न पविसे, विऊहित्ताण व संजए।।22।।

असंसत्तं पलोएज्जा, नाइदूरावलोयए।
उप्फुल्लं न विणिज्झाए, नियट्टेज्ज अयंपुरो।।23।।

अइभूमिं न गच्छेज्जा, गोयरग्गगओ मुणी।
कुलस्स भूमिं जाणित्ता, मियं भूमिं परक्कमे।।24।।

तत्थेव पडिलेहेज्जा, भूमिभागं वियक्खणो।
आसिणाणस्स वच्चस्स, संलोगं परिवज्जए।।25।।

दग-मट्टियआयाणे, बीयाणि हरियाणि य।
परिवज्जेंतो चिट्ठेज्जा, सव्विंदियसमाहिए।।26।।

तत्थ से चिट्ठमाणस्स, आहरे पाण-भोयणं।
अकप्पियं न इच्छेज्जा, पडिगाहेज्ज कप्पियं।।27।।

आहरंती सिया तत्थ, परिसाडेज्ज भोयणं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।28।।

सम्मद्दमाणी पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य।
असंजमकरिं नच्चा, तारिसं परिवज्जए।।29।।

साहट्टु निक्खिवित्ताणं, सच्चित्तं घट्टिऊण य।
तहेव समणट्ठाए, उदगं संपणोल्लिया।।30।।

आगाहइत्ता चलइत्ता, आहरे पाण-भोयणं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।31।।

पुरेकम्मेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।32।।

उदओल्लेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।33।।

ससिणिद्धेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।34।।

ससरक्खेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।35।।

मट्टियागतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।36।।

ऊसगतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।37।।

हरितालगतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।38।।

हिंगुलुयगतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।39।।

मणोसिलागतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।40।।

अंजणगतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।41।।

लोणगतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।42।।

गेरुयगतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।43।।

वण्णियगतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।44।।

सेडियगतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।45।।

सोरट्ठियगतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।46।।

पिट्ठगतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।47।।

कुक्कुसगतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।48।।

उक्कुट्ठगतेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।49।।

असंसट्ठेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
दिज्जमाणं न इच्छेज्जा, पच्छाकम्मं जहिं भवे।।50।।

संसट्ठेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा, जं तत्थेसणियं भवे।।51।।

दोण्हं तु भुंजमाणाणं, एगो तत्थ निमंतए।
दिज्जमाणं न इच्छेज्जा, छंदं से पडिलेहए।।52।।

दोण्हं तु भुंजमाणाणं, दो वि तत्थ निमंतए।
दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा, जं तत्थेसणियं भवे।।53।।

गुव्विणीए उवन्नत्थं, विविहं पाण-भोयणं।
भुज्जमाणं विवज्जेज्जा ,भुत्तसेसं पडिच्छए।।54।।

सिया य समणट्ठाए, गुव्विणी कालमासिणी।
उट्ठिया वा निसीएज्जा, निसन्ना वा पुणुट्ठए।।55।।

तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।56।।

थणगं पज्जेमाणी, दारगं वा कुमारियं।
तं निक्खिवित्तु रोयंतं, आहरे पाण-भोयणं।।57।।

तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।58।।

जं भवे भत्त-पाणं तु, कप्पाऽकप्पम्मि संकियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।59।।

दगवारएण पिहियं, नीसाए पीढएण वा।
लोढेण वा वि लेवेण, सिलेसेण व केणई।।60।।

तं च उब्भिंदिया देज्जा, समणट्ठाएँ दायए।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।61।।

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा ,दाणट्ठा पगडं इमं।।62।।

तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।63।।

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, पुण्णट्ठा पगडं इमं।।64।।

तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।65।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, वणिमट्ठा पगडं इमं।।66।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।67।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, समणट्ठा पगडं इमं।।68।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।69।।
उद्देसियं कीयगडं, पूईकम्मं च आहडं।
अज्झोयर पामिच्चं, मीसजायं च वज्जए।।70।।
उग्गमं से पुच्छेज्जा, कस्सऽट्ठा? केण वा कडं?।
सोच्चा निस्संकियं सुद्धं, पडिगाहेज्ज संजए।।71।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
पुप्फेहिं होज्ज उम्मीसं, बीएहिं हरिएहिँ वा।।72।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।73।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
उदगम्मि होज्ज निक्खित्तं, उत्तिंग-पणगेसु वा।।74।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।75।।

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं, तं च संघट्टिया दए।।76।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।77।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं, तं च उस्सिक्किया दए।।78।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।79।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं , तं च ओसक्किया दए।।80।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।81।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं , तं च उज्जालिया दए।।82।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।83।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं, तं च पज्जालिया दए।।84।।
तं भवे भत्त-पाणं, तु संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।85।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं ,तं च निव्वाविया दए।।86।।

तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।87।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं, तं च उस्सिंचिया दए।।88।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।89।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं, तं च निस्सिंचिया दए।।90।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।91।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं, तं च ओवत्तिया दए।।92।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।93।।
असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं ,तं च ओयारिया दए।।94।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।95।।
होज्ज कट्ठं सिलं वा वि, इट्टालं वा वि एगया।
ठवियं संकमट्ठाए, तं च होज्ज चलाचलं।।96।।
न तेण भिक्खू गच्छेज्जा, दिट्ठो तत्थ असंजमो।
गंभीरं झुसिरं चेव, सव्विंदियसमाहिए।।97।।

निस्सेणिं फलगं पीढं, उस्सवित्ताणमारुहे।
मंचं कीलं च पासायं, समणट्ठाए व दायगे।।98।।
दुरुहमाणे पवडेज्जा, हत्थं पायं व लूसए।
पुढविजीवे विहिंसेज्जा, जे य तन्निस्सिया जगा।।99।।
एयारिसे महादोसे, जाणिऊण महेसिणो।
तम्हा मालोहडं भिक्खं ,न पडिगेण्हंति संजया।।100।।
कंदं मूलं पलंबं वा, आमं छिन्नं च सन्निरं।
तुंबागं सिंगबेरं च, आमगं परिवज्जए।।101।।
तहेव सत्तुचुण्णाइं, कोलचुण्णाइँ आवणे।
सक्कुलिं फाणियं पूयं, अन्नं वा वि तहाविहं।।102।।
विक्कायमाणं पसढं, रएण परिघासियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।103।।
बहुअट्ठियं पोग्गलं, अणिमिसं वा बहुकंटयं।
अत्थियं तेंदुयं बिल्लं, उच्छुखंडं च सिंबलिं।।104।।
अप्पे सिया भोयणज्जाए, बहुउज्झियधम्मए।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।105।।
तहेवुच्चावयं पाणं, अदुवा वारधोवणं।
संसेइमं चाउलोदगं ,अहुणाधोयं विवज्जए।।106।।
जं जाणेज्ज चिराधोयं, मईए दंसणेण वा।
पडिपुच्छिऊण सोच्चा वा ,जं च निस्संकियं भवे।।107।।
अजीवं परिणयं नच्चा, पडिगाहेज्ज संजए।
अह संकियं भवेज्जा, आसाइत्ताण रोयए।।108।।

थोवमासायणट्ठाए, हत्थगम्मि दलाहि मे।
मा मे अच्चंबिलं पूइं, नालं तण्हं विणित्तए।।109।।

तं च अच्चंबिलं पूइं, नालं तण्हं विणित्तए।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।110।।

तं च होज्ज अकामेणं, विमणेण पडिच्छियं।
तं अप्पणा न पिबे, नो वि अन्नस्स दावए।।111।।

एगंतमवक्कमित्ता, अचित्तं पडिलेहिया।
जयं परिट्ठवेज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे।।112।।

सिया य गोयरग्गगओ, इच्छेज्जा परिभोत्तुयं।
कोट्ठगं भित्तिमूलं वा, पडिलेहित्ताण फासुयं।।113।।

अणुन्नवेत्तु मेहावी, पडिच्छन्नम्मि संवुडे।
हत्थगं संपमज्जित्ता, तत्थ भुंजेज्ज संजए।।114।।

तत्थ से भुंजमाणस्स, अट्ठियं कंटओ सिया।
तण कट्ठ सक्करं वा वि ,अन्नं वा वि तहाविहं ।।115।।

तं उक्खिवित्तु न निखिवे, आसएण न छड्डुए।
हत्थेण तं गहेऊण, एगंतमवक्कमे।।116।।

एगंतमवक्कमित्ता, अच्चित्तं पडिलेहिया।
जयं परिट्ठवेज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे।।117।।

सिया य भिक्खु इच्छेज्जा, सेज्जमागम्म भोत्तुयं।
सपिंडपायमागम्म, उंडुयं पडिलेहिया।।118।।

विणएण पविसित्ता, सगासं गुरुणो मुणी।
इरियावहिय मायाय, आगओ य पडिक्कमे।।119।।

आभोएत्ताण निस्सेसं, अइयारं जहक्कमं।
गमणाऽऽगमणे चेव, भत्त-पाणे व संजए।।120।।

उज्जुप्पण्णो अणुव्विग्गो, अव्वक्खित्तेण चेयसा।
आलोए गुरुसगासे, जं जहा गहियं भवे।।121।।

न सम्ममालोइयं होज्जा, पुव्विं पच्छा व जं कडं।
पुणो पडिक्कमे तस्स, वोसट्ठो चिंतए इमं।।122।।

अहो! जिणेहऽसावज्जा, वित्ती साहूण देसिया।
मोक्खसाहणहेउस्स, साहुदेहस्स धारणा।।123।।

नमोक्कारेण पारेत्ता, करेत्ता जिणसंथवं।
सज्झायं पट्ठवेत्ताणं, वीसमेज्ज खणं मुणी।।124।।

वीसमंतो इमं चिंते, हियमट्ठं लाभमट्ठिओ।
जइ मे अणुग्गहं कुज्जा, साहू! होज्जामि तारिओ।।125।।

साहवो तो चियत्तेणं, निमंतेज्ज जहक्कमं।
जइ तत्थ केइ इच्छेज्जा, तेहिं सद्धिं तु भुंजए।।126।।

अह कोइ न इच्छेज्जा, तओ भुंजेज्ज एक्कओ।
आलोगभायणे साहू, जयं अपरिसाडियं।।127।।

तित्तगं व कडुयं व कसायं, अंबिलं व महुरं लवणं वा।
एय लद्धमन्नट्ठपउत्तं, महु-घयं व भुंजेज्ज संजए।।128।।

अरसं विरसं वा वि, सूइयं वा असूइयं।
ओल्लं वा जइ वा सुक्कं, मंथु-कुम्मासभोयणं।।129।।

उप्पन्नं नाइहीलेज्जा, अप्पं वा बहु फासुयं।
मुहालद्धं मुहाजीवी, भुंजेज्जा दोसवज्जियं।।130।।

दुल्लहा हु मुहादाई, मुहाजीवी वि दुल्लहा।
मुहादाई मुहाजीवी, दो वि गच्छंति सोग्गइं।।131।।
त्ति बेमि।।
।। पिंडेसणाए पढमो उद्देसओ समत्तो।।

पिंडेसणऽज्झयणे बीओ उद्देसओ

पडिग्गहं संलिहित्ताणं, लेवमायाएँ संजए।
दुगंधं वा सुगंधं वा, सव्वं भुंजे न छड्डए।।1।।
सेज्जा निसीहियाए, समावन्नो य गोयरे।
अयावयट्ठा भोच्चा णं, जइ तेण न संथरे।।2।।
तओ कारणमुप्पन्ने, भत्त-पाणं गवेसए।
विहिणा पुव्ववुत्तेण, इमेणं उत्तरेण य।।3।।
कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेणेव पडिक्कमे।
अकालं च विवज्जेत्ता, काले कालं समायरे।।4।।
अकाले चरसि भिक्खू!, कालं न पडिलेहसि।
अप्पाणं च किलामेसि, सन्निवेसं च गरहसि।।5।।
सइ काले चरे भिक्खू, कुज्जा पुरिसकारियं।
अलाभो त्ति न सोएज्जा, तवो त्ति अहियासए।।6।।
तहेवुच्चावया पाणा, भत्तट्ठाए समागया।
तो उज्जुयं न गच्छेज्जा, जयमेव परक्कमे।।7।।
गोयरग्गपविट्ठो उ, न निसीएज्ज कत्थई।
कहं च न पबंधेज्जा, चिट्ठिताण व संजए।।8।।

अग्गलं फलिहं दारं, कवाडं वा वि संजए।
अवलंबिया न चिट्ठेज्जा, गोयरग्गगओ मुणी।।9।।
समणं माहणं वा वि, किविणं वा वणीमगं।
उवसंकमंतं भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए।।10।।
तं अइक्कमित्तु न पविसे, न चिट्ठे चक्खुगोयरे।
एगंतमवक्कमित्ता, तत्थ चिट्ठेज्ज संजए।।11।।
वणीमगस्स वा तस्स, दायगस्सुभयस्स वा।
अप्पत्तियं सिया होज्जा, लहुत्तं पवयणस्स वा।।12।।
पडिसेहिए व दिन्ने वा, तओ तम्मि नियत्तिए।
उवसंकमेज्ज भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए।।13।।
उप्पलं पउमं वा वि, कुमुयं वा मगदंतियं।
अन्नं वा पुप्फ सच्चित्तं, तं च संलुंचिया दए।।14।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।15।।
उप्पलं पउमं वा वि, कुमुयं वा मगदंतियं।
अन्नं वा पुप्फ सच्चित्तं, तं च सम्मद्दिया दए।।16।।
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।17।।
सालुयं वा विरालियं, कुमुदुप्पलनालियं।
मुणालियं सासवनालियं ,उच्छुक्खंडं अनिव्वुडं।।18।।
तरुणगं वा पवालं, रुक्खस्स तणगस्स वा।
अन्नस्स वा वि हरियस्स, आमगं परिवज्जए।।19।।

तरुणियं वा छिवाडिं, आमियं भज्जियं सइं।
देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।।20।।
तहा कोलमणुस्सिन्नं, वेलुयं कासवनालियं।
तिलपप्पडगं नीमं, आमगं परिवज्जए।।21।।
तहेव चाउलं पिट्ठं, वियडं वा तत्तनिव्वुडं।
तिलपिट्ठपूइपिन्नागं, आमगं परिवज्जए।।22।।
कविट्ठं माउलिंगं च, मूलगं मूलगत्तियं।
आमं असत्थपरिणयं, मणसा वि न पत्थए।।23।।
तहेव फलमंथूणि, बीयमंथूणि जाणिया।
बिहेलगं पियालं च, आमगं परिवज्जए।।24।।
समुयाणं चरे भिक्खू, कुलं उच्चावयं सया।
नीयं कुलमइक्कम्म, ऊसढं नाभिधारए।।25।।
अदीणो वित्तिमेसेज्जा, न विसीएज्ज पंडिए।
अमुच्छिओ भोयणम्मि, मायन्ने एसणारए।।26।।
बहुं परघरे अत्थि, विविहं खाइम-साइमं।
न तत्थ पंडिओ कुप्पे, इच्छा देज्ज परो न वा।।27।।
सयणाऽऽसण वत्थं वा, भत्त-पाणं व संजए।
अदेंतस्स न कुप्पेज्जा, पच्चक्खे वि य दीसओ।।28।।
इत्थियं पुरिसं वा वि, डहरं वा महल्लगं।
वंदमाणो न जाएज्जा, नो य णं फरुसं वए।।29।।
जे न वंदे न से कुप्पे, वंदिओ न समुक्कसे।
एवमन्नेसमाणस्स, सामण्णमणुचिट्ठई।।30।।

सिया एगइओ लद्धुं, लोभेण विणिगूहई।
मा मेयं दाइयं संतं, दट्ठूणं सयमाइए।।31।।

अत्तट्ठगुरुओ लुद्धो, बहुं पावं पकुव्वई।
दुत्तोसओ य भवति, नेव्वाणं च न गच्छई।।32।।

सिया एगइओ लद्धुं, विविहं पाण-भोयणं।
भद्दगं भद्दगं भोच्चा, विवण्णं विरसमाहरे।।33।।

जाणंतु ता इमे समणा, आययट्ठी अयं मुणी।
संतुट्ठो सेवई पंतं, लूहवित्ती सुतोसओ।।34।।

पूयणट्ठी जसोकामी, माण-सम्माणकामए।
बहुं पसवई पावं, मायासल्लं च कुव्वई।।35।।

सुरं वा मेरगं वा वि, अन्नं वा मज्जगं रसं।
ससक्खं न पिबे भिक्खू, जसं सारक्खमप्पणो।।36।।

पियाएगइओ तेणो, न मे कोइ वियाणइ।
तस्स पस्सह दोसाइं, नियडिं च सुणेह मे।।37।।

वड्ढई सोंडिया तस्स, मायामोसं च भिक्खुणो।
अयसो य अणेव्वाणी, सययं च असाहुया।।38।।

निच्चुव्विग्गो जहा तेणो, अत्तकम्मेहि दुम्मई।
तारिसो मरणंते वि, नाऽऽराहेइ संवरं।।39।।

आयरिए नाऽऽराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं।।40।।

तवं कुव्वइ मेहावी, पणीयं वज्जए रसं।
मज्जप्पमायविरओ, तवस्सी अइउक्कसो।।41।।

तस्स पस्सह कल्लाणं, अणेगसाहुपूइयं।
विउलं अत्थसंजुत्तं, कित्तइस्सं सुणेह मे।।42।।

एवं तु गुणप्पेही, अगुणाणं विवज्जए।
तारिसो मरणंते वि, आराहेइ संवरं।।43।।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं।।44।।

तवतेणे वइतेणे, रूवतेणे य जे नरे।
आयार-भावतेणे य, कुव्वई देवकिब्बिसं।।45।।

लद्धूण वि देवत्तं, उववन्नो देवकिब्बिसे।
तत्थावि से न याणाइ, किं मे किच्चा इमं फलं?।।46।।

तत्तो वि से चइत्ताणं, लब्भिही एलमूयगं।
नरयं तिरिक्खजोणिं वा, बोही जत्थ सुदुल्लहा।।47।।

एयं च दोसं दट्ठूणं, नायपुत्तेण भासियं।
अणुमायं पि मेहावी, मायामोसं विवज्जए।।48।।

सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहिं, संजयाण बुद्धाण सगासे।
तत्थ भिक्खु सुप्पणिहिइंदिए, तिव्वलज्ज गुणवं विहरेज्जासि।।49।।

त्ति बेमि।।

।। पिंडेसणाए बीओ उद्देसओ समत्तो।।

।। पिंडेसणऽज्झयणं समत्तं।।

छट्ठं महल्लियायारकहऽज्झयणं

नाण-दंसणसंपन्नं, संजमे य तवे रयं।
गणिमागमसंपन्नं, उज्जाणम्मि समोसढं।।1।।

रायाणो रायमच्चा य, माहणा अदुव खत्तिया।
पुच्छंति निहुयऽप्पाणो, कहं भे आयारगोयरो?।।2।।

तेसिं सो निहुओ दंतो, सव्वभूयसुहावहो।
सिक्खाए सुसमाउत्तो, आइक्खइ वियक्खणो।।3।।

हंदि! धम्म-ऽत्थ-कामाणं, निग्गंथाणं सुणेह मे।
आयार-गोयरं भीमं, सयलं दुरहिट्ठियं।।4।।

नऽन्नत्थ एरिसं वुत्तं, जं लोए परमदुच्चरं।
विउलट्ठाणभाइस्स, न भूयं न भविस्सई।।5।।

सखुड्डग-वियत्ताणं, वाहियाणं च जे गुणा।
अखंड-फुल्ला कायव्वा, तं सुणेह जहा तहा।।6।।

दस अट्ठ य ठाणाइं, जाइं बालोऽवरज्झई।
तत्थ अन्नयरे ठाणे, निग्गंथत्ताओ भस्सई।।7।।

तत्थिमं पढमं ठाणं, महावीरेण देसियं।
अहिंसा निउणा दिट्ठा, सव्वभूएसु संजमो।।8।।

जावंति लोए पाणा, तसा अदुव थावरा।
ते जाणमजाणं वा, न हणे नो वि घायए।।9।।

सव्वजीवा वि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउं।
तम्हा पाणवहं घोरं, निग्गंथा वज्जयंति णं।।10।।

अप्पणट्ठा परट्ठा वा, कोहा वा जइ वा भया।
हिंसगं न मुसं बूया, नो वि अन्नं वयावए।।11।।

मुसावाओ य लोगम्मि, सव्वसाहूहिं गरहिओ।
अविस्सासो य भूयाणं, तम्हा मोसं विवज्जए।।12।।

चित्तमंतमचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहुं।
दंतसोहणमेत्तं पि, ओग्गहं सि अजाइया।।13।।

तं अप्पणा न गेण्हंति, नो वि गेण्हावए परं।
अन्नं वा गेण्हमाणं पि, नाणुजाणंति संजया।।14।।

अबंभचरियं घोरं, पमायं दुरहिट्ठियं।
नाऽऽयरंति मुणी लोए, भेयाययणवज्जिणो।।15।।

मूलमेयमहम्मस्स, महादोससमुस्सयं।
तम्हा मेहुणसंसग्गिं, निग्गंथा वज्जयंति णं।।16।।

विडमुब्भेइमं लोणं, तेल्लं सप्पिं च फाणियं।
न ते सन्निहिमिच्छंति, नायपुत्तवओरया।।17।।

लोभस्सेसो अणुफासो, मन्ने अन्नयरामवि।
जे सिया सन्निहीकामी, गिही पव्वइए न से।।18।।

जं पि वत्थं व पायं वा, कंबलं पायपुंछणं।
तं पि संजम-लज्जट्ठा, धारेंति परिहरेंति य।।19।।

न सो परिग्गहो वुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा।
मुच्छा परिग्गहो वुत्तो, इइ वुत्तं महेसिणा।।20।।

सव्वत्थुवहिणा बुद्धा, सारक्खणपरिग्गहे।
अवि अप्पणो वि देहम्मि, नाऽऽयरंति ममाइयं।।21।।

अहो! निच्चं तवोकम्मं, सव्वबुद्धेहि वण्णियं।
जा य लज्जासमा वित्ती, एगभत्तं च भोयणं।।22।।

संतिमे सुहुमा पाणा, तसा अदुव थावरा।
जाइं राओ अपासंतो, कहमेसणियं चरे?।।23।।

उदओल्लं बीयसंसत्तं, पाणा निव्वडिया महिं।
दिया ताइं विवज्जेज्जा, राओ तत्थ कहं चरे?।।24।।

एयं च दोसं दट्ठूणं, नायपुत्तेण भासियं।
सव्वाहारं न भुंजंति, निग्गंथा राइभोयणं।।25।।

पुढविकायं न हिंसंति, मणसा वयस कायसा।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया।।26।।

पुढविकायं विहिंसंतो, हिंसई उ तदस्सिए।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे।।27।।

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दोग्गइवड्ढणं।
पुढविकायसमारंभं, जावज्जीवाएँ वज्जए।।28।।

आउकायं न हिसंति, मणसा वयस कायसा।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया।।29।।

आउकायं विहिंसंतो, हिंसई उ तदस्सिए।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे।।30।।

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दोग्गइवड्ढणं।
आउकायसमारंभं, जावज्जीवाएँ वज्जए।।31।।

जायतेयं न इच्छंति, पावगं जलइत्तए।
तिक्खमन्नयरं सत्थं, सव्वओ वि दुरासयं।।32।।

पाईणं पडिणं वा वि, उड्ढं अणुदिसामवि।
अहे दाहिणओ वा वि, दहे उत्तरओ वि य।।33।।

भूयाणं एसमाघाओ, हव्ववाहो न संसओ।
तं पईव-पयावट्ठा, संजया किंचि नाऽऽरभे।।34।।

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दोग्गइवड्ढणं।
तेउकायसमारंभं, जावज्जीवाएँ वज्जए।।35।।

अनिलस्स समारंभं, बुद्धा मन्नंति तारिसं।
सावज्जबहुलं चेयं, नेयं ताईहि सेवियं।।36।।

तालियंटेण पत्तेण, साहाविहुवणेण वा।
न ते वीइउमिच्छंति, वीयावेऊण वा परं।।37।।

जं पि वत्थं व पायं वा, कंबलं पायपुंछणं।
न ते वायमुईरंति, जयं परिहरंति य।।38।।

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दोग्गइवड्ढणं।
वाउकायसमारंभं, जावज्जीवाएँ वज्जए।।39।।

वणस्सइं न हिंसंति, मणसा वयस कायसा।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया।।40।।

वणस्सइं विहिंसंतो, हिंसई उ तदस्सिए।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे।।41।।

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दोग्गइवड्ढणं।
वणस्सइसमारंभं, जावज्जीवाएँ वज्जए।।42।।

तसकायं न हिंसंति, मणसा वयस कायसा।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया।।43।।

तसकायं विहिंसंतो, हिंसई उ तदस्सिए।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे।।44।।

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दोग्गइवड्ढणं।
तसकायसमारंभं, जावज्जीवाएँ वज्जए।।45।।

जाइं चत्तारिऽभोज्जाइं, इसिणाऽऽहारमाइणि।
ताइं तु विवज्जेंतो, संजमं अणुपालए।।46।।

पिंडं सेज्जं च वत्थं च, चउत्थं पायमेव य।
अकप्पियं न इच्छेज्जा, पडिग्गाहेज्ज कप्पियं।।47।।

जे नियागं ममायंति, कीयमुद्देसियाऽऽहडं।
वहं ते अणुजाणंति, इइ वुत्तं महेसिणा।।48।।

तम्हा असण-पाणाई, कीयमुद्देसियाऽऽहडं।
वज्जयंति ठियप्पाणो, निग्गंथा धम्मजीविणो।।49।।

कंसेसु कंसपाएसु, कुंडमोएसु वा पुणो।
भुंजंतो असण-पाणाई, आयारा परिभस्सई।।50।।

सीओदगसमारंभे, मत्तधोवणछड्डणे।
जाइं छण्णंति भूयाइं, दिट्ठो तत्थ असंजमो।।51।।

पच्छाकम्मं पुरेकम्मं, सिया तत्थ न कप्पई।
एयमट्ठं न भुंजंति, निग्गंथा गिहिभायणे।।52।।

आसंदी-पलियंकेसु, मंच-मासालएसु वा।
अणायरियमज्जाणं, आसइत्तु सइत्तु वा।।53।।

नाऽऽसंदी-पलियंकेसु, न निसेज्जा न पीढए।
निग्गंथाऽपडिलेहाए, बुद्धवुत्तमहिट्ठगा।।54।।

गंभीरविजया एए, पाणा दुप्पडिलेहगा।
आसंदी पलियंका य, एयमट्ठं विवज्जिया।।55।।

गोयरग्गपविट्ठस्स, निसेज्जा जस्स कप्पई।
इमेरिसमणायारं, आवज्जइ अबोहियं।।56।।

विवत्ती बंभचेरस्स, पाणाणं अवहे वहो।
वणीमगपडिग्घाओ, पडिकोहो अगारिणं।।57।।

अगुत्ती बंभचेरस्स, इत्थीओ यावि संकणं।
कुसीलवड्ढणं ठाणं, दूरओ परिवज्जए।।58।।

तिण्हमन्नयरागस्स, निसेज्जा जस्स कप्पई।
जराए अभिभूयस्स, वाहियस्स तवस्सिणो।।59।।

वाहिओ वा अरोगी वा, सिणाणं जो उ पत्थए।
वोक्कंतो होइ आयारो, जढो हवइ संजमो।।60।।

संतिमे सुहुमा पाणा, घसासु भिलुगासु य।
जे उ भिक्खू सिणायंतो, वियडेणुप्पिलावए।।61।।

तम्हा ते न सिणायंति, सीएण उसिणेण वा।
जावज्जीवं वयं घोरं, असिणाणमहिट्ठगा।।62।।

सिणाणं अदुवा कक्कं, लोद्धं पउमगाणि य।
गायस्सुव्वट्टणट्ठाए, नाऽऽयरंति कयाइ वि।।63।।

निगिणस्स वा वि मुंडस्स, दीहरोम-नहंसिणो।
मेहुणा उवसंतस्स, किं विभूसाएँ कारियं?।।64।।

विभूसावत्तियं भिक्खू, कम्मं बंधइ चिक्कणं।
संसारसायरे घोरे, जेणं भमति दुरुत्तरे।।65।।

विभूसावत्तियं चेयं, बुद्धा मन्नंति तारिसं।
सावज्जबहुलं चेयं, नेयं ताईहि सेवियं।।66।।

खवेंति अप्पाणममोहदंसिणो, तवे रया संजम अज्जवे गुणे।
धुणंति पावाइं पुरेकडाइं, नवाइं पावाइं न ते करेंति।।67।।

सओवसंता अममा अकिंचणा, सविज्जविज्जाणुगया जसंसिणो।
उउप्पसन्ने विमले व चंदिमा, सिद्धिं विमाणाइँ व जंति ताइणो।।68।।

त्ति बेमि।।

।। छट्ठं महल्लियायारकहऽज्झयणं समत्तं ।।

सत्तमं वक्कसुद्धिअज्झयणं

चउण्हं खलु भासाणं, परिसंखाय पन्नवं।
दोण्हं तु विजयं सिक्खे, दो न भासेज्ज सव्वसो।।1।।

जा य सच्चा अवत्तव्वा, सच्चामोसा य जा मुसा।
जा य बुद्धेहिऽणाइन्ना, न तं भासेज्ज पण्णवं।।2।।

असच्चमोसं सच्चं च, अणवज्जमकक्कसं।
समुप्पेहितऽसंदिद्धं, गिरं भासेज्ज पण्णवं।।3।।

एयं च अट्ठमन्नं वा, जं तु नामेइ सासयं।
स भासं सच्चमोसं पि, तं पि धीरो विवज्जए।।4।।

वितहं पि तहामुत्तिं, जं गिरं भासए नरो।
तम्हा सो पुट्ठो पावेणं, किं पुण जो मुसं वए?।।5।।

तम्हा गच्छामो वक्खामो, अमुगं वा णे भविस्सई।
अहं वा णं करिस्सामि, एसो वा णं करिस्सई।।6।।

एवमाई उ जा भासा, एसकालम्मि संकिया।
संपयाईयमट्ठे वा, तं पि धीरो विवज्जए।।7।।

अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पन्ने अणागए।
जमट्ठं तु न जाणेज्जा, 'एवमेयं' ति नो वए।।8।।

अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पन्ने अणागए।
जत्थ संका भवे तं तु ,'एवमेयं' ति नो वए।।9।।

अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पन्ने अणागए।
निस्संकियं भवे जं तु, 'एवमेयं' ति निद्दिसे।।10।।

तहेव फरुसा भासा, गुरुभूओवघाइणी।
सच्चा वि सा न वत्तव्वा, जओ पावस्स आगमो।।11।।

तहेव काणं 'काणे' त्ति, पंडगं 'पंडगे' त्ति वा।
वाहियं वा वि 'रोगि' त्ति, तेणं 'चोरे' त्ति नो वए।।12।।

एएणऽन्नेण वट्ठेण, परो जेणुवहम्मई।
आयारभावदोसण्णू, ण तं भासेज्ज पण्णवं।।13।।

तहेव 'होले' 'गोले' त्ति, 'साणे' वा 'वसुले' त्ति य।
'दमए' 'दूहए' वा वि, नेवं भासेज्ज पण्णवं।।14।।

अज्जिए पज्जिए वा वि, अम्मो माउसिय त्ति वा।
पिउस्सिए भाइणेज्ज त्ति, धूए नत्तुणिए त्ति य।।15।।

हले हले त्ति अन्ने त्ति, भट्टे सामिणि गोमिणि।
होले गोले वसुले त्ति, इत्थियं नेवमालवे।।16।।

नामधेज्जेण णं बूया, इत्थीगोत्तेण वा पुणो।
जहारिहमभिगिज्झ, आलवेज्ज लवेज्ज वा।।17।।

अज्जए पज्जए वा वि, बप्पो चुल्लपिउ त्ति य।
माउला भाइणेज्ज त्ति, पुत्ता णत्तुणिय त्ति य।।18।।

हे भो हले त्ति अन्ने त्ति, भट्टा सामिय गोमिय।
होल गोल वसुल त्ति, पुरिसं नेवमालवे।।19।।

नामधेज्जेण णं बूया, पुरिसगोत्तेण वा पुणो।
जहारिहमभिगिज्झ, आलवेज्ज लवेज्ज वा।।20।।

पंचिंदियाण पाणाणं, एस इत्थी अयं पुमं।
जाव णं न विजाणेज्जा, ताव जाइ त्ति आलवे।।21।।

तहेव मणुस्सं पसुं, पक्खिं वा वि सिरीसिवं।
थूले पमेइले वज्झे, पाइमे त्ति य नो वए।।22।।

परिवूढे त्ति णं बूया, बूया उवचिए त्ति य।
संजाए पीणिए वा वि, महाकाए त्ति आलवे।।23।।

तहेव गाओं दोज्झाओ, दम्मा गोरहग त्ति य।
वाहिमा रहजोग्ग त्ति, नेवं भासेज्ज पण्णवं।।24।।

जुवंगवे त्ति णं बूया, धेणुं रसदय त्ति य।
रहस्से महव्वए वा वि, वए संवहणे त्ति य।।25।।

तहेव गंतुमुज्जाणं, पव्वयाणि वणाणि य।
रुक्खा महल्ल पेहाए, नेवं भासेज्ज पण्णवं।।26।।

अलं पासायखंभाणं, तोरणाण गिहाण य।
फलिह-ऽग्गल-नावाणं, अलं उदगदोणिणं।।27।।

पीढए चंगबेरे य, नंगलं मइयं सिया।
जंतलट्ठी व नाभी वा, गंडिया व अलं सिया।।28।।

आसणं सयणं जाणं, होज्जा वा किंचुवस्सए।
भूओवघाइणिं भासं, नेवं भासेज्ज पण्णवं।।29।।

तहेव गंतुमुज्जाणं, पव्वयाणि वणाणि य।
रुक्खा महल्ल पेहाए, एवं भासेज्ज पण्णवं।।30।।

जाइमंता इमे रुक्खा, दीहवट्टा महालया।
पयायसाला विडिमा, वए दरिसणि त्ति य।।31।।

तहा फलाइं पक्काइं, पायखज्जाइं नो वए।
वेलोइयाइं टालाइं, वेहिमाइं ति नो वए।।32।।

असंथडा इमे अंबा, बहुनिव्वट्टिमाफला।
वएज्ज बहुसंभूया, भूयरूव त्ति वा पुणो।।33।।

तहोसहीओं पक्काओ, नीलियाओ छवी ति य।
लाइमा भज्जिमाओ त्ति, पिहुखज्ज त्ति नो वए।।34।।

रूढा बहुसंभूया, थिरा ऊसढा ति य।
गब्भियाओ पसूयाओ, ससाराओ त्ति आलवे।।35।।

तहेव संखडिं नच्चा, किच्चं कज्जं ति नो वए।
तेणगं वा वि वज्झे त्ति, सुतित्थे त्ति य आवगा।।36।।

संखडिं संखडिं बूया, पणियट्ठे त्ति तेणगं।
बहुसमाणि तित्थाणि, आवगाणं वियागरे।।37।।

तहा नईओ पुण्णाओ, कायपेज्ज त्ति नो वए।
नावाहिं तारिमाओ त्ति, पाणिपेज्ज त्ति नो वए।।38।।

बहुवाहडा अगाहा, बहुसलिलुप्पिलोदगा।
बहुवित्थडोदगा यावि, एवं भासेज्ज पण्णवं।।39।।

तहेव सावज्जं जोगं, परस्सऽट्ठाएँ निट्ठियं।
कीरमाणं ति वा णच्चा, सावज्जं न लवे मुणी।।40।।

सुकडे त्ति सुपक्के त्ति, सुछिन्ने सुहडे मडे।
सुनिट्ठिए सुलट्ठे त्ति, सावज्जं वज्जए मुणी।।41।।

पयत्तपक्के त्ति व पक्कमालवे, पयत्तछिन्ने त्ति व छिन्नमालवे।
पयत्तलट्ठे त्ति व कम्महेउयं, गाढप्पहारं ति व गाढमालवे।।42।।

सव्वुक्कस्सं परग्घं वा, अउलं नत्थि एरिसं।
अचक्कियमवत्तव्वं, अचिंतं चेव णो वए।।43।।

सव्वमेयं वइस्सामि, सव्वमेयं ति नो वए।
अणुवीइ सव्वं सव्वत्थ, एवं भासेज्ज पण्णवं।।44।।

सुक्कीयं वा सुविक्कीयं, अकेज्जं केज्जमेव वा।
इमं गेण्ह इमं मुंच, पणियं नो वियागरे।।45।।

अप्पग्घे वा महग्घे वा, कए व विक्कए वि वा।
पणियट्ठे समुप्पन्ने, अणवज्जं वियागरे।।46।।

तहेवाऽसंजयं धीरो, आस एहि करेहि वा।
सय चिट्ठ वयाहि त्ति, नेवं भासेज्ज पण्णवं।।47।।

बहवे इमे असाहू, लोए वुच्चंति साहुणो।
न लवे असाहुं साहु त्ति, साहुं साहु त्ति आलवे।।48।।

णाण-दंसणसंपन्नं, संजमे य तवे रयं।
एवंगुणसमाउत्तं, संजयं साहुमालवे।।49।।

देवाणं मणुयाणं च, तिरियाणं च वुग्गहे।
अमुयाण जओ होउ, मा वा होउ त्ति नो वए।।50।।

वाओ वुट्ठं व सीउण्हं, खेमं धायं सिवं ति वा।
कया णु होज्ज एयाणि?, मा वा होउ त्ति नो वए।।51।।

तहेव मेहं व नहं व माणवं, न देव देव त्ति गिरं वएज्जा।
सम्मुच्छिए उन्नएँ वा पओदे, वएज्ज वा 'वुट्ठे बलाहए' त्ति।।52।।

'अंतलिक्खे' त्ति णं बूया, 'गुज्झाणुचरियं' ति य।
रिद्धिमंतं नरं दिस्स, 'रिद्धिमंतं' ति आलवे।।53।।

तहेव सावज्जणुमोयणी गिरा,
ओहारिणी जा य परोवघाइणी।
से कोह लोह भयसा व माणवा!,
न हासमाणो वि गिरं वएज्जा।।54।।

स-वक्कसुद्धिं समुपेहिया मुणी,
गिरं च दुट्ठं परिवज्जए सया।
मियं अदुट्ठं अणुवीइ भासए,
सयाण मज्झे लहई पसंसणं।।55।।

भासाएँ दोसे य गुणे य जाणिया,
तीसे य दुट्ठाएँ विवज्जए सया।
छसु संजए सामणिए सया जए,
वएज्ज बुद्धे हियमाणुलोमियं।।56।।

परिक्खभासी सुसमाहिइंदिए,
चउक्कसायावगए अणिस्सिए।
स निद्धुणे धुण्णमलं पुरेकडं,
आराहए लोगमिणं तहा परं।।57।।

ति बेमि।।

।। सत्तमं वक्कसुद्धिअज्झयणं समत्तं ।।

अट्ठमं आयारप्पणिहिअज्झयणं

आयारप्पणिहिं लद्धुं , जहा कायव्व भिक्खुणा।
तं भे उदाहरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे।।1।।
पुढवि दग अगणि वाऊ, तण रुक्ख सबीयगा।
तसा य पाणा जीव त्ति, इइ वुत्तं महेसिणा।।2।।
तेसिं अच्छणजोएण, निच्चं होयव्वयं सिया।
मणसा काय वक्केणं, एवं भवइ संजए।।3।।
पुढविं भित्तिं सिलं लेलुं, नेव भिंदे न संलिहे।
तिविहेण करणजोएण, संजए सुसमाहिए।।4।।
सुद्धपुढवीए न निसिए, ससरक्खम्मि आसणे।
पमज्जित्तु निसीएज्जा, जाणित्तु जाइयोग्गहं।।5।।
सीओदगं न सेवेज्जा, सिला वुट्ठं हिमाणि य।
उसिणोदगं तत्तफासुयं, पडिगाहेज्ज संजए।।6।।
उदओल्लं अप्पणो कायं, नेव पुंछे न संलिहे।
समुप्पेह तहाभूयं, नो णं संघट्टए मुणी।।7।।
इंगालं अगणिं अच्चिं, अलायं वा सजोइयं।
न उंजेज्जा न घट्टेज्जा, नो णं निव्वावए मुणी।।8।।
तालियंटेण पत्तेण, साहाविहुवणेण वा।
न वीएज्जऽप्पणो कायं, बाहिरं वा वि पोग्गलं।।9।।
तण-रुक्खं न छिंदेज्जा, फलं मूलं व कस्सइ।
आमगं विविहं बीयं, मणसा वि न पत्थए।।10।।

गहणेसु न चिट्ठेज्जा, बीएसु हरिएसु वा।
उदगम्मि तहा निच्चं, उत्तिंग-पणगेसु वा।।11।।
तसे पाणे न हिंसेज्जा, वाया अदुव कम्मुणा।
उवरओ सव्वभूएसु, पासेज्ज विविहं जगं।।12।।
अट्ठ सुहुमाइँ पेहाए, जाइं जाणित्तु संजए।
दयाहिगारी भूएसु, आस चिट्ठ सएहि वा।।13।।
कयराइं अट्ठ सुहुमाइं?, जाइं पुच्छेज्ज संजए।
इमाइं ताइँ मेहावी, आइक्खेज्ज वियक्खणे।।14।।
सिणेहं पुप्फसुहुमं च, पाणुत्तिंगं तहेव य।
पणगं बीय हरियं च, अंडसुहुमं च अट्ठमं।।15।।
एवमेयाणि जाणित्ता, सव्वभावेण संजए।
अप्पमत्ते जए निच्चं, सव्विंदियसमाहिए।।16।।
धुवं च पडिलेहेज्जा, जोगसा पाय-कंबलं।
सेज्जमुच्चारभूमिं च, संथारं अदुवाऽऽसणं।।17।।
उच्चारं पासवणं, खेलं सिंघाण जल्लियं।
फासुयं पडिलेहित्ता, परिट्ठावेज्ज संजए।।18।।
पविसित्तु परागारं, पाणट्ठा भोयणस्स वा।
जयं चिट्ठे मियं भासे, णो रूवेसु मणं करे।।19।।
बहुं सुणेइ कण्णेहिं, बहुं अच्छीहिँ पेच्छइ।
न य दिट्ठं सुयं सव्वं, भिक्खू अक्खाउमरिहइ।।20।।
सुयं वा जइ वा दिट्ठं, न लवेज्जोवघाइयं।
न य केणइ उवाएणं, गिहिजोगं समायरे।।21।।

निट्ठाणं रसनिज्जूढं, भद्दगं पावगं ति वा।
पुट्ठो वा वि अपुट्ठो वा, लाभालाभं न निद्दिसे।।22।।

न य भोयणम्मि गिद्धो, चरे उंछं अयंपुरो।
अफासुयं न भुंजेज्जा, कीयमुद्देसियाऽऽहडं।।23।।

सन्निहिं च न कुव्वेज्जा, अणुमायं पि संजए।
मुहाजीवी असंबद्धे, हवेज्ज जगनिस्सिए।।24।।

लूहवित्ती सुसंतुट्ठे, अप्पिच्छे सुभरे सिया।
आसुरत्तं न गच्छेज्जा, सोच्चाणं जिणसासणं।।25।।

कण्णसोक्खेहिँ सद्देहिं, पेमं नाभिनिवेसए।
दारुणं कक्कसं फासं, काएण अहियासए।।26।।

खुहं पिवासं दुस्सेज्जं, सीउण्हं अरईभयं।
अहियासे अव्वहिओ, देहे दुक्खं महाफलं।।27।।

अत्थंगयम्मि आइच्चे, पुरत्था य अणुग्गए।
आहारमइयं सव्वं, मणसा वि न पत्थए।।28।।

अतिंतिणे अचवले, अप्पभासी मियासणे।
हवेज्ज उयरे दंते, थोवं लद्धुं न खिंसए।।29।।

न बाहिरं परिभवे, अत्ताणं न समुक्कसे।
सुतेण लाभेण लज्जाए, जच्चा तवस बुद्धिए।।30।।

से जाणमजाणं वा, कट्टु आहम्मियं पयं।
संवरे खिप्पमप्पाणं, बीयं तं न समायरे।।31।।

अणायारं परक्कम्म, नेव गूहे न निण्हवे।
सुई सया वियडभावे, असंसत्ते जिइंदिए।।32।।

अमोहं वयणं कुज्जा, आयरियाणं महप्पणो।
तं परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए।।33।।

अधुवं जीवियं नच्चा, सिद्धिमग्गं वियाणिया।
विणियट्टेज्ज भोगेसु, आउं परिमियमप्पणो।।34।।

जरा जाव न पीलेई, वाही जाव न वड्ढई।
जीविंदिया न हायंति, ताव धम्मं समायरे।।35।।

कोहं माणं च मायं च, लोभं च पाववड्ढणं।
वमे चत्तारि दोसे उ, इच्छंतो हियमप्पणो।।36।।

कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो।।37।।

उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे।
मायं चऽज्जवभावेण, लोभं संतुट्ठिए जिणे।।38।।

कोहो य माणो य अणिग्गिहीया, माया य लोभो य विवड्ढमाणा।
चत्तारि एए कसिणा कसाया, सिंचंति मूलाइँ पुणब्भवस्स।।39।।

राइणिएसु विणयं पउंजे, धुवसीलयं सययं न हावएज्जा।
कुम्मे व्व अल्लीण-पलीणगुत्ते, परक्कमेज्जा तव-संजमम्मि।।40।।

निद्दं च न बहुमन्नेज्जा, संपहासं विवज्जए।
मिहोकहाहिं न रमे, सज्झायम्मि रओ सया।।41।।

जोगं च समणधम्मम्मि, जुंजे अणलसो धुवं।
जुत्तो य समणधम्मम्मि, अट्ठं लहइ अणुत्तरं।।42।।

इहलोग-पारत्तहियं, जेणं गच्छइ सोग्गइं।
बहुस्सुयं पज्जुवासेज्जा, पुच्छेज्जऽत्थविणिच्छयं।।43।।

हत्थं पायं च कायं च, पणिहाय जिइंदिए।
अल्लीणगुत्तो निसिए, सगासे गुरुणो मुणी।।44।।

न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ।
न य ऊरुं समासज्ज, चिट्ठेज्जा गुरुणंतिए।।45।।

अपुच्छिओ न भासेज्जा, भासमाणस्स वंतरा।
पिट्ठिमंसं न खाएज्जा, मायामोसं विवज्जए।।46।।

अप्पत्तियं जेण सिया, आसु कुप्पेज्ज वा परो।
सव्वसो तं न भासेज्जा, भासं अहियगामिणिं।।47।।

दिट्ठं मियं असंदिद्धं, पडिपुण्णं वियं जियं।
अयंपुर-मणुव्विग्गं, भासं निसिरे अत्तवं।।48।।

आयारपण्णत्तिधरं, दिट्ठिवायमहिज्जगं।
वइविक्खलियं णच्चा, न तं उवहसे मुणी।।49।।

नक्खत्तं सुमिणं जोगं, निमित्तं मंत भेसजं।
गेहीण तं न आइक्खे, भूयाहिगरणं पयं।।50।।

अन्नट्ठं पगडं लेणं, भएज्ज सयणा-ऽऽसणं।
उच्चारभूमिसंपन्नं, इत्थी-पसुविवज्जियं।।51।।

विवित्ता य भवे सेज्जा, नारीणं न कहे कहं।
गिहिसंथवं न कुज्जा, कुज्जा साहूहि संथवं।।52।।

जहा कुक्कुडपोयस्स, निच्चं कुललओ भयं।
एवं खु बंभयारिस्स, इत्थीविग्गहओ भयं।।53।।

चित्तभित्तिं न निज्झाए, नारिं वा सुअलंकियं।
भक्खरं पिव दट्ठूणं, दिट्ठिं पडिसमाहरे।।54।।

हत्थ-पायपलिच्छिन्नं, कण्ण-नासविगप्पियं।
अवि वाससइं नारिं, बंभयारी विवज्जए।।55।।

विभूसा इत्थिसंसग्गी, पणीयरसभोयणं।
नरस्सऽत्तगवेसिस्स, विसं तालउडं जहा।।56।।

अंग-पच्चंगसंठाणं, चारुल्लविय-पेहियं।
इत्थीणं तं न निज्झाए, कामरागविवड्ढणं।।57।।

विसएसु मणुण्णेसुं, पेमं नाभिनिवेसए।
अणिच्चं तेसि विण्णाय, परिणामं पोग्गलाण उ।।58।।

पोग्गलाण परीणामं, तेसिं णच्चा जहा तहा।
विणीयतण्हो विहरे, सीईभूएण अप्पणा।।59।।

जाए सद्धाएँ निक्खंतो, परियायट्ठाणमुत्तमं।
तमेव अणुपालेज्जा, गुणे आयरियसम्मए।।60।।

तवं चिमं संजमजोगयं च, सज्झायजोगं च सया अहिट्ठए।
सूरे व सेणाएँ समत्तमाउहे, अलमप्पणो होइ अलं परेसिं।।61।।

सज्झाय-सज्झाणरयस्स ताइणो, अपावभावस्स तवे रयस्स।
विसुज्झई जं सें मलं पुरेकडं, समीरियं रुप्पमलं व जोइणा।।62।।

से तारिसे दुक्खसहे जिइंदिए, सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे।
विरायई कम्मघणम्मि अवगए, कसिणऽब्भपुडावगमे व चंदिम।।63।।

त्ति बेमि।।

।।अट्ठमं आयारप्पणिहिअज्झयणं समत्तं।।

नवमं विणयसमाहिअज्झयणं

पढमो उद्देसओ

थंभा व कोहा व मय-प्पमाया, गुरुस्सगासे विणयं न सिक्खे।
सो चेव ऊ तस्स अभूइभावो, फलं व कीयस्स वहाय होइ।।1।।
जे यावि मंदे त्ति गुरुं विइत्ता, डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा।
हीलंति मिच्छं पडिवज्जमाणा, करेंति आसायण ते गुरूणं।।2।।
पगईएँ मंदा वि भवंति एगे, डहरा वि य जे सुय-बुद्धोववेया।
आयारमंता गुण-सुट्ठियप्पा, जे हीलिया सिहिरिव भास कुज्जा।।3।।
जे यावि नागं डहरे त्ति नच्चा, आसायए से अहियाय होइ।
एवाऽऽयरियं पि हु हीलयंतो, नियच्छई जाइपहं खु मंदे।।4।।
आसीविसो यावि परं सुरुट्ठो, किं जीयनासाओँ परं नु कुज्जा?।
आयरियपाया पुण अप्पसन्ना, अबोहि आसायण नत्थि मोक्खो।।5।।
जो पावगं जलियमवक्कमेज्जा, आसीविसं वा वि हु कोवएज्जा।
जो वा विसं खायइ जीवियट्ठी, एसोवमाऽऽसायणया गुरूणं।।6।।
सिया हु से पावय नो डहेज्जा, आसीविसो वा कुविओ न भक्खे।
सिया विसं हालहलं न मारे, न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए।।7।।
जो पव्वयं सिरसा भेत्तुमिच्छे, सुत्तं व सीहं पडिबोहएज्जा।
जो वा दए सत्तिअग्गे पहारं, एसोवमाऽऽसायणया गुरूणं।।8।।
सिया हु सीसेण गिरिं पि भिंदे, सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे।
सिया न भिंदेज्ज व सत्तिअग्गं, न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए।।9।।

आयरियपाया पुण अप्पसन्ना, अबोहि आसायण नत्थि मोक्खो।
तम्हा अणाबाहसुहाभिकंखी, गुरुप्पसायाभिमुहो रमेज्जा।।10।।
जहाऽऽहियग्गी जलणं नमंसे, नाणाहुईमंतपयाभिसित्तं।
एवाऽऽयरियं उवचिट्ठएज्जा, अणंतणाणोवगओ वि संतो।।11।।
जस्संतिए धम्मपयाइँ सिक्खे, तस्संतिए वेणइयं पउंजे।
सक्कारए सिरसा पंजलीओ, काय गिरा भो! मणसा य निच्चं।।12।।
लज्जा दया संजम बंभचेरं, कल्लाणभागिस्स विसोहिठाणं।
जे मे गुरू सययमणुसासयंति, ते हं गुरू सययं पूययामि।।13।।
जहा निसंते तवतऽच्चिमाली, पभासई भारह केवलं तु।
एवाऽऽयरिओ सुय-सील-बुद्धिए, विरायई सुरमज्झे व इंदो।।14।।
जहा ससी कोमुइजोगजुत्ते, नक्खत्त-तारागणपरिवुडप्पा।
खे सोहई विमले अब्भमुक्के, एवं गणी सोहइ भिक्खुमज्झे।।15।।
महागरा आयरिया महेसी, समाहिजोगाण सुय-सील-बुद्धिए।
संपाविउकामे अणुत्तराइं, उवद्विओ तोसएँ धम्मकामी।।16।।
सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं, सुस्सूसए आयरिएऽप्पमत्तो।
आराहइत्ताण गुणे अणेगे, से पावई सिद्धिमणुत्तरं।।17।।
ति बेमि।।

।। विणयसमाहीए पढमो उद्देसओ समत्तो।।

[विणयसमाहीए बीओ **उद्देसओ**]

मूलाओ खंधप्पभवो दुमस्स, खंधाओ पच्छा समुवेंति साला।
साह प्पसाहा विरुहंति पत्ता, तओ सें पुप्फं च फलं रसो य।।1।।

एवं-धम्मस्स विणओ, मूलं परमो से मोक्खो।
जेण कित्तिं सुयं सग्घं, निस्सेसमधिगच्छई।।2।।

जे य चंडे मिए थद्धे, दुव्वाई नियडीसढे।
वुज्झई से अविणीयप्पा, कट्ठं सोयगयं जहा।।3।।

विणयं पि जो उवाएण, चोइओ कुप्पई नरो।
दिव्वं सो सिरिमेज्जंतिं, दंडेण पडिसेहए।।4।।

तहेव अविणीयप्पा, उववज्झा हया गया।
दीसंति दुहमेहंता, आभिओगमुवट्ठिया।।5।।

तहेव सुविणीयप्पा, उववज्झा हया गया।
दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिं पत्ता महाजसा।।6।।

तहेव अविणीयप्पा, लोगंसि नर-नारिओ।
दीसंति दुहमेहंता, छाया विगलितिंदिया।।7।।

दंड-सत्थपरिजुण्णा, असब्भवयणेहि य।
कलुणा विवन्नछंदा, खुप्पिवासाएँ परिगया।।8।।

तहेव सुविणीयप्पा, लोगंसि नर-नारिओ।
दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिं पत्ता महाजसा।।9।।

तहेव अविणीयप्पा, देवा जक्खा य गुज्झगा।
दीसंति दुहमेहंता, आभिओगमुवट्ठिया।।10।।

तहेव सुविणीयप्पा, देवा जक्खा य गुज्झगा।
दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिं पत्ता महाजसा।।11।।

जे आयरिय-उवज्झायाणं, सुस्सूसावयणंकरा।
तेसिं सिक्खा विवड्ढंति, जलसित्ता व पायवा।।12।।

अप्पणट्ठा परट्ठा वा, सिप्पा णेउणियाणि य।
गिहिणो उवभोगट्ठा, इहलोगस्स कारणा।।13।।
जेण बंधं वहं घोरं, परियावं च दारुणं।
सिक्खमाणा नियच्छंति, जुत्ता ते ललिइंदिया।।14।।
ते वि तं गुरुं पूयंति, तस्स सिप्पस्स कारणा।
सक्कारंति नमंसंति, तुट्ठा निद्देसवत्तिणो।।15।।
किं पुण जे सुयग्गाही, अणंतहियकामए।
आयरिया जं वए भिक्खू, तम्हा तं नाइवत्तए।।16।।
नीयं सेज्जं गइं ठाणं, नीयं च आसणं तहा।
नीयं च पाएँ वंदेज्जा, नीयं कुज्जा य अंजलिं।।17।।
संघट्टइत्ता काएणं, तहा उवहिणा अवि।
'खमेह अवराहं मे', वएज्ज 'न पुणो' त्ति य।।18।।
दुग्गवो वा पओएणं, चोइओ वहई रहं।
एवं दुब्बुद्धि किच्चाणं, वुत्तो वुत्तो पकुव्वई।।19।।
कालं छंदोवयारं च, पडिलेहित्ताण हेउहिं।
तेण तेण उवाएणं, तं तं संपडिवायए।।20।।
विवत्ती अविणीयस्स, संपत्ती विणियस्स य।
जस्सेयं दुहओ नायं, सिक्खं से अभिगच्छई।।21।।
जे यावि चंडे मइइड्ढिगारवे, पिसुणे नरे साहस हीणपेसणे।
अदिट्ठधम्मे विणए अकोविए, असंविभागी न हु तस्स मोक्खो।।22।।
निद्देसवत्ती पुण जे गुरूणं, सुयत्थधम्मा विणयम्मि कोविया।
तरित्तु ते ओहमिणं दुरुत्तरं, खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गय।।23।।
त्ति बेमि।।

।। विणयसमाहीए बीओ उद्देसओ समत्तो।।

विणयसमाहीए तइओ उद्देसओ

आयरियऽग्गिमिवाऽऽहियग्गी, सुस्सूसमाणो पडिजागरेज्जा।
आलोइयं इंगियमेव णच्चा, जो छंदमाराहयई, स पुज्जो।।1।।
आयारमट्ठा विणयं पउंजे, सुस्सूसमाणो परिगिज्झ वक्कं।
जहोवइट्ठं अविकंपमाणो, जो छंदमाराहयई, स पुज्जो।।2।।
राइणिएसु विणयं पउंजे, डहरा वि य जे परियायजेट्ठा।
नियत्तणे वट्टइ सच्चवाई, ओवायवं वक्ककरे, स पुज्जो।।3।।
अन्नायउंछं चरई विसुद्धं, जवणट्ठया समुयाणं च निच्चं।
अलद्धुयं नो परिदेवएज्जा लद्धुं, न विकंथयई, स पुज्जो।।4।।
संथार-सेज्जाऽऽसण-भत्त-पाणे, अप्पिच्छया अवि लाभे वि संते।
जो एवमप्पाणऽभितोसएज्जा, संतोसपाहन्नरए, स पुज्जो।।5।।
सक्का सहेउं आसाएँ कंटया, अओमया उच्छहया नरेणं।
अणासए जो उ सहेज्ज कंटए, वईमए कण्णसरे स पुज्जो।।6।।
मुहुत्तदुक्खा हु भवंति कंटया, अओमया ते वि तओ सुउद्धरा।
वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि, वेराणुबंधीणि महब्भयाणि।।7।।
समावयंता वयणाभिघाया, कण्णंगया दुम्मणियं जणंति।
धम्मो त्ति किच्चा परमग्गसूरे, जिइंदिए जो सहई स पुज्जो।।8।।
अवण्णवायं च परम्मुहस्स, पच्चक्खओ पडिणीयं च भासं।
ओहारिणिं अप्पियकारिणिं च, भासं न भासेज्ज सया स पुज्जो।।9।।
अलोलुए अक्कुहए अमायी, अपिसुणे यावि अदीणवित्ती।
नो भावए नो वि य भावियप्पा, अकोउहल्ले य सया स पुज्जो।।10।।

गुणेहिँ साहू अगुणेहऽसाहू, गेण्हाहि साहूगुण मुंचऽसाहू।
वियाणिया अप्पगमप्पएणं, जो राग-दोसेहिँ समो स पुज्जो।।11।।

तहेव डहरं व महल्लगं वा, इत्थी पुमं पव्वइयं गिहिं वा।
नो हीलए नो वि य खिंसएज्जा, थंभं च कोहं च चए स पुज्जो।।12।।

जे माणिया सययं माणयंति, जत्तेण कन्नं व निवेसयंति।
ते माणए माणरिहे तवस्सी, जिइंदिए सच्चरए स पुज्जो।।13।।

तेसिं गुरूणं गुणसागराणं, सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं।
चरे मुणी पंचजए तिगुत्ते, चउक्कसायावगए स पुज्जो।।14।।

गुरुमिह सययं पडियरिय मुणी, जिणवयनिउणे अभिगमकुसले।
धुणिय रय-मलं पुरेकडं, भासुरमउलं गइं गय।।15।।

त्ति बेमि।।

।।विणयसमाहीए तइओ उद्देसओ समत्तो।।

विणयसमाहीए चउत्थो उद्देसओ

सुयं मे आउसं! तेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता।।1।।

कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता?

इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता।।2।।

तं जहा-विणयसमाही, सुयसमाही, तवसमाही, आयारसमाही ।।3।।

विणए, सुए तवे य आयारे निच्चं पंडिया।
अभिरामयंति अप्पाणं जे भवंति जिइंदिया।।4।।

चउव्विहा खलु विणयसमाही भवइ। तं जहा- अणुसासिज्जंतो सुस्सूसइ, सम्मं संपडिवज्जइ, वेयमाराहइ, न य भवइ अत्तसंपग्गहिए चउत्थं पयं भवइ।।5।।

भवइ य एत्थ सिलोगो-

पेहेइ हियाणुसासणं, सुस्सूसई तं च पुणो अहिट्ठए।
न य माणमएण मज्जई, विणयसमाहीए आययट्ठिए ।।6।।

चउव्विहा खलु सुयसमाही भवइ। तं जहा- 'सुयं मे भविस्सइ' त्ति अज्झाइयव्वं भवइ, 'एगग्गचित्तो भविस्सामि' त्ति अज्झाइयव्वं भवइ, 'अप्पाणं ठावइस्सामि' त्ति अज्झाइयव्वं भवइ, 'ठिओ परं ठावइस्सामि' त्ति अज्झाइयव्वं भवइ चउत्थं पयं भवइ।।7।।

भवइ य एत्थ सिलोगो-

नाणमेगग्गचित्तो य, ठिओ ठावयई परं।
सुयाणि य अहिज्जित्ता, रओ सुयसमाहिए।।8।।

चउव्विहा खलु तवसमाही भवइ। तं जहा-नो इहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा, नो परलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा, नो कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा, नऽन्नत्थ निज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा चउत्थं पयं भवइ।।9।।

भवइ य एत्थ सिलोगो-

विविहगुणतवोरए य निच्चं, भवइ निरासए निज्जरट्ठिए।
तवसा धुणइ पुराणपावगं,जुत्तो सया तवसमाहिए।।10।।

चउव्विहा खलु आयारसमाही भवइ। तं जहा-नो इहलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा, नो परलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा, नो कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा, नऽन्नत्थ आरहंतिएहिं हेऊहिं आयारमहिट्ठेज्जा चउत्थं पयं भवइ ।।11।।

भवइ य एत्थ सिलोगो-

जिणवयणरए अतिंतिणे, पडिपुण्णाययमाययट्ठिए।
आयारसमाहिसंवुडे, भवइ य दंते भावसंधए ।।12।।

अभिगयचउरोसमाहिओ, सुविसुद्धो सुसमाहियप्पओ।
विउलहियसुहावहं पुणो, कुव्वइ सो पयखेममप्पणो।।13।।

जाई-मरणाओ मुच्चई, इत्थंथं च जहाति सव्वसो।
सिद्धे वा भवइ सासए, देवे वा अप्परए महिड्ढिए।।14।।
त्ति बेमि।।

।। विणयसमाहीए चउत्थो उद्देसओ समत्तो।।

।। नवमं विणयसमाहिअज्झयणं समत्तं ।।

दसमं सभिक्खूअज्झयणं

निक्खम्ममाणाय बुद्धवयणे, निच्चं चित्तसमाहिओ भवेज्जा।
इत्थीण वसं न यावि गच्छे, वंतं नो पडियाविययति सभिक्खू।।1।।

पुढविं न खणे न खणावए, सीओदगं न पिए न पियावए।
अगणिसत्थं जहा सुनिसियं, तं न जले न जलावए सभिक्खू।।2।।

अनिलेण न वीए न वीयावए हरियाणि न छिंदे न छिंदावए।
बीयाणि सया विवज्जयंतो, सच्चित्तं नाऽऽहारए सभिक्खू।।3।।

वहणं तस-थावराण होइ, पुढवि-दग-कट्ठनिस्सियाणं।
तम्हा उद्देसियं न भुंजे, नो वि पए न पयावए सभिक्खू।।4।।

रोइय नायपुत्तवयणं, अत्तसमे मन्नेज्ज छप्पि काए।
पंच य फासे महव्वयाइं, पंचासवसंवरए य सभिक्खू।।5।।

चत्तारि वमे सया कसाए, धुवजोगी य हवेज्ज बुद्धवयणे।
अहणे निज्जायरूव-रयए ,गिहिजोगं परिवज्जए सभिक्खू।।6।।

सम्मद्दिट्ठि सया अमूढे, अत्थि हु नाणें तवे य संजमे य।
तवसा धुणइ पुराणपावगं, मण-वइ-कायसुसंवुडेसभिक्खू।।7।।

तहेव असणं पाणगं वा, विविहं खाइमसाइमं लभित्ता।
होहिति अट्ठो सुए परे वा, तं न निहे न निहावए सभिक्खू।।8।।

तहेव असणं पाणगं वा, विविहं खाइमसाइमं लभित्ता।
छंदिय साहम्मियाण भुंजे, भोच्चा सज्झायरए य जे स भिक्खू।।9।।

न य विग्गहियं कहं कहेज्जा, न य कुप्पे निहुइंदिए पसंते।
संजमधुवजोगजोगजुत्ते, उवसंते अविहेडए स भिक्खू।।10।।

जो सहइ हु गामकंटए, अक्कोस-पहार-तज्जणाओ य।
भय-भेरवसद्दसंपहासे, समसुह-दुक्खसहे य जे स भिक्खू।।11।।

पडिमं पडिवज्जिया सुसाणे, नो भाए भय-भेरवाइँ दिस्स।
विविहगुण-तवोरए य निच्चं, न सरीरं अभिकंखई सभिक्खू।।12।।

असइं वोसट्ठ-चत्तदेहे, अक्कुट्ठे व हए व लूसिए वा।
पुढवीसमए मुणी हवेज्जा, अनियाणे अकुतूहले सभिक्खू।।13।।

अभिभूय काएण परीसहाइं, समुद्धरे जाइपहाओं अप्पयं।
विइत्तु जाई-मरणं महब्भयं, भवे रए सामणिए सभिक्खू।।14।।
हत्थसंजए पायसंजए, वायसंजए संजइंदिए।
अज्झप्परएँ सुसमाहियप्पा, सुत्तत्थं च वियाणई सभिक्खू।।15।।
उवहिम्मि अमुच्छिए अगढिए, अण्णाउंछपुलाए णिप्पुलाए।
कय-विक्कय-सन्निहीओ विरए, सव्वसंगावगए सभिक्खू।।16।।
अलोलु भिक्खू न रसेसु गिद्धे, उंछं चरे जीविय नाभिकंखे।
इड्ढिं च सक्कारण पूयणं च, जहे ठियप्पा अणिहे सभिक्खू।।17।।
न परं वएज्जासि 'अयं कुसीले', जेणऽन्नों कुप्पेज्ज न तं वएज्जा।
जाणिय पत्तेय पुण्ण-पावं, अत्ताणं न समुक्कसे सभिक्खू।।18।।
न जाइमत्ते न य रूवमत्ते, न लाभमत्ते न सुएण मत्ते।
मयाणि सव्वाणि विवज्जइत्ता, धम्मज्झाणरए य जे स भिक्खू।।19।।
पवेयए अज्जपयं महामुणी, धम्मे ठिओ ठावयई परं पि।
निक्खम्म वज्जेज्ज कुसीललिंगं, न यावि हस्सक्कुहए सभिक्खू।।20।।
तं देहवासं असुइं असासयं, सया जहे निच्चहिए ठियप्पा।
छिंदित्तु जाई-मरणस्स बंधणं, उवेइ भिक्खू अपुणागमं गइं।।21।।
त्ति बेमि।।

।। दसमं सभिक्खूअज्झयणं समत्तं।।

पढमा रइवक्का चूला

इह खलु भो! पव्वइएणं उप्पन्नदुक्खेणं संजमे अरइसमावन्नचित्तेणं ओहाणुप्पेहिणा अणोहाइएणं चेव हयरस्सि-गयंकुस-

पोयपडागारभूयाइं इमाइं अट्ठारस ठाणाइं सम्मं पडिलेहियव्वाइं भवंति।तं जहा-

हंभो ! दुस्समाए दुप्पजीवं। लहुस्सगा इत्तिरिया गिहीणं कामभोगा। भुज्जो य साइबहुला मणुस्सा। इमं च मे दुक्खं न चिरकालोवट्ठाइ भविस्सइ। ओमजणपुरक्कारे। वंतस्स य पडियाइयणं। अहरगइवासोवसंपया। दुल्लभे खलु भो गिहीणं धम्मे गिहवासमज्झे वसंताणं। आयंके से वहाय होइ। संकप्पे से वहाय होइ। सोवक्केसे गिहवासे, निरुवक्केसे परियाए। बंधे गिहवासे, मोक्खे परियाए। सावज्जे गिहवासे, अणवज्जे परियाए। बहुसाहारणा गिहीणं कामभोगा। पत्तेयं पुण्ण-पावं। अणिच्चे मणुयाण जीविए कुसग्गजलबिंदुचंचले। बहुं च खलु पावं कम्मं पगडं। पावाणं च खलु भो! कडाणं कम्माणं पुव्विं दुच्चिण्णाणं दुप्परक्कंताणं वेयइत्ता मोक्खो, नत्थि अवेयइत्ता, तवसा वा झोसइत्ता, अट्ठारसमं पयं भवइ।।1।।

भवइ य एत्थ सिलोगो-

जया य जहई धम्मं, अणज्जो भोगकारणा।
से तत्थ मुच्छिए बाले, आयइं नावबुज्झई।।2।।

जया ओहाविओ होइ, इंदो वा पडिओ छमं।
सव्वधम्मपरिब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पई।।3।।

जया य वंदिमो होइ, पच्छा होइ अवंदिमो।
देवया व चुया ठाणा, स पच्छा परितप्पई।।4।।

जया य पूइमो होइ, पच्छा होइ अपूइमो।
राया व रज्जपब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पई।।5।।

जया य माणिमो होइ, पच्छा होइ अमाणिमो।
सेट्ठि व्व कब्बडे छूढो, स पच्छा परितप्पई।।6।।

जया य थेरओ होइ, समइक्कंतजोव्वणो।
मच्छो गलं गिलित्ता वा, स पच्छा परितप्पई।।7।।

पुत्त-दारपरीकिण्णो, मोहसंताणसंतओ।
पंकोसन्नो जहा नागो, स पच्छा परितप्पई।।8।।

अज्ज ताहं गणी होंतो, भावियप्पा बहुस्सुओ।
जइ हं रमंतो परियाए, सामण्णे जिणदेसिए।।9।।

देवलोगसमाणो उ, परियाओ महेसिणं।
रयाणं अरयाणं तु, महानिरयसालिसो।।10।।

अमरोवमं जाणिय सोक्खमुत्तमं, रयाण परियाएँ तहाऽरयाणं।
निरओवमं जाणिय दुक्खमुत्तमं, रमेज्ज तम्हा परियाएँ पंडिए।।11।।

धम्माओ भट्ठं सिरिओ ववेयं, जन्नग्गि विज्झायमिवऽप्पतेयं।
हीलंति णं दुव्विहियं कुसीला, दाढुद्धियं घोरविसं व नागं।।12।।

इहेवऽधम्मो अयसो अकित्ती, दुन्नामगोत्तं च पिहुज्जणम्मि।
चुयस्स धम्माओ अहम्मसेविणो, संभिन्नवित्तस्स य हेट्ठओ गई।।13।।

भुंजित्तु भोगाइं पसज्झ चेयसा, तहाविहं कट्टु असंजमं बहुं।
गइं च गच्छे अणभिज्झियं दुहं, बोही य से नो सुलभा पुणो पुणो।।14।।

इमस्स ता नेरइयस्स जंतुणो, दुहोवणीयस्स किलेसवित्तिणो।
पलिओवमं झिज्जइ सागरोवमं, किमंग! पुण मज्झ इमं मणोदुहं?।।15।।

न मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सई, असासया भोगपिवास जंतुणो।
न मे सरीरेण इमेणऽवेस्सई, अवेस्सई जीवियपज्जवेण मे।।16।।

जस्सेवमप्पा उ हवेज्ज निच्छिओ, जहेज्ज देहं न य धम्मसासणं।
तं तारिसं नो पयलेंति इंदिया, उवेंतवाया व सुदंसणं गिरिं।।17।।

इच्चेव संपस्सिय बुद्धिमं नरो, आयं उवायं विविहं वियाणिया।
काएण वाया अदु माणसेणं, तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिट्ठए।।18।।

त्ति बेमि।।

।। पढमा रइवक्कचूला नाम चूला समत्ता।।

बिइया चूलिया चूला

चूलियं तु पवक्खामि, सुयं केवलिभासियं।
जं सुणेत्तु सपुण्णाणं, धम्मे उप्पज्जई मई।।1।।

अणुसोयपट्ठिए बहुजणम्मि, पडिसोयलद्धलक्खेणं।
पडिसोयमेव अप्पा, दायव्वो होउकामेणं।।2।।

अणुसोयसुहो लोगो, पडिसोओ आसवो सुविहियाणं।
अणुसोओ संसारो, पडिसोओ तस्स उत्तारो।।3।।

तम्हा आयारपरक्कमेण, संवरसमाहिबहुलेणं।
चरिया गुणा य नियमा य, होंति साहूण दट्ठव्वा।।4।।

अणिएयवासो समुयाणचरिया, अण्णायउंछं पइरिक्कया य।
अप्पोवही कलहविवज्जणा य, विहारचरिया इसिणं पसत्था।।5।।

आइण्ण-ओमाणविवज्जणा य, उस्सन्नदिट्ठाहड भत्त-पाणे।
संसट्ठकप्पेण चरेज्ज भिक्खू, तज्जायसंसट्ठ जई जएज्जा।।6।।

अमज्ज-मंसासि अमच्छरीया, अभिक्खणं निव्विगईगया य।
अभिक्खणं काउस्सग्गकारी, सज्झायजोगे पयओ हवेज्जा।।7।।
न पडिण्णवेज्जा सयणाऽऽसणाइं, सेज्जं निसेज्जं तह भत्त-पाणं।
गामे कुले वा नगरे व देसे, ममत्तिभावं न कहिंचि कुज्जा।।8।।
गिहिणो वेयावडियं न कुज्जा, अभिवायण वंदण पूयणं वा।
असंकिलिट्ठेहि समं वसेज्जा, मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी।।9।।
न या लभेज्जा निउणं सहायं, गुणाहियं वा गुणओ समं वा।
एक्को वि पावाइं विवज्जयंतो, चरेज्ज कामेसु असज्जमाणो।।10।।
संवच्छरं वा वि परं पमाणं, बीयं च वासं न तहिं वसेज्जा।
सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू, सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ।।11।।
जो पुव्वरत्तावररत्तकाले, सारक्खती अप्पगमप्पएणं।
किं मे कडं? किंच मे, किच्चसेसं?, किंसक्कणिज्जं न समायरामि?।।12।।
किं मे परो पासइ? किंव अप्पा? किं वाहं खलियं न विवज्जयामि?।
इच्चेव सम्मं अणुपासमाणो अणागयं नो पडिबंध कुज्जा।।13।।
जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं, काएण वाया अदु माणसेणं।
तत्थेव धीरो पडिसाहरेज्जा, आइण्णओ खिप्पमिव क्खलीणं।।14।।
जस्सेरिसा जोग जिइंदियस्स, धिईमओ सप्पुरिसस्स निच्चं।
तमाहु लोए पडिबुद्धजीवी, सो जीवई संजमजीविएण।।15।।
अप्पा खलु सययं रक्खियव्वो, सव्विंदिएहिं सुसमाहिएहिं।
अरक्खिओ जाइपहं उवेई, सुरक्खिओ सव्वदुहाण मुच्चइ।।16।।
त्ति बेमि।।

।। बिइया चूलिआ नाम चूला समत्ता।।

।। दसवेयालियं सुत्तं समत्तं।।

श्री उत्तराध्ययन सूत्र

।। पढमं विणयसुयं अज्झयणं ।।1।।

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो।
विणयं पाउकरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे।।1।।

आणा-णिद्देसकरे, गुरूण-मुववाय-कारए।
इंगियागारसंपन्ने, से विणीए त्ति वुच्चई।।2।।

आणा-ऽणिद्देसकरे, गुरूण-मणुववाय-कारए।
पडिणीए असंबुद्धे, अविणीए त्ति वुच्चई।।3।।

जहा सुणी पूइ-कण्णी, णिक्कसिज्जइ सव्वसो।
एवं दुस्सील-पडिणीए, मुहरी निक्कसिज्जई।।4।।

कण-कुंडग चइत्ताणं, विट्ठं भुंजइ सूयरो।
एवं सीलं चइत्ताणं, दुस्सीले रमई मिए।।5।।

सुणिया भावं साणस्स, सूयरस्स नरस्स य।
विणए ठवेज्ज अप्पाणं, इच्छंतो हिय-मप्पणो।।6।।

तम्हा विणय-मेसेज्जा, सीलं पडि-लभेज्जओ।
बुद्ध-पुत्त नियागट्ठी, न निक्कसिज्जइ कण्हुई।।7।।

निसंते सियाऽमुहरी, बुद्धाणं अंतिए सया।
अट्ठ-जुत्ताणि सिक्खेज्जा, निरट्ठाणि उ वज्जए।।8।।

अणुसासिओ ण कुप्पेज्जा, खंतिं सेवेज्ज पंडिए।
खुड्डेहिं सह संसग्गिं, हासं कीडं च वज्जए।।9।।

मा य चंडालियं कासी, बहुयं मा य आलवे।
कालेण य अहिज्जित्ता, तओ झाइज्ज एगओ।।10।।

आहच्च चंडालियं कट्टु, न निण्हविज्ज कयाइ वि।
कडं कडे त्ति भासेज्जा, अकडं नोकडे त्ति य।।11।।

मा गलियस्से व कसं, वयणमिच्छे पुणो पुणो।
कसं व दट्ठु-माइन्ने, पावगं परिवज्जए।।12।।

अणासवा थूलवया कुसीला, मिउं पि चंडं पकरंति सीसा।
चित्ताणुया लहु दक्खोववेया, पसायए ते हु दुरासयं पि।।13।।

नापुट्ठो वागरे किंचि, पुट्ठो वा नालियं वए।
कोहं असच्चं कुवेज्जा, धारेज्ज पियमप्पियं।।14।।

अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुद्दमो।
अप्पा दंतो सुही होइ, अस्सिं लोए परत्थ य।।15।।

वरं मे अप्पा दंतो, संजमेण तवेण य।
मा हं परेहिं दम्मंतो, बंधणेहिं वहेहि य।।16।।

पडिणीयं च बुद्धाणं, वाया अदुव कम्मुणा।
आवी वा जइ वा रहस्से, नेव कुज्जा कयाइ वि।।17।।

न पक्खओ न पुरओ, णेव किच्चाण पिट्ठओ।
न जुंजे ऊरुणा ऊरुं, सयणे णो पडिस्सुणे।।18।।

नेव पल्हत्थियं कुज्जा, पक्खपिंडं च संजए।
पाए पसारिए वा वि, न चिट्ठे गुरुणंतिए।।19।।

आयरिएहिं वाहिंतो, तुसिणीओ ण कयाइ वि।
पसायपेही नियागट्ठी, उवचिट्ठे गुरुं सया।।20।।

आलवंते लवंते वा, न निसीएज्ज कयाइ वि।
चइऊण-मासणं धीरो, जओ जत्तं पडिस्सुणे।।21।।

आसणगओ न पुच्छेज्जा, नेव सेज्जागओ कयाइ वि।
आगम्मुक्कुडुओ संतो, पुच्छेज्जा पंजलीउडो।।22।।

एवं विणय-जुत्तस्स, सुत्तं अत्थं च तदुभयं।
पुच्छ-माणस्स सीसस्स, वागरेज्ज जहासुयं।।23।।

मुसं परिहरे भिक्खू, न य ओहारिणिं वए।
भासादोसं परिहरे, मायं च वज्जए सया।।24।।

न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं, न निरट्ठं न मम्मयं।
अप्पणट्ठा परट्ठा वा, उभयस्संतरेण वा।।25।।

समरेसु अगारेसु, संधीसु य महापहे।
एगो एगित्थिए सद्धिं, नेव चिट्ठे न संलवे।।26।।

जं मे बुद्धाऽणुसासंति, सीएण फरुसेण वा।
मम लाभो त्ति पेहाए, पयओ तं पडिस्सुणे।।27।।

अणु-सासण-मोवायं, दुक्कडस्स य चोयणं।
हियं तं मन्नई पन्नो, वेसं होइ असाहुणो।।28।।

हियं विगय-भया बुद्धा, फरुसं पि अणुसासणं।
वेसं तं होइ मूढाणं, खंति-सोहिकरं पयं।।29।।

आसणे उव-चिट्ठेज्जा, अणुच्चेऽकुक्कुए थिरे।
अप्पुट्ठाई निरुट्ठाई, निसीएज्ज-ऽप्पकुक्कुए।।30।।

कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे।
अकालं च विवज्जेत्ता, काले कालं समायरे।।31।।

परिवाडीए न चिट्ठेज्जा, भिक्खू दत्तेसणं चरे।
पडि-रूवेण एसित्ता, मियं कालेण भक्खए।।32।।

नाइदूर-मणासण्णे, णाण्णेसिं चक्खु-फासओ।
एगो चिट्ठेज्ज भत्तट्ठा, लंघित्ता तं णाइक्कमे।।33।।

नाइउच्चे व णीए वा, नासन्ने नाइदूरओ।
फासुयं परकडं पिंडं, पडिगाहेज्ज संजए।।34।।

अप्प-पाणेऽप्प-बीयम्मि, पडिच्छन्नम्मि संवुडे।
समयं संजए भुंजे, जयं अपरिसाडियं।।35।।

सु-कडित्ति सु-पक्कित्ति, सु-च्छिन्ने सु-हडे मडे।
सु-निट्ठिए सु-लट्ठित्ति, सावज्जं वज्जए मुणी।।36।।

रमए पंडिए सासं, हयं भद्दं व वाहए।
बालं सम्मइ सासंतो, गलिअस्सं व वाहए।।37।।

खड्डुया मे चवेडा मे, अक्कोसा य वहा य मे।
कल्लाण-मणु-सासंतो, पाव-दिट्ठि त्ति मन्नइ।।38।।

पुत्तो मे भाइ णाइ त्ति, साहू कल्लाण मन्नइ।
पावदिट्ठि उ अप्पाणं, सासं दासि त्ति मन्नइ।।39।।

न कोवए आयरियं, अप्पाणं पि न कोवए।
बुद्धोवघाई न सिया, न सिया तोत्त-गवेसए।।40।।

आयरियं कुवियं नच्चा, पत्तिएण पसायए।
विज्झवेज्ज पंजलिउडो, वएज्ज ण पुणो त्ति य।।41।।

धम्मज्जियं च ववहारं, बुद्धेहिं आयरियं सया।
तमायरंतो ववहारं, गरहं नाभिगच्छई।।42।।

मणोगयं वक्कगयं, जाणित्तायरियस्स उ।
तं परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए।।43।।

वित्ते अचोइए निच्चं, खिप्पं हवइ सुचोइए।
जहोवइट्ठं सुकयं, किच्चाइं कुव्वई सया।।44।।

नच्चा नमइ मेहावी, लोए कित्ती से जायए।
हवइ किच्चाणं सरणं, भूयाणं जगई जहा।।45।।

पुज्जा जस्स पसीयंति, संबुद्धा पुव्वसंथुया।
पसन्ना लाभइस्संति, विउलं अट्ठियं सुयं।।46।।

स पुज्जसत्थे सुविणीय-संसए, मणोरुई चिट्ठइ कम्मसंपया।
तवो-समायारि-समाहिसंवुडे, महज्जुई पंच वयाइं पालिया।।47।।

स देव-गंधव्व-मणुस्सपूइए, चइत्तु देहं मल-पंक-पुव्वयं।
सिद्धे वा हवइ सासए, देवे वा अप्परए महिड्ढिए।।48।।

त्ति बेमि।।

।। विणयसुयं णामं पढमं अज्झयणं समत्तं ।।1।।

।। बिइयं परीसहऽज्झयणं ।।2।।

सुयं मे आउसं! तेणं भगवया एवमक्खायं। इह खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया। जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो नो विनिहण्णेज्जा।

कयरे खलु ते बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो नो विनिहण्णेज्जा?

इमे खलु ते बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा तं जहा-दिगिंछा-परीसहे पिवासा-परीसहे सीय-परीसहे उसिण-परीसहे दंस-मसय-परीसहे अचेल-परीसहे अरइ-परीसहे इत्थी-परीसहे चरिया-परीसहे निसीहिया-परीसहे सेज्जा-परीसहे अक्कोस-परीसहे वह-परीसहे जायणा-परीसहे अलाभ-परीसहे रोग-परीसहे तणफास-परीसहे जल्ल-परीसहे सक्कार-पुरक्कार-परीसहे पन्ना-परीसहे अन्नाण परीसहे दंसण-परीसहे

परीसहाणं पविभत्ती, कासवेणं पवेइया।
तं भे उदाहरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे।।1।।

दिगिंछा-परिगए देहे, तवस्सी भिक्खू थामवं।
न छिंदे न छिंदावए, न पए न पयावए।।2।।

काली-पव्वंग-संकासे, किसे धमणि-संतए।
मायन्ने असण-पाणस्स, अदीण-मणसो चरे।।3।।

तओ पुट्ठो पिवासाए, दोगुंछी लज्ज-संजए।
सीओदगं ण सेवेज्जा, वियडस्सेसणं चरे।।4।।

छिन्ना-वाएसु पंथेसु, आउरे सुपिवासिए।
परिसुक्कमुहादीणे, तं तितिक्खे परीसहं।।5।।

चरंतं विरयं लूहं, सीयं फुसइ एगया।
नाइवेलं मुणी गच्छे, सोच्चा णं जिण-सासणं।।6।।

न मे निवारणं अत्थि, छवित्ताणं न विज्जई।
अहं तु अग्गिं सेवामि, इइ भिक्खू न चिंतए।।7।।

उसिणं परियावेणं, परिदाहेण तज्जिए।
घिंसु वा परियावेणं, सायं नो परिदेवए।।8।।

उण्हाहि-तत्तो मेहावी, सिणाणं नो वि पत्थए।
गायं नो परिसिंचेज्जा, न वीएज्जा य अप्पयं।।9।।

पुट्ठो य दंस-मसएहिं, समरे व महामुणी।
नागो संगामसीसे वा, सूरो अभिहणे परं।।10।।

न संतसे न वारेज्जा, मणं पि न पओसए।
उवेहे न हणे पाणे, भुंजंते मंस-सोणियं।।11।।

परिजुन्नेहिं वत्थेहिं, होक्खामि त्ति अचेलए।
अदुवा सचेले होक्खामि, इइ भिक्खू न चिंतए।।12।।

एगया अचेलए होइ, सचेले यावि गया ।
एयं धम्महियं नच्चा, नाणी नो परिदेवए।।13।।

गामाणुगामं रीयंतं, अणगारं अकिंचणं।
अरई अणुप्पवेसेज्जा, तं तितिक्खे परीसहं।।14।।

अरइं पिट्ठओ किच्चा, विरए आय-रक्खिए।
धम्मारामे निरारंभे, उवसंते मुणी चरे।।15।।

संगो एस मणुस्साणं, जाओ लोगम्मि इत्थिओ।
जस्स एया परिन्नाया, सुकडं तस्स सामण्णं।।16।।

एव-मादाय मेहावी, पंकभूया उ इत्थिओ।
नो ताहिं विनिहन्नेज्जा चरेज्ज-ऽत्तगवेसए।।17।।

एग एव चरे लाढे, अभिभूय परीसहे।
गामे वा नगरे वा वि, निगमे वा रायहाणीए।।18।।

असमाणो चरे भिक्खू, नेव कुज्जा परिग्गहं।
असंसत्तो गिहत्थेहिं, अणिएओ परिव्वए।।19।।

सुसाणे सुन्नगारे वा, रुक्ख-मूले व एगओ।
अकुक्कुओ निसीएज्जा, न य वित्तासए परं।।20।।

तत्थ से चिट्ठमाणस्स, उवसग्गाऽभिधारए।
संकाभीओ न गच्छेज्जा, उट्ठेत्ता अन्न-मासणं।।21।।

उच्चा-वयाहिं सेज्जाहिं, तवस्सी भिक्खु थामवं।
णाइवेलं विहन्नेज्जा, पाव-दिट्ठी विहन्नई।।22।।

पइरिक्कुवस्सयं लद्धुं, कल्लाणं अदुव पावगं।
किमेगरायं करिस्सइ, एवं तत्थ-ऽहियासए।।23।।

अक्कोसेज्जा परे भिक्खुं, न तेसिं पडिसंजले।
सरिसो होइ बालाणं, तम्हा भिक्खू न संजले।।24।।

सोच्चा णं फरुसा भासा, दारुणा गाम-कंटगा।
तुसिणीओ उवेहेज्जा, न ताओ मणसीकरे।।25।।

हओ ण संजले भिक्खू, मणं पि ण पओसए।
तितिक्खं परमं नच्चा, भिक्खू धम्मं विचिंतए।।26।।

समणं संजयं दंतं, हणेज्जा कोइ कत्थई।
नत्थि जीवस्स नासु त्ति, एवं पेहेज्ज संजए।।27।।

दुक्करं खलु भो! निच्चं, अणगारस्स भिक्खुणो।
सव्वं से जाइयं होइ, नत्थि किंचि अजाइयं।।28।।

गोयरग्ग-पविट्ठस्स, पाणी नो सुप्पसारए।
सेओ अगार-वासु त्ति, इइ भिक्खू न चिंतए।।29।।

परेसु घासमेसेज्जा, भोयणे परिनिट्ठिए।
लद्धे पिंडे अलद्धे वा, नाणु-तप्पेज्ज पंडिए।।30।।

अज्जेवाहं न लब्भामि, अवि लाभो सुए सिया।
जो एवं पडिसंचिक्खे, अलाभो तं न तज्जए।।31।।

नच्चा उप्पइयं दुक्खं, वेयणाए दुहट्टिए।
अदीणो ठावए पन्नं, पुट्ठो तत्थ-ऽहियासए।।32।।

तेगिच्छं नाभिनंदेज्जा, संचिक्ख-ऽत्तगवेसए।
एवं खु तस्स सामण्णं, जं न कुज्जा न कारवे।।33।।

अचेलगस्स लूहस्स, संजयस्स तवस्सिणो।
तणेसु सय-माणस्स, हुज्जा गाय-विराहणा।।34।।

आयवस्स निवाएणं, अउला हवइ वेयणा।
एवं नच्चा न सेवंति, तंतुजं तण-तज्जिया।।35।।

किलिण्ण-गाए मेहावी, पंकेण वा रएण वा।
घिंसु वा परियावेणं, सायं नो परिदेवए।।36।।

वेएज्ज निज्जरा-पेही, आरियं धम्म-ऽणुत्तरं।
जाव सरीर-भेउ त्ति, जल्लं काएण धारए।।37।।

अभिवायण-मब्भुट्ठाणं, सामी कुज्जा निमंतणं।
जे ताइं पडिसेवंति, न तेसिं पीहए मुणी।।38।।

अणु-क्कसाई अप्पिच्छे, अन्नाएसी अलोलुए।
रसेसु नाणुगेज्झेज्जा, नाणुतप्पेज्ज पण्णवं।।39।।

से नूणं मए पुव्वं, कम्मा-ऽनाण-फला कडा।
जेणाहं नाभिजाणामि, पुट्ठो केणइ कण्हुई।।40।।

अह पच्छा उइज्जंति, कम्मा-ऽनाण-फला कडा।
एवमस्सासि अप्पाणं, नच्चा कम्म-विवागयं।।41।।

निरट्ठ-गम्मि विरओ, मेहुणाओ सुसंवुडो।
जो सक्खं नाभिजाणामि, धम्मं कल्लाण-पावगं।।42।।

तवोवहाण-मादाय, पडिमं पडिवज्जओ।
एवं वि विहरओ मे, छउमं न णियट्टई।।43।।

नत्थि नूणं परे लोए, इड्ढी वा वि तवस्सिणो।
अदुवा वंचिओ मि त्ति, इइ भिक्खू न चिंतए।।44।।

अभू-जिणा अत्थि-जिणा, अदुवा वि भविस्सई।
मुसं ते एव-माहंसु, इइ भिक्खू न चिंतए।।45।।

एए परीसहा सव्वे, कासवेण पवेइया।
जे भिक्खू न विहण्णेज्जा, पुट्ठो केणइ कण्हुइ।।46।।

।। त्ति बेमि।।

।। बिइयं परीसहऽज्झयणं समत्तं ।।2।।

।। तइयं चउरंगिज्जं अज्झयणं ।।3।।

चत्तारि परमंगाणि, दुल्लहाणीह जंतुणो।
माणुसत्तं सुई सद्धा, संजमम्मि य वीरियं।।1।।

समावण्णा ण संसारे, नाणा-गोत्तासु जाइसु।
कम्मा नाणाविहा कट्टु, पुढो विस्संभिया पया।।2।।

एगया देवलोएसु, नरएसु वि एगया।
एगया आसुरे काये, अहाकम्मेहिं गच्छई।।3।।

एगया खत्तिओ होइ, तओ चंडाल बुक्कसो।
तओ कीड पयंगो य, तओ कुंथू पिवीलिया।।4।।

एवमावट्ट-जोणीसु, पाणिणो कम्म-किव्विसा।
न निव्विज्जंति संसारे, सव्वट्ठेसु व खत्तिया।।5।।

कम्म-संगेहिं सम्मूढा, दुक्खिया बहु-वेयणा।
अमाणुसासु जोणीसु, विणिहम्मंति पाणिणो।।6।।

कम्माणं तु पहाणाए, आणुपुव्वी कयाइ उ।
जीवा सोहि-मणुप्पत्ता, आययंति मणुस्सयं।।7।।

माणुस्सं विग्गहं लद्धुं, सुई धम्मस्स दुल्लहा।
जं सोच्चा पडिवज्जंति, तवं खंति-महिंसयं।।8।।

आहच्च सवणं लद्धुं, सद्धा परमदुल्लहा।
सोच्चा णेयाउयं मग्गं, बहवे परिभस्सई।।9।।

सुइं च लद्धुं सद्धं च, वीरियं पुण दुल्लहं।
बहवे रोयमाणा वि, नो य णं पडिवज्जई।।10।।

माणुसत्तम्मि आयाओ, जो धम्मं सोच्च सद्दहे।
तवस्सी वीरियं लद्धुं, संवुडे निद्धुणे रयं।।11।।

सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई।
निव्वाणं परमं जाइ, घयसित्तिव्व पावए।।12।।

विगिंच कम्मुणो हेउं, जसं संचिणु खंतिए।
सरीरं पाढवं हिच्चा, उड्ढं पक्कमई दिसं।।13।।

विसालिसेहिं सीलेहिं, जक्खा उत्तर-उत्तरा।
महासुक्का व दिप्पंता, मण्णंता अपुणच्चवं।।14।।
अप्पिया देवकामाणं, काम-रूव-विउव्विणो।
उड्ढं कप्पेसु चिट्ठंति, पुव्वा वाससया बहू।।15।।
तत्थ ठिच्चा जहाठाणं, जक्खा आउक्खए चुया।
उवेंति माणुसं जोणिं, से दसंगे-ऽभिजायई।।16।।
खेत्तं वत्थुं हिरण्णं च, पसवो दास-पोरुसं।
चत्तारि काम-खंधाणि, तत्थ से उववज्जई।।17।।
मित्तवं नायवं होइ, उच्चागोए य वण्णवं।
अप्पायंके महा-पन्ने, अभिजाए जसो बले।।18।।
भोच्चा माणुस्सए भोए, अप्पडिरूवे अहाउयं।
पुव्विं विसुद्ध-सद्धम्मे, केवलं बोहि बुज्झिया।।19।।
चउरंगं दुल्लहं णच्चा, संजमं पडिवज्जिया।
तवसा धुयकम्मंसे, सिद्धे हवइ सासए।।20।।
त्ति बेमि।।

।। चउत्थं असंखयं अज्झयणं।।4।।

असंखयं जीविय मा पमायए, जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं।
एवं वियाणाहि जणे पमत्ते, किन्नु विहिंसा अजया गहिंति।।1।।
जे पाव-कम्मेहिं धणं मणुस्सा, समाययंति अमइं गहाय।
पहाय ते पास पयट्टिए नरे, वेराणुबद्धा नरयं उवेंति।।2।।
तेणे जहा संधिमुहे गहीए, सकम्मुणा किच्चइ पावकारी।
एवं पया! पेच्च इहं च लोए, कडाण कम्माण न मुक्ख अत्थि।।3।।

संसारमावन्न परस्स अट्ठा, साहारणं जं च करेइ कम्मं।
कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले, न बंधवा बंधवयं उवेंति।।4।।

वित्तेण ताणं ण लभे पमत्ते, इमम्मि लोए अदुवा परत्था।
दीव-प्पणट्ठे व अणंत-मोहे, नेयाउयं दट्ठु-मदट्ठुमेव।।5।।

सुत्तेसु यावि पडिबुद्ध-जीवी, न वीससे पंडिए आसुपन्ने।
घोरा मुहुत्ता अबलं सरीरं, भारंड-पक्खी व चरेऽप्पमत्ते।।6।।

चरे पयाइं परिसंकमाणो, जं किंचि पासं इह मन्नमाणो।
लाभंतरे जीविय बूहइत्ता, पच्छा परिण्णाय मलावधंसी।।7।।

छंदं निरोहेण उवेइ मोक्खं, आसे जहा सिक्खिय-वम्मधारी।
पुव्वाइं वासाइं चरेऽप्पमत्तो, तम्हा मुणी खिप्प-मुवेइ मोक्खं।।8।।

स पुव्वमेवं न लभेज्ज पच्छा, एसोवमा सासय-वाइयाणं।
विसीयइ सिढिले आउयम्मि, कालोवणीए सरीरस्स भेए।।9।।

खिप्पं न सक्केइ विवेगमेउं, तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे।
समेच्च लोयं समया महेसी, आयाणु-रक्खी चरेऽप्पमत्तो।।10।।

मुहुं मुहुं मोह-गुणे जयंतं, अणेग-रूवा समणं चरंतं।
फासा फुसंती असमंजसं च, न तेसु भिक्खू मणसा पउस्से।।11।।

मंदा य फासा बहुलोहणिज्जा, तहप्पगारेसु मणं न कुज्जा।
रक्खेज्ज कोहं विणएज्ज माणं, मायं न सेवेज्ज पहेज्ज लोहं।।12।।

जे संखया तुच्छ परप्पवाई, ते पेज्ज-दोसाणुगया परज्झा ।
एए अहम्मे त्ति दुगुंछमाणो, कंखे गुणे जाव सरीरभेए।।13।।

।। त्ति बेमि।।

।। असंखयं चउत्थं अज्झयणं समत्तं ।।4।।

।। पंचमं अकाममरणिज्जं अज्झयणं ।।5।।

अन्नवंसि महोहंसि, एगे तिन्ने दुरुत्तरे।
तत्थ एगे महापन्ने, इमं पण्ह-मुदाहरे।।1।।
संतिमे य दुवे ठाणा, अक्खाया मारणंतिया।
अकाम-मरणं चेव, सकाम-मरणं तहा।।2।।
बालाणं तु अकामं तु, मरणं असइं भवे।
पंडियाणं सकामं तु, उक्कोसेण सइं भवे।।3।।
तत्थिमं पढमं ठाणं, महावीरेण देसियं।
काम-गिद्धे जहा बाले, भिसं कूराइं कुव्वई।।4।।
जे गिद्धे काम-भोगेसु, एगे कूडाय गच्छई।
न मे दिट्ठे परे-लोए, चक्खुदिट्ठा इमा रई।।5।।
हत्थागया इमे कामा, कालिया जे अणागया।
को जाणइ परे लोए, अत्थि वा नत्थि वा पुणो?।।6।।
जणेण सद्धिं होक्खामि, इइ बाले पगब्भई।
काम-भोगाणुराएणं, केसं संपडिवज्जई।।7।।
तओ से दंडं समारभई, तसेसु थावरेसु य।
अट्ठाए य अणट्ठाए, भूयगामं विहिंसई।।8।।
हिंसे बाले मुसावाई, माइल्ले पिसुणे सढे।
भुंजमाणे सुरं मंसं, सेयमेयं ति मन्नइ।।9।।
कायसा वयसा मत्ते, वित्ते गिद्धे य इत्थिसु।
दुहओ मलं संचिणई, सिसुनागो व्व मट्टियं।।10।।

तओ पुट्ठो आयंकेणं, गिलाणो परितप्पई।
पभीओ पर-लोगस्स, कम्माणुप्पेहि अप्पणो।।11।।

सुया मे नरए ठाणा, असीलाणं च जा गई।
बालाणं कूर-कम्माणं, पगाढा जत्थ वेयणा।।12।।

तत्थोव-वाइयं ठाणं, जहा मेय-मणुस्सुयं।
आहाकम्मेहिं गच्छंतो, सो पच्छा परितप्पई।।13।।

जहा सागडिओ जाणं, समं हिच्चा महापहं।
विसमं मग्ग-मोइण्णो, अक्खे भग्गम्मि सोयई।।14।।

एवं धम्मं विउक्कम्म, अहम्मं पडिवज्जिया।
बाले मच्चुमुहं पत्ते, अक्खे भग्गे व सोयई।।15।।

तओ से मरणंतम्मि, बाले संतसई भया।
अकाम-मरणं मरइ, धुत्ते व कलिणा जिए।।16।।

एयं अकाम-मरणं, बालाणं तु पवेइयं।
एत्तो सकाम-मरणं, पंडियाणं सुणेह मे।।17।।

मरणं पि स-पुण्णाणं, जहा मेय-मणुस्सुयं।
विप्पसन्न-मणाघायं, संजयाणं वुसीमओ।।18।।

न इमं सव्वेसु भिक्खूसु, न इमं सव्वेसु गारिसु।
नाणा-सीला अगारत्था, विसम-सीला य भिक्खुणो।।19।।

संति एगेहिं भिक्खूहिं, गारत्था संजमुत्तरा।
गारत्थेहि य सव्वेहिं, साहवो संजमुत्तरा।।20।।

चीराजिणं नगिणिणं, जडी संघाडि मुंडिणं।
एयाणि वि न तायंति, दुस्सीलं परियागयं।।21।।

पिंडोलए व्व दुस्सीले, नरगाओ न मुच्चई।
भिक्खाए वा गिहत्थे वा, सुव्वए कम्मइ दिवं।।22।।

अगारिसामाइयंगाणि, सड्ढी काएण फासए।
पोसहं दुहओ पक्खं, एगरायं न हावए।।23।।

एवं सिक्खा-समावन्ने, गिहिवासे वि सुव्वए।
मुच्चई छवि-पव्वाओ, गच्छे जक्ख-सलोगयं।।24।।

अह जे संवुडे भिक्खू, दोण्ह-मन्नयरे सिया।
सव्व-दुक्ख-प्पहीणे वा, देवे वा वि महिड्ढिए।।25।।

उत्तराइं विमोहाइं, जुइ-मंताऽणुपुव्वसो।
समाइन्नाइं जक्खेहिं, आवासाइं जसंसिणो।।26।।

दीहाउया इड्ढिमंता, समिद्धा काम-रूविणो।
अहुणोव-वन्न-संकासा, भुज्जो-अच्चिमालि-प्पभा।।27।।

ताणि ठाणाणि गच्छंति, सिक्खित्ता संजमं तवं।
भिक्खाए वा गिहत्थे वा, जे संति परिनिव्वुडा।।28।।

तेसिं सोच्चा सपुज्जाणं, संजयाणं-वुसीमओ।
न संतसंति मरणंते, सीलवंता बहुस्सुया।।29।।

तुलिया विसेस-मादाय, दया-धम्मस्स खंतिए।
विप्पसीएज्ज मेहावी, तहाभूएण अप्पणा।।30।।

तओ काले अभिप्पेए, सड्ढी तालिसमंतिए।
विणएज्ज लोमहरिसं, भेयं देहस्स कंखए।।31।।

अह कालम्मि संपत्ते, आघायाय समुस्सयं।
सकाम-मरणं मरइ, तिण्ह-मन्नयरं मुणी।।32।।त्ति बेमि।।

।। अकाममरणिज्जं पंचमं अज्झयणं समत्तं।।5।।

।। छट्ठं खुड्डागनियंठिज्जं अज्झयणं ।।6।।

जावंत-ऽविज्जापुरिसा, सव्वे ते दुक्खसंभवा।
लुप्पंति बहुसो मूढा, संसारम्मि अणंतए।।1।।
समिक्ख पंडिए तम्हा, पास जाईपहे बहू।
अप्पणा सच्च-मेसेज्जा, मेत्तिं भूएसु कप्पए।।2।।
माया पिया ण्हुसा भाया, भज्जा पुत्ता य ओरसा।
नालं ते मम ताणाए, लुप्पंतस्स सकम्मुणा।।3।।
एयमट्ठं सपेहाए, पासे समिय-दंसणे।
छिंद गेहिं सिणेहं च, न कंखे पुव्व-संथवं।।4।।
गवासं मणि-कुंडलं, पसवो दास-पोरुसं।
सव्वमेयं चइत्ताणं, काम-रूवी भविस्ससि।।5।।
थावरं जंगमं चेव, धणं धन्नं उवक्खरं।
पच्चमाणस्स कम्मेहिं, नालं दुक्खाउ मोयणे।।6।।
अज्झत्थं सव्वओ सव्वं, दिस्स पाणे पियायए।
न हणे पाणिणो पाणे, भय-वेराओ उवरए।।7।।
आयाणं नरयं दिस्स, नायएज्ज तणामवि।
दोगुंछी अप्पणो पाए, दिन्नं भुंजेज्ज भोयणं।।8।।
इहमेगे उ मन्नंति, अप्पच्चक्खाय पावगं।
आयरियं विदित्ता णं, सव्व-दुक्खा विमुच्चई।।9।।
भणंता अकरेंता य, बंध-मोक्ख-पइन्निणो।
वाया-विरिय-मित्तेण, समासासेंति अप्पयं।।10।।
न चित्ता तायए भासा, कुओ विज्जाणु-सासणं?।
विसन्ना-पाव-कम्मेहिं, बाला पंडिय-माणिणो।।11।।

जे केइ सरीरे सत्ता, वन्ने रूवे य सव्वसो।
मणसा काय-वक्केणं, सव्वे ते दुक्ख-संभवा।।12।।
आवण्णा दीह-मद्धाणं, संसारम्मि अणंतए।
तम्हा सव्व-दिसं पस्सं, अप्पमत्तो परिव्वए।।13।।
बहिया उड्ढ-मादाय, नावकंखे कयाइ वि।
पुव्व-कम्म-खयट्ठाए, इमं देहं समुद्धरे।।14।।
विविच्च कम्मुणो हेउं, कालकंखी परिव्वए।
मायं पिंडस्स पाणस्स, कडं लद्धूण भक्खए।।15।।
सन्निहिं च न कुव्वेज्जा, लेव-मायाए संजए।
पक्खी पत्तं समादाय, निरवेक्खो परिव्वए।।16।।
एसणा-समिओ लज्जू, गामे अनियओ चरे।
अप्पमत्तो पमत्तेहिं, पिंड-वायं गवेसए।।17।।
एवं से उदाहु अणुत्तर-नाणी अणुत्तर-दंसी अणुत्तर-नाण-दंसण-धरे
अरहा नायपुत्ते भगवं वेसालिए वियाहिए।।18।।

।। त्ति बेमि।।

।। खुड्डागनियंठिज्जं छट्ठं अज्झयणं समत्तं ।।6।।

।। सत्तमं एलइज्जं अज्झयणं ।।7।।

जहाऽऽएसं समुद्दिस्स, कोइ पोसेज्ज एलयं।
ओयणं जवसं देज्जा, पोसेज्जा वि सयंगणे।।1।।
तओ से पुट्ठे परिवूढे, जायमेए महोयरे।
पीणिए विउले देहे, आएसं परिकंखए।।2।।

जाव न एइ आएसे, ताव जीवइ से दुही।
अह पत्तम्मि आएसे, सीसं छेत्तूण भुज्जई।।3।।

जहा से खलु ओरब्भे, आएसाए समीहिए।
एवं बाले अहम्मिट्ठे, ईहई नरयाउयं।।4।।

हिंसे बाले मुसावाई, अद्धाणम्मि विलोवए।
अण्णऽदत्तहरे तेणे, माई कण्णुहरे सढे।।5।।

इत्थी-विसय-गिद्धे य, महारंभ-परिग्गहे। भुंजमाणे
सुरं मंसं, परिवूढे परंदमे।।6।।

अय-कक्करभोई य, तुंदिल्ले चिय-लोहिए।
आउयं नरए कंखे, जहाऽऽएसं व एलए।।7।।

आसणं सयणं जाणं, वित्तं कामे य भुंजिया।
दुस्साहडं धणं हेच्चा, बहुं संचिणिया रयं।।8।।

तओ कम्मगुरू जंतू, पच्चुप्पण्ण-परायणे।
अय व्व आगयाऽऽएसे, मरणंतम्मि सोयई।।9।।

तओ आउ-परिक्खीणे, चुया देहा विहिंसगा।
आसुरियं दिसं बाला, गच्छंति अवसा तमं।।10।।

जहा कागिणिए हेउं, सहस्सं हारए नरो।
अपत्थं अंबगं भोच्चा, राया रज्जं तु हारए।।11।।

एवं माणुस्सया कामा, देवकामाण अंतिए।
सहस्स-गुणिया भुज्जो, आउं कामा य दिव्विया।।12।।

अणेग-वासा-नउया, जा सा पण्णवओ ठिई।
जाइं जीयंति दुम्मेहा, ऊणे-वास-सयाउए।।13।।

जहा य तिण्णि वाणिया, मूलं घेत्तूण निग्गया।
एगोऽत्थ लहइ लाभं, एगो मूलेण आगओ।।14।।
एगो मूलं पि हारेत्ता, आगओ तत्थ वाणिओ।
ववहारे उवमा एसा, एवं धम्मे वियाणह।।15।।
माणुसत्तं भवे मूलं, लाभो देवगई भवे।
मूल-च्छेएण जीवाणं, नरग-तिरिक्खत्तणं धुवं।।16।।
दुहओ गई बालस्स, आवई वह-मूलिया।
देवत्तं माणुसत्तं च, जं जिए लोलयासढे।।17।।
तओ जिए सइं होइ, दुविहं दुग्गइं गए।
दुल्लहा तस्स उम्मग्गा, अद्धाए सुचिरादवि।।18।।
एवं जियं सपेहाए, तुलिया बालं च पंडियं।
मूलियं ते पवेसंति, माणुस्सं जोणि-मिंति जे।।19।
वेमायाहिं सिक्खाहिं, जे नरा गिहि-सुव्वया।
उवेंति माणुसं जोणिं, कम्मसच्चा हु पाणिणो।।20।।
जेसिं तु विउला सिक्खा, मूलियं ते अइच्छिया।
सीलवंता सविसेसा, अदीणा जंति देवयं।।21।।
एव-मद्दीणवं भिक्खुं अगारिं च वियाणिया।
कहण्णु जिच्च-मेलिक्खं, जिच्चमाणो न संविदे।।22।।
जहा कुसग्गे उदगं, समुद्देण सम मिणे।
एवं माणुस्सगा कामा, देवकामाण अंतिए।।23।।
कुसग्गमेत्ता इमे कामा, सन्नि-रुद्धम्मि आउए।
कस्स हेउं पुराकाउं, जोगक्खेमं न संविदे?।।24।।

इह कामाऽनियट्टस्स, अत्तट्ठे अवरज्झई।
सोच्चा नेयाउयं मग्गं, जं भुज्जो परिभस्सई।।25।।

इह कामानियट्टस्स, अत्तट्ठे नावरज्झई।
पूइदेह-निरोहेणं, भवे देवे त्ति मे सुयं।।26।।

इड्ढी जुई जसो वण्णो, आउं सुहमणुत्तरं।
भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु, तत्थ से उववज्जई।।27।।

बालस्स पस्स बालत्तं, अहम्मं पडिवज्जिया।
चिच्चा धम्मं अहम्मिट्ठे, नरए उववज्जई।।28।।

धीरस्स पस्स धीरत्तं, सव्व-धम्माणु-वत्तिणो।
चिच्चा अधम्मं धम्मिट्ठे, देवेसु उववज्जई।।29।।

तुलियाण बालभावं, अबालं चेव पंडिए।
चइऊण बालभावं, अबालं सेवए मुणि।।30।।

।।त्ति बेमि।।

।।एलइज्जं सत्तमं अज्झयणं समत्तं।।7।।

।। अट्ठमं काविलीयं अज्झयणं ।।8।।

अधुवे असासयम्मि, संसारम्मि दुक्खपउराए।
किं नाम होज्ज तं कम्मयं, जेणाहं दुग्गइं न गच्छेज्जा?।।1।।

विजहित्तु पुव्वसंजोगं, न सिणेहं कहिंचि कुव्वेज्जा।
असिणेह-सिणेह-करेहिं, दोस-पओसेहिं मुच्चए भिक्खू।।2।।

तो नाण-दंसण-समग्गो, हिय-निस्सेसाय सव्व-जीवाणं।
तेसिं विमोक्खण-ट्ठाए, भासई मुणिवरो विगय-मोहो।।3।।

सव्वं गंथं कलहं च, विप्पजहे तहाविहं भिक्खू।
सव्वेसु काम-जाएसु, पासमाणो न लिप्पई ताई।।4।।
भोगा-मिस-दोस-विसण्णे, हिय-निस्सेयस-बुद्धि-वोच्चत्थे।
बाले य मंदिए मूढे, बज्झई मच्छिया व खेलम्मि।।5।।
दुप्परिच्चया इमे कामा, नो सुजहा अधीर-पुरिसेहिं।
अह संति सुव्वया साहू, जे तरंति अतरं वणिया व।।6।।
समणा मु एगे वयमाणा, पाणवहं मिया अयाणंता।
मंदा निरयं गच्छंति, बाला पावियाहिं दिट्ठीहिं।।7।।
न हु पाणवहं अणुजाणे, मुच्चेज्ज कयाइ सव्व-दुक्खाणं।
एव-मारिएहिं अक्खायं, जेहिं इमो साहुधम्मो पण्णत्तो।।8।।
पाणे य नाइवाएज्जा, से समिए त्ति वुच्चई ताई।
तओ से पावयं कम्मं, निज्जाइ उदगं व थलाओ।।9।।
जग-निस्सिएहिं भूएहिं, तसनामेहिं थावरेहिं च।
नो तेसि-मारभे दंडं, मणसा वयसा कायसा चेव।।10।।
सुद्धेसणाओ नच्चा णं, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं।
जायाए घासमेसेज्जा, रस-गिद्धे न सिया भिक्खाए।।11।।
पंताणि चेव सेवेज्जा, सीयपिंडं पुराण-कुम्मासं।
अदु बुक्कसं पुलागं वा, जवणट्ठाए निसेवए मंथुं।।12।।
जे लक्खणं च सुविणं च, अंगविज्जं च जे पउंजंति।
न हु ते समणा वुच्चंति, एवं आयरिएहिं अक्खायं।।13।।
इह जीवियं अनियमेत्ता, पब्भट्ठा समाहि-जोगेहिं।
ते काम-भोग-रस-गिद्धा, उववज्जंति आसुरे काए।।14।।

तत्तो वि य उव्वट्टित्ता, संसारं बहुं अणुपरियडंति।
बहु-कम्म-लेव-लित्ताणं, बोही होई सुदुल्लहा तेसिं।।15।।
कसिणं पि जो इमं लोयं, पडिपुन्नं दलेज्ज इक्कस्स।
तेणावि से ण संतुस्से, इइ दुप्पूरए इमे आया।।16।।
जहा लाहो तहा लोहो, लाहा लोहो पवड्ढई।
दो-मासकयं कज्जं, कोडीए वि न निट्ठियं।।17।।
नो रक्खसीसु गिज्झेज्जा, गंड-वच्छासु णेग-चित्तासु।
जाओ पुरिसं पलोभित्ता, खेल्लंति जहा व दासेहिं।।18।।
नारीसु नोव-गिज्झेज्जा, इत्थी विप्पजहे अणगारे।
धम्मं च पेसलं नच्चा, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं।।19।।
इइ एस धम्मे अक्खाए, कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं।
तरिहिंति जे उ काहिंति, तेहिं आराहिया दुवे
लोग।।20।। ।त्ति बेमि।।

।। काविलीयं अट्ठमं अज्झयणं समत्तं ।।8।।

।। नवमं नमिपव्वज्जा अज्झयणं।। 9।।

चइऊण देव-लोगाओ, उववण्णो माणुसम्मि लोगम्मि।
उवसंत-मोहणिज्जो, सरई पोराणियं जाइं।।1।।
जाइं सरित्तु भयवं, सहसंबुद्धो अणुत्तरे धम्मे।
पुत्तं ठवित्तु रज्जे, अभिनिक्खमई नमी राया।।2।।
सो देवलोगसरिसे, अंतेउर-वरगओ वरे भोए।
भुंजित्तु नमी राया, बुद्धो भोगे परिच्चियइ।।3।।

मिहिलं सपुर-जणवयं, बल-मोरोहं च परियणं सव्वं।
चिच्चा अभिनिक्खंतो, एगंत-महिड्ढिओ भयवं।।4।।

कोलाहलग-भूयं, आसी मिहिलाए पव्वयंतम्मि।
तइया राय-रिसिम्मि, नमिम्मि अभिनिक्खमंतम्मि।।5।।

अब्भुट्ठियं रायरिसिं, पवज्जा ठाण-मुत्तमं।
सक्को माहण-रूवेणं, इमं वयण-मब्बवी।।6।।

किण्णु भो! अज्ज मिहिलाए, कोलाहलग-संकुला।
सुव्वंति दारुणा सद्दा, पासाएसु गिहेसु य? ।।7।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेउ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी।।8।।

मिहिलाए चेइए वच्छे, सीयच्छाए मणोरमे।
पत्त-पुप्फ-फलोवेए, बहूणं बहु-गुणे सया।।9।।

वाएण हीर-माणम्मि, चेइयम्मि मणोरमे।
दुहिया असरणा अत्ता, एए कंदंति भो! खगा।।10।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण चोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी।।11।।

एस अग्गी य वाऊ य, एयं डज्झइ मंदिरं।
भयवं! अंतेउरं तेणं, कीस णं नाव-पेक्खह।।12।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी।।13।।

सुहं वसामो जीवामो, जेसिं मो नत्थि किंचणं।
मिहिलाए डज्झ-माणीए, न मे डज्झइ किंचणं।।14।।

चत्त-पुत्त-कलत्तस्स, निव्वा-वारस्स भिक्खुणो।
पियं न विज्जई किंचि, अप्पियं पि न विज्जइ।।15।।

बहुं खु मुणिणो भद्दं, अणगारस्स भिक्खुणो।
सव्वओ विप्पमुक्कस्स, एगंत-मणुपस्सओ।।16।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी।।17।।

पागारं कारइत्ताणं, गोपुर-ट्टालगाणि य।
उस्सूलग सयग्घीओ, तओ गच्छसि खत्तिया! ।।18।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी।।19।।

सद्धं नगरं किच्चा, तव-संवर-मग्गलं।
खंतिं निउण-पागारं, तिगुत्तं दुप्पधंसयं।।20।।

धणुं परक्कमं किच्चा, जीवं च इरियं सया।
धिइं च केयणं किच्चा, सच्चेण पलिमंथए।।21।।

तव-नारायजुत्तेणं, भेत्तूणं कम्म-कंचुयं।
मुणी विगय-संगामो, भवाओ परिमुच्चए।।22।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी।।23।।

पासाए कारइत्ताणं, वद्ध-माण-गिहाणि य।
वालग्ग-पोइयाओ य, तओ गच्छसि खत्तिया! ।।24।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी।।25।।

संसयं खलु सो कुणइ, जो मग्गे कुणइ घरं।
जत्थेव गंतु-मिच्छेज्जा, तत्थ कुव्वेज्ज सासयं।।26।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी।।27।।

आमोसे लोमहारे य, गंठिभेए य तक्करे।
नगरस्स खेमं काऊणं, तओ गच्छसि खत्तिया! ।।28।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्ब्वी।।29।।

असइं तु मणुस्सेहिं, मिच्छा-दंडो पउंजई।
अकारिणोऽत्थ बज्झंति, मुच्चई कारओ जणो।।30।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी।।31।।

जे केइ पत्थिवा तुज्झं, नाणमंति नराहिवा।
वसे ते ठावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया! ।।32।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी।।33।।

जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिणे।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ।।34।।

अप्पाणमेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ।
अप्पाणमेव अप्पाणं, जइत्ता सुहमेहए।।35।।

पंचिंदियाणि कोहं, माणं मायं तहेव लोहं च।
दुज्जयं चेव अप्पाणं, सव्वमप्पे जिए जियं।।36।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी।।37।।

जइत्ता विउले जण्णे, भोइत्ता समण-माहणे।
दच्चा भोच्चा य जिट्ठा य, तओ गच्छसि खत्तिया! ।।38।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी।।39।।

जो सहस्सं सहस्साणं, मासे मासे गवं दए।
तस्सावि संजमो सेओ, अदिंतस्स वि किंचणं।।40।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी।।41।।

घोरासमं चइत्ताणं, अण्णं पत्थेसि आसमं।
इहेव पोसह-रओ, भवाहि मणुयाहिवा।।42।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी।।43।।

मासे मासे उ जो बालो, कुसग्गेणं तु भुंजए।
न सो सुअक्खाय-धम्मस्स, कलं अग्घइ सोलसिं।।44।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी।।45।।

हिरण्णं सुवण्णं मणि-मुत्तं, कंसं दूसं च वाहणं।
कोसं वड्ढावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया! ।।46।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी।।47।।

सुवण्ण-रुप्पस्स उ पव्वया भवे, सिया हु केलाससमा असंखया।
नरस्स लुद्धस्स न तेहिं किंचि, इच्छा हु आगाससमा अणंतिया।।48।।

पुढवी साली जवा चेव, हिरण्णं पसुभिस्सह।
पडिपुण्णं नाल-मेगस्स, इइ विज्जा तवं चरे।।49।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी।।50।।

अच्छेरग-मब्भुदए, भोए चयसि पत्थिवा! ।
असंते कामे पत्थेसि, संकप्पेण विहम्मसि।।51।।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी।।52।।

सल्लं कामा विसं कामा, कामा आसी-विसोवमा।
कामे य पत्थेमाणा, अकामा जंति दुग्गइं।।53।।

अहे वयइ कोहेणं, माणेणं अहमा गई।
माया गई-पडिग्घाओ, लोहाओ दुहओ भयं।।54।।

अवउज्झिऊण माहणरूवं, विउव्विऊण इंदत्तं।
वंदइ अभित्थुणंतो, इमाहिं महुराहिं वग्गूहिं।।55।।

अहो! ते निज्जिओ कोहो, अहो! माणो पराजिओ।
अहो! ते निरक्किया माया, अहो! लोहो वसीकओ।।56।।

अहो! ते अज्जवं साहु, अहो! ते साहु मद्दवं।
अहो! ते उत्तमा खंती, अहो! ते मुत्ति उत्तमा।।57।।

इहं सि उत्तमो भंते, पेच्चा होहिसि उत्तमो।
लोगुत्त-मुत्तमं ठाणं, सिद्धिं गच्छसि नीरओ।।58।।

एवं अभित्थुणंतो, रायरिसिं उत्तमाए सद्धाए।
पयाहिणं करेंतो, पुणो पुणो वंदई सक्को।।59।।
तो वंदिऊण पाए, चक्कंकुसलक्खणे मुणिवरस्स।
आगासेणु-प्पइओ, ललिय-चवल-कुंडल-तिरीडी।।60।।
नमी नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ।
चइऊण गेहं वइदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ।।61।।
एवं करेंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा।
विणियट्टंति भोगेसु, जहा से नमी रायरिसी।।62।।
त्ति बेमि।।

।। नमिपव्वज्जा नवमं अज्झयणं समत्तं।।9।।

।। दसमं दुमपत्तयं अज्झयणं ।।10।।

दुमपत्तए पंडुयए जहा, निवडइ राइगणाण अच्चए।
एवं मणुयाण जीवियं, समयं गोयम! मा पमायए।।1।।
कुसग्गे जह ओस-बिंदुए, थोवं चिट्ठइ लंबमाणए।
एवं मणुयाण जीवियं, समयं गोयम! मा पमायए।।2।।
इइ इत्तरियम्मि आउए, जीवियए बहु-पच्चवायए।
विहुणाहि रयं पुरेकडं, समयं गोयम! मा पमायए।।3।।
दुल्लहे खलु माणुसे भवे, चिरकालेण वि सव्वपाणिणं।
गाढा य विवाग कम्मुणो, समयं गोयम! मा पमायए।।4।।
पुढवी-काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं, समयं गोयम! मा पमायए।।5।।

आउक्काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं, समयं गोयम! मा पमायए।।6।।

तेउक्काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं, समयं गोयम! मा पमायए।।7।।

वाउक्काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं, समयं गोयम! मा पमायए।।8।।

वणस्सइ-काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे।
काल-मणंत दुरंतयं, समयं गोयम ! मा पमायए।।9।।

बेइंदिय-काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखेज्ज-सन्नियं, समयं गोयम ! मा पमायए।।10।।

तेइंदिय-काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखेज्ज-सन्नियं, समयं गोयम ! मा पमायए।।11।।

चउरिंदिय काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखेज्ज-सन्नियं, समयं गोयम ! मा पमायए।।12।।

पंचिंदिय-काय-मइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे।
सत्तऽट्ठभवगहणे, समयं गोयम ! मा पमायए।।13।।

देवे नेरईए य अइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे।
इक्केक्क-भव-गहणे, समयं गोयम ! मा पमायए।।14।।

एवं भव-संसारे, संसरइ सुहा-सुहेहिं कम्मेहिं।
जीवो पमाय-बहुलो, समयं गोयम ! मा पमायए।।15।।

लद्धूण वि माणुसत्तणं, आरियत्तणं पुणरावि दुल्लहं।
बहवे दसुया मिलक्खुया, समयं गोयम ! मा पमायए।।16।।

लद्धूण वि आयरियत्तणं, अहीणपंचिंदियता हु दुल्लहा।
विगलिंदियया हु दीसई, समयं गोयम ! मा पमायए।।17।।

अहीणपंचिंदियत्तं पि से लहे, उत्तम-धम्मसुई हु दुल्लहा।
कुतित्थि-निसेवए जणे, समयं गोयम ! मा पमायए।।18।।

लद्धूण वि उत्तमं सुइं, सद्दहणा पुणोरावि दुल्लहा।
मिच्छत्त-निसेवए जणे, समयं गोयम ! मा पमायए।।19।।

धम्मं पि हु सद्दहंतया, दुल्लहया काएण फासया।
इह काम-गुणेहिं मुच्छिया, समयं गोयम ! मा पमायए।।20।।

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
से सोय-बले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए।।21।।

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
से चक्खु-बले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए।।22।।

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
से घाण-बले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए।।23।।

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
से जिब्भ-बले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए।।24।।

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
से फास-बले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए।।25।।

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
से सव्व-बले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए।।26।।

अरई गंडं विसूइया, आयंका विविहा फुसंति ते।
विहडइ विद्धंसइ ते सरीरयं, समयं गोयम ! मा पमायए।।27।।

वुच्छिंद सिणेह-मप्पणो, कुमुयं सारइयं व पाणियं।
से सव्व-सिणेह-वज्जिए, समयं गोयम ! मा पमायए।।28।।

चिच्चाण धणं च भारियं, पव्वइओ हि सि अणगारियं।
मा वंतं पुणो वि आविए, समयं गोयम! मा पमायए।।29।।

अवउज्झिय मित्त-बंधवं, विउलं चेव धणोह-संचयं।
मा तं बिइयं गवेसए, समयं गोयम! मा पमायए।।30।।

न हु जिणे अज्ज दीसई, बहुमए दीसइ मग्गदेसिए।
संपइ नेयाउए पहे, समयं गोयम! मा पमायए।।31।।

अवसोहिय कंटगापहं, ओइण्णो सि पहं महालयं।
गच्छसि मग्गं विसोहिया, समयं गोयम! मा पमायए।।32।

अबले जह भारवाहए, मा मग्गे विसमे-ऽवगाहिया।
पच्छा पच्छाणुतावए, समयं गोयम! मा पमायए।।33।।

तिण्णो हु सि अन्नवं महं, किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ?।
अभितुर पारं गमित्तए, समयं गोयम! मा पमायए।।34।।

अकलेवर सेणिमूसिया, सिद्धिं गोयम! लोयं गच्छसि।
खेमं च सिवं अणुत्तरं, समयं गोयम! मा पमायए।।35।।

बुद्धे परि-निव्वुडे चरे, गाम गए नगरे व संजए।
संति-मग्गं च वूहए, समयं गोयम! मा पमायए।।36।।

बुद्धस्स निसम्म भासियं, सुकहिय-मट्ठपओव-सोहियं।
रागं दोसं च छिंदिया, सिद्धिगइं गए गोयमे।।37।।

त्ति बेमि।।

।। दुमपत्तयं दसमं अज्झयणं समत्तं ।।10।।

।। एगारसं बहुस्सुयपुज्जं अज्झयणं ।।11।।

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो।
आयारं पाउकरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे।।1।।
जे यावि होइ निव्विज्जे, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
अभिक्खणं उल्लवई, अविणीए अबहुस्सुए।।2।।
अह पंचहिं ठाणेहिं, जेहिं सिक्खा न लब्भई।
थंभा कोहा पमाएणं, रोगेणाऽऽलस्सएण य।।3।।
अह अट्ठहिं ठाणेहिं, सिक्खासीले त्ति वुच्चई।
अहस्सिरे सया दंते, न य मम्म-मुदाहरे।।4।।
नासीले ण विसीले, न सिया अइलोलुए।
अकोहणे सच्चरए, सिक्खासीले त्ति वुच्चई।।5।।
अह चोद्दसहिं ठाणेहिं, वट्टमाणे उ संजए।
अविणीए वुच्चई सो उ, णिव्वाणं च ण गच्छई।।6।।
अभिक्खणं कोही हवइ, पबंधं च पकुव्वई।
मित्तिज्जमाणो वमई, सुयं लद्धूण मज्जई।।7।।
अवि पाव-परिक्खेवी, अवि मित्तेसु कुप्पई।
सुप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे भासइ पावगं।।8।।
पइण्णवाई दुहिले, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
असंविभागी अवियत्ते, अविणीए त्ति वुच्चई।।9।।
अह पण्णरसहिं ठाणेहिं, सुविणीए त्ति वुच्चई।
नीयावत्ती अचवले, अमाई अकुऊहले।।10।।

अप्पं च अहिक्खिवइ, पबंधं च न कुव्वई।
मेत्तिज्जमाणो भयई, सुयं लद्धुं न मज्जई।।11।।
न य पाव-परिक्खेवी, न य मित्तेसु कुप्पई।
अप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे कल्लाण भासई।।12।।
कलह- डमर- वज्जिए, बुद्धे अभिजाइए।
हिरिमं पडिसंलीणे, सुविणीए त्ति वुच्चई।।13।।
वसे गुरुकुले निच्चं, जोगवं उवहाणवं।
पियंकरे पियंवाई, से सिक्खं लद्धु-मरिहई।।14।।
जहा संखम्मि पयं निहियं , दुहओ वि विरायई।
एवं बहुस्सुए भिक्खू, धम्मो कित्ती तहा सुयं।।15।।
जहा से कंबोयाणं, आइण्णे कंथए सिया।
आसे जवेण पवरे, एवं हवइ बहुस्सुए।।16।।
जहाऽऽइण्ण समारूढे, सूरे दढ-परक्कमे।
उभओ नंदि-घोसेणं, एवं हवइ बहुस्सुए।।17।।
जहा करेणु-परिकिन्ने, कुंजरे सट्ठिहायणे।
बलवंते अप्पडिहए, एवं हवइ बहुस्सुए।।18।।
जहा से तिक्खसिंगे जायक्खंधे विरायई।
वसहे जूहाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए।।19।।
जहा से तिक्खदाढे, उदग्गे दुप्पहंसए।
सीहे मियाण पवरे, एवं हवइ बहुस्सुए।।20।।
जहा से वासुदेवे, संख-चक्क-गदा-धरे।
अप्पडिहय-बले जोहे, एवं हवइ बहुस्सुए।।21।।

जहा से चाउरंते, चक्कवट्टी महिड्ढिए।
चोद्दसरयणाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए।।22।।
जहा से सहस्सक्खे, वज्जपाणी पुरंदरे।
सक्के देवाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए।।23।।
जहा से तिमिर-विद्धंसे, उच्चिट्ठंते दिवायरे।
जलंते इव तेएण, एवं हवइ बहुस्सुए।।24।।
जहा से उडुवई चंदे, नक्खत्त-परिवारिए।
पडिपुण्णे पुण्णमासीए, एवं हवइ बहुस्सुए।।25।।
जहा से सामाइयाणं, कोट्ठागारे सुरक्खिए।
नाणा-धन्न-पडिपुन्ने, एवं हवइ बहुस्सुए।।26।।
जहा सा दुमाण पवरा, जंबू नाम सुदंसणा।
अणाढियस्स देवस्स, एवं हवइ बहुस्सुए।।27।।
जहा सा नईण पवरा, सलिला सागरंगमा।
सीया नीलवंत-पवहा, एवं हवइ बहुस्सुए।।28।।
जहा से नगाण पवरे, सुमहं मंदरे गिरी।
नाणोसहि-पज्जलिए, एवं हवइ बहुस्सुए।।29।।
जहा से सयंभू-रमणे, उदही अक्खओदए।
नाणा-रयण-पडिपुण्णे, एवं हवइ बहुस्सुए।।30।।
समुद्द-गंभीर-समा दुरासया, अचक्किया केणइ दुप्पहंसया।
सुयस्स पुण्णा विउलस्स ताइणो, खवेत्तु कम्मं गइमुत्तमं गया।।31।।
तम्हा सुय-महिट्ठिज्जा, उत्तमट्ठगवेसए।
जेणऽप्पाणं परं चेव, सिद्धिं संपाउणिज्जासि।।32।। त्ति बेमि।।

।। बहुस्सुयपुज्जं एगारसं अज्झयणं समत्तं।।11।।

||बारसमं हरिएसिज्जं अज्झयणं|| 12||

सोवाग-कुल-संभूओ, गुणुत्तरधरो मुणी।
हरिएस-बलो नाम, आसि भिक्खू जिइंदिओ||1||

इरि-एसण-भासाए, उच्चार-समिईसु य।
जओ आयाण-निक्खेवे, संजओ सुसमाहिओ||2||

मण-गुत्तो वय-गुत्तो, काय-गुत्तो जिइंदिओ।
भिक्खट्ठा बंभ-इज्जम्मि, जन्नवाडमुवट्ठिओ||3||

तं पासिऊणं एज्जंतं, तवेण परिसोसियं।
पंतोवहिउवगरणं, उवहसंति अणारिया||4||

जाईमय-पडिथद्धा, हिंसगा अजिइंदिया।
अबंभ-चारिणो बाला, इमं वयण-मब्बवी||5||

कयरे आगच्छइ दित्त-रूवे, काले विकराले फोक्कणासे।
ओमचेलए पंसु-पिसायभूए, संकरदूसं परिहरिय कंठे?||6||

कयरे तुमं इय अदंसणिज्जे?, काए व आसा इह मागओ सि।
ओमचेलया! पंसुपिसायभूया, गच्छ क्खलाहि किमिहं ठिओ सि?||7||

जक्खे तहिं तिंदुय-रुक्खवासी, अणुकंपओ तस्स महामुणिस्स।
पच्छायइत्ता नियगं सरीरं, इमाइं वयणाइं उदाहरित्था||8||

समणो अहं संजओ बंभयारी, विरओ धण-पयण-परिग्गहाओ।
परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले, अण्णस्स अट्ठा इहमागओ मि||9||

वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जई य, अण्णं पभूयं भवयाण-मेयं।
जाणाहि मे जायणजीविणु त्ति, सेसावसेसं लहऊ तवस्सी||10||

उवक्खडं भोयण माहणाणं, अत्तट्ठियं सिद्ध-मिहेगपक्खं।
न उ वयं एरिस-मण्णपाणं दाहामु तुज्झं किमिहं ठिओ सि?।।11।।
थलेसु बीयाइं ववंति कासगा, तहेव निन्नेसु य आससाए।
एयाए सद्धाए दलाह मज्झं, आराहए पुण्णमिणं खु खित्तं।।12।।
खेत्ताणि अम्हं विइयाणि लोए, जहिं पकिण्णा विरुहंति पुण्णा।
जे माहणा जाइ विज्जोव-वेया, ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं।।13।।
कोहो य माणो य वहो य जेसिं, मोसं अदत्तं च परिग्गहं च।
ते माहणा जाइविज्जाविहूणा, ताइं तु खेत्ताइं सुपावयाइं।।14।।
तुब्भेऽत्थ भो! भारहरा गिराणं, अट्ठं न जाणेह अहिज्ज वेए।
उच्चावयाइं मुणिणो चरंति, ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं।।15।।
अज्झावयाणं पडिकूलभासी, पभाससे किण्णु सगासि अम्हं।
अवि एयं विणस्सउ अण्णपाणं, न य णं दाहामु तुमं नियंठा!।।16।।
समिईहिं मज्झं सुसमाहियस्स, गुत्तीहि गुत्तस्स जिइंदियस्स।
जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्जं, किमज्ज जण्णाण लहित्थ लाहं?।।17।।
के इत्थ खत्ता उवजोइया वा, अज्झावया वा सह खंडिएहिं।
एयं खु दंडेण फलेण हंता, कंठम्मि घेत्तूण खलेज्ज जो णं।।18।।
अज्झावयाणं वयणं सुणेत्ता, उद्धाइया तत्थ बहू कुमारा।
दंडेहिं वेत्तेहिं कसेहिं चेव, समागया तं इसि तालयंति।।19।।
रन्नो तहिं कोसलियस्स धूया, भद्द त्ति नामेण अनिंदियंगी।
तं पासिया संजय हम्ममाणं, कुद्धे कुमारे परिनिव्ववेइ।।20।।
देवाभिओगेण निओइएणं, दिन्ना मु रण्णा मणसा न झाया।
नरिंद-देविंदऽभि-वंदिएणं, जेणामि वंता इसिणा स एसो।।21।।

एसो हु सो उग्गतवो महप्पा, जिइंदिओ संजओ बंभयारी।
जो मे तया नेच्छइ दिज्जमाणिं, पिउणा सयं कोसलिएण रण्णा।।22।।
महाजसो एस महाणुभागो, घोरव्वओ घोरपरक्कमो य।
मा एयं हीलेह अहीलणिज्जं, मा सव्वे तेएण भे निद्दहेज्जा।।23।।
एयाइं तीसे वयणाइं सोच्चा, पत्तीइ भद्दाइ सुभासियाइं।
इसिस्स वेयावडियट्ठयाए, जक्खा कुमारे विनिवारयंति।।24।।
ते घोररूवा ठिय अंतलिक्खे, असुरा तहिं तं जणं तालयंति।
ते भिन्नदेहे रुहिरं वमंते, पासित्तु भद्दा इणमाहु भुज्जो।।25।।
गिरिं नहेहिं खणह, अयं दंतेहिं खायह।
जायतेयं पाएहिं हणह, जे भिक्खुं अवमण्णह।।26।।
आसीविसो उग्गतवो महेसी, घोरव्वओ घोरपरक्कमो य।
अगणिं व पक्खंद पयंगसेणा, जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह।।27।।
सीसेण एयं सरणं उवेह, समागया सव्वजणेण तुब्भे।
जइ इच्छह जीवियं वा धणं वा, लोगं पि एसो कुविओ डहेज्जा।।28।।
अवहेडिय-पिट्ठि-सउत्तमंगे, पसारियाबाहु अकम्मचिट्ठे।
निब्भेरि-यच्छे रुहिरं वमंते, उड्ढंमुहे निग्गयजीह-नेत्ते।।29।।
ते पासिया खंडिय कट्ठभूए, विमणो विसन्नो अह माहणो सो।
इसिं पसाएइ सभारियाओ, हीलं च निंदं च खमाह भंते!।।30।।
बालेहिं मूढेहिं अयाणएहिं, जं हीलिया तस्स खमाह भंते!।
महप्पसाया इसिणो हवंति, न हु मुणी कोव-परा हवंति।।31।।
पुव्विं च इण्हिं च अणागयं च, मण-प्पदोसो न मे अत्थि कोई।
जक्खा हु वेयावडियं करेंति, तम्हा हु एए निहया कुमारा।।32।।

अत्थं च धम्मं च वियाणमाणा, तुब्भे न वि कुप्पह भूइपन्ना।
तुब्भं तु पाए सरणं उवेमो, समागया सव्व-जणेण अम्हे।।33।।
अच्चेमो ते महाभाग! न ते किंचि न अच्चिमो।
भुंजाहि सालिमं कूरं, नाणा-वंजण-संजुयं।।34।।
इमं च मे अत्थि पभूय-मण्णं, तं भुंजसू अम्ह अणुग्गहट्ठा।
बाढं त्ति पडिच्छइ भत्त-पाणं, मासस्स ऊ पारणए महप्पा।।35।।
तहियं गंधोदय-पुप्फवासं, दिव्वा तहिं वसुहारा य वुट्ठा।
पहयाओ दुंदुहीओ सुरेहिं, आगासे अहोदाणं य घुट्ठं।।36।।
सक्खं खु दीसइ तवो-विसेसो, न दीसई जाइ-विसेस कोई ।
सोवागपुत्तं हरिएससाहुं, जस्सेरिसा इड्ढि महाणुभागा।।37।।
किं माहणा! जोइसमारभंता, उदएण सोहिं बहिया विमग्गहा?।
जं मग्गहा बाहिरियं विसोहिं, न तं सुदिट्ठं कुसला वयंति।।38।।
कुसं च जूवं तण-कट्ठ-मग्गिं, सायं च पायं उदगं फुसंता।
पाणाइं भूयाइं विहेडयंता, भुज्जो वि मंदा! पकरेह पावं।।39।।
कहं चरे भिक्खु! वयं जयामो, पावाइं कम्माइं पणुल्लयामो?।
अक्खाहि णे संजय!जक्ख-पूइया!, कहं सुजट्ठं कुसला वयंति?।।40।।
छज्जीवकाए असमारभंता, मोसं अदत्तं च असेवमाणा।
परिग्गहं इत्थिओ माण-मायं, एयं परिन्नाय चरंति दंता।।41।।
सुसंवुडो पंचहिं संवरेहिं, इह जीवियं अणव-कंखमाणा।
वोसट्ठकाया सुइचत्तदेहा, महाजयं जयई जन्नसिट्ठं।।42।।
के ते जोई? के य ते जोइठाणे, का ते सुया? किं व ते कारिसंगं?।
एहा य ते कयरा संति भिक्खू?,कयरेण होमेण हुणासि जोइं?।।43।।

तवो जोई जीवो जोइठाणं, जोगा सुया सरीरं कारिसंगं।
कम्मेहा संजमजोग संती, होमं हुणामि इसिणं पसत्थं।।44।।
के ते हरए? के य ते संतितित्थे?, कहिं सि ण्हाओ व रयं जहासि?।
आइक्ख णे संजय! जक्ख-पूइया!, इच्छामो नाउं भवओ सगासे।।45।।
धम्मे हरए बंभे संतितित्थे, अणाविले अत्त-पसण्णलेसे।
जहिंसि ण्हाओ विमलो विसुद्धो, सुसीइ-भूओ पजहामि दोसं।।46।।
एयं सिणाणं कुसलेहि दिट्ठं, महासिणाणं इसिणं पसत्थं।
जहिंसि ण्हाया विमला विसुद्धा, महारिसी उत्तमं ठाणं पत्ते।।47।।
।।त्ति बेमि।।

।।हरिएसिज्जं बारसमं अज्झयणं समत्तं।।12।।

।।तेरसमं चित्तसंभूइज्जं अज्झयणं।। 13।।

जाईपराजिओ खलु, कासि नियाणं तु हत्थिण-पुरम्मि।
चुलणीए बंभदत्तो, उववण्णो पउमगुम्माओ।।1।।
कंपिल्ले संभूओ, चित्तो पुण जाओ पुरिमतालम्मि।
सेट्ठि-कुलम्मि विसाले, धम्मं सोऊण पव्वइओ।।2।।
कंपिल्लम्मि य नयरे, समागया दो वि चित्त-संभूया।
सुह-दुक्ख-फल-विवागं, कहेंति ते एक्कमेक्कस्स।।3।।
चक्कवट्टी महिड्ढीओ, बंभदत्तो महायसो।
भायरं बहुमाणेणं, इमं वयणमब्बवी।।4।।
आसिमो भायरा दो वि, अण्ण-मण्ण-वसाणुगा।
अण्ण-मण्णमणुरत्ता, अन्न-मन्नहिएसिणो।।5।।

दासा दसन्ने आसी, मिया कालिंजरे नगे।
हंसा मयंगतीराए, सोवागा कासि-भूमिए।।6।।
देवा य देव-लोगम्मि, आसि अम्हे महिड्ढिया।
इमा णो छट्ठिया जाई, अण्ण-मण्णेण जा विणा।।7।।
कम्मा नियाण-प्पगडा, तुमे राय ! विचिंतिया।
तेसिं फल-विवागेण, विप्पओग-मुवागया।।8।।
सच्च-सोय-प्पगडा, कम्मा मए पुरा कडा।
ते अज्ज परिभुंजामो,किण्णु चित्ते वि से तहा?।।9।।
सव्वं सुचिण्णं सफलं नराणं, कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि।
अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहिं,आया ममं पुण्ण-फलोववेए।।10।।
जाणाहि संभूय! महाणुभागं, महिड्ढियं पुन्न-फलोववेयं।
चित्तं पि जाणाहि तहेव रायं!, इड्ढी जुई तस्स वि य प्पभूया।।11।।
महत्थरूवा वयणऽप्पभूया, गाहाऽणुगीया नरसंघमज्झे।
जं भिक्खुणो सील-गुणोववेया, इहं जयंते समणो मि जाओ।।12।।
उच्चोदए महु कक्के य बंभे, पवेइया आवसहा य रम्मा।
इमं गिहं चित्तधणप्पभूयं, पसाहि पंचाल-गुणोववेयं।।13।।
नट्टेहिं गीएहिं य वाइएहिं, नारीजणाइं परिवारयंतो।
भुंजाहि भोगाइं इमाइ भिक्खू!, मम रोयई पव्वज्जा हु दुक्खं।।14।।
तं पुव्वनेहेण कयाणुरागं, नराहिवं कामगुणेसु गिद्धं।
धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही,चित्तो इमं वयण-मुदाहरित्था।।15।।
सव्वं विलवियं गीयं, सव्वं नट्टं विडंबियं।
सव्वे आभरणा भारा, सव्वे कामा दुहावहा।।16।।

बालाभिरामेसु दुहावहेसु, न तं सुहं कामगुणेसु रायं!
विरत्तकामाण तवोधणाणं,जं भिक्खुणं सीलगुणे रयाणं।।17।।
नरिंद! जाई अहमा नराणं,सोवाग-जाई दुहओ गयाणं।
जहिं वयं सव्व-जणस्स वेस्सा,वसीअ सोवाग-निवेसणेसु।।18।।
तीसे य जाईय उ पावियाए, वुच्छा मु सोवाग-निवेसणेसु।
सव्वस्स लोगस्स दुगंछणिज्जा, इहं तु कम्माइं पुरेकडाइं।।19।।
सो दाणि सिं राय! महाणुभागो, महिड्ढिओ पुण्णफलोववेओ।
चइत्तु भोगाइं असासयाइं, आयाणहेउं अभिनिक्खमाहि।।20।।
इह जीविए राय! असासयम्मि, धणियं तु पुन्नाइं अकुव्वमाणो।
से सोयई मच्चुमुहोवणीए,धम्मं अकाऊण परम्मि लोए।।21।।
जहेह सीहो व मियं गहाय, मच्चू नरं नेइ हु अंतकाले।
न तस्स माया व पिया व भाया,कालम्मि तम्मंसहरा भवंति।।22।।
न तस्स दुक्खं विभयंति नाइओ, न मित्तवग्गा न सुया न बंधवा।
एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं,कत्तारमेव अणुजाइ कम्मं।।23।।
चिच्चा दुपयं च चउप्पयं च,खेत्तं गिहं धण-धन्नं च सव्वं।
सकम्म-बीओ अवसो पयाइ,परं भवं सुंदर पावगं वा।।24।।
तं एक्कगं तुच्छ-सरीरगं से, चिईगयं दहिउं य पावगेणं।
भज्जा य पुत्ता वि य नायओ य,दायारमण्णं अणुसंकमंति।।25।।
उवणिज्जइ जीविय-मप्पमायं,वण्णं जरा हरइ नरस्स रायं!।
पंचालराया ! वयणं सुणाहि,मा कासि कम्माइं महालयाइं।।26।।
अहं पि जाणामि जहेह साहू!, जं मे तुमं साहसि वक्कमेयं।
भोगा इमे संगकरा हवंति, जे दुज्जया अज्जो! अम्हारिसेहिं।।27।।

हत्थिणपुरम्मि चित्ता ! दट्‌ठूणं नरवइं महिड्ढियं।
कामभोगेसु गिद्धेणं, नियाणमसुहं कडं।।28।।
तस्स मे अपडिक्कंतस्स, इमं एयारिसं फलं।
जाणमाणो वि जं धम्मं, कामभोगेसु मुच्छिओ।।29।।
नागो जहा पंकजलावसन्नो,दट्‌ठुं थलं नाभिसमेइ तीरं।
एवं वयं कामगुणेसु गिद्धा, न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो।।30।।
अच्चेइ कालो तूरंति राइओ, न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा।
उविच्च भोगा पुरिसं चयंति, दुमं जहा खीणफलं व पक्खी।।31।।
जइ तं सि भोगे चइउं असत्तो, अज्जाइं कम्माइं करेहि रायं!।
धम्मे ठिओ सव्वपयाणुकंपी, तो होहिसि देवो इओ विउव्वी।।32।।
न तुज्झ भोगे चइऊण बुद्धी, गिद्धो सि आरंभ-परिग्गहेसु।
मोहं कओ एत्तिउ विप्पलावो,गच्छामि रायं ! आमंतिओ सि।।33।।
पंचालराया वि य बंभदत्तो, साहुस्स तस्स वयणं अकाउं।
अणुत्तरे भुंजिय कामभोगे, अणुत्तरे सो नरए पविट्ठो।।34।।
चित्तो वि कामेहिं विरत्तकामो, उदग्ग-चारित्त-तवो महेसी।
अणुत्तरं संजम पालइत्ता, अणुत्तरं सिद्धिगइं गओ।।35।।
त्ति बेमि।।

।। चित्तसंभूइज्जं तेरसमं अज्झयणं समत्तं।।13।।

।।चउदसमं उसुयारिज्जं अज्झयणं।।14।।

देवा भवित्ताण पुरे भवम्मि, केई चुया एगविमाणवासी।
पुरे पुराणे उसुयारनामे, खाए समिद्धे सुरलोग-रम्मे।।1।।

सकम्म-सेसेण पुराकएणं, कुलेसुदग्गेसु य ते पसूया।
निव्विण्ण संसारभया जहाय, जिणिंद-मग्गं सरणं पवण्णा।।2।।
पुमत्तमागम्म कुमार दो वि, पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती।
विसालकित्ती य तहेसुयारो, रायऽत्थ देवी कमलावई य।।3।।
जाई-जरा-मच्चुभयाभिभूया, बहिंविहाराभिनिविट्ठचित्ता।
संसारचक्कस्स विमोक्खणट्ठा, दट्ठूण ते कामगुणे विरत्ता।।4।।
पियपुत्तगा दोन्नि वि माहणस्स, सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स।
सरित्तु पोराणिय तत्थ जाइं, तहा सुचिण्णं तव संजमं च।।5।।
ते काम-भोगेसु असज्जमाणा, माणुस्सएसुं जे यावि दिव्वा।
मोक्खाभिकंखी अभिजायसड्ढा, तायं उवागम्म इमं उदाहु।।6।।
असासयं दट्ठु इमं विहारं, बहु-अंतरायं न य दीहमाउं।
तम्हा गिहंसि न रइं लभामो, आमंतयामो चरिस्सामु मोणं।।7।।
अह तायगो तत्थ मुणीण तेसिं, तवस्स वाघायकरं वयासी।
इमं वयं वेयविओ वयंति, जहा न होई असुयाण लोगो।।8।।
अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे, पुत्ते परिट्ठप्प गिहंसि जाया!।
भोच्चा ण भोए सह इत्थियाहिं, आरण्णगा होह मुणी पसत्था।।9।।
सोयग्गिणा आय-गुणिंधणेणं, मोहानिला पज्जलणाहिएणं।
संतत्तभावं परितप्पमाणं, लालप्पमाणं बहुहा बहुं च।।10।।
पुरोहियं तं कमसोऽणुणंतं, निमंतयंतं च सुए धणेणं।
जहक्कमं कामगुणेहिं चेव, कुमारगा ते पसमिक्ख वक्कं।।11।।
वेया अहीया न हवंति ताणं, भुत्ता दिया णेंति तमं तमेणं।
जाया य पुत्ता न हवंति ताणं, को नाम ते अणुमण्णेज्ज एयं?।।12।।

खणमित्तसुक्खा बहुकालदुक्खा, पगामदुक्खा अणिगामसुक्खा।
संसारमोक्खस्स विपक्खभूया, खाणी अणत्थाण उ कामभोगा।।13।।
परिव्वयंते अनियत्तकामे, अहो य राओ परितप्पमाणे।
अण्णप्पमत्ते धणमेसमाणे, पप्पोति मच्चुं पुरिसो जरं च।।14।।
इमं च मे अत्थि इमं च नत्थि, इमं च मे किच्च इमं अकिच्चं।
तं एवमेवं लालप्पमाणं, हरा हरंति त्ति कहं पमाओ?।।15।।
धणं पभूयं सह इत्थियाहिं, सयणा तहा कामगुणा पगामा।
तवं कए तप्पइ जस्स लोगो, तं सव्व साहीण-मिहेव तुब्भं।।16।।
धणेण किं धम्मधुराहिगारे, सयणेण वा कामगुणेहिं चेव?।
समणा भविस्सामु गुणोहधारी, बहिंविहारा अभिगम्म भिक्खं।।17।।
जहा य अग्गी अरणीअसंतो, खीरे घयं तेल्लमहा तिलेसु।
एमेव जाया! सरीरंसि सत्ता, संमुच्छई नासइ नावचिट्ठे।।18।।
नो इंदियग्गेज्झ अमुत्तभावा, अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो।
अज्झत्थहेउं निययऽस्स बंधो, संसारहेउं च वयंति बंधं।।19।।
जहा वयं धम्ममजाणमाणा, पावं पुरा कम्म-मकासि मोहा।
ओरुब्भमाणा परिरक्खियंता, तं नेव भुज्जो वि समायरामो।।20।।
अब्भाहयम्मि लोगम्मि, सव्वओ परिवारिए।
अमोहाहिं पडंतीहिं, गिहंसि न रइं लभे।।21।।
केण अब्भाहओ लोगो?, केण वा परिवारिओ?।
का वा अमोहा वुत्ता?, जाया! चिंतावरो हु मे।।22।।
मच्चुणाऽब्भाहओ लोगो, जराए परिवारिओ।
अमोहा रयणी वुत्ता, एवं ताय! वियाणह।।23।।

जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तई।
अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जंति राइओ।।24।।
जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तई।
धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जंति राइओ।।25।।
एगओ संवसित्ता णं, दुहओ सम्मत्त-संजुया।
पच्छा जाया! गमिस्सामो, भिक्खमाणा कुले कुले।।26।।
जस्सऽत्थि मच्चुणा सक्खं, जस्स चऽत्थि पलायणं।
जो जाणइ न मरिस्सामि, सो हु कंखे सुए सिया।।27।।
अज्जेव धम्मं पडिवज्जयामो, जहिं पवण्णा न पुणब्भवामो।
अणागयं नेव य अत्थि किंचि, सद्धाखमं णे विणइत्तु रागं।।28।।
पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो, वासिट्ठि! भिक्खायरियाइ कालो।
साहाहि रुक्खो लहई समाहिं, छिन्नाहि साहाहि तमेव खाणुं।।29।।
पंखाविहूणो व्व जहेव पक्खी, भिच्चविहूणो व्व रणे नरिंदो।
विवण्णसारो वणिओ व्व पोए, पहीण-पुत्तो मि तहा अहं पि।।30।।
सुसंभिया कामगुणा इमे ते, संपिंडिया अग्गरसप्पभूया।
भुंजामु ता कामगुणे पगामं, पच्छा गमिस्सामु पहाणमग्गं।।31।।
भुत्ता रसा भोइ ! जहाइ णे वओ, न जीवियट्ठा पजहामि भोए।
लाभं अलाभं च सुहं च दुक्खं, संचिक्खमाणो चरिस्सामि मोणं।।32।।
मा हु तुमं सोयरियाण संभरे, जुन्नो व हंसो पडिसोत्तगामी।
भुंजाहि भोगाइं मए समाणं, दुक्खं खु भिक्खायरिया विहारो।।33।।
जहा य भोइ! तणुयं भुयंगो, निम्मोयणिं हिच्च पलेइ मुत्तो।
एमेए जाया पयहंति भोए, ते हं कहं नाणुगमिस्स-मेक्को?।।34।।

छिंदित्तु जालं अबलं व रोहिया, मच्छा जहा कामगुणे पहाय।
धोरेयसीला तवसा उदारा, धीरा हु भिक्खायरियं चरंति।।35।।
नहे व कुंचा समइक्कमंता, तयाणि जालाणि दलित्तु हंसा।
पलिंति पुत्ता य पई य मज्झं, ते हं कहं नाणुगमिस्स-मेक्का?।।36।।
पुरोहियं तं ससुयं सदारं, सोच्चाऽभिनिक्खम्म पहाय भोए।
कुडुंबसारं विउलुत्तमं च, रायं अभिक्खं समुवाय देवी।।37।।
वंतासी पुरिसो रायं ! न सो होइ पसंसिओ।
माहणेण परिच्चत्तं, धणं आदाउमिच्छसि।।38।।

सव्वं जगं जइ तुहं, सव्वं वा वि धणं भवे।
सव्वं वि ते अपज्जत्तं, नेव ताणाय तं तव।।39।।

मरिहिसि रायं ! जया तया वा, मणोरमे कामगुणे पहाय।
एक्को हु धम्मो नरदेव! ताणं, न विज्जई अन्नमिहेह किंचि।।40।।
नाहं रमे पक्खिणी पंजरे वा, संताणछिन्ना चरिस्सामि मोणं।
अकिंचणा उज्जुकडा निरामिसा, परिग्गहारंभनियत्तदोसा।।41।।
दवग्गिणा जहाऽरन्ने, डज्झमाणेसु जंतुसु।
अन्ने सत्ता पमोयंति, राग-द्दोसवसं गया।।42।।

एवमेव वयं मूढा, कामभोगेसु मुच्छिया।
डज्झमाणं न बुज्झामो, रागद्दोसग्गिणा जगं।।43।।

भोगे भोच्चा वमित्ता य, लहुभूय-विहारिणो।
आमोयमाणा गच्छंति, दिया कामकमा इव।।44।।

इमे य बद्धा फंदंति, मम हत्थ-ऽज्जमागया।
वयं च सत्ता कामेसु, भविस्सामो जहा इमे।।45।।

सामिसं कुललं दिस्स, बज्झमाणं निरामिसं।
आमिसं सव्वमुज्झित्ता, विहरिस्सामि निरामिसा।।46।।
गिद्धोवमे उ नच्चा णं, कामे संसार-वड्ढणे।
उरगो सुवण्ण-पासे व्व, संकमाणो तणुं चरे।।47।।
नागो व्व बंधणं छेत्ता, अप्पणो वसहिं वए।
एयं पत्थं महारायं!, उस्सुयारि त्ति मे सुयं।।48।।
चइत्ता विउलं रज्जं, कामभोगे य दुच्चए।
निव्विसया निरामिसा, निन्नेहा निप्परिग्गहा।।49।।
सम्मं धम्मं वियाणित्ता, चेच्चा कामगुणे वरे।
तवं पगिज्झ-ऽहक्खायं, घोरं घोर-परक्कमा।।50।।
एवं ते कमसो बुद्धा, सव्वे धम्म-परायणा।
जम्म-मच्चुभउव्विग्गा, दुक्खस्संत-गवेसिणो।।51।।
सासणे विगयमोहाणं, पुव्विं भावण-भाविया।
अचिरेणेव कालेण, दुक्खस्संत-मुवागया।।52।।
राया सह देवीए, माहणो य पुरोहिओ।
माहणी दारगा चेव, सव्वे ते परिणिव्वुडा।।53।। त्ति बेमि।।
।। उसुयारिज्जं चउदसमं अज्झयणं समत्तं।।14।।

।। पण्णरसमं सभिक्खुयं अज्झयणं ।।15।।

मोणं चरिस्सामि समेच्च धम्मं, सहिए उज्जुकडे नियाणछिन्ने।
संथवं जहेज्ज अकाम-कामे,अण्णायएसी परिव्वए स भिक्खू।।1।।
राओवरयं चरेज्ज लाढे,विरए वेदवियाऽऽय-रक्खिए।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी,जे कम्हि वि न मुच्छिए स भिक्खू।।2।।

अक्कोसवहं विइत्तु धीरे, मुणी चरे लाढे निच्चमायगुत्ते।
अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे, जे कसिणं अहियासए स भिक्खू।।3।।

पंतं सयणासणं भइत्ता, सीउण्हं विविहं च दंसमसगं।
अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे, जे कसिणं अहियासए स भिक्खू।।4।।

नो सक्किइमिच्छई न पूयं, नो वि य वंदणगं कुओ पसंसं?।
से संजए सुव्वए तवस्सी, सहिए आयगवेसए स भिक्खू।।5।।

जेण पुणो जहाइ जीवियं, मोहं वा कसिणं नियच्छई।
नर-नारिं पजहे सया तवस्सी, न य कोऊहलं उवेइ स भिक्खू।।6।।

छिन्नं सरं भोममंतलिक्खं, सुमिणं लक्खण-दंड-वत्थु-विज्जं।
अंगवियारं सरस्स विजयं,जे विज्जाहिं न जीवई स भिक्खू।।7।।

मंतं मूलं विविहं वेज्जचिंतं, वमण-विरेयण-धूमनेत्त-सिणाणं।
आउरे सरणं तिगिच्छियं च, तं परिण्णाय परिव्वए स भिक्खू।।8।।

खत्तियगण-उग्गरायपुत्ता, माहण भोइय विविहा य सिप्पिणो।
नो तेसिं वयइ सिलोगपूयं, तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू।।9।।

गिहिणो जे पव्वइएण दिट्ठा, अप्पवइएण व संथुया हवेज्जा।
तेसिं इहलोइय-फलट्ठा, जो संथवं न करेइ स भिक्खू।।10।।

सयणासण-पाण-भोयणं, विविहं खाइम-साइमं परेसिं।
अदए पडिसेहिए नियंठे, जे तत्थ न पउस्सइ स भिक्खू।।11।।

जं किंचिऽऽहार-पाणगं विविहं,खाइम-साइमं परेसिं लद्धुं।
जो तं तिविहेण नाणुकंपे,मण-वय-काय-सुसंवुडे स भिक्खू।।12।।

आयामगं चेव जवोदणं च, सीयं सोवीर-जवोदगं च।
नो हीलए पिंडं नीरसं तु, पंत-कुलाइं परिव्वए स भिक्खू।।13।।

सद्दा विविहा भवंति लोए,दिव्वा माणुस्सगा तहा तिरिच्छा।
भीमा भयभेरवा उराला,जो सोच्चा न विहिज्जई स भिक्खू।।14।।
वायं विविहं समेच्च लोए,सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी,उवसंते अविहेडए स भिक्खू।।15।।
असिप्प-जीवी अगिहे अमित्ते, जिइंदिए सव्वओ विप्पमुक्के।
अणुक्कसाई लहुअप्पभक्खी, चेच्चा गिहं एगचरे स भिक्खू।।16।।
त्ति बेमि।।

।। सभिक्खुयं पण्णरसमं अज्झयणं समत्तं।।15।।

।। सोलसमं बंभचेरसमाहिठाणं अज्झयणं ।।16।।

सुयं मे आउसं! तेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेर-समाहि-ठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजम-बहुले, संवर-बहुले, समाहि-बहुले, गुत्ते गुत्तिंदिए, गुत्तबंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा।

कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजम-बहुले, संवर-बहुले, समाहि-बहुले, गुत्ते, गुत्तिंदिए, गुत्तबंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा?

इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजम-बहुले, संवर-बहुले, समाहि-बहुले, गुत्ते, गुत्तिंदिए, गुत्तबंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा। तं जहा-विवित्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से निग्गंथे। नो

इत्थि-पसु-पंडग-संसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से निग्गंथे।

तं कहमिति चे? आयरियाह-निग्गंथस्स खलु इत्थि-पसु-पंडग-संसत्ताइं सयणासणाइं सेवमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जेजा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणेज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा नो इत्थि-पसु- पंडग-संसत्ताइं सयणा-सणाइं सेवित्ता हवइ से निग्गंथे।।1।।

नो इत्थीणं कहं कहेत्ता हवइ से निग्गंथे। तं कहमिति चे? आयरियाह निग्गंथस्स खलु इत्थीणं कहं कहेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जेज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा नो इत्थीणं कहं कहेज्जा।।2।।

नो इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरेत्ता हवइ से निग्गंथे। तं कहमिति चे? आयरियाह-निग्गंथस्स खलु इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जा-गयस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जेज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलि-पन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरेज्जा।।3।।

नो इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता हवइ से निग्गंथे। तं कहमिति चे? आयरियाह-निग्गंथस्स

खलु इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोयमाणस्स निज्झायमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जेज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलि-पन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोएज्जा निज्झाएज्जा।।4।।

नो इत्थीणं कुड्डंतरंसि वा दूसंतरंसि वा, भित्तिअंतरंसि वा कूइयसद्दं वा रुइयसद्दं वा गीयसद्दं वा हसियसद्दं वा थणियसद्दं वा कंदियसद्दं वा विलवियसद्दं वा सुणेत्ता हवइ से निग्गंथे। तं कहमिति चे? आयरियाह-निग्गंथस्स खलु इत्थीणं कुड्डंतरंसि वा, दूसंतरंसि वा भित्तिअंतरंसि वा कूइयसद्दं वा रुइयसद्दं वा गीयसद्दं वा हसियसद्दं वा थणियसद्दं वा कंदियसद्दं वा विलवियसद्दं वा सुणमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जेज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीणं कुड्डंतरंसि वा दूसंतरंसि वा भित्तिअंतरंसि वा कूइयसद्दं वा रुइयसद्दं वा गीयसद्दं वा हसियसद्दं वा थणियसद्दं वा कंदियसद्दं वा विलवियसद्दं वा सुणमाणे विहरेज्जा।।5।।

नो निग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरित्ता हवइ से निग्गंथे। तं कहमिति चे? आयरियाह-निग्गंथस्स खलु इत्थीणं पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जेज्जा, भेयं वा लभेज्जा,

उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरेज्जा।।6।।

नो पणीयं आहारं आहारित्ता हवइ से निग्गंथे। तं कहमिति चे? आयरियाह-निग्गंथस्स खलु पणीयं आहारं आहारेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जेज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गंथे पणीयं आहारं आहारेज्जा।।7।।

नो अइमायाए पाणभोयणं आहारित्ता हवइ से निग्गंथे। तं कहमिति चे? आयरियाह-निग्गंथस्स खलु अइमायाए पाणभोयणं आहारेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जेज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गंथे अइमायाए पाणभोयणं आहारेज्जा।।8।।

नो विभूसाणुवादी हवइ से निग्गंथे। तं कहमिति चे? आयरियाह-निग्गंथस्स खलु विभूसावत्तिए विभूसिय-सरीरे इत्थि-जणस्स अभिलसणिज्जे हवइ। तओ णं तस्स इत्थि-जणेणं अभिलसिज्जमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जेज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गंथे विभूसाणुवादी हवेज्जा।।9।।

नो सद्द-रूव-रस-गंध-फासाणुवादी हवइ से निग्गंथे। तं कहमिति चे? आयरियाह-निग्गंथस्स खलु सद्द-रूव-रस-गंध-फासाणुवाइस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जेज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो सद्द-रूव-रस- गंध-फासाणुवादी हवेज्जा से निग्गंथे। दसमे बंभचेरसमाहिठाणे हवइ। भवंति य इत्थ सिलोगा। तं जहा-

जं विवित्त-मणाइण्णं, रहियं इत्थि-जणेण य।
बंभचेरस्स रक्खट्ठा, आलयं तु निसेवए।।1।।

मण-पल्हाय-जणणिं, काम-राग-विवड्ढणिं।
बंभचेररओ भिक्खू, थीकहं तु विवज्जए।।2।।

समं च संथवं थीहिं, संकहं च अभिक्खणं।
बंभचेर-रओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए।।3।।

अंग-पच्चंग-संठाणं, चारु-ल्लविय-पेहियं।
बंभचेर-रओ थीणं, चक्खुगेज्झं विवज्जए।।4।।

कूइयं रुइयं गीयं, हसियं थणिय कंदियं।
बंभचेर-रओ थीणं, सोय-गेज्झं विवज्जए।।5।।

हासं किड्डं रइं दप्पं, सहसाऽवत्तासियाणि य।
बंभचेर-रओ थीणं, नाणुचिंते कयाइ वि।।6।।

पणीयं भत्त-पाणं तु, खिप्पं मय-विवड्ढणं।
बंभचेर-रओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए।।7।।

धम्म-लद्धं मियं काले, जत्तत्थं पणिहाणवं।
नाइ-मत्तं तु भुंजेज्जा, बंभचेर-रओ सया।।8।।

विभूसं परिवज्जेज्जा, सरीर-परिमंडणं।
बंभचेर-रओ भिक्खू, सिंगारत्थं न धारए।।9।।

सद्दे रूवे य गंधे य, रसे फासे तहेव य।
पंचविहे कामगुणे, निच्चसो परिवज्जए।।10।।

आलओ थीजणाइन्नो, थीकहा य मणोरमा।
संथवो चेव नारीणं, तासिं इंदिय-दरिसणं।।11।।

कुइयं रुइयं गीयं, हास-भुत्तासियाणि य।
पणीयं भत्त-पाणं च, अइमायं पाण-भोयणं।।12।।

गत्तभूसणमिट्ठं च, कामभोगा य दुज्जया।
नरस्सऽत्त-गवेसिस्स, विसं तालउडं जहा।।13।।

दुज्जए कामभोगे य, निच्चसो परिवज्जए।
संका-ठाणाणि सव्वाणि, वज्जेज्जा पणिहाणवं।।14।।

धम्मारामे चरे भिक्खू, धिइमं धम्म-सारही।
धम्मारामे रए दंते, बंभचेर-समाहिए।।15।।

देव-दाणव-गंधव्वा, जक्ख-रक्खस-किन्नरा।
बंभयारिं नमंसंति, दुक्करं जे करंति तं।।16।।

एस धम्मे धुवे निच्चे, सासए जिण-देसिए।
सिद्धा सिज्झंति चाणेणं, सिज्झिस्संति तहाऽवरे।।17।।

त्ति बेमि।।

।। बंभचेरसमाहिठाणं सोलसमं अज्झयणं समत्तं।।16।।

।। सत्तरसमं पावसमणिज्जं अज्झयणं ।।17।।

जे केइ उ पव्वइए नियंठे, धम्मं सुणित्ता विणओववन्ने।
सुदुल्लहं लहिउं बोहिलाभं, विहरेज्ज पच्छा य जहासुहं तु।।1।।
सेज्जा दढा पाउरणम्मि अत्थि, उप्पज्जई भोत्तु तहेव पाउं।
जाणामि जं वट्टइ आउसु त्ति, किं नाम काहामि सुएण भंते!।।2।।
जे केइ उ पव्वइए, निद्दासीले पगामसो।
भोच्चा पेच्चा सुहं सुवइ, पाव-समणे त्ति वुच्चई।।3।।
आयरिय-उवज्झाएहिं, सुयं विणयं च गाहिए।
ते चेव खिंसई बाले, पाव-समणे त्ति वुच्चई।।4।।
आयरिय-उवज्झायाणं, सम्मं न पडितप्पई।
अप्पडिपूयए थद्धे, पाव-समणे त्ति वुच्चई।।5।।
सम्मद्दमाणे पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य।
असंजए संजय-मन्नमाणे, पाव-समणे त्ति वुच्चई।।6।।
संथारं फलगं पीढं, निसेज्जं पायकंबलं।
अप्पमज्जिय-मारुहई, पाव-समणे त्ति वुच्चई।।7।।
दवदवस्स चरई, पमत्ते य अभिक्खणं।
उल्लंघणे य चंडे य, पाव-समणे त्ति वुच्चई।।8।।
पडिलेहेइ पमत्ते, अवउज्झइ पायकंबलं।
पडिलेहा-अणाउत्ते, पाव-समणे त्ति वुच्चई।।9।।
पडिलेहेइ पमत्ते, से किंचि हु निसामिया।
गुरुपरिभासए निच्चं, पाव-समणे त्ति वुच्चई।।10।।
बहुमाई पमुहरे, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
असंविभागी अवियत्ते, पाव-समणे त्ति वुच्चई।।11।।

विवायं य उदीरेइ, अहम्मे अत्त-पन्नहा।
वुग्गहे कलहे रत्ते, पाव-समणे त्ति वुच्चई।।12।।

अथिरासणे कुक्कुइए, जत्थ तत्थ निसीयई।
आसणम्मि अणाउत्ते, पाव-समणे त्ति वुच्चई।।13।।

ससरक्ख-पाए सुवई, सेज्जं न पडिलेहए।
संथारए अणाउत्ते, पाव-समणे त्ति वुच्चई।।14।।

दुद्ध-दही-विगईओ, आहारेइ अभिक्खणं।
अरए य तवोकम्मे, पाव-समणे त्ति वुच्चई।।15।।

अत्थंतम्मि य सूरम्मि, आहारेइ अभिक्खणं।
चोइओ पडिचोएइ, पाव-समणे त्ति वुच्चई।।16।।

आयरिय - परिच्चाई परपासंड - सेवए।
गाणंगणिए दुब्भूए, पाव-समणे त्ति वुच्चई।।17।।

सयं गेहं परिच्चिज्ज, परगेहंसि वावरे।
निमित्तेण य ववहरई, पाव-समणे त्ति वुच्चई।।18।।

सन्नाइ-पिंडं जेमेइ, नेच्छई सामुदाणियं।
गिहि- निसेज्जं च वाहेइ, पाव-समणे त्ति वुच्चई।।19।।

एयारिसे पंच-कुसीलऽसंवुडे, रूवंधरे मुणिपवराण हेट्ठिमे।
अयंसि लोए विसमेव गरहिए, न से इहं नेव परत्थ लोए।।20।।

जे वज्जए एए सया उ दोसे, से सुव्वए होइ मुणीण मज्झे।
अयंसि लोए अमयं व पूइए, आराहए लोगमिणं तहा परं।।21।।

त्ति बेमि।।

।। पावसमणिज्जं सत्तरसमं अज्झयणं समत्तं।।17।।

।। अट्ठारसमं संजइज्जं अज्झयणं ।।18।।

कंपिल्ले नयरे राया, उदिन्न-बल-वाहणे।
नामेणं संजओ नामं, मिगव्वं उवणिग्गए।।1।।
हयाणीए गयाणीए, रहाणीए तहेव य।
पायत्ताणीए महया, सव्वओ परिवारिए।।2।।
मिए छुहित्ता हयगओ, कंपिल्लुज्जाण-केसरे।
भीए संते मिए तत्थ, वहेइ रस-मुच्छिए।।3।।
अह केसरम्मि उज्जाणे, अणगारे तवोधणे।
सज्झायज्झाण संजुत्ते, धम्मज्झाणं झियायइ।।4।।
अप्फोव-मंडवम्मि, झायइ खवियासवे।
तस्सागए मिगे पासं, वहेइ से नराहिवे।।5।।
अह आसगओ राया, खिप्प-मागम्म सो तहिं।
हए मिए उ पासित्ता, अणगारं तत्थ पासई।।6।।
अह राया तत्थ संभंतो,अणगारो मणाऽऽहओ।
मए उ मंद-पुन्नेणं, रस-गिद्धेण घंतुणा।।7।।
आसं विसज्जइत्ता णं, अणगारस्स सो निवो।
विणएण वंदए पाए, भगवं! एत्थ मे खमे।।8।
अह मोणेण सो भगवं, अणगारे झाणमस्सिए।
रायाणं न पडिमंतेइ, तओ राया भयद्दुओ।।9।।
संजओ अहमम्मीति, भगवं ! वाहराह मे।
कुद्धे तेएण अणगारे, डहेज्ज नर-कोडिओ।।10।।
अभओ पत्थिवा ! तुज्झं, अभयदाया भवाहि य।
अणिच्चे जीव-लोगम्मि, किं हिंसाए पसज्जसी?।।11।।

जया सव्वं परिच्चज्ज, गंतव्व-मवसस्स ते।
अणिच्चे जीव-लोगम्मि, किं रज्जम्मि पसज्जसी।।12।।

जीवियं चेव रूवं च, विज्जु-संपाय-चंचलं।
जत्थ तं मुज्झसी रायं, पेच्चत्थं नाव-बुज्झसी।।13।।

दाराणि य सुया चेव, मित्ता य तह बंधवा।
जीवंत-मणु-जीवंति, मयं नाणुव्वयंति य।।14।।

नीहरंति मयं पुत्ता, पियरं परम-दुक्खिया।
पियरो वि तहा पुत्ते, बंधू रायं ! तवं चरे।।15।।

तओ तेणऽज्जिए दव्वे, दारे य परि-रक्खिए।
कीलंतिऽन्ने नरा रायं!, हट्ठ-तुट्ठ-मलंकिया।।16।।

तेणावि जं कयं कम्मं, सुहं वा जइवा दुहं।
कम्मुणा तेण संजुत्तो, गच्छइ उ परं भवं।।17।।

सोऊण तस्स सो धम्मं, अणगारस्स अंतिए।
महया संवेग-निव्वेयं, समावन्नो नराहिवो।।18।।

संजओ चइउं रज्जं, निक्खंतो जिण-सासणे।
गद्दभालिस्स भगवओ, अणगारस्स अंतिए।।19।।

चेच्चा रट्ठं पव्वइए, खत्तिए परिभासइ।
जहा ते दीसइ रूवं, पसन्नं ते तहा मणो।।20।।

किंनामे किंगोत्ते?, कस्सट्ठाए व माहणे?।
कहं पडियरसि बुद्धे?, कहं विणीए त्ति वुच्चसि?।।21।।

संजओ नाम नामेणं, तहा गोत्तेण गोयमो।
गद्दभाली ममायरिया, विज्जा-चरण-पारगा।।22।।

किरियं अकिरियं विणयं, अण्णाणं च महामुणी!।
एएहिं चउहिं ठाणेहिं, मेयन्ने किं पभासई।।23।।

इइ पाउकरे बुद्धे, नायए परिनिव्वुए।
विज्जा-चरणसंपन्ने, सच्चे सच्च-परक्कमे।।24।।

पडंति नरए घोरे, जे नरा पाव-कारिणो।
दिव्वं च गइं गच्छंति, चरित्ता धम्म-मारियं।।25।।

माया-वुइय-मेयं तु, मुसा-भासा निरत्थिया।
संजममाणो वि अहं, वसामि इरियामि य।।26।।

सव्वे ए विइया मज्झं, मिच्छादिट्ठी अणारिया।
विज्जमाणे परे-लोए, सम्मं जाणामि अप्पयं।।27।।

अहमासी महापाणे, जुइमं वरिस-सओवमे।
जा सा पाली महापाली, दिव्वा वरिस-सओवमा।।28।।

से चुए बंभ-लोगाओ, माणुसं भव-मागए।
अप्पणो य परेसिं च, आउं जाणे जहा तहा।।29।।

नाणा रुइं च छंदं च, परिवज्जेज्ज संजए।
अणट्ठा जे य सव्वत्था, इइ विज्जा-मणुसंचरे।।30।।

पडिक्कमामि पसिणाणं, परमंतेहिं वा पुणो।
अहो! उट्ठिए अहोरायं, इइ विज्जा तवं चरे।।31।।

जं च मे पुच्छसि काले, सम्मं सुद्धेण चेयसा।
ताइं पाउकरे बुद्धे, तं नाणं जिण-सासणे।।32।।

किरियं च रोयए धीरे, अकिरियं परिवज्जए।
दिट्ठीए दिट्ठिसंपन्ने, धम्मं चरसु दुच्चरं।।33।।

एयं पुण्णपयं सोच्चा, अत्थ-धम्मोवसोहियं।
भरहो वि भारहं वासं, चेच्चा कामाइं पव्वए।।34।।

सगरो वि सागरंतं, भरहवासं नराहिवो।
इस्सरियं केवलं हेच्चा, दयाए परिनिव्वुडे।।35।।

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
पव्वज्ज-मब्भुव-गओ, मघवं नाम महाजसो।।36।।

सणंकुमारो मणुस्सिंदो, चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
पुत्तं रज्जे ठवेऊणं, सो वि राया तवं चरे।।37।।

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
संती संतिकरे लोए, पत्तो गइ-मणुत्तरं।।38।।

इक्खाग-राय-वसभो, कुंथू नाम नरीसरो।
विक्खाय-कित्ती भगवं, पत्तो गइ-मणुत्तरं।।39।।

सागरंतं चइत्ता णं, भरहं नरवरीसरो।
अरो य अरयं पत्तो, पत्तो गइ-मणुत्तरं।।40।।

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
चइत्ता उत्तमे भोए, महापउमे तवं चरे।।41।।

एगच्छत्तं पसाहेत्ता, महिं माण-निसूदणो।
हरिसेणो मणुस्सिंदो, पत्तो गइ-मणुत्तरं।।42।।

अन्निओ राय-सहस्सेहिं, सुपरिच्चाई दमं चरे।
जयनामो जिणक्खायं, पत्तो गइ-मणुत्तरं।।43।।

दसण्ण-रज्जं मुदियं, चइत्ता णं मुणी चरे।
दसण्णभद्दो णिक्खंतो, सक्खं सक्केण चोइओ।।44।।

नमी नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ।
चइऊण गेहं वइदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ।।45।।

करकंडू कलिंगेसु, पंचालेसु य दुम्मुहो।
नमी राया विदेहेसु, गंधारेसु य नग्गई।।46।।

एए नरिंद-वसभा, निक्खंता जिण-सासणे।
पुत्ते रज्जे ठवेऊणं, सामण्णे पज्जुवट्ठिया।।47।।

सोवीर-राय-वसभो, चइत्ता णं मुणी चरे।
उदायणो पव्वइओ, पत्तो गइ-मणुत्तरं।।48।।

तहेव कासीराया वि, सेओ-सच्च-परक्कमे।
काम-भोगे परिच्चिज्ज, पहणे कम्म-महावणं।।49।।

तहेव विजओ राया, अणट्ठा-कित्ति पव्वए।
रज्जं तु गुणसमिद्धं, पयहित्तु महाजसो।।50।।

तहेवुग्गं तवं किच्चा, अव्वक्खित्तेण चेयसा।
महब्बलो रायरिसी, आदाय सिरसा सिरिं।।51।।

कहं धीरो अहेऊहिं, उम्मत्तो व महिं चरे?।
एए विसेस-मादाय, सूरा दढ-परक्कमा।।52।।

अच्चंत-नियाण-खमा, सच्चा मे भासिया वई।
अतरिंसु तरंतेगे, तरिस्संति अणागया।।53।।

कहं धीरे अहेऊहिं, अत्ताणं परियावसे?।
सव्व-संग-विणिम्मुक्के, सिद्धे भवइ नीरए।।54।।

त्ति बेमि।।

।। संजइज्जं अठारसमं अज्झयणं समत्तं।।18।।

।।मियापुत्तिज्जं एगूणवीसइमं अज्झयणं।।19।।

सुग्गीवे नयरे रम्मे, काणणुज्जाण-सोहिए।
राया बलभद्दि त्ति, मिया तस्सऽग्ग-महिसी।।1।।
तेसिं पुत्ते बलसिरी, मियापुत्ते त्ति विस्सुए।
अम्मा-पिऊण दइए, जुवराया दमीसरे।।2।।
नंदणे सो उ पासाए, कीलए सह इत्थिहिं।
देवो दोगुंदगो चेव, निच्चं मुइय-माणसो।।3।।
मणि-रयण-कोट्टिम-तले, पासाया-लोयणट्ठिओ।
आलोएइ नगरस्स, चउक्क-त्तिय-च्चरे।।4।।
अह तत्थ अइच्छंतं, पासई समण संजयं।
तव-नियम-संजमधरं, सीलड्ढं गुणआगरं।।5।।
तं पेहई मियापुत्ते, दिट्ठीए अणिमिसाए उ।
कहिं मन्नेरिसं रूवं, दिट्ठपुव्वं मए पुरा?।।6।।
साहुस्स दरिसणे तस्स, अज्झवसाणम्मि सोहणे।
मोहं गयस्स संतस्स, जाईसरणं समुप्पन्नं।।7।।
देवलोग चुओ संतो, माणुसं भव-मागओ।
सण्णिणाणेसमुप्पन्ने, जाइं सरइ पुराणियं।।8।।
जाईसरणे समुप्पन्ने, मियापुत्ते महिड्ढिए।
सरई पोराणियं जाइं, सामण्णं च पुराकयं।।9।।
विसएसु अरज्जंतो, रज्जंतो संजमम्मि य।
अम्मा-पियर-मुवागम्म, इमं वयणमब्बवी।।10।।

सुयाणि मे पंच महव्वयाणि, नरएसु दुक्खं च तिरिक्ख-जोणिसु।
निव्विण्णकामो मि महण्णवाओ, अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो?।।11।।

अम्म! ताय ! मए भोगा, भुत्ता विस-फलोवमा।
पच्छा कडुय-विवागा, अणुबंधदुहावहा।।12।।

इमं सरीरं अणिच्चं, असुइं असुइ-संभवं।
असासया-वासमिणं, दुक्ख-केसाण भायणं।।13।।

असासए सरीरम्मि, रइं नोवलभामहं।
पच्छा पुरा व चइयव्वे, फेण-बुब्बुय-सन्निभे।।14।।

माणुसत्ते असारम्मि, वाही-रोगाण आलए।
जरा-मरण-घत्थम्मि, खणं पि न रमामहं।।15।।

जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं, रोगाणि मरणाणि य।
अहो! दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसंति जंतवो।।16।।

खेत्तं वत्थुं हिरण्णं च, पुत्तदारं च बंधवा।
चइत्ताणं इमं देहं, गंतव्व-मवसस्स मे।।17।।

जहा किंपाग-फलाणं, परिणामो न सुंदरो।
एवं भुत्ताण भोगाणं, परिणामो न सुंदरो।।18।।

अद्धाणं जो महंतं तु, अपाहेज्जो पवज्जई।
गच्छंतो सो दुही होइ, छुहा-तण्हाए पीडिओ।।19।।

एवं धम्मं अकाऊणं, जो गच्छइ परं भवं।
गच्छंतो सो दुही होइ, वाहि-रोगेहिं पीडिओ।।20।।

अद्धाणं जो महंतं तु, सपाहेज्जो पवज्जई।
गच्छंतो सो सुही होइ, छुहा तण्हा-विवज्जिओ।।21।।

एवं धम्मं पि काऊणं, जो गच्छइ परं भवं।
गच्छंतो सो सुही होइ, अप्पकम्मे अवेयणे।।22।।

जहा गेहे पलित्तम्मि, तस्स गेहस्स जो पहू।
सारभंडाणि नीणेइ, असारं अवउज्झइ।।23।।

एवं लोए पलित्तम्मि, जराए मरणेण य।
अप्पाणं तारइस्सामि, तुब्भेहिं अणुमन्निओ।।24।।

तं बिंतऽम्मा-पियरो, सामन्नं पुत्त! दुच्चरं।
गुणाणं तु सहस्साइं, धारेयव्वाइं भिक्खुणा।।25।।

समया सव्व-भूएसु, सत्तु-मित्तेसु वा जगे।
पाणाइवाय-विरई, जावज्जीवाए दुक्करं।।26।।

निच्चकाल-ऽप्पमत्तेणं, मुसावाय-विवज्जणं।
भासियव्वं हियं सच्चं, निच्चाउत्तेण दुक्करं।।27।।

दंत-सोहण-माइस्स, अदत्तस्स विवज्जणं।
अणवज्जेसणिज्जस्स, गेण्हणा अवि दुक्करं।।28।।

विरई अबंभ-चेरस्स, काम-भोग-रसन्नुणा।
उग्गं महव्वयं बंभं, धारेयव्वं सुदुक्करं।।29।।

धण-धन्न-पेस-वग्गेसु, परिग्गह-विवज्जणं।
सव्वारंभ-परिच्चाओ, निम्ममत्तं सुदुक्करं।।30।।

चउव्विहे वि आहारे, राईभोयण-वज्जणा।
सन्निही-संचओ चेव, वज्जेयव्वो सुदुक्करं।।31।।

छुहा तण्हा य सीउण्हं, दंस-मसग-वेयणा।
अक्कोसा दुक्ख-सेज्जा य, तणफासा जल्लमेव य।।32।।

तालणा तज्जणा चेव, वहबंधपरीसहा।
दुक्खं भिक्खायरिया, जायणा य अलाभया।।33।।
कावोया जा इमा वित्ती, केसलोओ य दारुणो।
दुक्खं बंभव्वयं घोरं, धारेउं अमहप्पणो।।34।।
सुहोइओ तुमं पुत्ता!, सुकुमालो सुमज्जिओ।
न हुसि पभू तुमं पुत्ता !, सामण्ण-मणुपालिया।।35।।
जावज्जीव-मविस्सामो, गुणाणं तु महब्भरो।
गुरुओ लोहभारु व्व, जो पुत्ता ! होइ दुव्वहो।।36।।
आगासे गंगसोउ व्व, पडिसोउ व्व दुत्तरो।
बाहाहिं सागरो चेव, तरियव्वो य गुणोदही।।37।।
वालुया-कवलो चेव, निरस्साए उ संजमे।
असिधारा-गमणं चेव, दुक्करं चरिउं तवो।।38।।
अहीवेगंत-दिट्ठीए, चरित्ते पुत्त! दुक्करे।
जवा लोहमया चेव, चावेयव्वा सुदुक्करं।।39।।
जहा अग्गि-सिहा दित्ता, पाउं होइ सुदुक्करा।
तहा दुक्करं करेउं जे, तारुण्णे समणत्तणं।।40।।
जहा दुक्खं भरेउं जे, होइ वायस्स कोत्थलो।
तहा दुक्खं करेउं जे, कीवेणं समणत्तणं।।41।।
जहा तुलाए तोलेउं, दुक्करं मंदरो गिरी।
तहा निहुय नीसंकं, दुक्करं समणत्तणं।।42।।
जहा भुयाहिं तरिउं, दुक्करं रयणायरो।
तहा अणुवसंतेणं, दुक्करं दमसागरो।।43।।

भुंज माणुस्सए भोए, पंच-लक्खणए तुमं।
भुत्तभोगी तओ जाया!, पच्छा धम्मं चरिस्ससि।।44।।

सो बिंतऽम्मा-पियरो, एवमेयं जहाफुडं।
इहलोगे निप्पिवासस्स, नत्थि किंचि वि दुक्करं।।45।।

सारीर-माणसा चेव, वेयणाओ अणंतसो।
मए सोढाओ भीमाओ, असइं दुक्ख-भयाणि य।।46।।

जरामरण-कंतारे, चाउरंते भयागरे।
मए सोढाणि भीमाणि, जम्माणि मरणाणि य।।47।।

जहा इहं अगणी उण्हो, एत्तोऽणंत-गुणो तहिं।
नरएसु वेयणा उण्हा, अस्साया वेइया मए।।48।।

जहा इमं इहं सीयं, एत्तोऽणंतगुणो तहिं।
नरएसु वेयणा सीया, अस्साया वेइया मए।।49।।

कंदंतो कंदु-कुंभीसु उड्ढपाओ अहोसिरो।
हुयासणे जलंतम्मि, पक्कपुव्वो अणंतसो।।50।।

महादवग्गि-संकासे, मरुम्मि वइर-वालुए।
कलंब-वालुयाए य, दड्ढ-पुव्वो अणंतसो।।51।।

रसंतो कंदुकुंभीसु, उड्ढं बद्धो अबंधवो।
करवत्त-करकयाईहिं, छिन्न-पुव्वो अणंतसो।।52।।

अइ-तिक्ख-कंटगाइण्णे, तुंगे सिंबलि-पायवे।
खेवियं पासबद्धेणं, कड्ढोकड्ढाहिं दुक्करं।।53।।

महाजंतेसु उच्छू वा, आरसंतो सुभेरवं।
पीलिओ मि सकम्मेहिं, पावकम्मो अणंतसो।।54।।

कूवंतो कोलसुणएहिं, सामेहिं सबलेहि य।
पाडिओ फालिओ छिण्णो, विप्फुरंतो अणेगसो।।55।।

असीहिं अयसि-वन्नेहिं, भल्लीहिं पट्टिसेहि य।
छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य, उववन्नो पावकम्मुणा।।56।।

अवसो लोह-रहे जुत्तो, जलंते समिलाजुए।
चोइओ तोत्त-जुत्तेहिं, रोज्झो वा जह पाडिओ।।57।।

हुयासणे जलंतम्मि, चियासु महिसो विव।
दड्ढो पक्को य अवसो, पावकम्मेहिं पाविओ।।58।।

बला संडास-तुंडेहिं, लोह-तुंडेहिं पक्खिहिं।
विलुत्तो विलवंतो हं, ढंकगिद्धेहिं-णंतसो।।59।।

तण्हाकिलंतो धावंतो, पत्तो वेयरणिं नइं।
जलं पाहिं ति चिंतंतो, खुर-धाराहिं विवाइओ।।60।।

उण्हाभितत्तो संपत्तो, असिपत्तं महावणं।
असि-पत्तेहिं पडंतेहिं, छिन्न-पुव्वो अणेगसो।।61।।

मुग्गरेहिं मुसुंढीहिं, सूलेहिं मुसलेहि य।
गायासं भग्गगत्तेहिं, पत्तं दुक्खं अणंतसो।।62।।

खुरेहिं तिक्ख-धाराहिं, छुरियाहिं कप्पणीहि य।
कप्पिओ फालिओ छिन्नो, उक्कित्तो य अणेगसो।।63।।

पासेहिं कूड-जालेहिं, मिओ वा अवसो अहं।
वाहिओ बद्ध-रुद्धो य, बहुसो चेव विवाइओ।।64।।

गलेहिं मगर-जालेहिं, मच्छो वा अवसो अहं।
उल्लिओ फालिओ गहिओ, मारिओ य अणंतसो।।65।।

वीदंसएहिं जालेहिं, लेप्पाहिं सउणो विव।
गहिओ लग्गो य बद्धो य, मारिओ य अणंतसो।।66।।

कुहाड-फरसु-माईहिं, वड्ढईहिं दुमो विव।
कुट्टिओ फालिओ छिन्नो, तच्छिओ य अणंतसो।।67।।

चवेड-मुट्ठिमाईहिं, कुमारेहिं अयं पिव।
ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो, चुण्णिओ य अणंतसो।।68।।

तत्ताइं तंब-लोहाइं, तउयाइं सीसगाणि य।
पाइओ कल-कलंताइं आरसंतो सुभेरवं।।69।।

तुहं पियाइं मंसाइं, खंडाइं सोल्लगाणि य।
खाविओ मि समंसाइं, अग्गिवन्नाइं णेगसो।।70।।

तुहं पिया सुरा सीहू, मेरओ य महूणि य।
पाइओ मि जलंतीओ, वसाओ रुहिराणि य।।71।।

निच्चं भीएण तत्थेण, दुहिएण वहिएण य।
परमा दुहसंबद्धा, वेयणा वेइया मए।।72।।

तिव्व-चंड-प्पगाढाओ, घोराओ अइदुस्सहा।
महब्भयाओ भीमाओ, नरएसु वेइया मए।।73।।

जारिसा माणुसे लोए, ताया ! दीसंति वेयणा।
एत्तो अणंत-गुणिया, नरएसु दुक्खवेयणा।।74।।

सव्व-भवेसु अस्साया, वेयणा वेइया मए।
निमेसंतर-मित्तं पि, जं साया नत्थि वेयणा।।75।।

तं बिंतऽम्मापियरो, छंदेणं पुत्त ! पव्वया।
नवरं पुण सामण्णे, दुक्खं निप्पडि-कम्मया।।76।।

सो बिंतऽम्मा पियरो, एवमेयं जहा-फुडं।
पडिकम्मं को कुणई, अरण्णे मिय-पक्खिणं?।।77।।

एगब्भूए अरण्णे वा, जहा उ चरई मिगे।
एवं धम्मं चरिस्सामि, संजमेण तवेण य।।78।।

जया मिगस्स आयंको, महारण्णम्मि जायई।
अच्छंतं रुक्ख-मूलम्मि, को णं ताहे तिगिच्छिई?।।79।।

को वा से ओसहं देइ?, को वा से पुच्छई सुहं?।
को से भत्तं च पाणं वा, आहरित्तु पणामए?।।80।।

जया से सुही होइ, तया गच्छइ गोयरं।
भत्तपाणस्स अट्ठाए, वल्लराणि सराणि य।।81।।

खाइत्ता पाणियं पाउं, वल्लरेहिं सरेहि य।
मिगचारियं चरित्ताणं, गच्छई मिगचारियं।।82।।

एवं समुट्ठिओ भिक्खू, एवमेव अणेगए।
मिगचारियं चरित्ताणं, उड्ढं पक्कमई दिसं।।83।।

जहा मिए एग अणेगचारी, अणेग-वासे धुव-गोयरे य।
एवं मुणी गोयरियं पविट्ठे, नो हीलए नो वि य खिंसएज्जा।।84।।

मिगचारियं चरिस्सामि, एवं पुत्ता जहासुहं।
अम्मा-पिऊहिंऽणुन्नाओ, जहाइ उवहिं तओ।।85।।

मिगचारियं चरिस्सामि, सव्व-दुक्खविमोक्खणिं।
तुब्भेहिं अब्भणुन्नाओ, गच्छ पुत्त! जहासुहं।।86।।

एवं सो अम्मापियरो, अणुमाणित्ताण बहुविहं।
ममत्तं छिंदई ताहे, महानागो व्व कंचुयं।।87।।

इड्ढिं वित्तं च मित्ते य, पुत्तदारं च नायओ।
रेणुयं व पडे लग्गं, निद्धुणित्ताण निग्गओ।।88।।

पंच-महव्वय-जुत्तो, पंच-समिओ तिगुत्तिगुत्तो य।
सब्भिंतर-बाहिरओ, तवो-कम्मंसि उज्जुओ।।89।।

निम्ममो निरहंकारो, निस्संगो चत्तगारवो।
समो य सव्व-भूएसु, तसेसु थावरेसु य।।90।।

लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा।
समो निंदा-पसंसासु, तहा माणाव-माणओ।।91।।

गारवेसु कसाएसु, दंड-सल्ल-भएसु य।
नियत्तो हास-सोगाओ, अनियाणो अबंधणो।।92।।

अनिस्सिओ इहं लोए, परलोए अनिस्सिओ।
वासी-चंदणकप्पो य, असणे अणसणे तहा।।93।।

अप्प-सत्थेहिं दारेहिं, सव्वओ पिहियासवो।
अज्झप्प-ज्झाण-जोगेहिं, पसत्थ-दम-सासणो।।94।।

एवं नाणेण चरणेण, दंसणेण तवेण य।
भावणाहिं य सुद्धाहिं, सम्मं भावेत्तु अप्पयं।।95।।

बहुयाणि उ वासाणि, सामण्ण-मणुपालिया।
मासिएण उ भत्तेण, सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं।।96।।

एवं करंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा।
विणियट्टंति भोगेसु, मियापुत्ते जहा मिसी।।97।।

महापभावस्स महाजसस्स, मियाइ पुत्तस्स निसम्म भासियं।
तवप्पहाणं चरियं च उत्तमं,गइप्पहाणं च तिलोगविस्सुयं।।98।।

वियाणिया दुक्ख-विवड्ढणं धणं,ममत्तबंधं च महाभयावहं।
सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं, धारेज्ज निव्वाण गुणावहं महं।।99।।

त्ति बेमि।।

।। मियापुत्तिज्जं एगूणवीसइमं अज्झयणं समत्तं।।19।।

।। वीसइमं महानियंठिज्जं अज्झयणं।।20।।

सिद्धाणं नमो किच्चा, संजयाणं च भावओ।
अत्थ-धम्मगइं तच्चं, अणुसिट्ठिं सुणेह मे।।1।।

पभूय-रयणो राया, सेणिओ मगहाहिवो।
विहारजत्तं निज्जाओ, मंडिकुच्छिंसि चेइए।।2।।

नाणादुम-लयाइण्णं, नाणापक्खि-निसेवियं।
नाणाकुसुम-संछन्नं, उज्जाणं नंदणोवमं।।3।।

तत्थ सो पासई साहुं, संजयं सुसमाहियं।
निसन्नं रुक्ख-मूलम्मि, सुकुमालं सुहोइयं।।4।।

तस्स रूवं तु पासित्ता, राइणो तम्मि संजए।
अच्चंत-परमो आसी, अउलो रूवविम्हओ।।5।।

अहो ! वण्णो अहो ! रूवं, अहो ! अज्जस्स सोमया।
अहो ! खंती अहो ! मुत्ती, अहो ! भोगे असंगया।।6।।

तस्स पाए उ वंदित्ता, काऊण य पयाहिणं।
नाइदूर-मणासन्ने, पंजली पडिपुच्छई।।7।।

तरुणो सि अज्जो! पव्वइओ, भोग-कालम्मि संजया!।
उवट्ठिओ सि सामण्णे, एयमट्ठं सुणेमि ता।।8।।

अणाहो मि महाराय ! नाहो मज्झ न विज्जई।
अणुकंपगं सुहिं वा वि, कंचि नाभिसमेमऽहं।।9।।

तओ सो पहसिओ राया, सेणिओ मगहाहिवो।
एवं ते इड्ढिमंतस्स, कहं नाहो न विज्जई।।10।।

होमि नाहो भयंताणं, भोगे भुंजाहि संजया?।
मित्त-नाइ-परिवुडो, माणुस्सं खु सुदुल्लहं।।11।।

अप्पणा वि अणाहो सि, सेणिया! मगहाहिवा!।
अप्पणा अणाहो संतो, कहं नाहो भविस्ससि?।।12।।

एवं वुत्तो नरिंदो सो, सुसंभंतो सुविम्हिओ।
वयणं अस्सुय-पुव्वं, साहुणा विम्हयन्निओ।।13।।

अस्सा हत्थी मणुस्सा मे, पुरं अंतेउरं च मे।
भुंजामि माणुसे भोगे, आणा इस्सरियं च मे।।14।।

एरिसे संपयग्गम्मि, सव्व-कामसमप्पिए।
कहं अणाहो भवइ, मा हु भंते! मुसं वए।।15।।

न तुमं जाणे अणाहस्स, अत्थं पोत्थं च पत्थिवा!।
जहा अणाहो भवइ, सणाहो वा नराहिवा!।।16।।

सुणेह मे महाराय ! अव्वक्खित्तेण चेयसा।
जहा अणाहो भवइ, जहा मेयं पवत्तियं।।17।।

कोसंबी नाम नयरी, पुराण-पुरभेयणी।
तत्थ आसी पिया मज्झ, पभूय-धणसंचओ।।18।।

पढमे वए महाराय ! अउला मे अच्छिवेयणा।
अहोत्था विउलो दाहो, सव्वगत्तेसु पत्थिवा!।।19।।

सत्थं जहा परमतिक्खं, सरीर-विवरंतरे।
आवीलेज्ज अरी कुद्धो, एवं मे अच्छि-वेयणा।।20।।

तियं मे अंतरिच्छं च, उत्तमंगं च पीडई।
इंदासणि-समा घोरा, वेयणा परमदारुणा।।21।।

उवट्ठिया मे आयरिया, विज्जा-मंत-तिगिच्छया।
अबीया सत्थ-कुसला, मंत-मूल-विसारया।।22।।

ते मे तिगिच्छं कुव्वंति, चाउप्पायं जहाहियं।
न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया।।23।।

पिया मे सव्व-सारं पि, देज्जाहि मम कारणा।
न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया।।24।।

माया वि मे महाराय!, पुत्तसोगदुहऽट्ठिया।
न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया।।25।।

भायरा मे महाराय! सगा जेट्ठ-कणिट्ठगा।
न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया।।26।।

भइणीओ मे महाराय ! सगा जेट्ठ-कणिट्ठगा।
न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया।।27।।

भारिया मे महाराय ! अणुरत्ता अणुव्वया।
अंसु-पुण्णेहिं नयणेहिं, उरं मे परिसिंचई।।28।।

अन्नं पाणं च ण्हाणं च, गंध-मल्ल-विलेवणं।
मए णाय-मणायं वा, सा बाला नेव भुंजई।।29।।

खणं पि मे महाराय ! पासाओ वि न फिट्टई।
न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया।।30।।

तओ हं एव-माहंसु, दुक्खमा हु पुणो पुणो।
वेयणा अणुभविउं जे, संसारम्मि अणंतए।।31।।

सइं च जइ मुच्चेज्जा, वेयणा विउला इओ।
खंतो दंतो निरारंभो, पव्वइए अणगारियं।।32।।

एवं च चिंतइत्ताणं, पसुत्तो मि नराहिवा!।
परियत्तंतीए राईए, वेयणा मे खयं गया।।33।।

तओ कल्ले पभायम्मि, आपुच्छित्ताण बंधवे।
खंतो दंतो निरारंभो, पव्वइओ अणगारियं।।34।।

तो हं नाहो जाओ, अप्पणो य परस्स य।
सव्वेसिं चेव भूयाणं, तसाणं थावराण य।।35।।

अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली।
अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नंदणं वणं।।36।।

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठियसुपट्ठिओ।।37।।

इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा!, तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि।
नियंठधम्मं लहियाण वि जहा, सीयंति एगे बहुकायरा नरा।।38।।

जो पव्वइत्ताण महव्वयाइं, सम्मं च नो फासयई पमाया।
अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे, न मूलओ छिन्नइ बंधणं से।।39।।

आउत्तया जस्स य नत्थि काई, इरियाए भासाए तहेसणाए।
आयाण-निक्खेव-दुगुंछणाए, न वीरजायं अणुजाइ मग्गं।।40।।

चिरं पि से मुंडरुई भवित्ता, अथिरव्वए तव-नियमेहिं भट्ठे।
चिंर पि अप्पाण किलेसइत्ता, न पारए होइ हु संपराए।।41।।

पोल्लेव मुट्ठी जह से असारे, अयंतिए कूड-कहावणे वा।
राढामणी वेरुलिय-प्पगासे, अमहग्घए होइ हु जाणएसु।।42।।
कुसील-लिंगं इह धारइत्ता, इसिज्झयं जीविय बूहइत्ता।
असंजए संजयलप्पमाणे, विणिग्घाय-मागच्छइ से चिरं पि।।43।।
विसं तु पीयं जह कालकूडं, हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं।
एसो वि धम्मो विसओववन्नो, हणाइ वेयाल इवाविवन्नो।।44।।
जे लक्खणं सुविणं पउंजमाणो, निमित्त-कोऊहलसंपगाढे।
कुहेड-विज्जासव-दारजीवी, न गच्छई सरणं तम्मि काले।।45।।
तमं तमेणेव उ जे असीले, सया दुही विप्परियासुवेइ।
संधावई नरगतिरिक्खजोणिं, मोणं विराहेत्तु असाहुरूवे।।46।।
उद्देसियं कीयगडं नियागं, न मुंचई किंचि अणेसणिज्जं।
अग्गी विवा सव्व-भक्खी भवित्ता, इत्तो चुए गच्छइ कट्टु पावं।।47।।
न तं अरी कंठ-छेत्ता करेइ, जं से करे अप्पणिया दुरप्पा।
से णाहिई मच्चु-मुहं तु पत्ते, पच्छाणुतावेण दया-विहूणो।।48।।
निरट्ठिया नग्गरुई उ तस्स, जे उत्तमट्ठं विवज्जासमेइ।
इमे वि से नत्थि परे वि लोए, दुहओ वि से झिज्झइ तत्थ लोए।।49।।
एमेवऽहाछंद-कुसील-रूवे, मग्गं विराहित्तु जिणुत्तमाणं।
कुररी विवा भोग-रसाणुगिद्धा, निरट्ठसोया परियावमेइ।।50।।
सोच्चाण मेहावी! सुभासियं इमं, अणुसासणं नाण-गुणोववेयं।
मग्गं कुसीलाण जहाय सव्वं, महानियंठाण वए पहेणं।।51।।
चरित्त-मायार-गुणन्निए तओ, अणुत्तरं संजम पालियाणं।
निरासवे संखवियाण कम्मं, उवेइ ठाणं विउलुत्तमं धुवं।।52।।

एवुग्गदंते वि महातवोधणे, महामुणी महापइन्ने महायसे।
महानियंठिज्ज-मिणं महासुयं, से काहए महया वित्थरेणं।।53।।
तुट्ठो य सेणिओ राया, इण-मुदाहु कयंजली।
अणाहत्तं जहाभूयं, सुट्ठु मे उवदंसियं।।54।।
तुज्झं सुलद्धं खु मणुस्सजम्मं, लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी!।
तुब्भे सणाहा य सबंधवा य, जं भे ठिया मग्गे जिणुत्तमाणं।।55।।
तं सि नाहो अणाहाणं, सव्व-भूयाण संजया!।
खामेमि ते महाभाग! इच्छामि अणुसासिउं।।56।।
पुच्छिऊण मए तुब्भं, झाण-विग्घो य जो कओ।
निमंतिया य भोगेहिं, तं सव्वं मरिसेहि मे।।57।।
एवं थुणित्ताण स रायसीहो, अणगारसीहं परमाइ भत्तिए।
सओरोहो सपरियणो सबंधवो, धम्माणुरत्तो विमलेण चेयसा।।58।।
ऊससिय-रोमकूवो, काऊण य पयाहिणं।
अभिवंदिऊण सिरसा, अइयाओ नराहिवो।।59।।
इयरो वि गुण-समिद्धो, तिगुत्तिगुत्तो तिदंड-विरओ य।
विहग इव विप्पमुक्को, विहरइ वसुहं विगयमोहो।।60।।
।। त्ति बेमि।।

।। महानियंठिज्जं वीसइमं अज्झयणं समत्तं ।।20।।।।

।। इगवीसइमं समुद्दपालिज्जं अज्झयणं ।।21।।

चंपाए पालिए नामं, सावए आसी वाणिए।
महावीरस्स भगवओ, सीसे सो उ महप्पणो।।1।।

निग्गंथे पावयणे, सावए से विकोविए।
पोएण ववहरंते, पिहुंडं नगरमागए।।2।।

पिहुंडे ववहरंतस्स, वाणिओ देइ धूयरं।
तं ससत्तं पइगिज्झ, सदेस-मह पत्थिओ।।3।।

अह पालियस्स घरिणी, समुद्दम्मि पसवई।
अह दारए तहिं जाए, समुद्दपालि त्ति नामए।।4।।

खेमेण आगए चंपं, सावए वाणिए घरं।
संवड्ढई घरे तस्स, दारए से सुहोइए।।5।।

बावत्तरी-कलाओ य, सिक्खिए नीइ-कोविए।
जोव्वणेण य अप्फुण्णे, सुरूवे पियदंसणे।।6।।

तस्स रूववइं भज्जं, पिया आणेइ रूविणिं।
पासाए कीलए रम्मे, देवो दोगुंदगो जहा।।7।।

अह अन्नया कयाई, पासायालोयणे ठिओ।
वज्झ-मंडण-सोभागं, वज्झं पासइ वज्झगं।।8।।

तं पासिऊण संविग्गो, समुद्दपालो इणमब्बवी।
अहो असुहाण कम्माणं, निज्जाणं पावगं इमं।।9।।

संबुद्धो सो तहिं भगवं, परं-संवेग-मागओ।
आपुच्छऽम्मा-पियरो, पव्वए अणगारियं।।10।।

जहित्तु सग्गंथ-महाकिलेसं, महंत-मोहं कसिणं भयावहं।
परियायधम्मं चऽभिरोयएज्जा, वयाणि सीलाणि परीसहे य।।11।।

अहिंस सच्चं च अतेणगं च, तत्तो य बंभं अपरिग्गहं च।
पडिवज्जिया पंच महव्वयाणि,चरेज्ज धम्मं जिणदेसियं विदू।।12।।

सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकंपी, खंतिक्खमे संजयबंभयारी।
सावज्जजोगं परिवज्जयंतो, चरेज्ज भिक्खू सुसमाहि-इंदिए।।13।।
कालेण कालं विहरेज्ज रट्ठे, बलाबलं जाणिय अप्पणो य।
सीहो व सद्देण न संतसेज्जा, वयजोग सुच्चा न असब्भमाहु।।14।।
उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा, पिय-मप्पियं सव्व तितिक्खएज्जा।
न सव्व सव्वत्थ-ऽभिरोयएज्जा, न यावि पूयं गरहं च संजए।।15।।
अणेगछंदा मिह माणवेहिं, जे भावओ संपगरेइ भिक्खू।
भय-भेरवा तत्थ उइंति भीमा, दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा।।16।।
परीसहा दुव्विसहा अणेगे, सीयंति जत्था बहु-कायरा नरा।
से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू, संगामसीसे इव नागराया।।17।।
सीओसिणा दंस-मसगा य फासा, आयंका विविहा फुसंति देहं।
अकुक्कुओ तत्थऽहियासएज्जा, रयाइं खेवेज्ज पुरेकडाइं।।18।।
पहाय रागं च तहेव दोसं, मोहं च भिक्खू सययं वियक्खणो।
मेरु व्व वाएण अकंपमाणो, परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा।।19।।
अणुन्नए नावणए महेसी, न यावि पूयं गरहं च संजए।
से उज्जुभावं पडिवज्ज संजए, निव्वाण-मग्गं विरए उवेइ।।20।।
अरइ-रइ-सहे पहीण-संथवे, विरए आयहिए पहाणवं।
परमट्ठ-पएहिं चिट्ठई, छिन्नसोए अममे अकिंचणे।।21।।
विवित्त-लयणाइं भएज्ज ताई, निरोवलेवाइं असंथडाइं।
इसीहिं चिण्णाइं महायसेहिं, काएण फासेज्ज परीसहाइं।।22।।
सन्नाण-नाणोवगए महेसी, अणुत्तरं चरिउं धम्म-संचयं।
अणुत्तरे नाणधरे जसंसी, ओभासई सूरिए वंतलिक्खे।।23।।

दुविहं खवेऊण य पुण्ण-पावं, निरंजणे सव्वओ विप्पमुक्के।
तरित्ता समुद्दं च महाभवोघं, समुद्दपाले अपुणागमं गए।।24।।
।। त्ति बेमि।।

।। समुद्दपालिज्जं इगवीसइमं अज्झयणं समत्तं।।21।।

।। बावीसइमं रहनेमिज्जं अज्झयणं ।।22।।

सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिड्ढिए।
वसुदेवे त्ति नामेणं, राय-लक्खण-संजुए।।1।।
तस्स भज्जा दुवे आसी, रोहिणी देवई तहा।
तासिं दोण्हं दुवे पुत्ता, इट्ठा राम-केसवा।।2।।
सोरियपुरम्मि नयरे, आसी राया महिड्ढिए।
समुद्दविजए नामं, राय-लक्खण-संजुए।।3।।
तस्स भज्जा सिवा नाम, तीसे पुत्तो महायसो।
भगवं अरिट्ठनेमि त्ति, लोगनाहे दमीसरे।।4।।
सो रिट्ठनेमिनामो उ, लक्खण-स्सर-संजुओ।
अट्ठसहस्स-लक्खण-धरो, गोयमो कालगच्छवी।।5।।
वज्जरिसह-संघयणो, सम-चउरंसो झसोयरो।
तस्स राईमई कन्नं, भज्जं जायइ केसवो।।6।।
अह सा रायवर-कन्ना, सुसीला चारुपेहिणी।
सव्व-लक्खणसंपन्ना, विज्जु-सोयामणि-प्पभा।।7।।
अहाऽऽह जणओ तीसे, वासुदेवं महिड्ढियं।
इहाऽऽगच्छउ कुमारो, जा से कन्नं ददामिऽहं।।8।।

सव्वोसहीहिं ण्हविओ, कय-कोउय-मंगलो।
दिव्व-जुयल-परिहिओ, आभरणेहिं विभूसिओ।।9।।

मत्तं च गंधहत्थिं च, वासुदेवस्स जेट्ठगं।
आरूढो सोहए अहियं, सिरे चूडामणी जहा।।10।।

अह ऊसिएण छत्तेण, चामराहि य सोहिओ।
दसारचक्केण य सो, सव्वओ परिवारिओ।।11।।

चउरंगिणीए सेणाए, रइयाए जहक्कमं।
तुरियाण सन्निनाएणं दिव्वेणं गगणं फुसे।।12।।

एयारिसीए इड्ढीए, जुईए उत्तमाइ य।
नियगाओ भवणाओ, निज्जाओ वण्हि-पुंगवो।।13।।

अह सो तत्थ निज्जंतो, दिस्स पाणे भयद्दुए।
वाडेहिं पंजरेहिं च, सन्निरुद्धे सुदुक्खिए।।14।।

जीवियंतं तु संपत्ते, मंसट्ठा भक्खियव्वए।
पासित्ता से महापन्ने, सारहिं इणमब्बवी।।15।।

कस्स अट्ठा इमे पाणा, एए सव्वे सुहेसिणो।
वाडेहिं पंजरेहिं च, सन्निरुद्धा य अच्छहिं?।।16।।

अह सारही तओ भणइ, एए भद्दा उ पाणिणो।
तुज्झं विवाह-कज्जम्मि, भोयावेउं बहुं जणं।।17।।

सोऊण तस्स वयणं, बहु-पाणि-विणासणं।
चिंतेइ से महापन्ने, साणुक्कोसे जिएहि उ।।18।।

जइ मज्झ कारणा एए, हम्मंति सुबहू जिया।
न मे एयं तु निस्सेसं, परलोगे भविस्सई।।19।।

सो कुंडलाण जुयलं, सुत्तगं य महायसो।
आभरणाणि य सव्वाणि, सारहिस्स पणामए।।20।।

मणपरिणामे य कए, देवा य जहोइयं समोइण्णा।
सव्विड्ढीइ सपरिसा, निक्खमणं तस्स काउं जे।।21।।

देव-मणुस्स-परिवुडो, सिविया-रयणं तओ समारूढो।
निक्खमिय बारगाओ, रेवययम्मि ठिओ भयवं।।22।।

उज्जाणं संपत्तो, ओइण्णो उत्तमाओ सीयाओ।
साहस्सीए परिवुडो, अह निक्खमई उ चित्ताहिं।।23।।

अह सो सुगंध-गंधिए, तुरियं मउकुंचिए।
सयमेव लुंचई केसे, पंचमुट्ठीहिं समाहिओ।।24।।

वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइंदियं।
इच्छिय-मणोरहं तुरियं, पावसू तं दमीसरा!।।25।।

नाणेणं दंसणेणं च, चरित्तेणं तवेण य।
खंतीए मुत्तीए, वड्ढमाणो भवाहि य।।26।।

एवं ते राम-केसवा, दसारा य बहू जणा।
अरिट्ठनेमिं वंदित्ता, अभिगया बारगापुरिं।।27।।

सोऊण रायकन्ना, पव्वज्जं सा जिणस्स उ।
नीहासा य निराणंदा, सोगेण उ समुत्थिया।।28।।

राईमई विचिंतेइ, धिरत्थु मम जीवियं।
जा हं तेणं परिच्चत्ता, सेयं पव्वइउं मम।।29।।

अह सा भमर-सन्निभे, कुच्च-फणग-प्पसाहिए।
सयमेव लुंचई केसे, धिइमंता ववस्सिया।।30।।

वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइंदियं।
संसारसागरं घोरं, तर कन्ने! लहुं लहुं।।31।।

सा पव्वइया संती, पव्वावेसी तहिं बहुं।
सयणं परियणं चेव, सीलवंता बहुस्सुया।।32।।

गिरिं रेवतयं जंती, वासेणुल्ला उ अंतरा।
वासंते अंधयारम्मि, अंतो लयणस्स सा ठिया।।33।।

चीवराइं विसारंती, जहाजाय त्ति पासिया।
रहनेमी भग्गचित्तो, पच्छा दिट्ठो य तीइ वि।।34।।

भीया य सा तहिं दट्ठुं, एगंते संजयं तयं।
बाहाहिं काउं संगोप्फं, वेवमाणी निसीयई।।35।।

अह सोऽवि रायपुत्तो, समुद्दविजयंगओ।
भीयं पवेवियं दट्ठुं, इमं वक्क-मुदाहरे।।36।।

रहनेमी अहं भद्दे!, सुरूवे! चारुभासिणि!।
ममं भयाहि सुयणु! न ते पीला भविस्सई।।37।।

एहि ता भुंजिमो भोए, माणुस्सं खु सुदुल्लहं।
भुत्त-भोगी तओ पच्छा, जिणमग्गं चरिस्सामो।।38।।

दट्ठूण रहनेमिं तं, भग्गुज्जोयपराइयं।
राईमई असंभंता, अप्पाणं संवरे तहिं।।39।।

अह सा रायवरकन्ना, सुट्ठिया नियमव्वए।
जाइं कुलं च सीलं च, रक्खमाणी तयं वए।।40।।

जइ सि रूवेण वेसमणो, ललिएण नलकुब्बरो।
तहा वि ते न इच्छामि, जइ सि सक्खं पुरंदरो।।41।।

पक्खंदे जलियं जोइं, धूमकेउं दुरासयं।
नेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे।।42।।
धिरत्थु ते जसोकामी! जो तं जीवियकारणा।
वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे।।43।।
अहं च भोगरायस्स, तं च सि अंधगवण्हिणो।
मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर।।44।।
जइ तं काहिसि भावं, जा जा दच्छसि नारिओ।
वायाइद्धो व्व हढो, अट्ठियप्पा भविस्ससि।।45।।
गोवालो भंडवालो वा, जहा तद्दव्व-ऽणीसरो।
एवं अणीसरो तंपि, सामण्णस्स भविस्ससि।।46।।
तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाए सुभासियं।
अंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ।।47।।
कोहं माणं णिगिण्हित्ता, मायं लोभं च सव्वसो।
इंदियाइं वसे काउं, अप्पाणं उवसंहरे।।48।।
मणगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइंदिओ।
सामण्णं निच्चलं फासे, जावज्जीवं दढव्वओ।।49।।
उग्गं तवं चरित्ताणं, जाया दोन्नि वि केवली।
सव्वं कम्मं खवेत्ताणं, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं।।50।।
एवं करेंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा।
विणियट्टंति भोगेसु, जहा से पुरिसोत्तमो।।51।।
।। त्ति बेमि।।

।। रहनेमिज्जं बावीसइमं अज्झयणं समत्तं।।22।।

।। तेवीसइमं केसिगोयमिज्जं अज्झयणं ।।23।।

जिणे पासि त्ति नामेणं, अरहा लोग-पूइओ।
संबुद्धप्पा य सव्वन्नू, धम्म-तित्थयरे जिणे।।1।।

तस्स लोग-पईवस्स, आसी सीसे महायसे।
केसी कुमारसमणे, विज्जा-चरण-पारगे।।2।।

ओहि-नाणसुए बुद्धे, सीससंघ-समाउले।
गामाणुगामं रीयंते, सावत्थिं पुरमागए।।3।।

तिंदुयं नाम उज्जाणं, तम्मि नगर-मंडले।
फासुए सेज्ज-संथारे, तत्थ वास-मुवागए।।4।।

अह तेणेव कालेणं, धम्मतित्थयरे जिणे।
भगवं वद्धमाणि त्ति, सव्व-लोगम्मि विस्सुए।।5।।

तस्स लोग-पईवस्स, आसी सीसे महायसे।
भगवं गोयमे नामं, विज्जाचरणपारगे।।6।।

बारसंग-विऊ बुद्धे, सीस-संघ-समाउले।
गामाणुगामं रीयंते, सेऽवि सावत्थि-मागए।।7।।

कोट्ठगं नाम उज्जाणं, तम्मि नगरमंडले।
फासुए सेज्ज-संथारे, तत्थ वास-मुवागए।।8।।

केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे।
उभओ वि तत्थ विहरिंसु, अल्लीणा सुसमाहिया।।9।।

उभओ सीस-संघाणं, संजयाणं तवस्सिणं।
तत्थ चिंता समुप्पन्ना, गुणवंताण ताइणं।।10।।

केरिसो वा इमो धम्मो ?, इमो धम्मो व केरिसो ?।
आयार-धम्म-प्पणिही, इमा वा सा व केरिसी ?।।11।।
चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंच-सिक्खिओ।
देसिओ वद्धमाणेणं, पासेण य महामुणी।।12।।
अचेलगो य जो धम्मो, जो इमो संतरुत्तरो।
एग-कज्ज-पवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं ?।।13।।
अह ते तत्थ सीसाणं, विन्नाय पवितक्किय।
समागमे कयमई, उभओ केसी-गोयमा।।14।।
गोयमो पडिरूवन्नू, सीस-संघ-समाउले।
जेट्ठं कुल-मवेक्खंतो, तिंदुयं वण-मागओ।।15।।
केसी कुमारसमणे, गोयमं दिस्स मागयं।
पडिरूवं पडिवत्तिं, सम्मं संपडिवज्जई।।16।।
पलालं फासुयं तत्थ, पंचमं कुस-तणाणि य।
गोयमस्स निसेज्जाए, खिप्पं संपणामए।।17।।
केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे।
उभओ णिसण्णा सोहंति, चंद-सूर-समप्पभा।।18।।
समागया बहू तत्थ, पासंडा कोउगा मिया।
गिहत्थाण अणेगाओ, साहस्सीओ समागया।।19।।
देव-दाणव-गंधव्वा, जक्ख-रक्खस-किन्नरा।
अदिस्साणं च भूयाणं, आसी तत्थ समागमो।।20।।
पुच्छामि ते महाभाग! केसी गोयम-मब्बवी।
तओ केसिं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी।।21।।

पुच्छ भंते! जहिच्छं ते, केसिं गोयम-मब्बवी।
तओ केसी अणुन्नाए, गोयमं इणमब्बवी।।22।।

चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंच-सिक्खिओ।
देसिओ वद्धमाणेणं, पासेण य महामुणी।।23।।

एग-कज्ज-पवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं?।
धम्मे दुविहे मेहावी ! कहं विप्पच्चओ न ते?।।24।।

तओ केसिं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी।
पन्ना समिक्खए धम्मं, तत्तं तत्तविणिच्छयं।।25।।

पुरिमा उज्जु-जडा उ, वंक-जडा य पच्छिमा।
मज्झिमा उज्जु-पन्ना उ, तेण धम्मे दुहा कए।।26।।

पुरिमाणं दुव्विसोज्झो उ, चरिमाणं दुरणुपालओ।
कप्पो मज्झिमगाणं तु, सुविसोज्झो सुपालओ।।27।।

साहु गोयम ! पन्ना ते , छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा!।।28।।

अचेलगो य जो धम्मो, जो इमो संतरुत्तरो।
देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महाजसा।।29।।

एग-कज्ज-पवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं?।
लिंगे दुविहे मेहावी ! कहं विप्पच्चओ न ते।।30।।

केसिं एवं बुवाणं तु, गोयमो इणमब्बवी।
विन्नाणेण समागम्म, धम्म-साहण-मिच्छियं।।31।।

पच्चयत्थं च लोगस्स, नाणाविह-विगप्पणं।
जत्तत्थं गहणत्थं च, लोगे लिंग-पओयणं।।32।।

अह भवे पइन्ना उ, मोक्ख-सब्भूय-साहणा।
नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं चेव निच्छए।।33।।

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा!।।34।।

अणेगाणं सहस्साणं, मज्झे चिट्ठसि गोयमा!।
ते य ते अहिगच्छंति, कहं ते निज्जिया तुमे?।।35।।

एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस।
दसहा उ जिणित्ता णं, सव्व-सत्तू जिणामहं।।36।।

सत्तू य इइ के वुत्ते, केसी गोयम-मब्बवी।
तओ केसिं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी।।37।।

एगऽप्पा अजिए सत्तू, कसाया इंदियाणि य।
ते जिणित्तु जहानायं, विहरामि अहं मुणी!।।38।।

साहु गोयम! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा!।।39।।

दीसंति बहवे लोए, पासबद्धा सरीरिणो।
मुक्कपासो लहुब्भूओ, कहं तं विहरसि मुणी?।।40।।

ते पासे सव्वसो छेत्ता, निहंतूण उवायओ।
मुक्कपासो लहुब्भूओ, विहरामि अहं मुणी!।।41।।

पासा य इइ के वुत्ता?, केसी गोयम-मब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी।।42।।

राग-द्दोसादओ तिव्वा, नेहपासा भयंकरा।
ते छिंदित्तु जहानायं, विहरामि जहक्कमं।।43।।

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा!।।44।।

अंतो-हियय-संभूया, लया चिट्ठइ गोयमा!।
फलेइ विस-भक्खीणि, सा उ उद्धरिया कहं?।।45।।

तं लयं सव्वसो छित्ता, उद्धरित्ता समूलियं।
विहरामि जहानायं, मुक्को मि विस-भक्खणं।।46।।

लया य इइ का वुत्ता?, केसी गोयम-मब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी।।47।।

भवतण्हा लया वुत्ता, भीमा भीम-फलोदया।
तमुद्धित्तु जहानायं, विहरामि महामुणी।।48।।

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा!।।49।।

संपज्जलिया घोरा, अग्गी चिट्ठइ गोयमा!।
जे डहंति सरीरत्था, कहं विज्झाविया तुमे?।।50।।

महामेह-प्पसूयाओ, गिज्झ वारि जलुत्तमं।
सिंचामि सययं ते उ, सित्ता नो व डहंति मे।।51।।

अग्गी य इइ के वुत्ता?, केसी गोयम-मब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी।।52।।

कसाया अग्गिणो वुत्ता, सुय-सील-तवो जलं।
सुयधाराभिहया संता, भिन्ना हु न डहंति मे।।53।।

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा!।।54।।

अयं साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावई।
जंसि गोयम ! आरूढो, कहं तेण न हीरसि ?।।55।।
पहावंतं निगिण्हामि, सुयरस्सी-समाहियं।
न मे गच्छइ उम्मग्गं, मग्गं च पडिवज्जई।।56।।
आसे य इइ के वुत्ते?, केसी गोयम-मब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी।।57।।
मणो साहस्सिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावई।
तं सम्मं तु निगिण्हामि, धम्म-सिक्खाइ कंथगं।।58।।
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा!।।59।।
कुप्पहा बहवे लोए, जेहिं नासंति जंतवो।
अद्धाणे कहं वट्टंतो, तं न नाससि गोयमा!।।60।।
जे य मग्गेण गच्छंति, जे य उम्मग्ग-पट्ठिया।
ते सव्वे वेइया मज्झं, तो न नस्सामहं मुणी!।।61।।
मग्गे य इइ के वुत्ते?, केसी गोयम-मब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी।।62।।
कुप्पवयणपासंडी, सव्वे उम्मग्गपट्ठिया।
सम्मग्गं तु जिणक्खायं, एस मग्गे हि उत्तमे।।63।।
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा!।।64।।
महाउदग-वेगेण, वुज्झ-माणाण पाणिणं।
सरणं गई पइट्ठा य, दीवं कं मन्नसी मुणी!।।65।।

अत्थि एगो महादीवो, वारि-मज्झे महालओ।
महाउदग-वेगस्स, गई तत्थ ण विज्जई।।66।।
दीवे य इइ के वुत्ते?, केसी गोयम-मब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी।।67।।
जरा-मरणवेगेणं, वुज्झ-माणाण पाणिणं।
धम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरण-मुत्तमं।।68।।
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा!।।69।।
अन्नवंसि महोहंसि, नावा विपरिधावई।
जंसि गोयम! आरूढो, कहं पारं गमिस्ससि?।।70।।
जा उ अस्साविणी नावा, न सा पारस्स गामिणी।
जा निरस्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी।।71।।
नावा य इइ का वुत्ता?, केसी गोयम-मब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी।।72।।
सरीरमाहु नाव त्ति, जीवो वुच्चइ नाविओ।
संसारो अण्णवो वुत्तो, जं तरंति महेसिणो।।73।।
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा!।।74।।
अंधयारे तमे घोरे, चिट्ठंति पाणिणो बहू।
को करिस्सइ उज्जोयं, सव्व-लोयम्मि पाणिणं?।।75।।
उग्गओ विमलो भाणू, सव्वलोय-पभंकरो।
सो करिस्सइ उज्जोयं, सव्वलोगम्मि पाणिणं।।76।।

भाणू य इइ के वुत्ते, केसी गोयम-मब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो-इणमब्बवी।।77।।

उग्गओ खीण-संसारो, सव्वण्णू जिणभक्खरो।
सो करिस्सइ उज्जोयं, सव्वलोगम्मि पाणिणं।।78।।

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा!।।79।।

सारीर-माणसे दुक्खे, बज्झ-माणाण पाणिणं।
खेमं सिवं अणाबाहं, ठाणं किं मन्नसी मुणी!।।80।।

अत्थि एगं धुवं ठाणं, लोगग्गम्मि दुरारुहं।
जत्थ नत्थि जरा-मच्चू, वाहिणो वेयणा तहा।।81।।

ठाणे य इइ के वुत्ते?, केसी गोयम-मब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी।।82।।

निव्वाणं ति अबाहं ति, सिद्धी लोगग्ग-मेव य।
खेमं सिवं अणाबाहं, जं चरंति महेसिणो।।83।।

तं ठाणं सासयं वासं, लोगग्गम्मि दुरारुहं।
जं संपत्ता न सोयंति, भवोहंतकरा मुणी।।84।।

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो।
नमो ते संसयातीत!, सव्व-सुत्तमहोयही।।85।।

एवं तु संसए छिन्ने, केसी घोर-परक्कमे।
अभिवंदित्ता सिरसा, गोयमं तु महायसं।।86।।

पंचमहव्वय धम्मं, पडिवज्जइ भावओ।
पुरिमस्स पच्छिमम्मि, मग्गे तत्थ सुहावहे।।87।।

केसी-गोयमओ निच्चं, तम्मि आसि समागमे।
सुय-सील-समुक्कसो, महत्थत्थ-विणिच्छओ।।88।।

तोसिया परिसा सव्वा, सम्मग्गं समुवट्ठिया।
संथुया ते पसीयंतु, भयवं केसि-गोयमे।।89।।

।। त्ति बेमि।।

।।केसिगोयमिज्जं तेवीसइमं अज्झयणं समत्तं।।23।।

।। चउवीसइमं पवयणमायं अज्झयणं ।।24।।

अट्ठ पवयण-मायाओ, समिई गुत्ती तहेव य।
पंचेव य समिईओ, तओ गुत्तीउ आहिया।।1।।

ईरिया-भासेसणा-दाणे, उच्चारे समिई इय।
मण-गुत्ती वय-गुत्ती, काय-गुत्ती य अट्ठमा।।2।।

एयाओ अट्ठ समिईओ, समासेण वियाहिया।
दुवालसंगं जिणऽक्खायं, मायं जत्थ उ पवयणं।।3।।

आलंबणेण कालेण, मग्गेण जयणाइ य।
चउ-कारण-परिसुद्धं, संजए ईरियं रिए।।4।।

तत्थ आलंबणं नाणं, दंसणं चरणं तहा।
काले य दिवसे वुत्ते, मग्गे उप्पह-वज्जिए।।5।।

दव्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा।
जयणा चउव्विहा वुत्ता, तं मे कित्तयओ सुण।।6।।

दव्वओ चक्खुसा पेहे, जुगमेत्तं च खेत्तओ।
कालओ जाव रीएज्जा, उवउत्ते य भावओ।।7।।

इंदियत्थे विवज्जेत्ता, सज्झायं चेव पंचहा।
तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे, उवउत्ते रियं रिए।।8।।

कोहे माणे य मायाए, लोभे य उवउत्तया।
हासे भए मोहरिए, विकहासु तहेव य।।9।।

एयाइं अट्ठ ठाणाइं, परिवज्जित्तु संजए।
असावज्जं मियं काले, भासं भासेज्ज पन्नवं।।10।।

गवेसणाए गहणे य, परिभोगेसणा य जा।
आहारोवहि-सेज्जाए, एए तिन्नि विसोहए।।11।।

उग्गमुप्पायणं पढमे, बीए सोहेज्ज एसणं।
परिभोयम्मि चउक्कं, विसोहेज्ज जयं जई।।12।।

ओहोवहोवग्गहियं, भंडगं दुविहं मुणी।
गिण्हंतो निक्खिवंतो य, पउंजेज्ज इमं विहिं।।13।।

चक्खुसा पडिलेहित्ता, पमज्जेज्ज जयं जई।
आइए निक्खिवेज्जा वा, दुहओ वि समिए सया।।14।।

उच्चारं पासवणं, खेलं सिंघाण जल्लियं।
आहारं उवहिं देहं, अन्नं वा वि तहाविहं।।15।।

अणावाय-मसंलोए, अणावाए चेव होइ संलोए।
आवाय-मसंलोए, आवाए चेव संलोए।।16।।

अणावाय-मसंलोए, परस्सऽणुवघाइए।
समे अज्झुसिरे यावि, अचिर-काल-कयम्मि य।।17।।

वित्थिण्णे दूर-मोगाढे, नासन्ने बिल-वज्जिए।
तस-पाण-बीय-रहिए, उच्चाराईणि वोसिरे।।18।।

एयाओ पंच समिईओ, समासेण वियाहिया।
एत्तो य तओ गुत्तीओ, वोच्छामि अणुपुव्वसो।।19।।

सच्चा तहेव मोसा य, सच्चमोसा तहेव य।
चउत्थी असच्चमोसा य, मण-गुत्ती चउव्विहा।।20।।

संरंभ-समारंभे, आरंभे य तहेव य।
मणं पवत्तमाणं तु, नियत्तेज्ज जयं जई।।21।।

सच्चा तहेव मोसा य, सच्चमोसा तहेव य।
चउत्थी असच्चमोसा य, वइगुत्ती चउव्विहा।।22।।

संरंभ-समारंभे, आरंभे य तहेव य।
वयं पवत्तमाणं तु, नियत्तेज्ज जयं जई।।23।।

ठाणे निसीयणे चेव, तहेव य तुयट्टणे।
उल्लंघण पल्लंघणे, इंदियाण य जुंजणे।।24।।

संरंभ-समारंभे, आरंभे य तहेव य।
कायं पवत्तमाणं तु, नियत्तेज्ज जयं जई।।25।।

एयाओ पंच समिईओ, चरणस्स य पवत्तणे।
गुत्ती नियत्तणे वुत्ता, असुभत्थेसु सव्वसो।।26।।

एसा पवयण-माया, जे सम्मं आयरे मुणी।
सो खिप्पं सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पंडिए।।27।।

।। त्ति बेमि।।

।।पवयणमायं चउवीसइमं अज्झयणं समत्तं।।24।।

।। पंचवीसइमं जन्नइज्जं अज्झयणं ।।25।।

माहण-कुलसंभूओ, आसी विप्पो महाजसो।
जायाई जम्म-जन्नम्मि, जयघोसि त्ति नामओ।।1।।

इंदिय-ग्गाम-निग्गाही, मग्गगामी महामुणी।
गामाणुगामं रीयंते, पत्तो वाणारसिं पुरिं।।2।।

वाणारसीए बहिया, उज्जाणम्मि मणोरमे।
फासुए सेज्ज-संथारे, तत्थ वासमुवागए।।3।।

अह तेणेव कालेणं, पुरीए तत्थ माहणे।
विजयघोसि त्ति नामेणं, जन्नं जयइ वेयवी।।4।।

अह से तत्थ अणगारे, मासक्खमणपारणे।
विजयघोसस्स जन्नम्मि, भिक्खमट्ठा उवट्ठिए।।5।।

समुवट्ठियं तहिं संतं, जायगो पडिसेहए।
न हु दाहामि ते भिक्खं, भिक्खू ! जायाहि अन्नओ।।6।।

जे य वेयविऊ विप्पा, जन्नट्ठा य जे दिया।
जोइसंग-विऊ जे य, जे य धम्माण पारगा।।7।।

जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य।
तेसिं अन्नमिणं देयं, भो भिक्खू! सव्व-कामियं।।8।।

सो तत्थ एवं पडिसिद्धो, जायगेण महामुणी।
न वि रुट्ठो न वि तुट्ठो, उत्तमट्ठगवेसओ।।9।।

नऽन्नट्ठं पाणहेउं वा, न वि निव्वाहणाय वा।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए, इमं वयण-मब्बवी।।10।।

न वि जाणासि वेयमुहं, न वि जन्नाण जं मुहं।
नक्खत्ताण मुहं जं च, जं च धम्माण वा मुहं।।11।।

जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य।
न ते तुमं वियाणासि, अह जाणासि तो भण।।12।।

तस्सऽक्खेव-पमोक्खं च, अचयंतो तहिं दिओ।
सपरिसो पंजलीहोउं, पुच्छई तं महामुणिं।।13।।

वेयाणं च मुहं बूहि, बूहि जन्नाण जं मुहं।
नक्खत्ताण मुहं बूहि, बूहि धम्माण वा मुहं।।14।।

जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाण-मेव य।
एयं मे संसयं सव्वं, साहू ! कहसु पुच्छिओ।।15।।

अग्गिहुत्त-मुहा वेया, जन्नट्ठी वेयसां मुहं।
नक्खत्ताण मुहं चंदो, धम्माणं कासवो मुहं।।16।।

जहा चंदं गहाईया, चिट्ठंति पंजलीउडा।
वंदमाणा नमंसंता, उत्तमं मणहारिणो।।17।।

अजाणगा जन्नवाई, विज्जा-माहण-संपया।
मूढा सज्झाय-तवसा, भासच्छन्ना इवऽग्गिणो।।18।।

जो लोए बंभणो वुत्तो, अग्गीव महिओ जहा।
सया कुसल-संदिट्ठं, तं वयं बूम माहणं।।19।।

जो न सज्जइ आगंतुं, पव्वयंतो ण सोयई।
रमई अज्जवयणम्मि, तं वयं बूम माहणं।।20।।

जायरूवं जहामट्ठं, निद्धंत-मल-पावगं।
राग-द्दोस-भयाईयं, तं वयं बूम माहणं।।21।।

तवस्सियं किसं दंतं, अवचिय-मंस-सोणियं।
सुव्वयं पत्त-निव्वाणं, तं वयं बूम माहणं।।22।।

तसपाणे वियाणित्ता, संगहेण य थावरे।
जो न हिंसइ तिविहेणं, तं वयं बूम माहणं।।23।।

कोहा वा जइ वा हासा, लोहा वा जइ वा भया।
मुसं न वयई जो उ, तं वयं बूम माहणं।।24।।

चित्तमंत-मचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहुं।
न गिण्हइ अदत्तं जे, तं वयं बूम माहणं।।25।।

दिव्व-माणुस-तेरिच्छं, जो न सेवइ मेहुणं।
मणसा कायवक्केणं, तं वयं बूम माहणं।।26।।

जहा पोमं जले जायं, नोवलिप्पइ वारिणा।
एवं अलित्तं कामेहिं, तं वयं बूम माहणं।।27।।

अलोलुयं मुहाजीविं, अणगारं अकिंचणं।
असंसत्तं गिहत्थेसु, तं वयं बूम माहणं।।28।।

जहित्ता पुव्व-संजोगं, नाइसंगे य बंधवे।
जो न सज्जइ भोगेसु, तं वयं बूम माहणं।।29।।

पसुबंधा सव्व-वेया, जट्ठं च पावकम्मुणा।
न तं तायंति दुस्सीलं, कम्माणि बलवंति हि।।30।।

न वि मुंडिएण समणो, न ओंकारेण बंभणो।
न मुणी रण्ण-वासेणं, कुस-चीरेण न तावसो।।31।।

समयाए समणो होइ, बंभचेरेण बंभणो।
नाणेण य मुणी होइ, तवेण होइ तावसो।।32।।

कम्मुणा बंभणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ।
वइस्सो कम्मुणा होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा।।33।।

एए पाउकरे बुद्धे, जेहिं होइ सिणायओ।
सव्वकम्मविणिम्मुक्कं, तं वयं बूम माहणं।।34।।

एवं गुणसमाउत्ता, जे भवंति दिउत्तमा।
ते समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाण-मेव य।।35।।

एवं तु संसए छिन्ने, विजयघोसे य माहणे।
समुदाय तओ तं तु, जयघोसं महामुणिं।।36।।

तुट्ठे य विजयघोसे, इण-मुदाहु कयंजली।
माहणत्तं जहाभूयं, सुट्ठु मे उवदंसियं।।37।।

तुब्भे जइया जन्नाणं, तुब्भे वेयविऊ विऊ।
जोइसंग-विऊ तुब्भे, तुब्भे धम्माण पारगा।।38।।

तुब्भे समत्था उद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य।
तमणुग्गहं करेहऽम्हं, भिक्खेणं भिक्खुउत्तमा।।39।।

न कज्जं मज्झ भिक्खेण, खिप्पं निक्खमसू दिया!।
मा भमिहिसि भयावट्टे, घोरे संसार-सागरे।।40।।

उवलेवो होइ भोगेसु, अभोगी नोवलिप्पई।
भोगी भमइ संसारे, अभोगी विप्पमुच्चई।।41।।

उल्लो सुक्को य दो छूढा, गोलया मट्टिया-मया।
दो वि आवडिया कुड्डे ,जो उल्लो सोऽत्थ लग्गई।।42।।

एवं लग्गंति दुम्मेहा, जे नरा काम-लालसा।
विरत्ता उ न लग्गंति, जहा से सुक्कगोलए।।43।।
एवं से विजयघोसे, जयघोसस्स अंतिए।
अणगारस्स निक्खंतो, धम्मं सोच्चा अणुत्तरं।।44।।
खवेत्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य।
जयघोस-विजयघोसा, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं।।45।।
।। त्ति बेमि।।
।।जन्नइज्जं पंचवीसइमं अज्झयणं समत्तं।।25।।

।। छव्वीसइमं सामायारिज्जं अज्झयणं ।।26।।

सामायारिं पवक्खामि, सव्व-दुक्खविमोक्खणिं।
जं चरित्ताण निग्गंथा, तिण्णा संसार-सागरं।।1।।
पढमा आवस्सिया नामं, बिइया य निसीहिया।
आपुच्छणा य तइया, चउत्थी पडिपुच्छणा।।2।।
पंचमी छंदणा नामं, इच्छाकारो य छट्ठओ।
सत्तमो मिच्छाकारो य, तहक्कारो य अट्ठमो।।3।।
अब्भुट्ठाणं च नवमं, दसमी उवसंपया।
एसा दसंगा साहूणं, सामायारी पवेइया।।4।।
गमणे आवस्सियं कुज्जा, ठाणे कुज्जा निसीहियं।
आपुच्छणा सयं-करणे, परकरणे पडिपुच्छणा।।5।।
छंदणा दव्व-जाएणं, इच्छाकारो य सारणे।
मिच्छाकारो य निंदाए, तहक्कारो पडिस्सुए।।6।।

अब्भुट्ठाणं गुरुपूया, अच्छणे उवसंपया।
एवं दु-पंच-संजुत्ता, सामायारी पवेइया।।7।।

पुव्विल्लम्मि चउब्भाए, आइच्चम्मि समुट्ठिए।
भंडयं पडिलेहित्ता, वंदित्ता य तओ गुरुं।।8।।

पुच्छेज्ज पंजलिउडो, किं कायव्वं मए इह?।
इच्छं निओइउं भंते !, वेयावच्चे व सज्झाए।।9।।

वेयावच्चे निउत्तेणं, कायव्व-मगिलायओ।
सज्झाए वा निउत्तेणं, सव्वदुक्खविमोक्खणे।।10।।

दिवसस्स चउरो भागे, भिक्खू कुज्जा वियक्खणो।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा, दिणभागेसु चउसु वि।।11।।

पढमं पोरिसि सज्झायं, बीयं झाणं झियायई।
तइयाए भिक्खायरियं, पुणो चउत्थीइ सज्झायं।।12।।

आसाढे मासे दुपया, पोसे मासे चउप्पया।
चित्तासोएसु मासेसु, तिप्पया हवइ पोरिसी।।13।।

अंगुलं सत्तरत्तेणं, पक्खेणं च दुरंगुलं।
वड्ढए हायए वा वि, मासेणं चउरंगुलं।।14।।

आसाढ बहुल-पक्खे, भद्दवए कत्तिए य पोसे य।
फग्गुण-वइसाहेसु य, बोद्धव्वा ओमरत्ताओ।।15।।

जेट्ठामूले आसाढ-सावणे, छहिं अंगुलेहिं पडिलेहा।
अट्ठहिं बीय-तयम्मि, तइए दस अट्ठहिं चउत्थे।।16।।

रत्तिं पि चउरो भागे, भिक्खू कुज्जा वियक्खणो।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा, राईभागेसु चउसु वि।।17।।

पढमं पोरिसि सज्झायं, बीयं झाणं झियायई।
तइयाए निद्द-मोक्खं तु, चउत्थी भुज्जो वि सज्झायं।।18।।

जं नेइ जया रत्तिं, नक्खत्तं तम्मि नहचउब्भाए।
संपत्ते विरमेज्जा, सज्झायं पओसकालम्मि।।19।।

तम्मेव य नक्खत्ते, गयण-चउब्भाग-सावसेसम्मि।
वेरत्तियं पि कालं, पडिलेहित्ता मुणी कुज्जा।।20।।

पुव्विल्लम्मि चउब्भाए, पडिलेहित्ताण भंडयं।
गुरुं वंदित्तु सज्झायं, कुज्जा दुक्ख-विमोक्खणं।।21।।

पोरिसीए चउब्भाए, वंदित्ताण तओ गुरुं।
अपडिक्कमित्ता कालस्स, भायणं पडिलेहए।।22।।

मुहपत्तिं पडिलेहित्ता, पडिलेहिज्ज गोच्छगं।
गोच्छग-लइयंगुलिओ, वत्थाइं पडिलेहए।।23।।

उड्ढं थिरं अतुरियं, पुव्वं ता वत्थमेव पडिलेहे।
तो बिइयं पप्फोडे, तइयं च पुणो पमज्जेज्जा।।24।।

अणच्चावियं अवलियं, अणाणुबंधिं अमोसलिं चेव।
छप्पुरिमा नवखोडा, पाणी-पाणि-विसोहणं।।25।।

आरभडा सम्मद्दा, वज्जेयव्वा य मोसली तइया।
पप्फोडणा चउत्थी, विक्खिता वेइया छट्ठी।।26।।

पसिढिल-पलंब-लोला, एगा-मोसा अणेगरूवधुणा।
कुणइ पमाणि पमायं, संकिय-गणणोवगं कुज्जा।।27।।

अणूणाइरित्त-पडिलेहा, अविवच्चासा तहेव य।
पढमं पयं पसत्थं, सेसाणि उ अप्पसत्थाइं।।28।।

पडिलेहणं कुणंतो, मिहोकहं कुणइ जणवय-कहं वा।
देइ व पच्चक्खाणं, वाएइ सयं पडिच्छइ वा।।29।।

पुढवी-आउक्काए, तेऊ-वाऊ-वणस्सइ-तसाणं।
पडिलेहणा-पमत्तो, छण्हं पि विराहओ होइ।।30।।

पुढवी-आउक्काए, तेऊ-वाऊ-वणस्सइ-तसाणं।
पडिलेहणा-आउत्तो,छण्हं पि आराहओ होइ।।31।।

तइयाए पोरिसीए, भत्तं पाणं गवेसए।
छण्हं अन्नयरागम्मि, कारणम्मि समुट्ठिए।।32।।

वेयण वेयावच्चे, इरियट्ठाए य संजमट्ठाए।
तह पाणवत्तियाए, छट्ठं पुण धम्मचिंताए।।33।।

निग्गंथो धिइमंतो, निग्गंथी वि न करेज्ज छहिं चेव।
ठाणेहिं उ इमेहिं, अणइक्कमणाइ से होइ।।34।।

आयंके उवसग्गे, तितिक्खया बंभचेर-गुत्तीसु।
पाणिदया-तवहेउं, सरीर-वोच्छेयणट्ठाए।।35।।

अवसेसं भंडगं गिज्झा, चक्खुसा पडिलेहए।
परमद्धजोयणाओ, विहारं विहरए मुणी।।36।।

चउत्थीए पोरिसीए, निक्खिवित्ताण भायणं।
सज्झायं च तओ कुज्जा, सव्व-भाव-विभावणं।।37।।

पोरिसीए चउब्भाए, वंदित्ताण तओ गुरुं।
पडिक्कमित्ता कालस्स, सेज्जं तु पडिलेहए।।38।।

पासवणुच्चारभूमिं च, पडिलेहिज्ज जयं जई।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्व-दुक्ख-विमोक्खणं।।39।।

देवसियं च अईयारं, चिंतिज्ज अणुपुव्वसो।
नाणम्मि दंसणे चेव, चरित्तम्मि तहेव य।।40।।

पारिय-काउस्सग्गो, वंदित्ताण तओ गुरुं।
देवसियं तु अईयारं, आलोएज्ज जहक्कमं।।41।।

पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वंदित्ताण तओ गुरुं।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्व-दुक्ख-विमोक्खणं।।42।।

पारिय-काउस्सग्गो, वंदित्ताण तओ गुरुं।
थुइ-मंगलं च काऊणं, कालं संपडिलेहए।।43।।

पढमं पोरिसि सज्झायं, बिइयं झाणं झियायई।
तइयाए निद्दमोक्खं तु, सज्झायं तु चउत्थिए।।44।।

पोरिसीए चउत्थीए, कालं तु पडिलेहिया।
सज्झायं तु तओ कुज्जा, अबोहंतो असंजए।।45।।

पोरिसीए चउब्भाए, वंदिऊण तओ गुरुं।
पडिक्कमित्तु कालस्स, कालं तु पडिलेहए।।46।।

आगए काय-वोस्सग्गे, सव्व-दुक्ख-विमोक्खणे।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्व-दुक्ख-विमोक्खणं।।47।।

राइयं च अईयारं, चिंतेज्ज अणुपुव्वसो।
नाणंमि दंसणंमि च, चरित्तंमि तवंमि च।।48।।

पारिय-काउस्सग्गो, वंदित्ताण तओ गुरुं।
राइयं तु अईयारं, आलोएज्ज जहक्कमं।।49।।

पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वंदित्ताण तओ गुरुं।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्व-दुक्ख-विमोक्खणं।।50।।

किं तवं पडिवज्जामि?, एवं तत्थ विचिंतए।
काउस्सग्गं तु पारित्ता, करिज्जा जिणसंथवं।।51।।
पारिय-काउस्सग्गो, वंदित्ताण तओ गुरुं।
तवं संपडिवज्जित्ता, करिज्जा सिद्धाण संथवं।।52।।
एसा सामायारी, समासेण वियाहिया।
जं चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा संसार-सागरं।।53।।
।। त्ति बेमि।।

।। सामायारिज्जं छव्वीसइमं अज्झयणं समत्तं।।26।।

।। सत्तावीसइमं खलुंकियं अज्झयणं ।।27।।

थेरे गणहरे गग्गे, मुणी आसि विसारए।
आइन्ने गणि-भावम्मि, समाहिं पडिसंधए।।1।।
वहणे वहमाणस्स, कंतारं अइवत्तई।
जोगे वहमाणस्स, संसारो अइवत्तई।।2।।
खलुंके जो उ जोएइ, विहम्माणो किलिस्सई।
असमाहिं च वेएइ, तोत्तओ य से भज्जई।।3।।
एगं डसइ पुच्छम्मि, एगं विंधइ-ऽभिक्खणं।
एगो भंजइ समिलं, एगो उप्पह-पट्ठिओ।।4।।
एगो पडइ पासेणं, निवेसइ निवज्जई।
उक्कुद्दइ उप्फिडई, सढे बालगवी वए।।5।।
माई मुद्धेण पडइ, कुद्धे गच्छइ पडिप्पहं।
मयलक्खेण चिट्ठई, वेगेण य पहावई।।6।।

छिन्नाले छिंदई सेल्लिं, दुद्दंतो भंजए जुगं।
से वि य सुस्सुयाइत्ता, उज्जहित्ता पलायए।।7।।
खलुंका जारिसा जोज्जा, दुस्सीसा वि हु तारिसा।
जोइया धम्म-जाणम्मि, भज्जंति धिइ-दुब्बला।।8।।
इड्ढी-गारविए एगे, एगेऽत्थ रसगारवे।
साया-गारविए एगे, एगे सुचिरकोहणे।।9।।
भिक्खालसिए एगे, एगे ओमाणभीरुए।
थद्धे एगे अणुसासम्मि, हेऊहिं कारणेहिं य।।10।।
सो वि अंतर-भासिल्लो, दोसमेव पकुव्वई।
आयरियाणं तु वयणं, पडिकूलेइ-ऽभिक्खणं।।11।।
न सा ममं वियाणाइ, न वि सा मज्झ दाहिई।
निग्गया होहिइ मन्ने, साहू अन्नोऽत्थ वच्चउ।।12।।
पेसिया पलिउंचंति, ते परियंति समंतओ।
रायवेट्ठिं च मन्नंता, करेंति भिउडिं मुहे।।13।।
वाइया संगहिया चेव, भत्तपाणेण पोसिया।
जाय-पक्खा जहा हंसा, पक्कमंति दिसोदिसिं।।14।।
अह सारही विचिंतेइ, खलुंकेहिं समागओ।
किं मज्झ दुट्ठ-सीसेहिं, अप्पा मे अवसीयई।।15।।
जारिसा मम सीसाओ, तारिसा गलि-गद्दहा।
गलि-गद्दहे जहित्ताणं, दढं पगिण्हई तवं।।16।।

मिउ-मद्दवसंपन्नो, गंभीरो सुसमाहिओ।
विहरइ महिं महप्पा, सीलभूएण अप्पणा।।17।।

।। त्ति बेमि।।

।। खलुंकियं सत्तावीसइमं अज्झयणं समत्तं।।27।।

।।अट्ठावीसइमं मोक्खमग्गतीनामं अज्झयणं।।28।।

मोक्ख-मग्ग-गइं तच्चं, सुणेह जिण-भासियं।
चउ-कारण-संजुत्तं, नाण-दंसण-लक्खणं।।1।।

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा।
एस मग्गो त्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वर-दंसिहिं।।2।।

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा।
एयं मग्ग-मणुप्पत्ता, जीवा गच्छंति सोग्गइं।।3।।

तत्थ पंचविहं नाणं, सुयं आभिणिबोहियं।
ओहि-नाणं तु तइयं, मणनाणं च केवलं।।4।।

एयं पंचविहं नाणं, दव्वाण य गुणाण य।
पज्जवाणं च सव्वेसिं, नाणं नाणीहिं देसियं।।5।।

गुणाण-मासओ दव्वं, एग-दव्वस्सिया गुणा।
लक्खणं पज्जवाणं तु, उभओ अस्सिया भवे।।6।।

धम्मो अहम्मो आगासं, कालो पुग्गल-जंतवो।
एस लोगो त्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वर-दंसिहिं।।7।।

धम्मो अहम्मो आगासं, दव्वं इक्किक्क-माहियं।
अणंताणि य दव्वाणि, कालो पुग्गल-जंतवो।।8।।

गइ-लक्खणो उ धम्मो, अहम्मो ठाण-लक्खणो।
भायणं सव्व-दव्वाणं, नहं ओगाह-लक्खणं।।9।।

वत्तणा-लक्खणो कालो, जीवो उवओग-लक्खणो।
नाणेणं दंसणेणं च, सुहेण य दुहेण य।।10।।

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा।
वीरियं उवओगो य, एयं जीवस्स लक्खणं।।11।।

सद्दंधयार-उज्जोओ, पभा छायाऽऽतवो इ वा।
वण्ण-रस-गंध-फासा, पुग्गलाणं तु लक्खणं।।12।।

एगत्तं च पुहत्तं च, संखा संठाण-मेव य।
संजोगा य विभागा य, पज्जवाणं तु लक्खणं।।13।।

जीवाऽजीवा य बंधो य, पुण्णं पावाऽऽसवो तहा।
संवरो निज्जरा मोक्खो, संतेए तहिया नव।।14।।

तहियाणं तु भावाणं, सब्भावे उवएसणं।
भावेण सद्दहंतस्स, सम्मत्तं तं वियाहियं।।15।।

निसग्गुवएसरुई, आणारुई सुत्त-बीयरुइ मेव।
अभिगम-वित्थाररुई, किरिया-संखेव-धम्मरुई।।16।।

भूयत्थेणाहिगया, जीवाऽजीवा य पुण्णपावं च।
सह सहसम्मुइयासवसंवरो , रोएइ उ निसग्गो।।17।।

जो जिणदिट्ठे भावे, चउव्विहे सद्दहाइ सयमेव।
एमेव नऽन्नह त्ति य, निसग्ग-रुइ त्ति नायव्वो।।18।।

एए चेव उ भावे, उवइट्ठे जो परेण सद्दहइ।
छउमत्थेण जिणेण व, उवएसरुइ-त्ति नायव्वो।।19।।

रागो दोसो मोहो, अन्नाणं जस्स अवगयं होइ।
आणाए रोयंतो, सो खलु आणारुई नामं।।20।।

जो सुत्त-महिज्जंतो, सुएण ओगाहई उ सम्मत्तं।
अंगेण बाहिरेण व, सो सुत्तरुइ-त्ति नायव्वो।।21।।

एगेण अणेगाइं पयाइं, जो पसरई उ सम्मत्तं।
उदए व्व तेल्लबिंदू, सो बीय-रुइ-त्ति नायव्वो।।22।।

सो होइ अभिगमरुई, सुयनाणं जेण अत्थओ दिट्ठं।
एक्कारस अंगाइं, पइण्णगं दिट्ठिवाओ य।।23।।

दव्वाण सव्वभावा, सव्वपमाणेहिं जस्स उवलद्धा।
सव्वाहिं नय-विहीहिं, वित्थाररुइ त्ति नायव्वो।।24।।

दंसण-नाण-चरित्ते, तव-विणए सच्च-समिइ-गुत्तीसु।
जो किरिया-भाव-रुई, सो खलु किरियारुई नाम।।25।।

अणभिग्गहियकुदिट्ठी, संखेवरुइ त्ति होइ नायव्वो।
अविसारओ पवयणे, अणभिग्गहिओ य सेसेसु।।26।।

जो अत्थिकाय-धम्मं, सुय-धम्मं खलु चरित्त-धम्मं च।
सद्दहइ जिणाभिहियं, सो धम्मरुइ त्ति नायव्वो।।27।।

परमत्थसंथवो वा, सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वा वि।
वावन्न-कुदंसण-वज्जणा, य सम्मत्तसद्दहणा।।28।।

नत्थि चरित्तं सम्मत्तविहूणं, दंसणे उ भइयव्वं।
सम्मत्त-चरित्ताइं, जुगवं पुव्वं व सम्मत्तं।।29।।

नादंसणिस्स नाणं, नाणेण विणा न हुंति चरणगुणा।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो, नत्थि अमोक्खस्स निव्वाणं।।30।।

निस्संकिय निक्कंखिय निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य।
उववूह-थिरीकरणे, वच्छल्ल-पभावणे अट्ठ।।31।।

सामाइयत्थ पढमं, छेओवट्ठावणं भवे बीयं।
परिहारविसुद्धीयं, सुहुमं तह संपरायं च।।32।।

अकसाय-महक्खायं, छउमत्थस्स जिणस्स वा।
एयं चयरित्तकरं, चारित्तं होइ आहियं।।33।।

तवो य दुविहो वुत्तो, बाहिरऽब्भंतरो तहा।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भंतरो तवो।।34।।

नाणेण जाणई भावे, दंसणेण य सद्दहे।
चरित्तेण निगिण्हाइ, तवेण परिसुज्झई।।35।।

खवेत्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य।
सव्वदुक्ख-पहीणट्ठा, पक्कमंति महेसिणो।।36।।

।। त्ति बेमि।।

।।मोक्खमग्गगतीनामं अट्ठवीसइमं अज्झयणं समत्तं।।28।।

।। एगूणतीसइमं सम्मत्तपरक्कमं अज्झयणं ।।29।।

सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु सम्मत्त-परक्कमे नामं अज्झयणे समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइए, जं सम्मं सद्दहित्ता पत्तइत्ता रोयइत्ता फासइत्ता पालइत्ता तीरित्ता कित्तइत्ता सोहइत्ता आराहइत्ता आणाए अणुपालइत्ता बहवे जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वायंति सव्व-दुक्खाणमंतं करेंति।

तस्स णं अयमट्ठे एवमाहिज्जइ, तं जहा- संवेगे निव्वेएधम्मसद्धा गुरु-साहम्मिय-सुस्सूसणया आलोयणया निंदणया गरहणया सामाइए चउवीसत्थए वंदणे पडिक्कमणे काउस्सग्गे पच्चक्खाणे थवथुइमंगले कालपडिलेहणया पायच्छित्त-करणे खमावणया सज्झाए वायणया पडिपुच्छणया परियट्टणया अणुप्पेहा धम्मकहा सुयस्स आराहणया एगग्ग-मण-संन्निवेसणया संजमे तवे वोदाणे सुहसाए अप्पडिबद्धया विवित्त-सयणासण-सेवणया विणियट्टणया संभोग-पच्चक्खाणे उवहि-पच्चक्खाणे आहार-पच्चक्खाणे कसाय-पच्चक्खाणे जोग-पच्चक्खाणे सरीर-पच्चक्खाणे सहाय-पच्चक्खाणे भत्त-पच्चक्खाणे सब्भाव-पच्चक्खाणे पडिरूवणया वेयावच्चे सव्वगुण-संपण्णया वीयरागया खंती मुत्ती मद्दवे अज्जवे भावसच्चे करणसच्चे जोगसच्चे मणगुत्तया वयगुत्तयाकायगुत्तया मण-समाधारणया वय-समाधारणया काय-समाधारणया नाण-संपन्नया दंसण-संपन्नया चरित्त-संपन्नया सोइंदिय-निग्गहे चक्खिंदिय-निग्गहे घाणिंदिय-निग्गहे जिब्भिंदिय-निग्गहे फासिंदिय-निग्गहे कोह-विजए माण-विजए माया-विजए लोह-विजए पेज्ज-दोस-मिच्छादंसण-विजए सेलेसी अकम्मया।

(1) संवेगेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? संवेगेणं अणुत्तरं धम्मसद्धं जणयइ। अणुत्तराए धम्म-सद्धाए संवेगं हव्व-मागच्छइ। अणंताणुबंधि-कोह-माण-माया-लोभे खवेइ। नवं च कम्मं न बंधइ, तप्पच्चइयं च णं मिच्छत्त-विसोहिं काऊण दंसणाराहए भवइ, दंसण-विसोहीए य णं विसुद्धाए अत्थेगइए जीवे तेणेव

भवग्गहणेणं सिज्झइ। विसोहीए य णं विसुद्धाए तच्चं पुणो भवग्गहणं नाइक्कमइ।

(2) निव्वेएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? निव्वेएणं दिव्व-माणुस-तेरिच्छिएसु कामभोगेसु निव्वेयं हव्व-मागच्छइ, सव्व-विसएसु विरज्जइ, सव्व-विसएसु विरज्जमाणे आरंभ-परिच्चायं करेइ, आरंभ-परिच्चायं करेमाणे संसारमग्गं वोच्छिंदइ, सिद्धि-मग्गं पडिवन्ने य भवइ।

(3) धम्मसद्धाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? धम्मसद्धाए णं साया-सोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ, अगारधम्मं च णं चयइ, अणगारिए णं जीवे सारीर-माणसाणं दुक्खाणं छेयण-भेयण संजोगाईणं वोच्छेयं करेइ, अव्वाबाहं च सुहं निव्वत्तेइ।

(4) गुरु-साहम्मिय-सुस्सूसणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? गुरु-साहम्मिय-सुस्सूसणयाए णं विणय-पडिवत्तिं जणयइ। विणयपडिवन्ने य णं जीवे अणच्चासायण-सीले नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देव-दुग्गईओ-निरुंभइ, वण्ण-संजलण-भत्ति-बहुमाणयाए मणुस्स-देवसुग्गईओ निबंधइ, सिद्धि-सोग्गइं च विसोहेइ, पसत्थाइं च णं विणय- मूलाइं सव्वकज्जाइं साहेइ, अन्ने य बहवे जीवे विणइत्ता भवइ।

(5) आलोयणाए णं भंते! जीवे किं जणयइ? आलोयणाए णं माया-नियाण-मिच्छादंसण-सल्लाणं, मोक्खमग्ग -विग्घाणं, अणंत-संसार-वद्धणाणं उद्धरणं करेइ, उज्जुभावं च जणयइ। उज्जुभावपडिवन्ने य णं जीवे अमाई इत्थीवेयं नपुंसग-वेयं च न बंधइ, पुव्वबद्धं च णं निज्जरेइ।

(6) निंदणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? निंदणयाए णं पच्छाणुतावं जणयइ। पच्छाणुतावेणं विरज्जमाणे करणगुण-सेढिं पडिवज्जइ। करणगुणसेढी-पडिवन्ने य अणगारे मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ।

(7) गरहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? गरहणयाए णं अपुरक्कारं जणयइ। अपुरक्कारगए णं जीवे अप्पसत्थेहिंतो जोगे हिंतो नियत्तेइ, पसत्थे य पडिवज्जइ। पसत्थजोग-पडिवन्ने य णं अणगारे अणंतघाइ-पज्जवे खवेइ।

(8) सामाइएणं भंते ! जीवे किं जणयइ? सामाइएणं सावज्जजोग-विरइं जणयइ।

(9) चउवीसत्थएणं भंते ! जीवे किं जणयइ? चउव्वीसत्थएणं दंसणविसोहिं जणयइ।

(10) वंदणएणं भंते ! जीवे किं जणयइ? वंदणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ, उच्चागोयं कम्मं निबंधइ, सोहग्गं च णं अप्पडिहयं आणाफलं निव्वत्तेइ, दाहिणभावं च णं जणयइ।

(11) पडिक्कमणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? पडिक्कमणेणं वयच्छिदाइं पिहेइ। पिहिय-वयछिद्दे पुण जीवे निरुद्धासवे असबल-चरित्ते अट्ठसुपवयण-मायासु उवउत्ते अपुहत्ते सुप्पणिहिए विहरइ।

(12) काउस्सग्गेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? काउस्सग्गेणं तीय-पडुप्पन्नं पायच्छित्तं विसोहेइ। विसुद्ध-पायच्छित्ते य जीवे निव्वुय-हियए ओहरियभरु व्व भारवहे पसत्थ-ज्झाणोवगए सुहंसुहेणं विहरइ।

(13) पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? पच्चक्खाणेणं आसव-दाराइं निरुंभइ। पच्चक्खाणेणं इच्छा-निरोहं जणयइ इच्छा-निरोहं गए य णं जीवे सव्व-दव्वेसु विणीय-तण्हे सीइभूए विहरइ।

(14) थव-थुइमंगलेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? थव-थुइमंगलेणं नाण-दंसण-चरित्त-बोहिलाभं जणयइ। नाण-दंसण-चरित्-बोहि-लाभ-संपन्ने य णं जीवे अंतकिरियं कप्प-विमाणोव-वत्तियं आराहणं आराहेइ।

(15) काल-पडिलेहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? काल-पडिलेहणयाए णं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ।

(16) पायच्छितकरणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? पायच्छित-करणेणं पावकम्म-विसोहिं जणयइ, निरइयारे यावि भवइ। सम्मं च णं पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ, आयारं च आयार-फलं च आराहेइ।

(17) खमावणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? खमावणयाए णं पल्हायण-भावं जणयइ। पल्हायण-भावमुवगए य सव्व-पाण-भूय-जीव-सत्तेसु मित्तीभाव-मुप्पाएइ, मित्तीभाव-मुवगए यावि जीवे भावविसोहिं काऊण निब्भए भवइ।

(18) सज्झाएणं भंते ! जीवे किं जणयइ? सज्झाएणं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ।

(19) वायणाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? वायणाए णं निज्जरं जणयइ। सुयस्स य अणुसज्जणाए अणासायणाए वट्टइ,

सुयस्स अणुसज्जणाए अणासायणाए वट्टमाणे तित्थ-धम्मं अवलंबइ, तित्थधम्मं अवलंबमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ।

(20) पडिपुच्छणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? पडिपुच्छणयाए णं सुत्तत्थ-तदुभयाइं विसोहेइ, कंखा- मोहणिज्जं कम्मं वोच्छिंदइ।

(21) परियट्टणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? परियट्टणयाए णं वंजणाइं जणयइ। वंजणलद्धिं च उप्पाएइ।

(22) अणुप्पेहाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? अणुप्पेहाए णं आउय-वज्जाओ सत्त कम्म-पगडीओ धणिय-बंधण-बद्धाओ सिढिल-बंधण-बद्धाओ पकरेइ, दीहकाल-ट्ठिइयाओ हस्सकाल-ट्ठिइयाओ पकरेइ, तिव्वाणु-भावाओ मंदाणु-भावाओ पकरेइ। बहु-पएसग्गाओ अप्प-पएसग्गाओ पकरेइ। आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ सिय नो बंधइ, असाया-वेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ, अणाइयं च णं अणवयग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसार-कंतारं खिप्पामेव वीइवयइ।

(23) धम्म-कहाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? धम्म-कहाए णं निज्जरं जणयइ। धम्म-कहाए णं पवयणं पभावेइ, पवयण-पभावेणं जीवे आगमेसस्स-भद्दताए कम्मं निबंधइ।

(24) सुयस्स आराहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? सुयस्स-आराहणयाए णं अन्नाणं खवेइ, न य संकिलिस्सइ।

(25) एगग्ग-मण-संन्निवेसणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? एगग्ग-मण-संन्निवेसणयाए णं चित्तनिरोहं करेइ।

(26) संजमेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? संजमेणं अणण्हयत्तं जणयइ।

(27) तवेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? तवेणं वोदाणं जणयइ।

(28) वोदाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? वोदाणेणं अकिरियं जणयइ। अकिरियाए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्व-दुक्खाण-मंतं करेइ।

(29) सुहसाएणं भंते ! जीवे किं जणयइ? सुहसाएणं अणुस्सुयत्तं जणयइ। अणुस्सुए णं जीवे अणुकंपए अणुब्भडे विगय-सोगे चरित्त-मोहणिज्जं कम्मं खवेइ।

(30) अप्पडि-बद्धयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? अप्पडि-बद्धयाए णं णिस्संगत्तं जणयइ। णिस्संगत्तेणं जीवे एगे एगग्ग-चित्ते दिया य राओ य असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ।

(31) विवित्त-सयणासणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? विवित्त-सयणासणयाए णं चरित्त-गुत्तिं जणयइ। चरित्तगुत्ते य णं जीवे विवित्ताहारे दढ-चरित्ते एगंत-रए मोक्खभाव-पडिवन्ने अट्ठविह-कम्मगंठिं निज्जरेइ।

(32) विणिवट्टणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? विणिवट्टणयाए णं पावकम्माणं अकरणयाए अब्भुट्ठेइ, पुव्व-बद्धाण य निज्जरणयाए तं नियत्तेइ। तओ पच्छा चाउरंतं संसार-कंतारं वीइवयइ।

(33) संभोग-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ?

संभोग-पच्चक्खाणेणं आलंबणाइं खवेइ। निरालंबणस्स य आययट्ठिया जोगा भवंति, सएणं लाभेणं संतुस्सइ, परस्स लाभं नो आसाएइ, परलाभं नो तक्केइ, नो पीहेइ, नो पत्थेइ, णो अभिलसइ। परस्स लाभं अणस्साएमाणे अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपत्थेमाणे अणभिलसेमाणे दुच्चं सुहसेज्जं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

(34) उवहि-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? उवहि-पच्चक्खाणेणं अपलिमंथं जणयइ, निरुवहिए णं जीवे निक्कंखी उवहिमंतरेण य न संकिलिस्सइ।

(35) आहार-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? आहार-पच्चक्खाणेणं जीवियासंस-प्पओगं वोच्छिंदइ। जीविया-संस-प्पओगं वोच्छिंदित्ता जीवे आहारमंतरेण न संकिलिस्सइ।

(36) कसाय-पच्चक्खाणेणं भंते! जीवे किं जणयइ? कसाय-पच्चक्खाणेणं वीयराग-भावं जणयइ। वीयराग-भावपडिवन्ने वि य णं जीवे सम-सुह-दुक्खे भवइ।

(37) जोग-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? जोग-पच्चक्खाणेणं अजोगित्तं जणयइ। अजोगी णं जीवे नवं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

(38) सरीर-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? सरीर-पच्चक्खाणेणं सिद्धाइ-सय-गुणत्तणं निव्वत्तेइ। सिद्धाइ-सयगुण-संपन्ने य णं जीवे लोगग्ग-मुवगए परमसुही भवइ।

(39) सहाय-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? सहाय-पच्चक्खाणेणं एगीभावं जणयइ। एगीभाव-भूए य णं जीवे

एगत्तं भावेमाणे अप्पसद्दे अप्पझंझे अप्पकलहे अप्पकसाए अप्प-तुमं-तुमे संजम-बहुले संवर-बहुले समाहिए यावि भवइ।

(40) भत्त-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? भत्त-पच्चक्खाणेणं अणेगाइं भव-सयाइं निरुंभइ।

(41) सब्भाव-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? सब्भाव-पच्चक्खाणेणं अनियट्टिं जणयइ। अनियट्टि-पडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलि-कम्मंसे खवेइ, तं जहा-वेयणिज्जं, आउयं नामं, गोयं। तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाण-मंतं करेइ।

(42) पडिरूवयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? पडिरूवयाए णं लाघवियं जणयइ। लहुभूए णं जीवे अप्पमत्ते पागड-लिंगे पसत्थ-लिंगे विसुद्ध-सम्मत्ते सत्त-समिइ-समत्ते सव्वपाण-भूय-जीव-सत्तेसु वीससणिज्ज-रूवे अप्पपडिलेहे जिइंदिए विउल-तव-समिइ-समन्नागए यावि भवइ।

(43) वेयावच्चेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? वेया-वच्चेणं तित्थयर-नाम-गोयं कम्मं निबंधइ।

(44) सव्व-गुण-संपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? सव्व-गुण-संपन्नयाए णं अपुणरावत्तिं जणयइ। अपुणरावत्तिं पत्तए णं जीवे सारीर-माणसाणं दुक्खाणं नो भागी भवइ।

(45) वीयरागयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? वीयरागयाए णं नेहाणुबंधणाणि तण्हाणुबंधणाणि य वोच्छिंदइ मणुन्नामणुन्नेसु सद्द-फरिस-रूव-रस-गंधेसु चेव विरज्जइ।

(46) खंतीए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? खंतीए णं परीसहे जिणेइ।

(47) मुत्तीए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? मुत्तीए णं अकिंचणं जणयइ। अकिंचणे य जीवे अत्थ-लोलाणं पुरिसाणं अपत्थणिज्जे भवइ।

(48) अज्जवयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? अज्जवयाए णं काउज्जुयं भावुज्जुयं भासुज्जुयं अविसंवायणं जणयइ। अविसंवायण-संपन्नयाए णं जीवे धम्मस्स आराहए भवइ।

(49) मद्दवयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? मद्दवयाए णं अणुस्सियत्तं जणयइ। अणुस्सियत्ते णं जीवे मिउ-मद्दव-संपन्ने अट्ठ मयट्ठाणाइं निट्ठवेइ।

(50) भावसच्चेणं भंते! जीवे किं जणयइ? भावसच्चेणं भावविसोहिं जणयइ, भाव-विसोहीए वट्टमाणे जीवे अरहंत-पन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठेइ, अरहंत-पन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठित्ता परलोग-धम्मस्स आराहए भवइ।

(51) करणसच्चेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? करणसच्चेणं करणसत्तिं जणयइ। करणसच्चे वट्टमाणे जीवे जहावाई तहाकारी यावि भवइ।

(52) जोगसच्चेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? जोगसच्चेणं जोगं विसोहेइ।

(53) मणगुत्तयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? मणगुत्तयाए णं जीवे एगग्गं जणयइ। एगग्ग-चित्ते णं जीवे मणगुत्ते संजमाराहए भवइ।

(54) वयगुत्तयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? वयगुत्तयाए णं निव्वियारं जणयइ । निव्वियारे णं जीवे वइगुत्ते अज्झप्प-जोग-साहण-जुत्ते यावि भवइ।

(55) कायगुत्तयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? कायगुत्तयाए णं संवरं जणयइ। संवरेणं काय-गुत्ते पुणो पावासव-निरोहं करेइ।

(56) मणसमाहारणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? मणसमाहारणयाए णं एगग्गं जणयइ। एगग्गं जणइत्ता नाण-पज्जवे जणयइ। नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ, मिच्छत्तं च निज्जरेइ।

(57) वयसमाहारणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? वयसमाहारणयाए णं वय-साहारण-दंसण-पज्जवे विसोहेइ। वय-साहारण-दंसण-पज्जवे विसोहित्ता सुलह-बोहियत्तं निव्वत्तेइ, दुल्लह-बोहियत्तं निज्जरेइ।

(58) कायसमाहारणयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ? कायसमाहारणयाए णं चरित्त-पज्जवे विसोहेइ, चरित्त-पज्जवे विसोहेत्ता अहक्खाय-चरित्तं विसोहेइ। अहक्खाय-चरित्तं विसोहेत्ता चत्तारिकेवलि-कम्मंसे खवेइ तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्व-दुक्खाण-मंतं करेइ।

(59) नाणसंपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? नाणसंपन्नयाए णं जीवे सव्व-भावाहिगमं जणयइ। नाणसंपण्णे णं जीवे चाउरंते संसार-कंतारे न विणस्सइ।

जहा सूई ससुत्ता, पडिया न विणस्सइ।
तहा जीवे ससुत्ते, संसारे न विणस्सइ।।

नाण-विणय-तव-चरित्त-जोगे संपाउणइ ससमय-परसमय-विसारए य असंघायणिज्जे भवइ।

(60) दंसण-संपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? दंसण-संपण्णयाए णं भव-मिच्छत्त-छेयणं करेइ, परं न विज्झायइ, परं-अविज्झाएमाणे अणुत्तरेणं नाण-दंसणेणं अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ।

(61) चरित्त-संपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? चरित्त-संपन्नयाए णं सेलेसी-भावं जणयइ। सेलेसिं पडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलि-कम्मंसे खवेइ, तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्व-दुक्खाण-मंतं करेइ।

(62) सोइंदिय-निग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? सोइंदिय-निग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु सद्देसु राग-दोस-निग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

(63) चक्खिंदिय-निग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? चक्खिंदिय-निग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु रूवेसु राग-दोस-निग्गहं जणयइ। तप्पच्चइयं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

(64) घाणिंदिय-निग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? घाणिंदिय-निग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु गंधेसु राग-दोस-निग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

(65) जिब्भिंदिय-निग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? जिब्भिंदिय-निग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु रसेसु राग-दोसनिग्गहं जणयइ,

तप्पच्चइयं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

(66) फासिंदिय-निग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ? फासिंदिय-निग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु फासेसु राग-दोस- निग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

(67) कोहविजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ? कोहविजएणं खंतिं जणयइ, कोह-वेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

(68) माणविजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ? माण-विजएणं मद्दवं जणयइ, माण-वेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

(69) मायाविजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ? माया-विजएणं अज्जवं जणयइ, माया-वेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

(70) लोभविजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ? लोभ-विजएणं संतोसं जणयइ, लोभ-वेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

(71) पिज्ज-दोस-मिच्छादंसण-विजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ? पिज्ज-दोस-मिच्छादंसण-विजएणं नाण-दंसण-चरित्ताराहणयाए अब्भुट्ठेइ, अट्ठविहस्स कम्मस्स कम्मगंठि-विमोयणयाए। तप्पढमयाए जहाणुपुव्विं अट्ठवीसइ-विहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ, पंचविहं नाणावरणिज्जं, नवविहं दंसणावरणिज्जं,

पंचविहं अंतराइयं, एए तिन्नि वि कम्मंसे जुगवं खवेइ। तओ पच्छा अणुत्तरं अणंतं कसिणं पडिपुन्नं निरावरणं वितिमिरं विसुद्धं लोगालोग-प्पभावं केवल-वर-नाण-दंसणं समुप्पाडेइ। जाव सजोगी भवइ, ताव इरियावहियं कम्मं निबंधइ सुहफरिसं दुसमयट्ठिईयं, तं जहा पढम-समए बद्धं बिइय-समए वेइयं, तइय-समए निज्जिण्णं, तं बद्धं पुट्ठं उदीरियं वेइयं, निज्जिण्णं, सेयाले य अकम्मं यावि भवइ।

(72) अहाउयं पालइत्ता अंतो-मुहुत्तद्धावसेसाए जोग-निरोहं करेमाणे सुहुमकिरियं अप्पडिवाइं सुक्कज्झाणं झायमाणे तप्पढमयाए मणजोगं निरुंभइ, वइजोगं निरुंभइ, कायजोगं निरुंभइ, आणापाणु-निरोहं करेइ, ईसिपंचहस्सक्खरुच्चारणद्धाए य णं अणगारे समुच्छिन्न-किरियं अणियट्टि-सुक्कज्झाणं झियायमाणे वेयणिज्जं आउयं नामं गोयं च एए चत्तारि कम्मंसे जुगवं खवेइ।

(73) तओ ओरालिय-तेय-कम्माइं च सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहित्ता उज्जु-सेढिपत्ते अफुसमाण-गई उड्ढं एग-समएणं अविग्गहेणं तत्थ गंता सागारोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्व-दुक्खाणमंतं करेइ।

एस खलु सम्मत्त-परक्कमस्स अज्झयणस्स अट्ठे समणेणं भगवया महावीरेणं आघविए पन्नविए परूविए दंसिए निदंसिए उवदंसिए

।। त्ति बेमि।।

।।सम्मत्तपरक्कमं एगूणतीसइमं अज्झयणं समत्तं।।29।।

।। तीसइमं तवमग्गगइज्जं अज्झयणं ।।30।।

जहा उ पावगं कम्मं, राग-दोस-समज्जियं।
खवेइ तवसा भिक्खू, तमेगग्ग-मणो सुण।।1।।
पाणिवह-मुसावाया, अदत्त-मेहुण-परिग्गहा विरओ।
राईभोयण-विरओ, जीवो भवइ अणासवो।।2।।
पंच-समिओ तिगुत्तो, अकसाओ जिइंदिओ।
अगारवो य निस्सल्लो, जीवो भवइ अणासवो।।3।।
एएसिं तु विवच्चासे, रागदोस-समज्जियं।
खवेइ उ जहा भिक्खू, तमेगग्ग-मणो सुण।।4।।
जहा महा-तलायस्स, सन्निरुद्धे जलागमे।
उस्सिंच-णाए तवणाए, कमेणं सोसणा भवे।।5।।
एवं तु संजयस्सावि, पावकम्म-निरासवे।
भव-कोडीसंचियं कम्मं, तवसा निज्जरिज्जई।।6।।
सो तवो दुविहो वुत्तो, बाहिरऽब्भंतरो तहा।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एव-मब्भंतरो तवो।।7।।
अणसण-मूणोयरिया, भिक्खायरिया य रसपरिच्चाओ।
काय-किलेसो संलीणया, य बज्झो तवो होइ।।8।।
इत्तरिय मरण-काला य, अणसणा दुविहा भवे।
इत्तरिय सावकंखा, निरवकंखा उ बिइज्जिया।।9।।
जो सो इत्तरिय-तवो, सो समासेण छव्विहो।
सेढितवो पयरतवो, घणो य तह होइ वग्गो य।।10।।

तत्तो य वग्ग-वग्गो उ, पंचमो छट्ठओ पइन्नतवो।
मण-इच्छियचित्तत्थो, नायव्वो होइ इत्तरिओ।।11।।

जा सा अणसणा मरणे, दुविहा सा वियाहिया।
सवियार-मवियारा, कायचिट्ठं पई भवे।।12।।

अहवा सपरिकम्मा, अपरिकम्मा य आहिया।
नीहारि-मनीहारी, आहारच्छेओ दोसु वि।।13।।

ओमोयरणं पंचहा, समासेण वियाहियं।
दव्वओ खेत्तकालेणं, भावेणं पज्जवेहि य।।14।।

जो जस्स उ आहारो, तत्तो ओमं तु जो करे।
जहन्नेणेगसित्थाई, एवं दव्वेण ऊ भवे।।15।।

गामे नगरे तह रायहाणि-निगमे य आगरे पल्ली।
खेडे कब्बड-दोणमुह-पट्टण-मडंब-संबाहे।16।।

आसम-पए विहारे, सन्निवेसे समाय-घोसे य।
थलि सेणा-खंधारे, सत्थे संवट्ट-कोट्टे य।।17।।

वाडेसु वा रत्थासु वा, घरेसु वा एवमित्तियं खेत्तं।
कप्पइ उ एवमाई, एवं खेत्तेण उ भवे।।18।।

पेडा य अद्धपेडा, गोमुत्ति-पयंग-वीहिया चेव।
संबुक्कावट्टायय गंतुं, पच्चागया छट्ठा।।19।।

दिवसस्स पोरिसीणं, चउण्हं पि उ जत्तिओ भवे कालो।
एवं चरमाणो खलु, कालोमाणं मुणेयव्वं।।20।।

अहवा तइयाए पोरिसीए, ऊणाइ घास-मेसंतो।
चउभागूणाए वा, एवं कालेण उ भवे।।21।।

इत्थी वा पुरिसो वा, अलंकिओ वाऽणलंकिओ वा वि।
अन्नयर-वयत्थो वा, अन्नयरेणं व वत्थेणं।।22।।

अन्नेण विसेसेणं, वण्णेणं भावमणुमुयंते उ।
एवं चरमाणो खलु, भावोमाणं मुणेयव्वं।।23।।

दव्वे खेत्ते काले, भावम्मि य आहिया उ जे भावा।
एएहिं ओमचरओ, पज्जव-चरओ भवे भिक्खू।।24।।

अट्ठविह-गोयरग्गं तु, तहा सत्तेव एसणा।
अभिग्गहा य जे अन्ने, भिक्खायरिय-माहिया।।25।।

खीर-दहि-सप्पिमाई, पणीयं पाणभोयणं।
परिवज्जणं रसाणं तु, भणियं रसविवज्जणं।।26।।

ठाणा वीरासणाईया, जीवस्स उ सुहावहा।
उग्गा जहा धरिज्जंति, काय-किलेसं तमाहियं।।27।।

एगंत-मणावाए, इत्थी-पसु-विवज्जिए।
सयणासण-सेवणया, विवित्तसयणासणं।।28।।

एसो बाहिरगं तवो, समासेण वियाहिओ।
अब्भिंतरं तवं एत्तो, वुच्छामि अणुपुव्वसो।।29।।

पायच्छितं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ।
झाणं च विउस्सग्गो, एसो अब्भिंतरो तवो।।30।।

आलोयणारिहाइयं, पायच्छित्तं तु दसविहं।
जं भिक्खू वहई सम्मं, पायच्छित्तं तमाहियं।।31।।

अब्भुट्ठाणं अंजलि-करणं, तहेवासण-दायणं।
गुरुभत्ति-भाव-सुस्सूसा, विणओ एस वियाहिओ।।32।।

आयरिय-माईए, वेयावच्चम्मि दसविहे।
आसेवणं जहाथामं, वेयावच्चं तमाहियं।।33।।

वायणा पुच्छणा चेव, तहेव परियट्टणा।
अणुप्पेहा धम्मकहा, सज्झाओ पंचहा भवे।।34।।

अट्ट-रुद्दाणि वज्जेत्ता, झाएज्जा सुसमाहिए।
धम्म-सुक्काइं झाणाइं, झाणं तं तु बुहा वए।।35।।

सयणासणठाणे वा, जे उ भिक्खू न वावरे।
कायस्स विउस्सग्गो, छट्ठो सो परिकित्तिओ।।36।।

एवं तवं तु दुविहं, जे सम्मं आयरे मुणी।
से खिप्पं सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पंडिए।।37।।

।। त्ति बेमि।।

।। तवमग्गगइज्जं तीसइमं अज्झयणं समत्तं ।।30।।

।। इगतीसइमं चरणविही अज्झयणं ।।31।।

चरण-विहिं पवक्खामि, जीवस्स उ सुहावहं।
जं चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा संसार-सागरं।।1।।

एगओ विरइं कुज्जा, एगओ य पवत्तणं।
असंजमे नियत्तिं च, संजमे य पवत्तणं।।2।।

रागदोसे य दो पावे, पावकम्म-पवत्तणे।
जे भिक्खू रुंभई निच्चं, से न अच्छइ मंडले।।3।।

दंडाणं गारवाणं च, सल्लाणं च तियं तियं।
जे भिक्खू चयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले।।4।।

दिव्वे य जे उवसग्गे, तहा तेरिच्छ-माणुसे।
जे भिक्खू सहई निच्चं, से न अच्छइ मंडले।।5।।

विगहा-कसाय-सन्नाणं, झाणाणं च दुयं तहा।
जे भिक्खू वज्जई निच्चं, से न अच्छइ मंडले।।6।।

वएसु इंदियत्थेसु, समिईसु किरियासु य।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले।।7।।

लेसासु छसु काएसु, छक्के आहार-कारणे।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले।।8।।

पिंडोग्गहपडिमासु, भय-ट्ठाणेसु सत्तसु।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले।।9।।

मएसु बंभ-गुत्तीसु, भिक्खु-धम्मम्मि दसविहे।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले।।10।।

उवासगाणं पडिमासु, भिक्खूणं पडिमासु य।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले।।11।।

किरियासु भूय-गामेसु, परमाहम्मिएसु य।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले।।12।।

गाहा-सोलसएहिं, तहा असंजमम्मि य।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले।।13।।

बंभम्मि नायज्झयणेसु, ठाणेसु असमाहिए।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले।।14।।

एगवीसाए सबले, बावीसाए परीसहे।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले।।15।।

तेवीसाए सूय-गडे, रूवाहिएसु सुरेसु य।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले।।16।।

पणवीस भावणासु, उद्देसेसु दसाइणं।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले।।17।।

अणगार-गुणेहिं च, पगप्पम्मि तहेव य।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले।।18।।

पावसुय-प्पसंगेसु, मोह-ठाणेसु चेव य।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले।।19।।

सिद्धाइगुणजोगेसु, तेत्तीसासायणासु य।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले।।20।।

इय एएसु ठाणेसु, जे भिक्खू जयई सया।
खिप्पं सो सव्व-संसारा, विप्पमुच्चइ पंडिओ।।21।।

।। त्ति बेमि।।

।। चरणविही एगतीसइमं अज्झयणं समत्तं ।।31।।

।। वत्तीसइमं पमायट्ठाणं अज्झयणं ।।32।।

अच्चंत-कालस्स समूलगस्स, सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो।
तं भासओ मे पडिपुण्ण-चित्ता!, सुणेह एगंत-हियं हियत्थं।।1।।

नाणस्स सव्वस्स पगासणाए, अन्नाण-मोहस्स विवज्जणाए।
रागस्स दोसस्स य संखएणं, एगंतसोक्खं समुवेइ मोक्खं।।2।।

तस्सेस मग्गो गुरु-विद्धसेवा, विवज्जणा बाल-जणस्स दूरा।
सज्झाय-एगंत-निसेवणा य, सुत्तत्थसंचिंतणया धिई य।।3।।
आहार-मिच्छे मिय-मेसणिज्जं, सहाय-मिच्छे निउणत्थबुद्धिं।
निकेय-मिच्छेज्ज विवेग-जोगं, समाहि-कामे समणे तवस्सी।।4।।
न वा लभेज्जा निउणं सहायं, गुणाहियं वा गुणओ समं वा।
एक्को वि पावाइं विवज्जयंतो, विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो।।5।।
जहा य अंड-प्पभवा बलागा, अंडं बलाग-प्पभवं जहा य।
एमेव मोहाययणं खु तण्हा, मोहं य तण्हाययणं वयंति।।6।।
रागो य दोसो वि य कम्मबीयं, कम्मं च मोह-प्पभवं वयंति।
कम्मं च जाई-मरणस्स मूलं, दुक्खं च जाई-मरणं वयंति।।7।।
दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो, मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा।
तण्हा हया जस्स न होइ लोहो, लोहो हओ जस्स न किंचणाइं।।8।।
रागं च दोसं च तहेव मोहं, उद्धत्तु-कामेण समूल-जालं।
जे जे उवाया पडिवज्जियव्वा, ते कित्तइस्सामि अहाणुपुव्विं।।9।।
रसा पगामं न निसेवियव्वा, पायं रसा दित्तिकरा नराणं।
दित्तं च कामा समभिद्दवंति, दुमं जहा साउफलं व पक्खी।।10।।
जहा दवग्गी पउरिंधणे वणे, समारुओ नोवसमं उवेइ।
एविंदियग्गी वि पगाम-भोइणो, न बंभयारिस्स हियाय कस्सई।।11।।
विवित्त-सेज्जासण-जंतियाणं, ओमासणाणं दमिइंदियाणं।
न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं, पराइओ वाहि-रिवोसहेहिं।।12।।
जहा बिरालावसहस्स मूले, न मूसगाणं वसही पसत्था।
एमेव इत्थीनिलयस्स मज्झे, न बंभयारिस्स खमो निवासो।।13।।

न रूव-लावण्ण-विलास-हासं, न जंपियं-इंगिय-पेहियं वा।
इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता, दट्ठुं ववस्से समणे तवस्सी।।14।।
अदंसणं चेव अपत्थणं च, अचिंतणं चेव अकित्तणं च।
इत्थीजणस्सारियझाणजोग्गं, हियं सया बंभ-वए रयाणं।।15।।
कामं तु देवीहिं वि भूसियाहिं, न चाइया खोभइउं तिगुत्ता।
तहा वि एगंतहियं ति नच्चा, विवित्त-वासो मुणिणं पसत्थो।।16।।
मोक्खाभि-कंखिस्स उ माणवस्स, संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मे।
नेयारिसं दुत्तर-मत्थि लोए, जहि-त्थिओ बालमणोहराओ।।17।।
एए य संगे समइक्क-मित्ता, सुहुत्तरा चेव भवंति सेसा।
जहा महासागर-मुत्तरित्ता, नई भवे अवि गंगासमाणा।।18।।
कामाणुगिद्धि-प्पभवं खु दुक्खं, सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स।
जं काइयं माणसियं च किंचि, तस्संतगं गच्छइ वीयरागो।।19।।
जहा य किंपाग-फला मणोरमा, रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा।
ते खुड्डए जीविय पच्चमाणा, एओवमा कामगुणा विवागे।।20।।
जे इंदियाणं विसया मणुन्ना, न तेसु भावं निसिरे कयाइ।
न यामणुन्नेसु मणं पि कुज्जा, समाहिकामे समणे तवस्सी।।21।।
चक्खुस्स रूवं गहणं वयंति, तं रागहेउं तु मणुन्न-माहु।
तं दोस-हेउं अमणुन्न-माहु, समो य जो तेसु स वीयरागो।।22।।
रूवस्स चक्खुं गहणं वयंति, चक्खुस्स रूवं गहणं वयंति।
रागस्स हेउं समणुन्न-माहु, दोसस्स हेउं अमणुन्न-माहु।।23।।
रूवेसु जो गिद्धि-मुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं।
रागाउरे से जह वा पयंगे, आलोय-लोले समुवेइ मच्चुं।।24।।

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दंत-दोसेण सएण जंतू, न किंचि रूवं अवरज्झई से।।25।।
एगंतरत्ते रुइरंसि रूवे, अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपील-मुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो।।26।।
रूवाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइ णेग-रूवे।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठ-गुरू किलिट्ठे।।27।।
रूवाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खण-सन्निओगे।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोग-काले य अतित्तिलाभे।।28।।
रूवे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठि-दोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं।।29।।
तण्हाभि-भूयस्स अदत्त-हारिणो, रूवे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभ-दोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से।।30।।
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरंते।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, रूवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो।।31।।
रूवाणु-रत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि?।
तत्थोवभोगे वि किलेस-दुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं।।32।।
एमेव रूवम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठ-चित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे।।33।।
रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोह-परंपरेण।
न लिप्पई भवमज्झे वि संतो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं।।34।।
सोयस्स सद्दं गहणं वयंति, तं राग-हेउं तु मणुन्न-माहु।
तं दोस-हेउं अमणुन्न-माहु, समो य जो तेसु स वीयरागो।।35।।

सद्दस्स सोयं गहणं वयंति, सोयस्स सद्दं गहणं वयंति।
रागस्स हेउं समणुन्न-माहु, दोसस्स हेउं अमणुन्न-माहु।।36।।
सद्देसु जो गिद्धि-मुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं।
रागाउरे हरिण-मिगे व मुद्धे, सद्दे अतित्ते समुवेइ मच्चुं।।37।।
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू, न किंचि सद्दं अवरज्झई से।।38।।
एगंत-रत्ते रुइरंसि सद्दे, अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपील-मुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो।।39।।
सद्दाणु-गासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइ णेगरूवे।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठ-गुरू किलिट्ठे।।40।।
सद्दाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोग-काले य अतित्तिलाभे?।।41।।
सद्दे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठि-दोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं।।42।।
तण्हाभि-भूयस्स अदत्तहारिणो, सद्दे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभ-दोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से।।43।।
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरंते।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, सद्दे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो।।44।।
सद्दाणु-रत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि।
तत्थोव-भोगे वि किलेस-दुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं।।45।।
एमेव सद्दम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठ-चित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे।।46।।

सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पई भवमज्झे वि संतो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं।।47।।
घाणस्स गंधं गहणं वयंति, तं राग-हेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोस-हेउं अमणुन्न-माहु, समो य जो तेसु स वीयरागो।।48।।
गंधस्स घाणं गहणं वयंति, घाणस्स गंधं गहणं वयंति।
रागस्स-हेउं समणुन्न-माहु, दोसस्स हेउं अमणुन्न-माहु।।49।।
गंधेसु जो गिद्धि-मुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं।
रागाउरे ओसहिगंध-गिद्धे, सप्पे बिलाओ विव निक्खमंते।।50।।
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू, न किंचि गंधं अवरज्झई से।।51।।
एगंतरत्ते रुइरंसि गंधे, अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपील-मुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो।।52।।
गंधाणु-गासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइ णेगरूवे।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे।।53।।
गंधाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तलाभे?।।54।।
गंधे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं।।55।।
तण्हाभि-भूयस्स अदत्तहारिणो, गंधे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से।।56।।
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरंते।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, गंधे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो।।57।।

गंधाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि?।
तत्थोवभोगे वि किलेस-दुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं।।58।।
एमेव गंधम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे।।59।।
गंधे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोह-परंपरेण।
न लिप्पई भवमज्झे वि संतो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं।।60।।
जिब्भाए रसं गहणं वयंति, तं रागहेउं तु मणुन्न-माहु।
तं दोस-हेउं अमणुन्न-माहु, समो य जो तेसु स वीयरागो।।61।।
रसस्स जिब्भं गहणं वयंति, जिब्भाए रसं गहणं वयंति।
रागस्स हेउं समणुन्न-माहु, दोसस्स हेउं अमणुन्न-माहु।।62।।
रसेसु जो गिद्धि-मुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं।
रागाउरे बडिसविभिन्नकाए, मच्छे जहा आमिसभोग-गिद्धे।।63।।
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू, न किंचि रसं अवरज्झई से।।64।।
एगंतरत्ते रुइरे रसम्मि, अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपील-मुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो।।65।।
रसाणु-गासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइ णेगरूवे।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठ-गुरू किलिट्ठे।।66।।
रसाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तिलाभे?।।67।।
रसे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोव-सत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठि-दोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं।।68।।

तण्हाभि-भूयस्स अदत्त-हारिणो, रसे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभ-दोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से।।69।।
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरंते।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो।।70।।
रसाणु-रत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि?
तत्थोवभोगे वि किलेस-दुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं।।71।।
एमेव रसम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे।।72।।
रसे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पई भव-मज्झे वि संतो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं।।73।।
कायस्स फासं गहणं वयंति, तं राग-हेउं तु मणुन्न-माहु।
तं दोस-हेउं अमणुन्न-माहु, समो य जो तेसु स वीयरागो।।74।।
फासस्स कायं गहणं वयंति, कायस्स फासं गहणं वयंति।
रागस्स हेउं समणुन्न-माहु, दोसस्स हेउं अमणुन्न-माहु।।75।।
फासेसु जो गिद्धि-मुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं।
रागाउरे सीयजलावसन्ने, गाहग्गहीए महिसे व रन्ने।।76।।
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू, न किंचि फासं अवरज्झई से।।77।।
एगंतरत्ते रुइरंसि फासे, अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपील-मुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो।।78।।
फासाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइ णेगरूवे।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे।।79।।

फासाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोग-काले य अतित्तिलाभे?।।80।।
फासे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठि-दोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं।।81।।
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, फासे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से।।82।।
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरंते।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो।।83।।
फासाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि?।
तत्थोवभोगे वि किलेस-दुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं।।84।।
एमेव फासम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे।।85।।
फासे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पई भवमज्झे वि संतो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं।।86।।
मणस्स भावं गहणं वयंति, तं राग-हेउं तु मणुन्न-माहु।
तं दोसहेउं अमणुन्न-माहु, समो य जो तेसु स वीयरागो।।87।।
भावस्स मणं गहणं वयंति, मणस्स भावं गहणं वयंति।
रागस्स हेउं समणुन्न-माहु, दोसस्स हेउं अमणुन्न-माहु।।88।।
भावेसु जो गिद्धि-मुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं।
रागाउरे काम-गुणेसु गिद्धे, करेणुमग्गाऽवहिए व नागे।।89।।
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू, न किंचि भावं अवरज्झई से।।90।।

एगंतरत्ते रुइरंसि भावे, अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपील-मुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो।।91।।
भावाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइ णेगरूवे।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठ-गुरू किलिट्ठे।।92।।
भावाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे।
वए विओगे य कहं सुहं से, संभोगकाले य अतित्तलाभे?।।93।।
भावे अतित्ते य परिग्गहम्मि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठि-दोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं।।94।।
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, भावे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से।।95।।
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरंते।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो।।96।।
भावाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि?।
तत्थोवभोगे वि किलेस-दुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं।।97।।
एमेव भावम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे।।98।।
भावे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पई भवमज्झे वि संतो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं।।99।।
एविंदियत्था य मणस्स अत्था, दुक्खस्स हेउं मणुयस्स रागिणो।
ते चेव थोवं पि कयाइ दुक्खं, न वीयरागस्स करेंति किंचि।।100।।
न कामभोगा समयं उवेंति, न यावि भोगा विगइं उवेंति।
जे तप्पओसी य परिग्गही य, सो तेसु मोहा विगइं उवेइ।।101।।

कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं दुगुंछं अरइं रइं च।
हासं भयं सोग-पुमित्थिवेयं, नपुंसवेयं विविहे य भावे।।102।।
आवज्जई एव-मणेगरूवे, एवंविहे कामगुणेसु सत्तो।
अन्ने य एयप्पभवे विसेसे, कारुण्णदीणे हिरिमे वइस्से।।103।।
कप्पं न इच्छेज्ज सहाय-लिच्छू, पच्छाणुतावेण तवप्पभावं।
एवं वियारे अमियप्पयारे, आवज्जई इंदिय-चोर-वस्से।।104।।
तओ से जायंति पओयणाइं, निमज्जिउं मोह-महण्णवम्मि।
सुहेसिणो दुक्खविणोयणट्ठा, तप्पच्चयं उज्जमए य रागी।।105।।
विरज्ज-माणस्स य इंदियत्था, सद्दाइया तावइय-प्पगारा।
न तस्स सव्वे वि मणुन्नयं वा, निव्वत्तयंती अमणुन्नयं वा।।106।।
एवं ससंकप्प-विकप्पणासुं, संजायई समय-मुवट्ठियस्स।
अत्थे य संकप्पयओ तओ से, पहीयए कामगुणेसु तण्हा।।107।।
स वीयरागो कय-सव्व-किच्चो, खवेइ नाणावरणं खणेणं।
तहेव जं दंसण-मावरेइ, जं चंतरायं पकरेइ कम्मं।।108।।
सव्वं तओ जाणइ पासई य, अमोहणे होइ निरंतराए।
अणासवे झाणसमाहिजुत्ते, आउक्खए मोक्ख-मुवेइ सुद्धे।।109।।
सो तस्स सव्वस्स दुहस्स मुक्को, जं बाहई सययं जंतु-मेयं।
दीहामयं विप्पमुक्को पसत्थो, तो होइ अच्चंत-सुही कयत्थो।।110।।
अणाइकाल-प्पभवस्स एसो, सव्वस्स दुक्खस्स पमोक्ख-मग्गो।
वियाहिओ जं समुवेच्च सत्ता, कमेण अच्चंतसुही भवंति।।111।।
।। त्ति बेमि।।

।। पमायट्ठाणं बत्तीसइमं अज्झयणं सम्मत्तं।।32।।

।। तेत्तीसइमं कम्मपयडी अज्झयणं ।।33।।

अट्ठ कम्माइं वोच्छामि, आणुपुव्विं जहक्कमं।
जेहिं बद्धो अयं जीवो, संसारे परिवट्टई।।1।।
नाणस्सा-वरणिज्जं, दंसणावरणं तहा।
वेयणिज्जं तहा मोहं, आउकम्मं तहेव य।।2।।
नामकम्मं च गोयं च, अंतरायं तहेव य।
एवमेयाइं कम्माइं, अट्ठेव उ समासओ।।3।।
नाणावरणं पंचविहं, सुयं आभिनि-बोहियं।
ओहिनाणं च तइयं, मणनाणं च केवलं।।4।।
निद्दा तहेव पयला, निद्दानिद्दा पयल-पयला य।
तत्तो य थीणगिद्धी उ, पंचमा होइ नायव्वा।।5।।
चक्खु-मचक्खू-ओहिस्स, दंसणे केवले य आवरणे।
एवं तु नव-विगप्पं, नायव्वं दंसणावरणं।।6।।
वेयणीयं पि य दुविहं, साय-मसायं च आहियं।
सायस्स उ बहू भेया, एमेव असायस्स वि।।7।।
मोहणिज्जं पि दुविहं, दंसणे चरणे तहा।
दंसणे तिविहं वुत्तं, चरणे दुविहं भवे।।8।।
सम्मत्तं चेव मिच्छत्तं, सम्मा-मिच्छत्त-मेव य।
एयाओ तिन्नि पयडीओ, मोहणिज्जस्स दंसणे।।9।।
चरित्त-मोहणं कम्मं, दुविहं तु वियाहियं।
कसायमोहणिज्जं तु, नोकसायं तहेव य।।10।।

सोलसविह-भेएणं, कम्मं तु कसायजं।
सत्तविहं नवविहं वा, कम्मं च नोकसायजं।।11।।

नेरइय-तिरिक्खाउं, मणुस्साउं तहेव य।
देवाउयं चउत्थं तु, आउकम्मं चउव्विहं।।12।।

नामकम्मं तु दुविहं, सुह-मसुहं च आहियं।
सुहस्स उ बहू भेया, एमेव असुहस्स वि।।13।।

गोयं कम्मं दुविहं, उच्चं नीयं च आहियं।
उच्चं अट्ठविहं होइ, एवं नीयं पि आहियं।।14।।

दाणे लाभे य भोगे य, उवभोगे वीरिए तहा।
पंचविहमंतरायं, समासेण वियाहियं।।15।।

एयाओ मूलपयडीओ, उत्तराओ य आहिया।
पएसग्गं खेत्तकाले य, भावं च उत्तरं सुण।।16।।

सव्वेसिं चेव कम्माणं, पएसग्ग-मणंतगं।
गंठिय-सत्ताईयं, अंतो सिद्धाण आहियं।।17।।

सव्वजीवाण कम्मं तु, संगहे छद्दिसागयं।
सव्वेसु वि पएसेसु, सव्वं सव्वेण बद्धगं।।18।।

उदही-सरिस-नामाणं, तीसई कोडिकोडीओ।
उक्कोसिया ठिई होइ, अंतोमुहुत्तं जहन्निया।।19।।

आवरणिज्जाण दुण्हं पि, वेयणिज्जे तहेव य।
अंतराए य कम्मम्मि, ठिई एसा वियाहिया।।20।।

उदहीसरिस-नामाणं, सत्तरिं कोडि-कोडीओ।
मोहणिज्जस्स उक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्निया।।21।।

तेत्तीससागरोवमा, उक्कोसेण वियाहिया।
ठिई उ आउ-कम्मस्स, अंतोमुहुत्तं जहन्निया।।22।।

उदहीसरिस-नामाणं, वीसई कोडि-कोडीओ।
नाम-गोत्ताणं उक्कोसा, अट्ठ-मुहुत्तं जहन्निया।।23।।

सिद्धाणऽणंतभागो य, अणुभागा हवंति उ।
सव्वेसु वि पएसग्गं, सव्व-जीवेसु अइच्छियं।।24।।

तम्हा एएसिं कम्माणं, अणुभागा वियाणिया।
एएसिं संवरे चेव, खवणे य जए बुहो।।25।।

।। त्ति बेमि।।

।।कम्मपयडी तेत्तीसइमं अज्झयणं सम्मत्तं।।33।।

।। चउत्तीसइमं लेसऽज्झयणं अज्झयणं ।।34।।

लेसज्झयणं पवक्खामि, आणुपुव्विं जहक्कमं।
छण्हं पि कम्मलेसाणं, अणुभावे सुणेह मे।।1।।

नामाइं वण्ण-रस-गंध,-फास-परिणाम-लक्खणं।
ठाणं ठिइं गइं चाउं, लेसाणं तु सुणेह मे।।2।।

किण्हा नीला य काऊ य, तेऊ पम्हा तहेव य।
सुक्क-लेसा य छट्ठा य, नामाइं तु जहक्कमं।।3।।

जीमूय-निद्धसंकासा, गवल-रिट्ठग-सन्निभा।
खंजांजण-नयण-निभा, किण्ह-लेसा उ वण्णओ।।4।।

नीलासोग-संकासा, चासपिच्छ-समप्पभा।
वेरुलिय-निद्धसंकासा, नील-लेसा उ वण्णओ।।5।।

अयसी-पुप्फसंकासा, कोइलच्छद-सन्निभा।
पारेवयगीवनिभा, काऊलेसा उ वण्णओ।।6।।

हिंगुलय-धाउसंकासा, तरुणाइच्च-सन्निभा।
सुयतुंड-पईव-निभा, तेउलेसा उ वण्णओ।।7।।

हरियाल-भेयसंकासा, हलिद्दा-भेयसमप्पभा।
सणासण-कुसुम-निभा, पम्ह-लेसा उ वण्णओ।।8।।

संखंक-कुंद-संकासा, खीरपूर-समप्पभा।
रयय-हार-संकासा, सुक्क-लेसा उ वण्णओ।।9।।

जह कडुय-तुंबगरसो, निंबरसो कडुय-रोहिणि-रसो वा।
एत्तो वि अणंतगुणो, रसो य किण्हाए नायव्वो।।10।।

जह तिगडुयस्स य रसो, तिक्खो जह हत्थि-पिप्पलीए वा।
एत्तो वि अणंतगुणो, रसो उ नीलाए नायव्वो।।11।।

जह तरुण-अंबगरसो, तुवर-कविट्ठस्स वा वि जारिसओ।
एत्तो वि अणंतगुणो, रसो उ काऊए नायव्वो।।12।।

जह परिणयंबग-रसो, पक्क-कविट्ठस्स वा वि जारिसओ।
एत्तो वि अणंतगुणो, रसो उ तेऊए नायव्वो।।13।।

वर-वारुणीए व रसो, विविहाण व आसवाण जारिसओ।
महुमेरगस्स व रसो, एत्तो पम्हाए परएणं।।14।।

खज्जूर-मुद्दियरसो, खीर-रसो खंड-सक्कर-रसो वा।
एत्तो वि अणंतगुणो, रसो उ सुक्काए नायव्वो।।15।।

जह गो-मडस्स गंधो, सुणग-मडस्स व जहा अहि-मडस्स।
एत्तो वि अणंतगुणो, लेसाणं अप्पसत्थाणं।।16।।

जह सुरहि-कुसुम-गंधो, गंध-वासाण पिस्समाणाणं।
एत्तो वि अणंतगुणो, पसत्थलेसाण तिण्हं पि।।17।।

जह करगयस्स फासो, गो-जिब्भाए य सागपत्ताणं।
एत्तो वि अणंतगुणो, लेसाणं अप्पसत्थाणं।।18।।

जह बूरस्स व फासो, नवणीयस्स व सिरीस-कुसुमाणं।
एत्तो वि अणंतगुणो, पसत्थ-लेसाण तिण्हं पि।।19।।

तिविहो व नवविहो वा, सत्तावीसइविहेक्कसीओ वा।
दुसओ तेयालो वा, लेसाणं होइ परिणामो।।20।।

पंचासव-प्पवत्तो, तीहिं अगुत्तो छसुं अविरओ य।
तिव्वारंभ-परिणओ, खुद्दो साहसिओ नरो।।21।।

निद्धंस-परिणामो, निस्संसो अजिइंदिओ।
एयजोग-समाउत्तो, किण्हलेसं तु परिणमे।।22।।

इस्सा-अमरिस-अतवो, अविज्ज माया अहीरिया।
गेही पओसे य सढे, पमत्ते रसलोलुए सायगवेसए य।।23।।

आरंभाओ अविरओ, खुद्दोसाहस्सिओ नरो।
एयजोगसमाउत्तो, नीललेसं तु परिणमे।।24।।

वंके वंक-समायारे, नियडिल्ले अणुज्जुए।
पलिउंचग ओवहिए, मिच्छदिट्ठी अणारिए।।25।।

उप्फालग-दुट्ठवाई य, तेणे यावि य मच्छरी।
एयजोगसमाउत्तो, काउलेसं तु परिणमे।।26।।

नीयावित्ती अचवले, अमाई अकुऊहले।
विणीय-विणए दंते, जोगवं उवहाणवं।।27।।

पियधम्मे दढधम्मे, अवज्ज-भीरू हिएसए।
एयजोग-समाउत्तो, तेऊलेसं तु परिणमे।।28।।

पयणु-कोहमाणे य, माया लोभे य पयणुए।
पसंत-चित्ते दंतप्पा, जोगवं उवहाणवं।।29।।

तहा पयणुवाई य, उवसंते जिइंदिए।
एयजोग-समाउत्तो, पम्हलेसं तु परिणमे।।30।।

अट्ट-रुद्दाणि वज्जित्ता, धम्म-सुक्काणि झायए।
पसंत-चित्ते दंतप्पा, समिए गुत्ते य गुत्तिसु।।31।।

सरागे वीयरागे वा, उवसंते जिइंदिए।
एयजोग-समाउत्तो, सुक्क-लेसं तु परिणमे।।32।।

असंखेज्जाणोसप्पिणीण, उस्सप्पिणीण जे समया।
संखाईया लोगा, लेसाण हवंति ठाणाइं।।33।।

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसा सागरा मुहुत्तऽहिया।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा किण्ह-लेसाए।।34।।

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दस उदही पलिय-मसंखभाग-मब्भहिया।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा नीललेसाए।।35।।

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तिण्णुदही पलिय-मसंखभाग-मब्भहिया।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा काउलेसाए।।36।।

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दोण्णुदही पलिय-मसंखभाग-मब्भहिया।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा तेउलेसाए।।37।।

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दस उदही होइ मुहुत्त-मब्भहिया।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा पम्हलेसाए।।38।।

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसं सागरा मुहुत्तऽहिया।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा सुक्कलेसाए।।39।।

एसा खलु लेसाणं, ओहेण ठिई उ वण्णिया होइ।
चउसु वि गईसु एत्तो, लेसाण ठिइं तु वोच्छामि।।40।।

दस वास-सहस्साइं, काऊए ठिई जहन्निया होइ।
तिण्णुदही-पलिओवम, असंखभागं च उक्कोसा।।41।।

तिण्णुदही पलिओवम, असंखभागो जहन्नेण नीलठिई।
दस उदही पलिओवम, असंखभागं च उक्कोसा।।42।।

दस उदही पलिओवम, असंखभागं जहन्निया होइ।
तेत्तीससागराइं, उक्कोसा होइ किण्हाए।।43।।

एसा नेरइयाणं, लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ।
तेण परं वोच्छामि, तिरियमणुस्साण देवाणं।।44।।

अंतोमुहुत्तमद्धं, लेसाण ठिई जहिं जहिं जा उ।
तिरियाण नराणं वा, वज्जेत्ता केवलं लेसं।।45।।

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, उक्कोसा होइ पुव्वकोडी उ।
नवहिं वरिसेहिं ऊणा, नायव्वा सुक्कलेसाए।।46।।

एसा तिरिय-नराणं, लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ।
तेण परं वोच्छामि, लेसाण ठिई उ देवाणं।।47।।

दस वास-सहस्साइं, किण्हाए ठिई जहन्निया होइ।
पलिय-मसंखेज्जइमो, उक्कोसा होइ किण्हाए।।48।।

जा किण्हाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समय-मब्भहिया।
जहन्नेणं नीलाए, पलिय-मसंखं च उक्कोसा।।49।।

जा नीलाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समय-मब्भहिया।
जहन्नेणं काऊए, पलिय-मसंखं च उक्कोसा।।50।।

तेण परं वोच्छामि, तेऊलेसा जहा सुर-गणाणं।
भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणियाणं च।।51।।

पलिओवमं जहन्ना, उक्कोसा सागरा उ दुण्णऽहिया।
पलिय-मसंखेज्जेणं, होइ भागेण तेऊए।।52।।

दस वास-सहस्साइं, तेऊए ठिई जहन्निया होइ।
दुन्नुदही पलिओवम, असंखभागं च उक्कोसा।।53।।

जा तेऊए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया।
जहन्नेणं पम्हाए, दस उ मुहुत्ताहियाइ उक्कोसा।।54।।

जा पम्हाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया।
जहन्नेणं सुक्काए, तेत्तीस मुहुत्त-मब्भहिया।।55।।

किण्हा नीला काऊ, तिन्नि वि एयाओ अहम्मलेस्साओ।
एयाहि तिहि वि जीवो, दुग्गइं उववज्जई।।56।।

तेऊ पम्हा सुक्का, तिन्नि वि एयाओ धम्म-लेसाओ।
एयाहि तिहि वि जीवो, सुग्गइं उववज्जई।।57।।

लेस्साहिं सव्वाहिं, पढमे समयम्मि परिणयाहिं तु।
न हु कस्सइ उववाओ, परे भवे अत्थि जीवस्स।।58।।

लेस्साहिं सव्वाहिं, चरिमे समयम्मि परिणयाहिं तु।
न हु कस्सइ उववाओ, परे भवे अत्थि जीवस्स।।59।।

अंतोमुहुत्तम्मि गए, अंतोमुहुत्तम्मि सेसए चेव।
लेस्साहिं परिणयाहिं, जीवा गच्छंति परलोयं।।60।।

तम्हा एयासिं लेस्साणं, अणुभावे वियाणिया।
अप्पसत्थाओ वज्जेत्ता, पसत्थाओ-ऽहिट्ठिए मुणी।।61।।

।। त्ति बेमि।।

।। लेसऽज्झयणं चउत्तीसइमं अज्झयणं समत्तं।।34।।

।। पंचतीसइमं अणगारमग्गगईयं अज्झयणं ।।35।।

सुणेह मे एगग्ग-मणा, मग्गं बुद्धेहिं देसियं।
जमायरंतो भिक्खू, दुक्खाणंत-करे भवे।।1।।

गिहवासं परिच्चज्ज, पव्वज्जा-मस्सिए मुणी।
इमे संगे वियाणिज्जा, जेहिं सज्जंति माणवा।।2।।

तहेव हिंसं अलियं, चोज्जं अबंभ-सेवणं।
इच्छा-कामं य लोभं च, संजओ परिवज्जए।।3।।

मणोहरं चित्तघरं, मल्ल-धूवेण वासियं।
सकवाडं पंडुरुल्लोयं, मणसा वि न पत्थए।।4।।

इंदियाणि उ भिक्खुस्स, तारिसम्मि उवस्सए।
दुक्कराइं निवारेउं, कामरागविवड्ढणे।।5।।

सुसाणे सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व एगओ।
पइरिक्के परकडे वा, वासं तत्थाभिरोयए।।6।।

फासुयम्मि अणाबाहे, इत्थीहिं अणभिद्दुए।
तत्थ संकप्पए वासं, भिक्खू परमसंजए।।7।।

न सयं गिहाइं कुव्विज्जा, नेव अन्नेहिं कारए।
गिहकम्म-समारंभे, भूयाणं दिस्सए वहो।।8।।

तसाणं थावराणं च, सुहुमाणं बायराण य।
तम्हा गिह-समारंभं, संजओ परिवज्जए।।9।।

तहेव भत्तपाणेसु, पयणे पयावणेसु य।
पाणभूयदयट्ठाए, न पए न पयावए।।10।।

जल-धन्न-निस्सिया जीवा, पुढवी-कट्ठ-निस्सिया।
हम्मंति भत्तपाणेसु, तम्हा भिक्खू न पयावए।।11।।

विसप्पे सव्वओ-धारे, बहुपाणि-विणासणे।
नत्थि जोइसमे सत्थे, तम्हा जोइं न दीवए।।12।।

हिरण्णं जायरूवं च, मणसा वि न पत्थए।
समलेट्ठु-कंचणे भिक्खू, विरए कय-विक्कए।।13।।

किणंतो कइओ होइ, विक्किणंतो य वाणिओ।
कय-विक्कयम्मि वट्टंतो, भिक्खू न भवइ तारिसो।।14।।

भिक्खियव्वं न केयव्वं, भिक्खुणा भिक्ख-वित्तिणा।
कय-विक्कओ महादोसो, भिक्खावित्ती सुहावहा।।15।।

समुयाणं उंछ-मेसिज्जा, जहासुत्त-मणिंदियं।
लाभालाभम्मि संतुट्ठे, पिंडवायं चरे मुणी।।16।।

अलोले न रसे गिद्धे, जिब्भादंते अमुच्छिए।
न रसट्ठाए भुंजिज्जा, जवणट्ठाए महामुणी।।17।।

अच्चणं रयणं चेव, वंदणं पूयणं तहा।
इड्ढीसक्कारसम्माणं, मणसा वि न पत्थए।।18।।

सुक्कज्झाणं झियाएज्जा, अनियाणे अकिंचणे।
वोसट्ठकाए विहरेज्जा, जाव कालस्स पज्जओ।।19।।

निज्जूहिऊण आहारं, कालधम्मे उवट्ठिए।
जहिऊण माणुसं बोंदिं, पहू दुक्खा विमुच्चई।।20।।
निम्ममे निरहंकारे, वीयरागो अणासवो।
संपत्तो केवलं नाणं, सासयं परिनिव्वुए।।21।।
।।त्ति बेमि।।

।। अणगारमग्गगईयं पंचतीसइमं अज्झयणं समत्तं।।35।।

।। छत्तीसइमं जीवाजीवविभत्ती अज्झयणं ।।36।।

जीवाजीव-विभत्तिं, सुणेह मे एगमणा इओ।
जं जाणिऊण भिक्खू, सम्मं जयइ संजमे।।1।।
जीवा चेव अजीवा य, एस लोए वियाहिए।
अजीव-देस-मागासे, अलोए से वियाहिए।।2।।
दव्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा।
परूवणा तेसिं भवे, जीवाण-मजीवाण य।।3।।
रूविणो चेव अरूवी य, अजीवा दुविहा भवे।
अरूवी दसहा वुत्ता, रूविणो य चउव्विहा।।4।।
धम्मत्थि-काए तद्देसे, तप्पएसे य आहिए।
अहम्मे तस्स देसे य, तप्पएसे य आहिए।।5।।
आगासे तस्स देसे य, तप्पएसे य आहिए।
अद्धासमए चेव, अरूवी दसहा भवे।।6।।
धम्माधम्मे य दो चेव, लोगमित्ता वियाहिया।
लोगालोगे य आगासे, समए समय-खेत्तिए।।7।।

धम्माधम्मागासा, तिन्नि वि एए अणाइया।
अपज्जवसिया चेव, सव्वद्धं तु वियाहिया।।8।।

समए वि संतइं पप्प, एवमेव वियाहिए।
आएसं पप्प साईए, सपज्जवसिए वि य।।9।।

खंधा य खंधदेसा य, तप्पएसा तहेव य।
परमाणुणो य बोद्धव्वा, रूविणो य चउव्विहा।।10।।

एगत्तेण पुहुत्तेण, खंधा य परमाणुणो।
लोएगदेसे लोए य, भइयव्वा ते उ खेत्तओ।।11।।

सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोग-देसे य बायरा।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं।।12।।

संतइं पप्प तेऽणाई, अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य।।13।।

असंखकाल-मुक्कोसं, एक्कं समयं जहन्नयं।
अजीवाण य रूवीणं, ठिई एसा वियाहिया।।14।।

अणंतकाल-मुक्कोसं, एक्कं समयं जहन्नयं।
अजीवाण य रूवीणं, अंतरेयं वियाहियं।।15।।

वण्णओ गंधओ चेव, रसओ फासओ तहा।
संठाणओ य विन्नेओ, परिणामो तेसिं पंचहा।।16।।

वण्णओ परिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिया।
किण्हा नीला य लोहिया, हालिद्दा सुक्किला तहा।।17।।

गंधओ परिणया जे उ, दुविहा ते वियाहिया।
सुब्भिगंधपरिणामा, दुब्भिगंधा तहेव य।।18।।

रसओ परिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिया।
तित्त-कडुय-कसाया, अंबिला महुरा तहा।।19।।
फासओ परिणया जे उ, अट्ठहा ते पकित्तिया।
कक्खडा मउया चेव, गरुया लहुया तहा।।20।।
सीया उण्हा य निद्धा य, तहा लुक्खा य आहिया।
इय फासपरिणया एए, पुग्गला समुदाहिया।।21।।
संठाणओ परिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिया।
परिमंडला य वट्टा य, तंसा चउरंस-मायया।।22।।
वण्णओ जे भवे किण्हे, भइए से उ गंधओ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य।।23।।
वण्णओ जे भवे नीले, भइए से उ गंधओ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य।।24।।
वण्णओ लोहिए जे उ, भइए से उ गंधओ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य।।25।।
वण्णओ पीयए जे उ, भइए से उ गंधओ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य।।26।।
वण्णओ सुक्किले जे उ, भइए से उ गंधओ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य।।27।।
गंधओ जे भवे सुब्भी, भइए से उ वण्णओ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य।।28।।
गंधओ जे भवे दुब्भी, भइए से उ वण्णओ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य।।29।।

रसओ तित्तए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य।।30।।

रसओ कडुए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य।।31।।

रसओ कसाए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य।।32।।

रसओ अंबिले जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य।।33।।

रसओ महुरए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य।।34।।

फासओ कक्खडे जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य।।35।।

फासओ मउए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य।।36।।

फासओ गुरुए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य।।37।।

फासओ लहुए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य।।38।।

फासओ सीयए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य।।39।।

फासओ उण्हए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य।।40।।

फासओ निद्धए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य।।41।।

फासओ लुक्खए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य।।42।।

परिमंडलसंठाणे, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य।।43।।

संठाणओ भवे वट्टे, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य।।44।।

संठाणओ भवे तंसे, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य।।45।।

संठाणओ जे चउरंसे, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य।।46।।

जे आययसंठाणे, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य।।47।।

एसा अजीव-विभत्ती, समासेण वियाहिया।
इत्तो जीवविभत्तिं, वुच्छामि अणुपुव्वसो।।48।।

संसारत्था य सिद्धा य, दुविहा जीवा वियाहिया।
सिद्धा णेगविहा वुत्ता, तं मे कित्तयओ सुण।।49।।

इत्थी-पुरिस-सिद्धा य, तहेव य नपुंसगा।
सलिंगे अन्नलिंगे य, गिहिलिंगे तहेव य।।50।।

उक्कोसोगाहणाए य, जहन्नमज्झिमाइ य।
उड्ढं अहे य तिरियं च, समुद्दम्मि जलम्मि य।।51।।

दस य नपुंसएसुं, वीसं इत्थियासु य।
पुरिसेसु य अट्ठसयं, समएणेगेण सिज्झई।।52।।

चत्तारि य गिहिलिंगे, अन्नलिंगे दसेव य।
सलिंगेण अट्ठसयं, समएणेगेण सिज्झई।।53।।

उक्को-सोगाहणाए य, सिज्झंते जुगवं दुवे।
चत्तारि जहन्नाए, जवमज्झऽट्ठुत्तरं सयं।।54।।

चउरुड्ढलोए य दुवे समुद्दे, तओ जले वीसमहे तहेव य।
सयं च अट्ठुत्तरं तिरियलोए, समएणेगेण सिज्झई धुवं।।55।।

कहिं पडिहया सिद्धा?, कहिं सिद्धा पइट्ठिया?।
कहिं बोंदिं चइत्ता णं, कत्थ गंतूण सिज्झइ।।56।।

अलोगे पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्ठिया।
इहं बोंदिं चइत्ता णं, तत्थ गंतूण सिज्झइ।।57।।

बारसहिं जोयणेहिं, सव्वट्ठस्सुवरिं भवे।
ईसि-पब्भार-नामा उ, पुढवी छत्त-संठिया।।58।।

पणयाल-सय-सहस्सा, जोयणाणं तु आयया।
तावइयं चेव वित्थिण्णा, तिगुणो साहिय परिरओ।।59।।

अट्ठजोयण-बाहल्ला, सा मज्झम्मि वियाहिया।
परिहायंती चरिमंते, मच्छि-पत्ताउ तणुयरी।।60।।

अज्जुण-सुवण्णग-मई, सा पुढवी निम्मला सहावेणं।
उत्ताणग-च्छत्तग-संठिया य, भणिया जिणवरेहिं।।61।।

संखंक-कुंद-संकासा, पंडुरा निम्मला सुहा।
सीयाए जोयणे तत्तो, लोयंतो उ वियाहिओ।।62।।

जोयणस्स उ जो तत्थ, कोसो उवरिमो भवे।
तस्स कोसस्स छब्भाए, सिद्धाणोगाहणा भवे।।63।।

तत्थ सिद्धा महाभागा, लोगग्गम्मि पइट्ठिया।
भव-प्पवंच-उम्मुक्का, सिद्धिं वरगइं गया।।64।।

उस्सेहो जस्स जो होइ, भवम्मि चरिमम्मि उ।
तिभाग-हीणो तत्तो य, सिद्धाणोगाहणा भवे।।65।।

एगत्तेण साईया, अपज्जवसिया वि य।
पुहत्तेण अणाईया, अपज्जवसिया वि य।।66।।

अरूविणो जीवघणा, नाणदंसणसन्निया।
अउलं सुहं संपत्ता, उवमा जस्स नत्थि उ।।67।।

लोगेगदेसे ते सव्वे, नाणदंसण-सन्निया।
संसारपारनित्थिण्णा, सिद्धिं वरगइं गया।।68।।

संसारत्था उ जे जीवा, दुविहा ते वियाहिया।
तसा य थावरा चेव, थावरा तिविहा तहिं।।69।।

पुढवी-आउजीवा य, तहेव य वणस्सई।
इच्चेए थावरा तिविहा, तेसिं भेए सुणेह मे।।70।।

दुविहा पुढवीजीवा य, सुहुमा बायरा तहा।
पज्जत्त-मपज्जत्ता, एवमेव दुहा पुणो।।71।।

बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते वियाहिया।
सण्हा खरा य बोधव्वा, सण्हा सत्तविहा तहिं।।72।।

किण्हा नीला य रुहिरा य, हालिद्दा सुक्किला तहा।
पंडु-पणगमट्टिया, खरा छत्तीसईविहा।।73।।

पुढवी य सक्करा वालुया य, उवले सिला य लोणूसे।
अय तंब तउय सीसग, रुप्प सुवण्णे य वइरे य।।74।।
हरियाले हिंगुलुए, मणोसिला सासगंजण पवाले।
अब्भ-पडलऽब्भ-वालुय, बायरकाए मणिविहाणे।।75।।
गोमेज्जए य रुयगे, अंके फलिहे य लोहियक्खे य।
मरगय-मसारगल्ले, भुयमोयग-इंदनीले य।।76।।
चंदण-गेरुय हंसगब्भ, पुलए सोगंधिए य बोधव्वे।
चंदप्पहवेरुलिए, जलकंते सूरकंते य।।77।।
एए खरपुढवीए, भेया छत्तीस-माहिया।
एगविह-मणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया।।78।।
सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा।
इत्तो कालविभागं तु, वुच्छं तेसिं चउव्विहं।।79।।
संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य।।80।।
बावीस-सहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे।
आउ-ठिई पुढवीणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया।।81।।
असंखकाल-मुक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्निया।
कायठिई पुढवीणं, तं कायं तु अमुंचओ।।82।।
अणंतकाल-मुक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढम्मि सए काए, पुढविजीवाण अंतरं।।83।।
एएसिं वन्नओ चेव, गंधओ रस-फासओ।
संठाणादेसओ वा वि, विहाणाइं सहस्ससो।।84।।

दुविहा आउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा।
पज्जत्त-मपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो।।85।।
बायरा जे उ पज्जत्ता, पंचहा ते पकित्तिया।
सुद्धोदए य उस्से य, हरतणु महिया हिमे।।86।।
एगविह-मणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया।
सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा।।87।।
संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साइया, सपज्जवसिया वि य।।88।।
सत्तेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे।
आउठिई आऊणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया।।89।।
असंखकाल-मुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया।
कायठिई आऊणं, तं कायं तु अमुंचओ।।90।।
अणंतकाल-मुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढम्मि सए काए, आउजीवाण अंतरं।।91।।
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रस-फासओ।
संठाणादेसओ वा वि, विहाणाइं सहस्ससो।।92।।
दुविहा वणस्सईजीवा, सुहुमा बायरा तहा।
पज्जत्त-मपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो।।93।।
बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते वियाहिया।
साहारण-सरीरा य, पत्तेगा य तहेव य।।94।।
पत्तेगसरीराओ, णेगहा ते पकित्तिया।
रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य, लया वल्ली तणा तहा।।95।।

वलया पव्वगा कुहणा, जलरुहा ओसही तहा।
हरिय-काया उ बोद्धव्वा, पत्तेगाइ वियाहिया।।96।।

साहारण-सरीराओ णेगहा ते पकित्तिया।
आलुए मूलए चेव, सिंगबेरे तहेव य।।97।।

हरिली सिरिली सिस्सिरिली, जावई केयकंदली।
पलंडु-लसण-कंदे य, कंदली य कुहुव्वए।।98।।

लोहि णीहू य थीहू य, कुहगा य तहेव य।
कण्हे य वज्जकंदे य, कंदे सूरणए तहा।।99।।

अस्स-कण्णी य बोधव्वा, सीह-कण्णी तहेव य।
मुसुंढी य हलिद्दा य, णेगहा एवमायओ।।100।।

एगविह-मणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया।
सुहुमा सव्व-लोगम्मि, लोगदेसे य बायरा।।101।।

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जव-सिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जव-सिया वि य।।102।।

दस चेव सहस्साइं, वासा-णुक्कोसिया भवे।
वणस्सईण आउं तु, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं।।103।।

अणंतकाल-मुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं।
कायठिई पणगाणं, तं कायं तु अमुंचओ।।104।।

असंखकाल-मुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढम्मि सए काए, पणगजीवाण अंतरं।।105।।

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रस-फासओ।
संठाणादेसओ वा वि, विहाणाइं सहस्ससो।।106।।

इच्चेए थावरा तिविहा, समासेण वियाहिया।
इत्तो उ तसे तिविहे, वुच्छामि अणुपुव्वसो।।107।।
तेऊ वाऊ य बोद्धव्वा, उराला य तसा तहा।
इच्चेए तसा तिविहा, तेसिं भेए सुणेह मे।।108।।
दुविहा तेउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा।
पज्जत्त-मपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो।।109।।
बायरा जे उ पज्जत्ता, णेगहा ते वियाहिया।
इंगाले मुम्मुरे अगणी, अच्चि जाला तहेव य।।110।।
उक्का विज्जू य बोधव्वा, णेगहा एव-मायओ।
एगविह-मनाणत्ता, सुहुमा ते वियाहिया।।111।।
सुहुमा सव्व-लोगम्मि, लोगदेसे य बायरा।
इत्तो काल-विभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं।।112।।
संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य।।113।।
तिण्णेव अहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया।
आउठिई तेऊणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया।।114।।
असंखकाल-मुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं।
कायठिई तेऊणं, तं कायं तु अमुंचओ।।115।।
अणंतकाल-मुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढम्मि सए काए, तेउजीवाण अंतरं।।116।।
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रस-फासओ।
संठाणादेसओ वा वि, विहाणाइं सहस्ससो।।117।।

दुविहा वाउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा।
पज्जत्त-मपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो।।118।।

बायरा जे उ पज्जत्ता, पंचहा ते पकित्तिया।
उक्कलिया-मंडलिया-घण-गुंजा-सुद्धवाया य।।119।।

संवट्टग-वाया य, णेगहा एव-मायओ।
एगविह-मणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया।।120।।

सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं।।121।।

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य।।122।।

तिन्नेव सहस्साइं, वासा-णुक्कोसिया भवे।
आउठिई वाऊणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया।।123।।

असंखकाल-मुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं।
कायठिई वाऊणं, तं कायं तु अमुंचओ।।124।।

अणंतकाल-मुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढम्मि सए काए, वाऊ-जीवाण अंतरं।।125।।

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रस-फासओ।
संठाणादेसओ वा वि, विहाणाइं सहस्ससो।।126।।

उराला तसा जे उ, चउहा ते पकित्तिया।
बेइंदिया तेइंदिया, चउरो पंचिंदिया चेव।।127।।

बेइंदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया।
पज्जत्त-मपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे।।128।।

किमिणो सोमंगला चेव, अलसा माइवाहया।
वासीमुहा य सिप्पिया, संखा संखणगा तहा।।129।।
पल्लोयाणुल्लया चेव, तहेव य वराडगा।
जलूगा जालगा चेव, चंदणा य तहेव य।।130।।
इइ बेइंदिया एए, णेगहा एव-मायओ।
लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया।।131।।
संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य।।132।।
वासाइं बारसा चेव, उक्कोसेण वियाहिया।
बेइंदिय-आउठिई, अंतोमुहुत्तं जहन्निया।।133।।
संखेज्जकालमुक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्निया।
बेइंदिय-कायठिई, तं कायं तु अमुंचओ।।134।।
अणंतकाल-मुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं।
बेइंदियजीवाणं, अंतरं च वियाहियं।।135।।
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रस-फासओ।
संठाणादेसओ वा वि, विहाणाइं सहस्ससो।।136।।
तेइंदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया।
पज्जत्त-मपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे।।137।।
कुंथुपिवीलिउड्डंसा, उक्कलुद्देहिया तहा।
तणहारा कट्ठहारा य, मालूगा पत्तहारगा।।138।।
कप्पासट्ठिम्मिजाया, तिंदुगा तउसमिंजगा।
सदावरी य गुम्मी य, बोद्धव्वा इंदगाइया।।139।।

इंदगोवग-माईया, णेगहा एवमायओ।
लोगेगदेसे ते सव्वे, ण सव्वत्थ वियाहिया।।140।।

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य।।141।।

एगूण-पण्णऽहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया।
तेइंदिय-आउठिई, अंतोमुहुत्तं जहन्निया।।142।।

संखिज्ज-काल-मुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं।
तेइंदियकायठिई, तं कायं तु अमुंचओ।।143।।

अणंतकाल-मुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं।
तेइंदियजीवाणं, अंतरं तु वियाहियं।।144।।

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रस-फासओ।
संठाणादेसओ वा वि, विहाणाइं सहस्ससो।।145।।

चउरिंदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया।
पज्जत्त-मपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे।।146।।

अंधिया पोत्तिया चेव, मच्छिया मसगा तहा।
भमरे कीड-पयंगे य, ढिंकुणे कुंकणे तहा।।147।।

कुक्कुडे सिंगरीडी य, नंदावत्ते य विच्छुए।
डोले भिंगिरीडी य, विरिली अच्छिवेहए।।148।।

अच्छिले माहए अच्छिरोडए, विचित्ते चित्तपत्तए।
ओहिंजलिया जलकारी य, नीयया तंबगाइया।।149।।

इय चउरिंदिया एए, णेगहा एव-मायओ।
लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे परिकित्तिया।।150।।

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य।।151।।

छच्चेव य मासा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया।
चउरिंदियआउठिई, अंतोमुहुत्तं जहन्निया।।152।।

संखेज्जकाल-मुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया।
चउरिंदिय-कायठिई, तं कायं तु अमुंचओ।।153।।

अणंतकाल-मुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढम्मि सए काए, अंतरं च वियाहियं।।154।।

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रस-फासओ।
संठाणादेसओ वा वि, विहाणाइं सहस्ससो।।155।।

पंचिंदिया उ जे जीवा, चउव्विहा ते वियाहिया।
नेरइया तिरिक्खा य, मणुया देवा य आहिया।।156।।

नेरइया सत्तविहा, पुढवीसु सत्तसू भवे।
रयणाभा-सक्कराभा, वालुयाभा य आहिया।।157।।

पंकाभा धूमाभा, तमा तमतमा तहा।
इइ नेरइया एए, सत्तहा परिकित्तिया।।158।।

लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे उ वियाहिया।
इत्तो काल-विभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं।।159।।

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साइया, सपज्जवसिया वि य।।160।।

सागरोवममेगं तु, उक्कोसेण वियाहिया।
पढमाए जहन्नेणं, दसवास-सहस्सिया।।161।।

तिण्णेव-सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया।
दोच्चाए जहन्नेणं, एगं तु सागरोवमं।।162।।

सत्तेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया।
तइयाए जहन्नेणं, तिन्नेव सागरोवमा।।163।।

दस सागरोवमा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया।
चउत्थीए जहन्नेणं, सत्तेव सागरोवमा।।164।।

सत्तरस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया।
पंचमाए जहन्नेणं, दस चेव सागरोवमा।।165।।

बावीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया।
छट्ठीए जहन्नेणं, सत्तरस-सागरोवमा।।166।।

तेत्तीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया।
सत्तमाए जहन्नेणं, बावीसं सागरोवमा।।167।।

जा चेव उ आउठिई, नेरइयाणं वियाहिया।
सा तेसिं कायठिई, जहन्नुक्कोसिया भवे।।168।।

अणंतकाल-मुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढम्मि सए काए, नेरइयाणं तु अंतरं।।169।।

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रस-फासओ।
संठाणादेसओ वा वि, विहाणाइं सहस्ससो।।170।।

पंचिंदियतिरिक्खाओ, दुविहा ते वियाहिया।
समुच्छिमतिरिक्खाओ, गब्भवक्कंतिया तहा।।171।।

दुविहा ते भवे तिविहा, जलयरा थलयरा तहा।
णहयरा य बोधव्वा, तेसिं भेए सुणेह मे।।172।।

मच्छा य कच्छभा य, गाहा य मगरा तहा।
सुंसुमारा य बोधव्वा, पंचहा जलयराऽऽहिया।।173।।

लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं।।174।।

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य।।175।।

एगा य पुव्वकोडी ऊ, उक्कोसेण वियाहिया।
आउठिई जलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया।।176।।

पुव्वकोडिपुहत्तं तु, उक्कोसेण वियाहिया।
कायठिई जलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया।।177।।

अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढम्मि सए काए, जलयराणं अंतरं।।178।।

एएसिं वण्णओ चेव गंधओ रस-फासओ।
संठाणादेसओ वा वि, विहाणाइं सहस्ससो।।179।।

चउप्पया य परिसप्पा, दुविहा थलयरा भवे।
चउप्पया चउविहा, ते मे कित्तयओ सुण।।180।।

एगखुरा दुखुरा चेव, गंडीपया सणप्पया।
हयमाई गोणमाई, गयमाई सीहमाइणो।।181।।

भुओरगपरिसप्पा य, परिसप्पा दुविहा भवे।
गोहाई अहिमाई य, एक्केक्का णेगहा भवे।।182।।

लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया।
एत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं।।183।।

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य।।184।।

पलिओवमाइं तिन्नि उ, उक्कोसेण वियाहिया।
आउठिई थलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहण्णिया।।185।।

पुव्वकोडिपुहत्तेणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया।
कायठिई थलयराणं, अंतरं तेसिमं भवे।।186।।

अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढम्मि सए काए, थलयराणं तु अंतरं।।187।।

एएसिं वण्णओ चेव गंधओ रस-फासओ।
संठाणादेसओ वा वि, विहाणाइं सहस्ससो।।188।।

चम्मे उ लोमपक्खी य, तइया समुग्गपक्खिया।
वियय़पक्खी य बोधव्वा, पक्खिणो य चउव्विहा।।189।।

लोएदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं।।190।।

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य।।191।।

पलिओवमस्स भागो, असंखेज्जइमो भवे।
आउठिई खहयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया।।192।।

असंखभागो पलियस्स, उक्कोसेण उ साहिया।
पुव्वकोडिपुहत्तेणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया।।193।।

कायठिई खहयराणं, अंतरं तेसिमं भवे।
अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं।।194।।

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रस-फासओ।
संठाणादेसओ वा वि, विहाणाइं सहस्ससो।।195।।

मणुया दुविहभेया उ, ते मे कित्तयओ सुण।
संमुच्छिमा य मणुया, गब्भवक्कंतिया तहा।।196।।

गब्भवक्कंतिया जे उ, तिविहा ते वियाहिया।
कम्मअकम्मभूमा य, अंतरद्दीवया तहा।।197।।

पन्नरस-तीसइविहा, भेया दुअट्ठवीसइं।
संखा उ कमसो तेसिं, इइ एसा वियाहिया।।198।।

संमुच्छिमाण एसेव, भेओ होइ वियाहिओ।
लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे वि वियाहिया।।199।।

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य।।200।।

पलिओवमाइं तिन्नि उ, उक्कोसेण वियाहिया।
आउठिई मणुयाणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया।।201।।

पलिओवमाइं तिन्नि उ, उक्कोसेण वियाहिया।
पुव्वकोडिपुहत्तेणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया।।202।।

कायठिई मणुयाणं, अंतरं तेसिमं भवे।
अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं।।203।।

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रस फासओ।
संठाणादेसओ वा वि, विहाणाइं सहस्ससो।।204।।

देवा चउव्विहा वुत्ता, ते मे कित्तयओ सुण।
भोमिज्जवाणमंतर, जोइस वेमाणिया तहा।।205।।

दसहा उ भवणवासी, अट्ठहा वणचारिणो।
पंचविहा जोइसिया, दुविहा वेमाणिया तहा।।206।।

असुरा नागसुवण्णा, विज्जू अग्गी य आहिया।
दीवोदहि दिसा वाया, थणिया भवणवासिणो।।207।।

पिसाय भूया जक्खा य, रक्खसा किन्नरा किंपुरिसा।
महोरगा य गंधव्वा, अट्ठविहा वाणमंतरा।।208।।

चंदा सूरा य नक्खत्ता, गहा तारागणा तहा।
ठिया विचारिणो चेव, पंचहा जोइसालया।।209।।

वेमाणिया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया।
कप्पोवगा य बोद्धव्वा, कप्पाईया तहेव य।।210।।

कप्पोवगा य बारसहा, सोहम्मीसाणगा तहा।
सणंकुमार माहिंदा, बंभलोगा य लंतगा।।211।।

महासुक्का सहस्सारा, आणया पाणया तहा।
आरणा अच्चुया चेव, इइ कप्पोवगा सुरा।।212।।

कप्पाईया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया।
चेव, गेवेज्जाऽणुत्तरा गेविज्जा नवविहा तहिं।।213।।

हेट्ठिमा-हेट्ठिमा चेव, हेट्ठि-मामज्झिमा तहा।
हेट्ठिमा-उवरिमा चेव, मज्झिमाहेट्ठिमा तहा।।214।।

मज्झिमा-मज्झिमा चेव, मज्झिमा-उवरिमा तहा।
उवरिमा-हेट्ठिमा चेव, उवरिमा-मज्झिमा तहा।।215।।

उवरिमा-उवरिमा चेव, इय गेविज्जगा सुरा।
विजया वेजयंता य, जयंता अपराजिया।।216।।

सव्वट्ठसिद्धगा चेव, पंचहाऽणुत्तरा सुरा।
इय वेमाणिया एए, णेगहा एवमायओ।।217।।

लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे वि वियाहिया।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं।।218।।

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य।।219।।

साहियं सागरं एक्कं, उक्कोसेण ठिई भवे।
भोमेज्जाणं जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया।।220।।

पलिओवममेगं तु, उक्कोसेण ठिई भवे।
वंतराणं जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया।।221।।

पलिओवममेगं तु, वासलक्खेण साहियं।
पलिओवमट्ठभागो, जोइसेसु जहन्निया।।222।।

दो चेव सागराइं, उक्कोसेण वियाहिया।
सोहम्मम्मि जहन्नेणं, एगं च पलिओवमं।।223।।

सागरा साहिया दुन्नि, उक्कोसेण वियाहिया।
ईसाणम्मि जहन्नेणं, साहियं पलिओवमं।।224।।

सागराणि य सत्तेव, उक्कोसेण ठिई भवे।
सणंकुमारे जहन्नेणं, दुन्नि ऊ सागरोवमा।।225।।

साहिया सागरा सत्त, उक्कोसेण ठिई भवे।
माहिंदम्मि जहन्नेणं, साहिया दुन्नि सागरा।।226।।

दस चेव सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
बंभलोए जहन्नेणं, सत्त ऊ सागरोवमा।।227।।

चउद्दस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
लंतगम्मि जहन्नेणं, दस ऊ सागरोवमा।।228।।

सत्तरस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
महासुक्के जहन्नेणं, चोद्दस सागरोवमा।।229।।

अट्ठारस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
सहस्सारम्मि जहन्नेणं, सत्तरस सागरोवमा।।230।।

सागरा अऊणवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे।
आणयम्मि जहन्नेणं, अट्ठारस सागरोवमा।।231।।

वीसं तु सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
पाणयम्मि जहन्नेणं, सागरा अउणवीसई।।232।।

सागरा इक्कवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे।
आरणम्मि जहन्नेणं, वीसई सागरोवमा।।233।।

बावीसं सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
अच्चुयम्मि जहन्नेणं, सागरा इक्कवीसई।।234।।

तेवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
पढमम्मि जहन्नेणं, बावीसं सागरोवमा।।235।।

चउवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
बिइयम्मि जहन्नेणं, तेवीसं सागरोवमा।।236।।

पणवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
तइयम्मि जहन्नेणं, चउवीसं सागरोवमा।।237।।

छव्वीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
चउत्थम्मि जहन्नेणं, सागरा पणवीसई।।238।।

सागरा सत्तवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे।
पंचमम्मि जहन्नेणं, सागरा उ छवीसइ।।239।।

सागरा अट्ठवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे।
छट्ठम्मि जहन्नेणं, सागरा सत्तवीसई।।240।।

सागरा अउणतीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे।
सत्तमम्मि जहन्नेणं, सागरा अट्ठवीसई।।241।।

तीसं तु सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
अट्ठमम्मि जहन्नेणं, सागरा अउणतीसई।।242।।

सागरा इक्कतीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे।
नवमम्मि जहन्नेणं, तीसई सागरोवमा।।243।।

तेत्तीसं सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
चउसुं पि विजयाईसु, जहन्नेणेक्कतीसई।।244।।

अजहन्न-मणुक्कोसा, तेत्तीसं सागरोवमा।
महाविमाणे सव्वट्ठे, ठिई एसा वियाहिया।।245।।

जा चेव उ आउठिई, देवाणं तु वियाहिया।
सा तेसिं कायठिई, जहन्नमुक्कोसिया भवे।।246।।

अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढम्मि सए काए, देवाणं हुज्ज अंतरं।।247।।

अणंतकालमुक्कोसं, वासपुहुत्तं जहन्नयं।
आणयाईणं कप्पाणं, गेविज्जाणं तु अंतरं।।248।।

संखिज्जसागरुक्कोसं, वासपुहुत्तं जहन्नयं।
अणुत्तराणं देवाणं, अंतरेयं वियाहियं।।249।।

एएसिं वन्नओ चेव, गंधओ रस-फासओ।
संठाणादेसओ वा वि, विहाणाइं सहस्ससो।।250।।

संसारत्था य सिद्धा य, इय जीवा वियाहिया।
रूविणो चेवऽरूवी य, अजीवा दुविहा वि य।।251।।

इय जीवमजीवे य, सोच्चा सद्दहिऊण य।
सव्वनयाणमणुमए, रमेज्ज संजमे मुणी।।252।।

तओ बहूणि वासाणि, सामण्णमणुपालिया।
इमेण कम्मजोगेण, अप्पाणं संलिहे मुणी।।253।।

बारसेव उ वासाइं, संलेहुक्कोसिया भवे।
संवच्छरं मज्झिमिया, छम्मासा य जहन्निया।।254।।

पढमे वासचउक्कम्मि, विगई निज्जूहणं करे।
बिईए वासचउक्कम्मि, विचित्तं तु तवं चरे।।255।।

एगंतरमायामं, कट्टु संवच्छरे दुवे।
तओ संवच्छरऽद्धं तु, नाऽइविगिट्ठं तवं चरे।।256।।

तओ संवच्छरऽद्धं तु, विगिट्ठं तु तवं चरे।
परिमियं चेव आयामं, तम्मि संवच्छरे करे।।257।।

कोडीसहियमायामं, कट्टु संवच्छरे मुणी।
मासऽद्धमासिएणं तु, आहारेणं तवं चरे।।258।।

कंदप्पमाभिओगं, किब्बिसियं मोहमासुरुत्तं च।
एयाओ दुग्गईओ, मरणम्मि विराहिया होंति।।259।।

मिच्छादंसणरत्ता, सनियाणा उ हिंसगा।
इय जे मरंति जीवा, तेसिं पुण दुल्लहा बोही।।260।।

सम्मद्दंसणरत्ता, अणियाणा सुक्कलेसमोगाढा।
इय जे मरंति जीवा, तेसिं सुलहा भवे बोही।।261।।

मिच्छादंसणरत्ता, सनियाणा कण्हलेसमोगाढा।
इय जे मरंति जीवा, तेसिं पुण दुल्लहा बोही।।262।।

जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयणं जे करेंति भावेण।
अमला असंकिलिट्ठा, ते होंति परित्तसंसारी।।263।।

बालमरणाणि बहुसो, अकाममरणाणि चेव य बहूणि।
मरिहंति ते वराया, जिणवयणं जे न जाणंति।।264।।

बहुआगमविन्नाणा, समाहिउप्पायगा य गुणगाही।
एएणं कारणेणं, अरिहा आलोयणं सोउं।।265।।

कंदप्पकुक्कुयाइं, तह सीलसहाव-हासविगहाइं।
विम्हावेंतो य परं, कंदप्पं भावणं कुणइ।।266।।

मंताजोगं काउं, भूईकम्मं च जे पउंजंति।
साय-रस-इड्ढिहेउं, अभिओगं भावणं कुणइ।।267।।

नाणस्स केवलीणं, धम्मायरियस्स संघसाहूणं।।
माई अवण्णवाई, किब्बिसियं भावणं कुणइ।।268।।

अणुबद्धरोसपसरो, तह य निमित्तम्मि होइ पडिसेवी।
एएहिं कारणेहिं, आसुरियं भावणं कुणइ।।269।।

सत्थगहणं विसभक्खणं च, जलणं च जलपवेसो य।
अणायारभंडसेवी, जम्मणमरणाणि बंधंति।।270।।

इय पाउकरे बुद्धे, नायए परिनिव्वुए।
छत्तीसं उत्तरऽज्झाए, भवसिद्धीयसंवुडे।।271।।

।। त्ति बेमि।।

।।जीवाजीवविभत्ती णामं छत्तीसइमं अज्झयणं समत्तं।।36।।

।। उत्तरज्झयणणि समत्ताणि।।

श्री नन्दि-सूत्रम्

जयइ जगजीव-जोणी, वियाणओ जगगुरू जगाणंदो।
जगणाहो जगबंधू, जयइ जगप्पियामहो भयवं।।1।।
जयइ सुयाणं पभवो, तित्थयराणं अपच्छिमो जयइ।
जयइ गुरू लोगाणं, जयइ महप्पा महावीरो।।2।।
भद्दं सव्व-जगुज्जोयगस्स, भद्दं जिणस्स वीरस्स।
भद्दं सुरासुर-णमंसियस्स, भद्दं धुय-रयस्स।।3।।
गुण-भवण-गहण सुय-रयण-भरिय, दंसण विसुद्ध-रत्थागा।
संघ-णगर ! भद्दं ते, अखंडचारित्त-पागारा।।4।।
संजम-तव-तुंबारयस्स, णमो सम्मत्त-पारियल्लस्स।
अप्पडिचक्कस्स जओ, होउ सया संघ-चक्कस्स।।5।।
भद्दं सील-पडागूसियस्स, तव-णियम-तुरय-जुत्तस्स।
संघ-रहस्स भगवओ, सज्झायसुणंदि-घोसस्स।।6।।
कम्मरय-जलोहविणिग्गयस्स, सुयरयण-दीह-णालस्स।
पंच-महव्वय-थिर-कण्णियस्स, गुण-केसरालस्स।।7।।

सावग-जण-महुयरि-परिवुडस्स, जिण-सूर-तेय-बुद्धस्स।
संघ-पउमस्स भद्दं, समण-गण-सहस्स-पत्तस्स।।8।।

तव-संजम-मयलंछण, अकिरिय-राहु-मुह-दुद्धरिस णिच्चं।
जय संघचंद ! णिम्मल-सम्मत्त-विसुद्ध-जोण्हागा।।9।।

पर-तित्थिय-गह-पह-णासगस्स, तवतेय-दित्त-लेसस्स।
णाणुज्जोयस्स जए, भद्दं दम-संघ सूरस्स।।10।।

भद्दं धिइ-वेला-परिगयस्स, सज्झाय-जोग-मगरस्स।
अक्खोहस्स भगवओ, संघ-समुद्दस्स रुंदस्स।।11।।

सम्मद्दंसण-वर-वइर-दढ-रूढ-गाढावगाढ-पेढस्स।
धम्मवर-रयण-मंडिय-चामीयर-मेहलागस्स।।12।।

णिय-मूसिय-कणय-सिलाय-लुज्जल-जलंत-चित्तकूडस्स।
णंदण-वण-मणहर-सुरभि-सील-गंधुद्धुमायस्स।।13।।

जीवदया-सुंदर-कंद-रुद्दरिय-मुणिवर-मइंद-इण्णस्स।
हेउ-सय-धाउ-पगलंत-रयणदित्तोसहि-गुहस्स।।14।।

संवर-वर-जल-पगलिय-उज्झर-पविरायमाण-हारस्स।
सावग-जण-पउर-रवंत-मोर-णच्चंत-कुहरस्स।।15।।

विणय-णय-पवर-मुणिवर-फुरंत-विज्जुज्जलंत-सिहरस्स।
विविह-गुण-कप्प-रुक्खग-फलभर-कुसुमाउल-वणस्स।।16।।

णाण-वर-रयण-दिप्पंत-कंत-वेरुलिय-विमल-चूलस्स।
वंदामि विणय-पणओ, संघ-महामंदर-गिरिस्स।।17।।

गुण-रयणुज्जल-कडयं, सील-सुगंधि-तव-मंडिउद्देसं।
सुय-बारसंग-सिहरं, संघ-महामंदरं वंदे।।18।।

णगर-रह-चक्क-पउमे, चंदे सूरे समुद्द-मेरुम्मि।
जो उवमिज्जइ सययं, तं संघ-गुणायरं वंदे।।19।।

वंदे उसभं अजियं, संभव-मभिणंदण-सुमइ-सुप्पभ-सुपासं।
ससि-पुप्फदंत-सीयल-सिज्जंसं वासुपुज्जं च।।20।।

विमल-मणंतं च धम्मं, संतिं, कुंथुं अरं च मल्लिं च।
मुणिसुव्वय-णमि णेमिं, पासं तह वद्धमाणं च।।21।।

पढमित्थ इंदभूई, बीए पुण होइ अग्गिभूइत्ति।
तइए य वाउभूई, तओ वियत्ते सुहम्मे य।।22।।

मंडिअ मोरियपुत्ते, अकंपिए चेव अयलभाया य।
मेयज्जे य पहासे य, गणहरा हुंति वीरस्स।।23।।

णिव्वुइ-पह-सासणयं, जयइ सया सव्व-भाव-देसणयं।
कु-समय-मय-णासणयं, जिणिंदवर-वीर-सासणयं।।24।।

सुहम्मं अग्गिवेसाणं, जंबूणामं च कासवं।
पभवं कच्चायणं वंदे, वच्छं सिज्जंभवं तहा।।25।।

जसभद्दं तुंगियं वंदे, संभूयं चेव माढरं।
भद्दबाहुं च पाइण्णं, थूलभद्दं च गोयमं।।26।।

एलावच्च-सगोत्तं, वंदामि महागिरिं सुहत्थिं च।
तत्तो कोसियगोत्तं, बहुलस्स सरिव्वयं वंदे।।27।।

हारिय-गुत्तं साइं च, वंदिमो हारियं च सामज्जं।
वंदे कोसिय-गोत्तं, संडिल्लं अज्ज-जीयधरं।।28।।

तिसमुद्द-खायकित्तिं, दीव-समुद्देसु गहिय पेयालं।
वंदे अज्जसमुद्दं, अक्खुभिय-समुद्द-गंभीरं।।29।।

भणगं करगं झरगं पभावगं णाण-दंसण-गुणाणं।
वंदामि अज्जमंगुं, सुयसागर-पारगं धीरं।।30।।

वंदामि अज्जधम्मं, तत्तो वंदे य भद्दगुत्तं च।
तत्तो य अज्जवइरं, तवणियम-गुणेहिं वइरसमं।।31।।

वंदामि अज्जरक्खियखमणे, रक्खियचरित्तसव्वस्से।
रयण-करंडग-भूओ, अणुओगो रक्खिओ जेहिं।।32।।

णाणम्मि दंसणम्मि य, तव-विणए णिच्चकालमुज्जुत्तं।
अज्जं णंदिल-खमणं, सिरसा वंदे पसण्ण-मणं।।33।।

वड्ढउ वायग-वंसो, जसवंसो अज्जणाग-हत्थीणं।
वागरण-करण-भंगिय-कम्मपयडी-पहाणाणं।।34।।

जच्चंजण-धाउ-समप्पहाणं, मुद्दिय-कुवलय-णिहाणं।
वड्ढउ वायग-वंसो, रेवई-णक्खत्त-णामाणं।।35।।

अयलपुरा णिक्खंते, कालियसुय-आणुओगिए धीरे।
बंभद्दीवग-सीहे, वायग-पयमुत्तमं पत्ते।।36।।

जेसिं इमो अणुओगो, पयरइ अज्जावि अड्ढ-भरहम्मि।
बहुणयर-णिग्गय-जसे, ते वंदे खंदिलायरिए।।37।।

तत्तो हिमवंत-महंत-विक्कमे, धिइ-परक्कम-मणंते।
सज्झाय-मणंतधरे, हिमवंते वंदिमो सिरसा।।38।।

कालियसुय-अणुओगस्स, धारए धारए य पुव्वाणं।
हिमवंत-खमासमणे, वंदे णागज्जुणायरिए।।39।।

मिउ-मद्दव-संपण्णे, आणुपुव्विं वायगत्तणं पत्ते।
ओहसुय-समायारे, णागज्जुण-वायए वंदे।।40।।

गोविंदाणं पि णमो, अणुओगे विउल-धारिणिंदाणं।
णिच्चं खंतिदयाणं, परूवणे दुल्लभिंदाणं।।41।।

तत्तो य भूयदिण्णं, णिच्चं तवसंजमे अणिव्विण्णं।
पंडियजण-सामण्णं, वंदामो संजम-विहिण्णू।।42।।

वरकणग-तविय-चंपग-विमउलवर-कमलगब्भ-सरिवण्णे।
भवियजण-हियय-दइए, दयागुण-विसारए धीरे।।43।।

अड्ढ-भरहप्पहाणे, बहुविह-सज्झाय-सुमुणिय-पहाणे।
अणुओगिय-वरवसभे, णाइल-कुलवंस-णंदिकरे।।44।।

जगभूयहियप्पगब्भे, वंदेऽहं भूयदिण्ण-मायरिए।
भवभय-वुच्छेयकरे, सीसे णागज्जुण-रिसीणं।।45।।

सुमुणियणिच्चाणिच्चं, सुमुणियसुत्तत्थ-धारयं वंदे।
सब्भावुब्भावणया तत्थं लोहिच्च-णामाणं।।46।।

अत्थ-महत्थक्खाणिं, सुसमण-वक्खाण-कहण-णिव्वाणिं।
पयईए महुरवाणिं, पयओ पणमामि दूसगणिं।।47।।

तवणियम-सच्च-संजम-विणय-ऽज्जव-खंति-मद्दव-रयाणं।
सीलगुण-गद्दियाणं अणुओग-जुगप्पहाणाणं।।48।।

सुकुमाल-कोमल-तले, तेसिं पणमामि लक्खण-पसत्थे।
पाए पावयणीणं, पडिच्छय-सयएहिं पणिवइए।।49।।

जे अण्णे भगवंते, कालियसुय-अणुओगिए धीरे।
ते पणमिऊण सिरसा, णाणस्स परूवणं वोच्छं।।50।।

सेलघण, कुडग, चालणि, परिपूणग, हंस, महिस, मेसे य।
मसग, जलूग, बिराली, जाहग, गो, भेरी, आभीरी।।51।।

सा समासओ तिविहा पण्णत्ता, तं जहा-जाणिया
अजाणिया, दुव्वियड्ढा । जाणिया जहा-

खीरमिव जहा हंसा, जे घुट्टंति इह गुरु-गुण-समिद्धा।
दोसे य विवज्जंति, तं जाणसु जाणियं परिसं।।52।।

अजाणिया जहा-

जा होइ पगइ-महुरा, मियछावय-सीह-कुक्कुडय-भूआ।
रयणमिव असंठविया, अजाणिया सा भवे परिसा।।53।।

दुव्वियड्ढा जहा-

ण य कत्थइ णिम्माओ, ण य पुच्छइ परिभवस्स दोसेणं।
वत्थिव्व वायपुण्णो, फुट्टइ गामिल्लय दुवियड्ढो।।54।।

सूत्र-1. णाणं पंचविहं पण्णत्तं, तं जहा-आभिणिबोहिय-णाणं, सुयणाणं, ओहिणाणं, मणपज्जवणाणं, केवलणाणं।

सूत्र-2. तं समासओ दुविहं पण्णत्तं, तं जहा- पच्चक्खं च परोक्खं च।

सूत्र-3. से किं तं पच्चक्खं? पच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-इंदियपच्चक्खं, णोइंदियपच्चक्खं च।

सूत्र-4. से किं तं इंदियपच्चक्खं? इंदियपच्चक्खं पंचविहं पण्णत्तं, तं जहा-सोइंदियपच्चक्खं, चक्खिंदियपच्चक्खं, घाणिंदियपच्चक्खं, जिब्भिंदियपच्चक्खं, फासिंदियपच्चक्खं, से तं इंदियपच्चक्खं।

सूत्र-5. से किं तं णोइंदियपच्चक्खं? णोइंदिय- पच्चक्खं

तिविहं पण्णत्तं, तं जहा-ओहिणाणपच्चक्खं, मणपज्जवणाण-पच्चक्खं, केवलणाणपच्चक्खं।

सूत्र-6. से किं तं ओहिणाणपच्चक्खं? ओहिणाण-पच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-भवपच्चइयं च खाओवसमियं च।

सूत्र-7. से किं तं भव-पच्चइयं? भव-पच्चइयं दुण्हं, तं जहा-देवाण य णेरइयाण य।

सूत्र-8. से किं तं खाओवसमियं? खाओवसमियं दुण्हं, तं जहा-मणुस्साण य पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणियाण य। को हेऊ खाओवसमियं ? खाओवसमियं तयावरणिज्जाणं कम्माणं उदिण्णाणं खएणं अणुदिण्णाणं उवसमेणं ओहिणाणं समुप्पज्जइ।

सूत्र-9. अहवा गुण-पडिवण्णस्स अणगारस्स ओहिणाणं समुप्पज्जइ, तं समासओ छव्विहं पण्णत्तं, तं जहा-आणुगामियं, अणाणुगामियं, वड्ढमाणयं, हीयमाणयं, पडिवाइयं, अपडिवाइयं।

सूत्र-10. से किं तं आणुगामियं ओहिणाणं? आणुगामियं ओहिणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-अंतगयं च, मज्झगयं च। से किं तं अंतगयं? अंतगयं तिविहं पण्णत्तं, तं जहा-पुरओ अंतगयं, मग्गओ अंतगयं, पासओ अंतगयं।

से किं तं पुरओ अंतगयं? पुरओ अंतगयं-से जहा-णामए केइ पुरिसे उक्कं वा, चडुलियं वा, अलायं वा, मणिं वा, पईवं वा, जोइं वा, पुरओ काउं पणुल्लेमाणे पणुल्लेमाणे गच्छेज्जा, से तं पुरओ अंतगयं।

से किं तं मग्गओ अंतगयं? मग्गओ अंतगयं-से जहा-णामए केइ पुरिसे उक्कं वा, चडुलियं वा, अलायं वा, मणिं वा, पईवं वा, जोइं वा, मग्गओ काउं अणुकड्ढेमाणे अणुकड्ढेमाणे गच्छिज्जा, से तं मग्गओ अंतगयं।

से किं तं पासओ अंतगयं? पासओ अंतगयं-से जहा-णामए केइ पुरिसे उक्कं वा, चडुलियं वा, अलायं वा, मणिं वा, पईवं वा, जोइं वा, पासओ काउं परिकड्ढेमाणे परिकड्ढेमाणे गच्छिज्जा, से तं पासओ अंतगयं, से तं अंतगयं।

से किं तं मज्झगयं? मज्झगयं से जहा-णामए केइ पुरिसे उक्कं वा, चडुलियं वा, अलायं वा, मणिं वा, पईवं वा, जोइं वा, मत्थए काउं समुव्वहमाणे समुव्वहमाणे गच्छिज्जा, से तं मज्झगयं।

अंतगयस्स मज्झगयस्स य को पइविसेसो? पुरओ अंतगएणं ओहिणाणेणं पुरओ चेव संखिज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ। मग्गओ अंतगएणं ओहिणाणेणं मग्गओ चेव संखिज्जाणि वा, असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ। पासओ अंतगएणं ओहिणाणेणं पासओ चेव संखिज्जाणि वा, असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ। मज्झगएणं ओहिणाणेणं सव्वओ समंता संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ। से तं आणुगामियं ओहिणाणं।

सूत्र-11. से किं तं अणाणुगामियं ओहिणाणं? अणाणुगामियं ओहिणाणं से जहाणामए केइ पुरिसे एगं महंतं जोइट्ठाणं काउं तस्सेव जोइट्ठाणस्स परिपेरंतेहिं परिपेरंतेहिं,

परिघोलेमाणे परिघोलेमाणे तमेव जोइट्ठाणं पासइ, अण्णत्थ गए ण जाणइ ण पासइ, एवामेव अणाणुगामियं ओहिणाणं जत्थेव समुप्पज्जइ तत्थेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा संबद्धाणि वा असंबद्धाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ अण्णत्थ गए ण जाणइ ण पासइ। से तं अणाणुगामियं ओहिणाणं।

सूत्र-12. से किं तं वड्ढमाणयं ओहिणाणं? वड्ढमाणयं ओहिणाणं पसत्थेसु अज्झवसाय-ट्ठाणेसु वड्ढमाणस्स वड्ढमाण-चरित्तस्स, विसुज्झमाणस्स विसुज्झमाण-चरित्तस्स, सव्वओ समंता ओ ही वड्ढइ -

जावइआ तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणग-जीवस्स।
ओगाहणा जहण्णा ओहीखित्तं जहण्णं तु।।55।।

सव्व बहुअगणिजीवा णिरंतरं जत्तियं भरिज्जंसु।
खित्तं सव्वदिसागं परमोही खेत्तणिद्दिट्ठो।।56।।

अंगुल-मावलियाणं भाग-मसंखिज्ज दोसु संखिज्जा।
अंगुल-मावलियंतो आवलिया अंगुलपुहुत्तं।।57।।

हत्थम्मि मुहुत्तंतो, दिवसंतो गाउयम्मि बोद्धव्वो।
जोयणदिवस-पुहुत्तं, पक्खंतो पण्णवीसाओ।।58।।

भरहम्मि अद्धमासो, जम्बु-द्दीवम्मि साहिओ मासो।
वासं च मणुयलोए, वासपुहुत्तं च रुयगम्मि।।59।।

संखिज्जम्मि उ काले, दीवसमुद्दाऽवि हुंति संखिज्जा।
कालम्मि असंखिज्जे, दीव-समुद्दा उ भइयव्वा।।60।।

काले चउण्ह वुड्ढी, कालो भइयव्वो खित्तवुड्ढीए।
वुड्ढीए दव्व-पज्जव, भइयव्वा खित्त-काला उ।।61।।

सुहुमो य होइ कालो, तत्तो सुहुमयरं हवइ खित्तं।
अंगुलसेढीमित्ते, ओसप्पिणिओ असंखिज्जा।।62।।

से तं वड्ढमाणयं ओहिणाणं।

सूत्र-13. से किं तं हीयमाणयं ओहिणाणं? हीयमाणयं ओहिणाणं अप्पसत्थेहिं अज्झवसाणट्ठाणेहिं वट्टमाणस्स वट्टमाण-चरित्तस्स संकिलिस्स-माणस्स संकिलिस्स- माणचरित्तस्स सव्वओ समंता ओही परिहायइ । से तं हीयमाणयं ओहिणाणं।

सूत्र-14. से किं तं पडिवाइ ओहिणाणं? पडिवाइ ओहिणाणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखिज्जइ-भागं वा, संखिज्जइभागं वा, वालग्गं वा वालग्ग-पुहुत्तं वा, लिक्खं वा लिक्ख-पुहुत्तं वा, जूयं वा जूय-पुहुत्तं वा, जवं वा जव-पुहुत्तं वा, अंगुलं वा अंगुल-पुहुत्तं वा, पायं वा, पाय-पुहुत्तं वा, विहत्थिं वा विहत्थि-पुहुत्तं वा, रयणिं वा रयणि-पुहुत्तं वा, कुच्छिं वा कुच्छि-पुहुत्तं वा, धणुं वा, धणु-पुहुत्तं वा, गाउयं वा गाउय-पुहुत्तं वा, जोयणं वा जोयण-पुहुत्तं वा, जोयणसयं वा जोयणसय-पुहुत्तं वा, जोयण-सहस्सं वा जोयण-सहस्स-पुहुत्तं वा, जोयण-लक्खं वा जोयण-लक्खपुहुत्तं वा, जोयण-कोडिं वा जोयण-कोडिपुहुत्तं वा, जोयण-कोडाकोडिं वा जोयण-कोडाकोडि-पुहुत्तं वा, जोयणसंखिज्जं वा जोयण-संखिज्ज-पुहुत्तं वा,जोयण-असंखेज्जं वा जोयण-

असंखेज्ज-पुहुत्तं वा उक्कोसेणं लोगं वा पासित्ता णं पडिवइज्जा। से तं पडिवाइ ओहिणाणं।

सूत्र-15. से किं तं अपडिवाइ ओहिणाणं? अपडिवाइ ओहिणाणं जेणं अलोगस्स एगमवि आगास-पएसं जाणइ पासइ, तेण परं अपडिवाइ ओहिणाणं। से तं अपडिवाइ ओहिणाणं।

सूत्र-16. तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ णं- ओहिणाणी जहण्णेणं अणंताइं रूवि-दव्वाइं जाणइ पासइ, उक्कोसेणं सव्वाइं रूवि-दव्वाइं जाणइ पासइ। खित्तओ णं-ओहिणाणी जहण्णेणं अंगुलस्स असंखिज्जइ-भागं जाणइ पासइ, उक्कोसेणं असंखिज्जाइं अलोगे लोग-प्पमाण-मित्ताइं खंडाइं जाणइ पासइ। कालओ णं-ओहिणाणी जहण्णेणं आवलियाए असंखिज्जइ-भागं जाणइ पासइ। उक्कोसेणं असंखिज्जाओ उस्सप्पिणीओ अवसप्पिणीओ अईय-मणागयं च कालं जाणइ पासइ। भावओ णं- ओहिणाणी जहण्णेणं अणंते भावे जाणइ पासइ, उक्कोसेण वि अणंते भावे जाणइ पासइ। सव्वभावाण-मणंतभागं जाणइ पासइ।

ओही भव-पच्चइओ, गुण-पच्चइओ य वण्णिओ दुविहो।
तस्स य बहू विगप्पा, दव्वे खित्ते य काले य।।63।।

णेरइय-देव-तित्थंकरा य, ओहिस्सऽबाहिरा हुंति।
पासंति सव्वओ खलु, सेसा देसेण पासंति।।64।।

से तं ओहिणाण-पच्चक्खं।

सूत्र-17. से किं तं मणपज्जवणाणं? मणपज्जवणाणे णं भंते! किं मणुस्साणं उप्पज्जइ, अमणुस्साणं? गोयमा! मणुस्साणं णो अमणुस्साणं।

जइ मणुस्साणं किं संमुच्छिम-मणुस्साणं गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं? गोयमा! णो संमुच्छिम- मणुस्साणं गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं उप्पज्जइ। जइ गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं किं कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं,अकम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, अंतरदीवग-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं? गोयमा! कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, णो अकम्मभूमिय -गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, णो अंतरदीवग-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं। जइ कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, किं संखिज्ज-वासाउय- कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, असंखिज्ज-वासाउय- कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं? गोयमा! संखेज्ज- वासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, णो असंखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय- मणुस्साणं। जइ संखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय- मणुस्साणं, किं पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमिय- गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, अपज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय- कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं? गोयमा! पज्जत्तग- संखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, णो अपज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं।

जइ पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, किं सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, मिच्छदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, सम्मामिच्छदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय- कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं? गोयमा! सम्मद्दिट्ठि -पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, णो-मिच्छदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय- कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, णो सम्मामिच्छदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं। जइ सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय- कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, किं संजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, असंजय-सम्मद्दिट्ठि -पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, संजयासंजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय- कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं? गोयमा! संजय- सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमिय- गब्भ-वक्कंतिय-मणुस्साणं, णो असंजय- सम्मद्दिट्ठि -पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय- मणुस्साणं,णो संजयासंजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय- मणुस्साणं।

जइ संजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय-

कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, किं पमत्त-संजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, अपमत्तसंजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं? गोयमा! अपमत्तसंजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय -कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, णो पमत्त-संजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय -मणुस्साणं।

जइ अपमत्तसंजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, किं इड्ढिपत्त-अपमत्त-संजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय- कम्म-भूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, अणिड्ढिपत्त-अपमत्त- संजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं?

गोयमा ! इड्ढिपत्त-अपमत्त-संजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं, णो अणिड्ढिपत्त-अपमत्त-संजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं मणपज्जवणाणं समुप्पज्जइ।।

सूत्र-18. तं च दुविहं उप्पज्जइ तं जहा-उज्जुमई य, विउलमई य। तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ णं उज्जुमई अणंते

अणंत-पएसिए खंधे जाणइ पासइ। ते चेव विउलमई अब्भहियतराए विउलतराए विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणइ पासइ। खित्तओ णं उज्जुमई य जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जय-भागं उक्कोसेणं अहे जाव इमीसे रयण-प्पभाए पुढवीए उवरिम-हेट्ठिल्ले-खुड्डग-पयरे, उड्ढं जाव जोइसस्स उवरिम-तले, तिरियं जाव अंतो-मणुस्स-खित्ते अड्ढाइज्जेसु दीव-समुद्देसु पण्णरससु कम्म-भूमिसु तीसाए अकम्म-भूमिसु छप्पण्णाए अंतरदीवगेसु सण्णि-पंचिंदियाणं पज्जत्तयाणं मणोगए भावे जाणइ पासइ, तं चेव विउलमई अड्ढ इज्जेहिमंगुलेहिं अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं खेत्तं जाणइ पासइ। कालओ णं उज्जुमई जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखिज्जय-भागं उक्कोसेणवि पलिओवमस्स असंखिज्जय- भागं अतीय-मणागयं वा कालं जाणइ पासइ, तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ। भावओ णं उज्जुमई अणंते भावे जाणइ पासइ, सव्व- भावाणं अणंत-भागं जाणइ पासइ, तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ।

मणपज्जव-णाणं पुण, जण-मणपरिचिंतियत्थ-पागडणं।
माणुस्स-खित्त-णिबद्धं, गुण-पच्चइयं चरित्तवओ।।65।।

से तं मणपज्जव-णाणं।

सूत्र-19. से किं तं केवलणाणं? केवलणाणं दुविहं

पण्णत्तं, तं जहा-भवत्थ-केवलणाणं च सिद्ध-केवलणाणं च। से किं तं भवत्थ-केवलणाणं? भवत्थ-केवलणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-सजोगि-भवत्थ-केवलणाणं च अजोगि-भवत्थ- केवलणाणं च।

से किं तं अजोगि-भवत्थ-केवलणाणं? अजोगि-भवत्थ-केवलणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-पढम-समय-अजोगि-भवत्थ-केवलणाणं च अपढम-समय-अजोगि-भवत्थ-केवलणाणं च। अहवा चरमसमय-अजोगि-भवत्थ-केवलणाणं च अचरम-समय-अजोगि-भवत्थ-केवलणाणं च। से तं सजोगि-भवत्थ-केवलणाणं।

से किं तं अजोगि-भवत्थ-केवलणाणं? अजोगि-भवत्थ-केवलणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-पढम-समय- अजोगि-भवत्थ-केवलणाणं च, अपढम-समय-अजोगि -भवत्थ-केवलणाणं च। अहवा चरम-समय-अजोगि-भवत्थ-केवलणाणं च, अचरमसमय-अजोगि-भवत्थ-केवलणाणं च, से तं अजोगि-भवत्थ-केवलणाणं। से तं भवत्थ- केवलणाणं।

सूत्र-20. से किं तं सिद्ध-केवलणाणं? सिद्ध- केवलणाणं दुविहं-पण्णत्तं,तं जहा-अणंतर-सिद्ध-केवलणाणं च परंपरसिद्ध-केवलणाणं च।

सूत्र-21. से किं तं अणंतरसिद्ध-केवलणाणं? अणंतर-सिद्ध-केवलणाणं पण्णरस-विहं पण्णत्तं, तं जहा- तित्थसिद्धा, अतित्थसिद्धा, तित्थयर-सिद्धा, अतित्थयर-सिद्धा, सयंबुद्ध-

सिद्धा, पत्तेयबुद्ध-सिद्धा, बुद्धबोहिय-सिद्धा, इत्थिलिंग-सिद्धा, पुरिसलिंग-सिद्धा, णपुंसगलिंग-सिद्धा, सलिंग-सिद्धा, अण्णलिंग-सिद्धा, गिहिलिंग-सिद्धा, एग-सिद्धा, अणेग-सिद्धा, से तं अणंतरसिद्ध-केवलणाणं।

सूत्र-22. से किं तं परंपरसिद्ध-केवलणाणं? परंपरसिद्ध-केवलणाणं अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा-अपढम- समय-सिद्ध-केवलणाणं, दुसमय-सिद्ध-केवलणाणं, तिसमय- सिद्ध-केवलणाणं, चउसमय-सिद्ध-केवलणाणं, जाव दससमय -सिद्ध-केवलणाणं, संखिज्जसमय-सिद्ध-केवलणाणं, असंखिज्जसमय-सिद्ध-केवलणाणं, अणंत-समय-सिद्ध- केवलणाणं, से तं परंपरसिद्ध-केवलणाणं, से तं सिद्ध- केवलणाणं।

सूत्र-23. तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ णं केवलणाणी सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ। खित्तओ णं केवलणाणी सव्वं खित्तं जाणइ पासइ। कालओ णं केवलणाणी सव्वं कालं जाणइ पासइ। भावओ णं केवलणाणी सव्वे भावे जाणइ पासइ।

अह सव्व-दव्व-परिणाम-भाव-विण्णत्ति-कारणमणंतं।
सासय-मप्पडिवाइ, एगविहं केवलं णाणं।।66।।

केवलणाणेणऽत्थे, णाउं जे तत्थ पण्णवणाजोगे।
ते भासइ तित्थयरो, वइजोग-सुयं हवइ सेसं।।67।।

से तं केवलणाणं, से तं णोइंदिय-पच्चक्खं, से तं पच्चक्ख-णाणं।

सूत्र-24. किं तं परोक्ख-णाणं? परोक्ख-णाणं दुविहं

पण्णत्तं, तं जहा-आभिणिबोहिय-णाण-परोक्खं च, सुयणाण-परोक्खं च। जत्थ आभिणिबोहिय-णाणं तत्थ सुयणाणं, जत्थ सुयणाणं तत्थ आभिणिबोहिय-णाणं, दोऽवि एयाइं अण्णमण्ण-मणुगयाइं, तहवि पुण-इत्थ आयरिया णाणत्तं पण्णवयंति। अभिणि-बुज्झइ त्ति आभिणिबोहिय-णाणं, सुणेइ त्ति सुयणाणं, मइपुव्वं जेण सुयं, ण मई सुय-पुव्विया।

सूत्र-25. अविसेसिया मई, मइणाणं च, मइ-अण्णाणं च। विसेसिया सम्मद्दिट्ठिस्स मई मइणाणं। मिच्छदिट्ठिस्स मई मइ-अण्णाणं। अविसेसियं सुयं सुयणाणं च, सुयअण्णाणं च। विसेसियं सुयं सम्मद्दिट्ठिस्स सुयं सुयणाणं, मिच्छदिट्ठिस्स सुयं सुय-अण्णाणं।

सूत्र-26. से किं तं आभिणिबोहिय-णाणं? आभिणिबोहिय-णाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-सुय-णिस्सियं च, असुय-णिस्सियं च। से किं तं असुय-णिस्सियं ? असुय-णिस्सियं चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा-

उप्पत्तिया, वेणइया, कम्मिया, पारिणामिया।
बुद्धी चउव्विहा वुत्ता, पंचमा णोवलब्भइ।।68।।

पुव्व-मदिट्ठ-मस्सुय-मवेइय तक्खण-विसुद्ध-गहियत्था।
अव्वाहय-फलजोगा, बुद्धी उप्पत्तिया णाम।।69।।

भरह-सिल, मिंढ, कुक्कुड, तिल, वालुय, हत्थि, अगड,वणसंडे।
पायस, अइया, पत्ते, खाडहिला, पंचपियरो य,।।70।।
भरह-सिल, पणिय, रुक्खे, खुड्ड्ग, पड, सरड, काय, उच्चारे।

गय, घयण, गोल, खंभे, खुड्डग, मग्गि, त्थि, पइ, पुत्ते ।।71।।

महुसित्थ, मुद्दियंके, णाणए, भिक्खू, चेडगणिहाणे।
सिक्खा य, अत्थसत्थे इच्छा य महं, सयसहस्से।।72।।

भर-णित्थरण-समत्था, तिवग्ग-सुत्तत्थ-गहिय-पेयाला।
उभओलोग-फलवई, विणयसमुत्था हवइ बुद्धी।।73।।

णिमित्ते, अत्थसत्थे य, लेहे, गणिए य, कूव, अस्से य।
गद्दभ, लक्खण, गंठी, अगए, रहिए य, गणिया य।।74।।

सीया साडी दीहं च तणं, अवसव्वयं च कुंचस्स।
णिव्वोदए य गोणे, घोडग-पडणं च रुक्खाओ।।75।।

उवओगदिट्ठ-सारा, कम्मपसंग-परिघोलण-विसाला।
साहुक्कार-फलवई, कम्म-समुत्था हवइ बुद्धी।।76।।

हेरण्णिए, करिसए, कोलिय, डोवे य, मुत्ति, घय, पवए।
तुण्णाए, वड्ढइ य, पूयइ, घड, चित्तकारे य।।77।।

अणुमाणहेउ-दिट्ठंत-साहिया, वयविवाग-परिणामा।
हिय-णिस्सेयस-फलवई, बुद्धी परिणामिया णाम।।78।।

अभए, सिट्ठि, कुमारे, देवी, उदिओदए, हवइ राया।
साहू य णंदिसेणे, धणदत्ते, सावग, अमच्चे।।79।।

खमए, अमच्चपुत्ते, चाणक्के, चेव थूलभद्दे य।
णासिक्क-सुंदरिणंदे, वइरे, परिणामिया बुद्धी।।80।।

चलणाहण, आमंडे, मणी य, सप्पे य, खग्गि, थूभिंदे।

परिणामियबुद्धीए, एवमाई उदाहरणा।।81।। से तं असुय-णिस्सियं।

सूत्र-27. से किं तं सुय-णिस्सियं? सुय-णिस्सियं चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा-उग्गहे, ईहा, अवाओ, धारणा।

सूत्र-28. से किं तं उग्गहे? उग्गहे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा- अत्थुग्गहे य वंजणुग्गहे य।

सूत्र-29. से किं तं वंजणुग्गहे? वंजणुग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा-सोइंदिय-वंजणुग्गहे, घाणिंदिय-वंजणुग्गहे जिब्भिंदिय-वंजणुग्गहे, फासिंदिय-वंजणुग्गहे। से तं वंजणुग्गहे।

सूत्र-30. से किं तं अत्थुग्गहे? अत्थुग्गहे छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा सोइंदिय-अत्थुग्गहे, चक्खिंदिय-अत्थुग्गहे, घाणिंदिय-अत्थुग्गहे, जिब्भिंदिय-अत्थुग्गहे, फासिंदिय-अत्थुग्गहे, णोइंदिय-अत्थुग्गहे।

सूत्र-31. तस्स णं इमे एगट्ठिया णाणा-घोसा णाणा-वंजणा पंच णामधिज्जा भवंति, तं जहा- ओगेण्हणया, उवधारणया, सवणया, अवलंबणया, मेहा। से तं उग्गहे।

सूत्र-32. से किं तं ईहा? ईहा छव्विहा पण्णत्ता, तं जहा-सोइंदिय-ईहा, चक्खिंदिय-ईहा, घाणिंदिय-ईहा, जिब्भिंदिय-ईहा, फासिंदिय-ईहा, णोइंदिय-ईहा, तीसे णं इमे एगट्ठिया णाणाघोसा, णाणावंजणा पंच णामधिज्जा भंवति, तं जहा-आभोगणया, मग्गणया गवेसणया, चिंता, वीमंसा। से तं ईहा।

सूत्र-33. से किं तं अवाए? अवाए छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा-सोइंदिय-अवाए, चक्खिंदिय-अवाए, घाणिंदिय-अवाए, जिब्भिंदिय-अवाए, फासिंदिय-अवाए, णोइंदिय- अवाए। तस्स णं इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणावंजणा पंच णामधिज्जा भवंति, तं जहा-आउट्टणया, पच्चाउट्टणया, अवाए, बुद्धी, विण्णाणे। से तं अवाए।

सूत्र-34. से किं तं धारणा? धारणा छव्विहा पण्णत्ता, तं जहा-सोइंदिय-धारणा, चक्खिंदिय-धारणा, घाणिंदिय धारणा, जिब्भिंदिय-धारणा, फासिंदिय-धारणा, णोइंदिय-धारणा। तीसे णं इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणावंजणा पंच णामधिज्जा भवंति, तं जहा-धरणा, धारणा, ठवणा, पइट्ठा, कोट्ठे, से तं धारणा।

सूत्र-35. उग्गहे इक्कसमइए, अंतोमुहुत्तिया ईहा, अंतोमुहुत्तिए अवाए, धारणा संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं।

सूत्र-36. एवं अट्ठावीसइ-विहस्स आभिणिबोहिय-णाणस्स वंजणुग्गहस्स परूवणं करिस्सामि पडिबोहग-दिट्ठंतेण मल्लग-दिट्ठंतेण य। से किं तं पडिबोहग-दिट्ठंतेणं? पडिबोहग-दिट्ठंतेणं से जहाणामए केइ पुरिसे कंचि पुरिसं सुत्तं पडिबोहिज्जा-अमुगा अमुगत्ति। तत्थ चोयगे पण्णवयं एवं वयासी-किं एगसमय-पविट्ठा पुग्गला गहण-मागच्छंति? दुसमय-पविट्ठा पुग्गला गहण-मागच्छंति? जाव दससमय- पविट्ठा पुग्गला गहण-मागच्छंति?

संखिज्ज-समय-पविट्ठा पुग्गला गहण- मागच्छंति? असंखिज्ज-समय-पविट्ठा पुग्गला गहण-मागच्छंति? एवं वयंतं चोयगं पण्णवए एवं वयासी-णो एगसमय-पविट्ठा पुग्गला गहण-मागच्छंति, णो दुसमयपविट्ठा पुग्गला गहण-मागच्छंति, जाव णो दस-समय-पविट्ठा पुग्गला गहण-मागच्छंति, णो संखिज्जसमय-पविट्ठा पुग्गला गहण-मागच्छंति, असंखिज्ज-समय-पविट्ठा पुग्गला गहण-मागच्छंति, से तं पडिबोहग-दिट्ठंतेणं।

से किं तं मल्लग-दिट्ठंतेणं? मल्लगदिट्ठंतेणं से जहाणामए केइ पुरिसे आवाग-सीसाओ मल्लगं गहाय तत्थेगं उदगबिंदू पक्खेविज्जा, से णट्ठे, अण्णेऽवि पक्खित्ते सेऽवि णट्ठे एवं पक्खि-प्पमाणेसु पक्खि-प्पमाणेसु होही से उदगबिंदू जे णं तं मल्लगं रावेहिइत्ति, होही से उदगबिंदू जे णं तंसि मल्लगंसि ठाहिति, होही से उदगबिंदू जे णं तं मल्लगं भरिहिति, होही से उदगबिंदू जे णं तं मल्लगं पवाहेहिति, एवामेव पक्खि-प्पमाणेहिं पक्खि-प्पमाणेहिं अणंतेहिं पुग्गलेहिं जाहे तं वंजणं पूरियं होइ, ताहे हुं त्ति करेइ, णो चेव णं जाणइ के वेस सद्दाइ? तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सद्दाइ, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ। तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं, असंखिज्जं वा कालं।

से जहाणामए केइ पुरिसे अव्वत्तं सद्दं सुणिज्जा, तेणं सद्दो त्ति उग्गहिए, णो चेव णं जाणइ के वेस सद्दाइ ? तओ ईहं पविसइ,

तओ जाणइ-अमुगे एस सद्दे, तओ णं अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं।

से जहाणामए केइ पुरिसे अव्वत्तं रूवं पासिज्जा, तेणं रूवे त्ति उग्गहिए, णो चेव णं जाणइ-के वेस रूव त्ति? तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ-अमुगे एस रूवेत्ति, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं।

से जहाणामए केइ पुरिसे अव्वत्तं गंधं अग्घाइज्जा, तेणं गंधे त्ति उग्गहिए, णो चेव णं जाणइ-के वेस गंधे त्ति? तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ-अमुगे एस गंधे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं।

से जहाणामए केइ पुरिसे अव्वत्तं रसं आसाइज्जा, तेणं रसो त्ति उग्गहिए, णो चेव णं जाणइ-के वेस रसे त्ति? तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ-अमुगे एस रसे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं, असंखिज्जं वा कालं।

से जहाणामए केइ पुरिसे अव्वत्तं फासं पडिसंवेइज्जा तेणं फासे त्ति उग्गहिए, णो चेव णं जाणइ-के वेस फासओ त्ति? तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ-अमुगे एस फासे। तओ अवायं पविसइ,

तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं।

से जहाणामए केइ पुरिसे अव्वत्तं सुमिणं पासिज्जा, तेणं सुमिणे त्ति उग्गहिए, णो चेव णं जाणइ-के वेस सुमिणे त्ति? तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ-अमुगे एस सुमिणे, तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं। से तं मल्लगदिट्ठंतेणं।

सूत्र-37. तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ णं आभिणिबोहिय-णाणी आएसेणं सव्वाइं दव्वाइं जाणइ, ण पासइ। खेत्तओ णं आभिणिबोहिय-णाणी आएसेणं सव्वं खेत्तं जाणइ, ण पासइ। कालओ णं आभिणिबोहिय-णाणी आएसेणं सव्वं कालं जाणइ, ण पासइ। भावओ णं आभिणिबोहिय-णाणी आएसेणं सव्वे भावे जाणइ, ण पासइ।

उग्गह ईहाऽवाओ य, धारणा एव हुंति चत्तारि।
आभिणिबोहिय-णाणस्स, भेयवत्थू समासेणं।।82।।

अत्थाणं उग्गहणम्मि, उग्गहो तह वियालणे ईहा।
ववसायम्मि अवाओ, धरणं पुण धारणं बिंति।।83।।

उग्गहं इक्कं समयं, ईहावाया मुहुत्तमद्धं तु।
कालमसंखं संखं च, धारणा होइ णायव्वा।।84।।

पुट्ठं सुणेइ सद्दं, रूवं पुण पासइ अपुट्ठं तु।
गंधं रसं च फासं च, बद्धपुट्ठं वियागरे।।85।।

भासा-समसेढीओ, सद्दं जं सुणइ मीसियं सुणइ।
वीसेढी पुण सद्दं, सुणेइ णियमा पराघाए।।86।।

ईहा-अपोह-वीमंसा, मग्गणा य गवेसणा।
सण्णा सई मई पण्णा, सव्वं आभिणिबोहियं।।87।।

से तं आभिणिबोहिय-णाण-परोक्खं।

सूत्र-38. से किं तं सुयणाण-परोक्खं? सुय णाण-परोक्खं चोद्दस-विहं पण्णत्तं, तं जहा-अक्खरसुयं[1], अणक्खरसुयं[2], सण्णिसुयं[3], असण्णिसुयं[4], सम्मसुयं[5], मिच्छसुयं[6], साइयं[7], अणाइयं[8], सपज्जवसियं[9], अपज्जवसियं[10], गमियं[11],अगमियं[12], अंगपविट्ठं[13], अणंगपविट्ठं[14]।

सूत्र-39. से किं तं अक्खरसुयं? अक्खरसुयं तिविहं पण्णत्तं, तं जहा-सण्णक्खरं, वंजणक्खरं, लद्धिअक्खरं। से किं तं सण्णक्खरं? सण्णक्खरं अक्खरस्स संठाणागिई, से तं सण्णक्खरं। से किं तं वंजणक्खरं? वंजणक्खरं अक्खरस्स वंजणाभिलावो, से तं वंजणक्खरं। से किं तं लद्धिअक्खरं? लद्धिअक्खरं अक्खर-लद्धियस्स लद्धि-अक्खरं समुप्पज्जइ, तं जहा सोइंदिय-लद्धिअक्खरं, चक्खिंदिय-लद्धिअक्खरं, घाणिंदिय-लद्धिअक्खरं, रसणिंदिय-लद्धिअक्खरं, फासिंदिय- लद्धिअक्खरं, णोइंदिय-लद्धिअक्खरं, से तं लद्धिअक्खरं। से तं अक्खरसुयं।

से किं तं अणक्खरसुयं? अणक्खरसुयं अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा-

ऊससियं णीससियं, णिच्छूढं खासियं च छीयं च।
णिस्सिंघिय-मणुसारं, अणक्खरं छेलियाईयं।।88।।

से तं अणक्खरसुयं।

सूत्र-40. से किं तं सण्णिसुयं? सण्णिसुयं तिविहं पण्णत्तं, तं जहा-कालिओवएसेणं, हेऊवएसेणं, दिट्ठिवाओवएसेणं। से किं तं कालिओवएसेणं? कालिओवएसेणं-जस्स णं अत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा, गवेसणा, चिंता, वीमंसा, से णं सण्णीति लब्भइ। जस्स णं णत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा गवेसणा, चिंता, वीमंसा, से णं असण्णीति लब्भइ। से तं कालिओवएसेणं। से किं तं हेऊवएसेणं? हेऊवएसेणं जस्स णं अत्थि अभिसंधारण- पुव्विया करणसत्ती से णं सण्णीति लब्भइ। जस्स णं णत्थि अभिसंधारण-पुव्विया करणसत्ती से णं असण्णीति लब्भइ। से तं हेऊवएसेणं। से किं तं दिट्ठिवाओवएसेणं? दिट्ठिवाओवएसेणं सण्णि-सुयस्स खओवसमेणं सण्णी लब्भइ, असण्णि-सुयस्स खओवसमेणं असण्णी लब्भइ, से तं दिट्ठिवाओवएसेणं। से तं सण्णिसुयं। से तं असण्णिसुयं।

सूत्र-41. से किं तं सम्मसुयं ? सम्मसुयं जं इमं अरहंतेहिं भगवंतेहिं-उप्पण्ण-णाण-दंसण-धरेहिं तेलुक्क- णिरिक्खिय महिअ-पूइएहिं तीय-पडुप्पण्ण-मणागय- जाणएहिं सव्वण्णूहिं सव्वदरिसीहिं पणीयं दुवालसंगं गणिपिडगं, तं जहा- आयारो, सुयगडो, ठाणं, समवाओ, विवाह-पण्णत्ती, णायाधम्म-कहाओ[6], उवासग-दसाओ, अंतगड-दसाओ अणुत्तरोव-वाइय-दसाओ,

पण्हा-वागरणाइं, विवागसुयं, दिट्ठिवाओ, इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं चोद्दस-पुव्विस्स सम्मसुयं, अभिण्ण-दस-पुव्विस्स सम्मसुयं, तेणं परं भिण्णेसु भयणा। से तं सम्मसुयं।

सूत्र-42. से किं तं मिच्छासुयं? मिच्छासुयं जं इमं अण्णाणिएहिं मिच्छा-दिट्ठिएहिं सच्छंद-बुद्धि-मइ-विगप्पियं, तं जहा-भारहं, रामायणं, भीमासुरुक्खं, कोडिल्लयं, सगड- भद्दियाओ, खोड (घोडग) मुहं, कप्पासियं, णागसुहुमं, कणगसत्तरी, वइसेसियं, बुद्धवयणं, तेरासियं, काविलियं, लोगाययं, सट्ठितंतं, माढरं, पुराणं, वागरणं, भागवयं, पायंजली, पुस्सदेवयं, लेहं, गणियं, सउणरुयं, णाडयाइं, अहवा बावत्तरि-कलाओ, चत्तारि य वेया संगोवंगा। एयाइं मिच्छदिट्ठिस्स मिच्छत्त-परिग्गहियाइं मिच्छासुयं। एयाइं चेव सम्मदिट्ठिस्स सम्मत्त-परिग्गहियाइं सम्मसुयं। अहवा मिच्छदिट्ठिस्स-वि एयाइं चेव सम्मसुयं, कम्हा? सम्मत्त- हेउत्तणओ, जम्हा ते मिच्छदिट्ठिया तेहिं चेव समएहिं चोइया समाणा केइ सपक्ख-दिट्ठिओ चयंति। से तं मिच्छासुयं।

सूत्र-43. से किं तं साइयं सपज्जवसियं? अणाइयं अपज्जवसियं च? इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं वुच्छित्ति- णयट्ठयाए साइयं सपज्जवसियं, अवुच्छित्ति- णयट्ठयाए अणाइयं अपज्जवसियं। तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ।

तत्थ दव्वओ णं सम्मसुयं एगं पुरिसं पडुच्च साइयं सपज्जवसियं, बहवे पुरिसे य पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं, खेत्तओ

णं पंच भरहाइं पंचेरवयाइं पडुच्च साइयं सपज्जवसियं, पंच महाविदेहाइं पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं। कालओ णं उस्सप्पिणिं ओसप्पिणिं च पडुच्च साइयं सपज्जवसियं, णो उस्सप्पिणिं णोओसप्पिणिं च पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं। भावओ णं जे जया जिण-पण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, ते तया भावे पडुच्च साइयं सपज्जवसियं खाओवसमियं पुण भावं पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं, अहवा भव-सिद्धियस्स सुयं साइयं सपज्जवसियं च, अभवसिद्धियस्स सुयं अणाइयं अपज्जवसियं च। सव्वागास-पएसग्गं सव्वागास- पएसेहिं अणंत-गुणियं पज्जवक्खरं णिप्फज्जइ, सव्वजीवाणं पि य णं अक्खरस्स अणंतभागो णिच्चुग्घाडिओ जइ पुण सोऽवि आवरिज्जा तेणं जीवो अजीवत्तं पाविज्जा, सुट्ठुवि मेहसमुदए, होइ पभा चंदसूराणं। से तं साइयं सपज्जवसियं। से तं अणाइयं अपज्जवसियं।

सूत्र-44. से किं तं गमियं? गमियं दिट्ठिवाओ। से किं तं अगमियं? अगमियं कालियं सुयं। से तं गमियं। से तं अगमियं। अहवा तं समासओ दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-अंगपविट्ठं, अंगबाहिरं च। से किं तं अंगबाहिरं? अंगबाहिरं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-आवस्सयं च, आवस्सय-वइरित्तं च। से किं तं आवस्सयं? आवस्सयं छव्विहं पण्णत्तं, तं जहा-सामाइयं, चउवीसत्थओ, वंदणयं, पडिक्कमणं, काउस्सग्गो, पच्चक्खाणं, से तं आवस्सयं।

से किं तं आवस्सय-वइरित्तं? आवस्सय-वइरित्तं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-कालियं च, उक्कालियं च। से किं तं उक्कालियं? उक्कालियं अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा- दसवेयालियं, कप्पियाकप्पियं, चुल्लकप्पसुयं, महाकप्पसुयं, उववाइयं, रायसेणियं, जीवाभिगमो, पण्णवणा, महापण्णवणा, पमायप्पमायं, णंदी, अणुओगदाराइं, देविंदत्थओ, तंदुलवेयालियं, चंदाविज्झयं, सूरपण्णत्त, पोरिसिमंडलं, मंडलपवेसो, विज्जाचरण-विणिच्छओ, गणिविज्जा, झाणविभत्त, मरणविभत्ती, आयविसोही, वीयरागसुयं, संलेहणासुयं, विहारकप्पो, चरणविही, आउर-पच्चक्खाणं, महापच्चक्खाणं, एवमाइ, से तं उक्कालियं।

से किं तं कालियं? कालियं अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा-उत्तरज्झयणाइं, दसाओ, कप्पो, ववहारो, णिसीहं, महाणिसीहं, इसिभासियाइं, जंबूदीवपण्णत्ती, दीवसागर-पण्णत्ती, चंदपण्णत्ती, खुड्डिया-विमाणपविभत्ती, महल्लिया-विमाणपविभत्ती, अंगचूलिया, वग्गचूलिया, विवाहचूलिया, अरुणोववाए, वरुणोववाए, गरुलोववाए, धरणोववाए, वेसमणोववाए, वेलंधरोववाए, देविंदोववाए, उट्ठाणसुए, समुट्ठाणसुए, णागपरियावणियाओ, णिरयावलियाओ-, कप्पियाओ, कप्पवडंसियाओ, पुप्फियाओ, पुप्फचूलियाओ, वण्हीदसाओ आसीविस-भावणाणं, दिट्ठिविस-भावणाणं, सुमिण-भावणाणं महासुमिण-भावणाणं, तेयग्गि-णिसग्गाणं, एवमाइयाइं चउरासीइं पइण्णग-सहस्साइं भगवओ

अरहओ उसह-सामिस्स आइ-तित्थयरस्स। तहा संखिज्जाइं पइण्णग-सहस्साइं मज्झिमगाणं जिणवराणं, चोद्दस-पइण्णग-सहस्साइं भगवओ वद्धमाण-सामिस्स, अहवा जस्स जत्तिया सीसा उप्पत्तियाए, वेणइयाए कम्मयाए, पारिणामियाए, चउव्विहाए बुद्धीए उववेया तस्स तत्तियाइं पइण्णग-सहस्साइं, पत्तेयबुद्धा वि तत्तिया चेव। से तं कालियं। से तं आवस्सय-वइरित्तं। से तं अणंगपविट्ठं।

सूत्र-45. से किं तं अंगपविट्ठं? अंगपविट्ठं दुवालस-विहं पण्णत्तं, तं जहा-आयारो, सूयगडो, ठाणं, समवाओ, विवाहपण्णत्ती, णायाधम्मकहाओ, उवासग-दसाओ, अंतगड-दसाओ, अणुत्तरोववाइय-दसाओ, पण्हावागरणाइं, विवागसुयं, दिट्ठिवाओ।

सूत्र-46. से किं तं आयारे? आयारे णं समणाणं णिग्गंथाणं आयार-गोयर-विणय-वेणइय-सिक्खा-भासा- अभासा-चरण-करण-जाया-माया -वित्तीओ आघविज्जंति ।से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा-णाणायारे, दंसणायारे, चरित्तायारे, तवायारे, वीरियायारे। आयारे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए पढमे अंगे, दो सुयक्खंधा, पणवीसं अज्झयणा, पंचासीइ उद्देसणकाला, पंचासीइ समुद्देसणकाला, अट्ठारस पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता

तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ पण्णविज्जइ, परूविज्जइ, दंसिज्जइ, णिदंसिज्जइ उवदंसिज्जइ। से तं आयारे(1)।

सूत्र-47. से किं तं सूयगडे? सूयगडे णं लोए सूइज्जइ, अलोए सूइज्जइ, लोयालोए सूइज्जइ, जीवा सूइज्जंति, अजीवा सूइज्जंति, जीवाजीवा सूइज्जंति, ससमए सूइज्जइ, परसमए सूइज्जइ, ससमय-परसमए सूइज्जइ, सूयगडे णं असीयस्स किरियावाइ-सयस्स, चउरासीइए अकिरियावाईणं, सत्तट्ठीए अण्णाणिय-वाईणं बत्तीसाए वेणइय-वाईणं, तिण्हं तेसट्ठाणं पासंडिय-सयाणं वूहं किच्चा ससमए ठाविज्जइ। सूयगडे णं परित्ता वायणा, संखिज्जा, अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए बिइए अंगे, दो सुयक्खंधा, तेवीसं अज्झयणा, तित्तीसं उद्देसणकाला, तित्तीसं समुद्देसणकाला, छत्तीसं पय-सहस्साइं पयग्गेणं, संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जइ, पण्णविज्जइ, परूविज्जइ,

दंसिज्जइ, णिदंसिज्जइ उवदंसिज्जइ। से तं सूयगडे।(2)

सूत्र-48. से किं तं ठाणे? ठाणे णं जीवा ठाविज्जंति, अजीवा ठाविज्जंति, जीवाजीवा ठाविज्जंति, ससमए ठाविज्जइ, परसमए ठाविज्जइ, ससमय-परसमए ठाविज्जइ, लोए ठाविज्जइ, अलोए ठाविज्जइ, लोयालोए ठाविज्जइ। ठाणे णं टंका, कूडा, सेला, सिहरिणो, पब्भारा, कुंडाइं, गुहाओ, आगरा, दहा, णईओ, आघविज्जंति। ठाणे णं एगाइयाए एगुत्तरियाए वुड्ढीए दसट्ठाणगविवड्ढि-याणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ। ठाणे णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए तइए अंगे, एगे सुयक्खंधे दस अज्झयणा, एगवीसं उद्देसणकाला, एक्कवीसं समुद्देसणकाला, बावत्तरि-पय-सहस्सा पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया एवं चरणकरण- परूवणा आघविज्जइ। से तं ठाणे। (3)

सूत्र-49. से किं तं समवाए? समवाए णं जीवा समासिज्जंति, अजीवा समासिज्जंति जीवाजीवा समासिज्जंति, ससमए समासिज्जइ, परसमए समासिज्जइ, ससमय-परसमए समासिज्जइ, लोए समासिज्जइ अलोए समासिज्जइ लोयालोए

समासिज्जइ। समवाए णं एगाइयाणं एगुत्तरियाणं ठाण सय- विवड्डि याणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ, दुवालस-विहस्स य गणि-पिडगस्स पल्लवग्गे समासिज्जइ। समवायस्स णं परित्ता वायणा संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए चउत्थे अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे अज्झयणे, एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले, एगे चोयाले - सय-सहस्से पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड- णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ। से तं समवाए। (4)

सूत्र-50. से किं तं विवाहे? विवाहे णं जीवा विआहिज्जंति, अजीवा विआहिज्जंति, जीवाजीवा विआहिज्जंति, ससमए विआहिज्जइ, परसमए विआहिज्जइ, ससमय-परसमए विआहिज्जइ, लोए विआहिज्जइ, अलोए विआहिज्जइ, लोयालोए विआहिज्जइ। विवाहस्स णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ णिज्जुत्तीओ संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए पंचमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे साइरेगे अज्झयणसए दस उद्देसग-

सहस्साइं, दस-समुद्देसग- सहस्साइं, छत्तीसं वागरण-सहस्साइं, दो लक्खा अट्ठासीइं पय-सहस्साइं पयग्गेणं, संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड- णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया। एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ। से तं विवाहे। (5)

सूत्र-51. से किं तं णायाधम्म-कहाओ? णायाधम्म कहासु णं णायाणं णगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइय-परलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परिआया, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ य आघविज्जंति। दस धम्म-कहाणं वग्गा, तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच-पंच-अक्खाइया-सयाइं, एगमेगाए अक्खाइयाए पंच-पंच-उवक्खाइया-सयाइं, एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच-पंच-अक्खाइय-उवक्खाइया-सयाइं, एवामेव सपुव्वावरेणं अद्धुट्ठाओ कहाणग-कोडीओ हवंति त्ति समक्खायं। णायाधम्म-कहाणं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ णिज्जुत्तीओ संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ

पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए छट्ठे अंगे, दो सुयक्खंधा, एगूणवीसं अज्झयणा, एगूणवीसं उद्देसणकाला, एगूणवीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जा पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया एवं चरणकरण-परूवणा आघविज्जइ। से तं णायाधम्मकहाओ।(6)

सूत्र-52. से किं तं उवासग-दसाओ? उवासगदसासु णं समणोवासयाणं णगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परियागा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, सील - व्वय-गुण- वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववास-पडिवज्जणया, पडिमाओ, उवसग्गा, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, देवलोग-गमणाइं सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ य आघविज्जंति। उवासगदसाणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए सत्तमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा,

अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरण-परूवणा आघविज्जइ। से तं उवासगदसाओ।(7)

सूत्र-53. से किं तं अंतगड-दसाओ? अंतगड-दसासु णं अंतगडाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं, वणसंडाइं समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइय-परलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परियागा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओव-गमणाइं, अंतकिरियाओ, आघविज्जंति। अंतगडदसासु णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए अट्ठमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, अट्ठ-वग्गा, अट्ठ-उद्देसणकाला, अट्ठ समुद्देसण-काला, संखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरण- परूवणा आघविज्जइ। से तं अंतगड-दसाओ। (8)

सूत्र-54. से किं तं अणुत्तरोववाइय-दसाओ?

अणुत्तरोववाइय-दसासु णं अणुत्तरोववाइयाणं णगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइय-परलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परिआगा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं पडिमाओ, उवसग्गा, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं, अणुत्तरोववाइयत्ते उववत्ती, सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ आघविज्जंति। अणुत्तरोववाइय-दसासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए णवमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, तिण्णि वग्गा, तिण्णि उद्देसणकाला, तिण्णि समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ। से तं अणुत्तरोववाइय-दसाओ।(9)

सूत्र-55. से किं तं पण्हावागरणाइं? पण्हावागरणेसु णं अट्ठुत्तरं पसिणसयं, अट्ठुत्तरं अपसिणसयं, अट्ठुत्तरं पसिणा-पसिणसयं, तं जहा-अंगुट्ठ-पसिणाइं, बाहु-पसिणाइं, अद्दाग-पसिणाइं, अण्णे-वि विचित्ता विज्जाइसया, णागसुवण्णेहिं सद्धिं

दिव्वा-संवाया आघविज्जंति, पण्हावागरणाणं परित्ता-वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए दसमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, पणयालीसं अज्झयणा, पणयालीसं उद्देसणकाला, पणयालीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध-णिकाइया, जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंतिं, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरण-परूवणा आघविज्जइ। से तं पण्हावागरणाइं।(10)

सूत्र-56. से किं तं विवागसुयं? विवागसुए णं सुकड-दुक्कडाणं कम्माणं फलविवागे आघविज्जइ। तत्थ णं दस दुहविवागा, दस सुहविवागा।

से किं तं दुहविवागा? दुहविवागेसु णं दुहविवागाणं णगराइं, उज्जाणाइं, वणसंडाइं, चेइयाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओं, इहलोइय-परलोइया इड्ढि विसेसा, णिरय-गमणाइं, संसारभव-पवंचा, दुह-परंपराओ, दुकुलपच्चायाईओ, दुल्लह-बोहियत्तं, आघविज्जई । से तं दुहविवागा। से किं तं सुहविवागा? सुहविवागेसु णं सुहविवागाणं णगराइं, उज्जाणाइं, वणसंडाइं, चेइयाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइय-परलोइया इड्ढि

विसेसा, भोगपरिच्चागा, पव्वज्जाओ, परियागा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, देवलोग-गमणाइं, सुह-परंपराओ, सुकुलपच्चाईओ, पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ, आघविज्जई, विवागसुयस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए इक्कारसमे अंगे, दो सुयक्खंधा, वीसं अज्झयणा, वीसं उद्देसणकाला, वीसं समुद्देसणकाला, संखिज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरण-परूवणा आघविज्जइ। से तं विवागसुयं।(11)

सूत्र-57. से किं तं दिट्ठिवाए? दिट्ठिवाए णं सव्वभाव-परूवणा आघविज्जइ, से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा-परिकम्मे, सुत्ताइं, पुव्वगए, अणुओगे, चूलिया। से किं तं परिकम्मे? परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा-सिद्धसेणिया- परिकम्मे, मणुस्स-सेणिया- परिकम्मे, पुट्ठसेणिया-परिकम्मे, ओगाढ-सेणिया-परिकम्मे, उवसंपज्जण-सेणिया-परिकम्मे, विप्पजहण-सेणिया-परिकम्मे, चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे। से किं तं सिद्धसेणिया-परिकम्मे? सिद्धसेणिया-परिकम्मे चउद्दस विहे पण्णत्ते, तं जहा-माउगापयाइं, एगट्ठियपयाइं, अट्ठपयाइं, पाढोआगासपयाइं,

केउभूयं, रासिबद्धं, एगगुणं, दुगुणं, तिगुणं, केउभूयं, पडिग्गहो, संसारपडिग्गहो, णंदावत्तं, सिद्धावत्तं। से तं सिद्धसेणिया-परिकम्मे।(1)

से किं तं मणुस्स-सेणिया-परिकम्मे? मणुस्स- सेणिया-परिकम्मे चउद्दसविहे पण्णत्ते, तं जहा-माउयापयाइं, एगट्ठियपयाइं, अट्ठपयाइं, पाढोआगासपयाइं, केउभूयं, रासिबद्धं, एगगुणं, दुगुणं, तिगुणं, केउभूयं, पडिग्गहो, संसारपडिग्गहो, णंदावत्तं, मणुस्सावत्तं। से तं मणुस्स- सेणिया-परिकम्मे।(2)

से किं तं पुट्ठसेणिया-परिकम्मे? पुट्ठसेणिया-परिकम्मे इक्कारस-विहे पण्णत्ते, तं जहा-पाढोआगासपयाइं, केउभूयं, रासिबद्धं, एगगुणं, दुगुणं, तिगुणं, केउभूयं, पडिग्गहो, संसारपडिग्गहो, णंदावत्तं, पुट्ठावत्तं। से तं पुट्ठसेणिया- परिकम्मे।(3)

से किं तं ओगाढ-सेणिया-परिकम्मे? ओगाढ-सेणिया-परिकम्मे इक्कारस-विहे पण्णत्ते, तं जहा-पाढोआगासपयाइं, केउभूयं, रासिबद्धं, एगगुणं, दुगुणं, तिगुणं, केउभूयं, पडिग्गहो, संसारपडिग्गहो, णंदावत्तं, ओगाढावत्तं। से तं ओगाढसेणिया-परिकम्मे।(4)

से किं तं उवसंपज्जण-सेणिया-परिकम्मे? उवसंपज्जण-सेणिया-परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, तं जहा-पाढोआगासपयाइं, केउभूयं, रासिबद्धं, एगगुणं, दुगुणं, तिगुणं, केउभूयं पडिग्गहो, संसारपडिग्गहो, णंदावत्तं, उवसंपज्जणावत्तं। से तं उवसंपज्जण-सेणिया-परिकम्मे।(5)

से किं तं विप्पजहण-सेणिया-परिकम्मे? विप्पजहण-सेणिया-परिकम्मे इक्कारस-विहे पण्णत्ते, तं जहा-पाढोआगासपयाइं, केउभूयं, रासिबद्धं, एगगुणं, दुगुणं, तिगुणं, केउभूयं, पडिग्गहो, संसारपडिग्गहो, णंदावत्तं, विप्पजहणावत्त। से तं विप्पजहणसेणिया-परिकम्मे।(6)

से किं तं चुयाचुय-सेणिया-परिकम्मे? चुयाचुय- सेणिया परिकम्मे इक्कारस-विहे पण्णत्ते, तं जहा-पाढो- आगासपयाइं, केउभूयं, रासिबद्धं, एगगुणं, दुगुणं, तिगुणं, केउभूयं पडिग्गहो, संसारपडिग्गहो, णंदावत्तं, चुयाचुयवत्तं। से तं चुयाचुय-सेणिया-परिकम्मे।(7)

छ चउक्क-णइयाइं, सत्त तेरासियाइं। से तं परिकम्मे।(1)

से किं तं सुत्ताइं? सुत्ताइं बावीसं पण्णत्ताइं। त्तं जहा-उज्जुसुयं, परिणयापरिणयं, बहुभंगियं, विजयचरियं, अणंतरं, परंपरं, आसाणं, संजूहं, संभिण्णं, आहव्वायं, सोवत्थियावत्तं, णंदावत्तं, बहुलं, पुट्ठापुट्ठं, वियावत्तं, एवंभूयं, दुयावत्तं, वत्तमाणपयं, समभिरूढं, सव्वओभद्दं, पस्सासं, दुप्पडिग्गहं इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं छिण्णच्छेयणइयाणि ससमय-सुत्त-परिवाडीए, इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं अच्छिण्णच्छेय -णइयाणि आजीविय-सुत्त-परिवाडीए, इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं तिग-णइयाणि तेरासिय-सुत्त-परिवाडीए, इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं चउक्क-णइयाणि ससमय-सुत्त-परिवाडीए, एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठासीई सुत्ताइं भवंतित्ति मक्खायं। से तं सुत्ताइं।(2)

से किं तं पुव्वगए? पुव्वगए चउद्दस-विहे पण्णत्ते, तं जहा-उप्पायपुव्वं, अग्गाणीयं, वीरियं, अत्थिणत्थिप्पवायं, णाणप्पवायं, सच्चप्पवायं, आयप्पवायं, कम्मप्पवायं, पच्चक्खाणप्पवायं (पच्चक्खाणं), विज्जाणुप्पवायं, अवंझं, पाणाऊ, किरियाविसालं, लोकबिंदुसारं। उप्पाय-पुव्वस्स णं दसवत्थू, चत्तारि चूलियावत्थू पण्णत्ता। अग्गाणीय-पुव्वस्स णं चोद्दस वत्थू, दुवालस चूलिया-वत्थू पण्णत्ता। वीरिय-पुव्वस्स णं अट्ठवत्थू अट्ठ-चूलियावत्थू पण्णत्ता। अत्थिणत्थि- प्पवाय-पुव्वस्स णं अट्ठारस्स वत्थू, दस चूलियावत्थू पण्णत्ता। णाणप्पवाय-पुव्वस्स णं बारस वत्थू पण्णत्ता। सच्चप्पवाय- पुव्वस्स णं दोण्णि वत्थू पण्णत्ता। आयप्पवाय-पुव्वस्स णं सोलस वत्थू पण्णत्ता। कम्मप्पवाय-पुव्वस्स णं तीसं वत्थू पण्णत्ता। पच्चक्खाण-पुव्वस्स णं वीसं वत्थू पण्णत्ता। विज्जाणुप्पवाय-पुव्वस्स णं पण्णरस वत्थू पण्णत्ता। अवंझ-पुव्वस्स णं बारस वत्थू पण्णत्ता। पाणाउ-पुव्वस्स णं तेरस वत्थू पण्णत्ता। किरिया-विसालं-पुव्वस्स णं तीसं वत्थू पण्णत्ता। लोकबिंदुसार-पुव्वस्स णं पणवीसं वत्थू पण्णत्ता।

दस, चोद्दस, अट्ठ, अट्ठारसेव, बारस, दुवे य, वत्थूणि।
सोलस, तीसा, वीसा, पण्णरस, अणुप्पवायम्मि।।89।।

बारस इक्कारसमे, बारसमे तेरसेव वत्थूणि।
तीसा पुण तेरसमे, चोद्दसमे पण्णवीसाओ।।90।।

चत्तारि, दुवालस, अट्ठ चेव दस चेव चुल्ल-वत्थूणि।
आइल्लाण चउण्हं, सेसाणं चूलिया णत्थि।।91।।

से तं पुव्वगए। (3)

से किं तं अणुओगे? अणुओगे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-मूल-पढमाणुओगे,गंडियाणुओगे य। से किं त्तं मूल-पढमाणुओगे? मूल-पढमाणुओगे णं अरहंताणं भगवंताणं पुव्वभवा, देवलोगमणाइं, आउं, चवणाइं, जम्मणाणि, अभिसेया, रायवर- सिरीओ, पव्वज्जाओ, तवा य उग्गा, केवलणाणुप्पयाओ, तित्थ- पवत्तणाणि य, सीसा, गणा, गणहरा, अज्जा, पवत्तिणीओ, संघस्स चउव्विहस्स जं च परिमाणं, जिण-मणपज्जव-ओहिणाणी, सम्मत्तसुय-णाणिणो य वाई, अणुत्तरगई य, उत्तर- वेउव्विणो य मुणिणो, जत्तिया सिद्धा, सिद्धिपहो जह देसिओ, जच्चिरं च कालं, पाओवगया जे जहिं जत्तियाइं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता अंतगडे, मुणिवरुत्तमे, तिमिरओघ-विप्पमुक्के मुक्ख-सुह-मणुत्तरं च पत्ते, एवमण्णे य एवमाइ-भावा मूलपढमाणुओगे कहिया, से तं मूल-पढमाणुओगे।

से किं तं गंडियाणुओगे? गंडियाणुओगे-कुलगर-गंडियाओ, तित्थयर-गंडियाओ, चक्कवट्टि-गंडियाओ, दसार-गंडियाओ, बलदेव-गंडियाओ, वासुदेव-गंडियाओ, गणधर-गंडियाओ, भद्दबाहु-गंडियाओ, तवोकम्म-गंडियाओ, हरिवंस-गंडियाओ, उस्सप्पिणी-गंडियाओ, ओसप्पिणी- गंडियाओ चित्तंतर-गंडियाओ अमर-णर-तिरिय-णिरय- गइ-गमण-विविह-परियट्टणाणुओगेसु एवमाइयाओ गंडियाओ आघविज्जंति,

पण्णविज्जंति। से तं गंडियाणुओगे, से तं अणुओगे।(4)

से किं तं चूलियाओ? चूलियाओ आइल्लाणं चउण्हं पुव्वाणं चूलिया, सेसाइं पुव्वाइं अचूलियाइं। से तं चूलियाओ। (5)

दिट्ठिवायस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ। से णं अंगट्ठयाए बारसमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, चोद्दस पुव्वाइं, संखेज्जा वत्थू, संखेज्जा चूलवत्थू, संखेज्जा पाहुडा, संखेज्जापाहुडपाहुडा, संखेज्जाओ पाहुडियाओ, संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिण-पण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरण-परूवणा आघविज्जइ, से तं दिट्ठिवाए।।6।।

सूत्र-58. इच्चेइयंमि दुवालसंगे गणिपिडगे अणंता भावा, अणंता अभावा, अणंता हेऊ, अणंता अहेऊ, अणंता कारणा, अणंता अकारणा, अणंता जीवा, अणंता अजीवा, अणंता भवसिद्धिया, अणंता अभवसिद्धिया, अणंता सिद्धा, अणंता असिद्धा पण्णत्ता-

भावमभावा हेऊमहेऊ, कारणमकारणे चेव।
जीवाजीवा भवियमभविया, सिद्धा असिद्धा य।।92।।

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा

आणाए विराहित्ता चाउरंतं संसार-कंतारं अणुपरियट्टिंसु। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतं संसार-कंतारं अणुपरियट्टंति। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतं संसार-कंतारं अणुपरियट्टिस्संति।

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसार-कंतारं वीइवइंसु। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पणकाले परित्ता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसारकंतारं वीइवयंति। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतं संसार-कंतारं वीईवइस्संति।

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं ण कयाइ णासी, ण कयाइ ण भवइ, ण कयाइ ण भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, णिच्चे। से जहाणामए पंचत्थिकाए ण कयाइ णासी, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सइ भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, णिच्चे। एवामेव दुवालसंगे गणिपिडगे ण कयाइ णासी, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सइ। भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, णिच्चे।

से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइं

जाणइ पासइ। खित्तओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्वं खेत्तं जाणइ पासइ। कालओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्वं कालं जाणइ पासइ। भावओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्वे भावे जाणइ पासइ।

सूत्र-59.

अक्खर सण्णी सम्मं, साइयं खलु सपज्जवसियं च।
गमियं अंगपविट्ठं, सत्तवि एए सपडिवक्खा।।93।।

आगम-सत्थग्गहणं, जं बुद्धिगुणेहिं अट्ठहिं दिट्ठं।
बिंति सुय-णाण-लंभं, तं पुव्व-विसारया धीरा।।94।।

सुस्सूसइ पडिपुच्छइ, सुणेइ गिण्हइ य, ईहए याऽवि।
तत्तो अपोहए वा, धारेइ करेइ वा सम्मं।।95।।

मूअं हुंकारं वा, वाढंक्कारं पडिपुच्छ वीमंसा।
तत्तो पसंग-पारायणं च, परिणिट्ठ सत्तमए।।96।।

सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ णिज्जुत्ति-मीसिओ भणिओ।
तइओ य णिरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे।।97।।

से तं अंगपविट्ठं। से तं सुयणाणं। से तं परोक्खणाणं। से तं णंदी।

।। नंदिसुत्तं समत्तं।।

अणुत्तरोववाइयदसाओ

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे अज्ज- सुहम्मस्स समोसरणं, परिसा णिग्गया, जंबू जाव पज्जुवासइ, एवं वयासी- जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगड-दसाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, णवमस्स णं भंते! अंगस्स अणुत्तरोववाइय-दसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते?।।1।।

तए णं से सुहम्मे अणगारे, जंबू अणगारं एवं वयासी- एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं णवमस्स अंगस्स अणुत्तरोव-वाइय-दसाणं तिण्णि वग्गा पण्णत्ता।

जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं णवमस्स अंगस्स अणुत्तरोववाइय-दसाणं तओ वग्गा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स अणुत्तरोववाइय-दसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पण्णत्ता?

एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-
जालि,मयालि,उवयालि, पुरिससेणे य वारिसेणे य।
दीहदंते य, लट्ठदंते य, वेहल्ले, वेहासे, अभए इ य कुमारे।।2।।

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता। पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स अणुत्तरोववाइय-दसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते?

एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे रिद्धित्थिमिय-समिद्धे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, धारिणी देवी, सीहो सुमिणे जाली कुमारो। जहा मेहो अट्ठट्ठओ दाओ, जाव उप्पिंपासाय-वरगए जाव विहरइ। सामी समोसढे, सेणिओ णिग्गओ, जहा मेहो तहा जाली वि णिग्गओ, तहेव णिक्खंतो, जहा मेहो, एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ। गुण-रयणं तवो-कम्मं जहां खंदगस्स एवं जा चेव खंदगस्स वत्तव्वया, सा चेव चिंतणा, आपुच्छणा थेरेहिं सद्धिं विउलं तहेव दुरूहइ। णवरं सोलस वासाइं सामण्ण-परियागं पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिमाइ-सोहम्मीसाण जाव आरणच्चुए कप्पे णव-गेवेज्जय विमाण-पत्थडे उड्ढं दूरं वीईवइत्ता विजय-विमाणे देवत्ताए उववण्णे।।3।।

तए णं ते थेरा भगवंतो जालिं अणगारं कालगयं जाणित्ता, परिणिव्वाण-वत्तियं काउस्सग्गं करेंति, करित्ता पत्त-चीवराइं गिण्हंति तहेव उत्तरंति जाव इमे से आयार- भंडए।।4।।

भंते त्ति ! भगवं गोयमे जाव एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी जालि णामं अणगारे पगइ-भद्दए, से णं जाली अणगारे कालगए कहिं गए ? कहिं उववण्णे? एवं खलु गोयमा! ममं अंतेवासी तहेव जहा खंदयस्स जाव कालगए उड्ढं चंदिम जाव विजयविमाणे देवत्ताए उववण्णे।।5।।

जालिस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा ! बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

से णं भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं कहिं गच्छिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव सव्व-दुक्खाण-मंतं करिस्सइ। एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाणं पढमस्स वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।।6।।

एवं सेसाणं वि णवण्हं भाणियव्वं। णवरं सत्त धारिणिसुया, वेहल्ल-वेहासा चेल्लणाए, अभओ णंदाए, आइल्लाणं पंचण्हं सोलस-वासाइं सामण्ण-परियाओ, तिण्हं बारस-वासाइं, दोण्हं पंच-वासाइं। आइल्लाणं पंचण्हं आणुपुव्वीए उववाओ विजए वेजयंते जयंते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे। दीहदंते सव्वट्ठसिद्धे, उक्कमेणं सेसा। अभओ विजए। सेसं जहा पढमे। अभयस्स णाणत्तं, रायगिहे णयरे, सेणिए राया, णंदा देवी, सेसं तहेव। एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

।। पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा समत्ता।।

दोच्चो-वग्गो

जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोवाइय-दसाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स अणुत्तरोववाइय- दसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते।।1।।

एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाणं दोच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पण्णत्ता। तं जहा-

दीहसेणे महासेणे, लट्ठदंते य गूढदंते य।
सुद्धदंते य हल्ले, दुमे दुमसेणे महादुमसेणे य आहिए।।1।।
सीहे य सीहसेणे य, महासीहसेणे य आहिए।
पुण्णसेणे य बोधव्वे, तेरसमे होइ अज्झयणे।।2।।

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाणं दोच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पण्णत्ता। दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, धारिणी देवी, सीहो सुमिणे, जहा जाली तहा जम्मं, बालत्तणं, कलाओ, णवरं दीहसेणे कुमारे। सच्चेव वत्तव्वया, जहा जालि स्स जाव अंतं काहिइ। एवं तेरस वि, रायगिहे णयरे, सेणिओ पिया, धारिणी माया। तेरसण्हं वि सोलस वासा परियाओ, मासियाए संलेहणाए आणुपुव्वीए उववाओ, विजए दोण्णि, वेजयंते दोण्णि, जयंते दोण्णि, अपराजिए दोण्णि, सेसा महादुमसेणमाइए पंच सव्वट्ठसिद्धे। एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाणं दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, मासियाए संलेहणाए दोसु वि वग्गेसु।।2।।

।।दोच्चो वग्गो समत्तो।।

तच्चो-वग्गो

जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाणं दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स अणुत्तरोववाइय-दसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाणं तच्चस्स वग्गस्स दस अजझयणा पण्णत्ता तं जहा-

धण्णे य सुणक्खत्ते य, इसिदासे य आहिए।
पेल्लए रामपुत्ते य, चंदिमा पिट्ठिमाइ य।।1।।
पेढालपुत्ते अणगारे, णवमे पोट्टिले इ य।
वेहल्ले दसमे वुत्ते, इमे य दस आहिया।।2।।

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाणं तच्चस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं काकंदी णामं णयरी होत्था। रिद्धित्थिमिय-समिद्धा, सहस्संब-वणेउज्जाणे सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे। जियसत्तू राया। तत्थ णं काकंदीए णयरीए भद्दा णामं सत्थवाही परिवसइ, अड्ढा जाव अपरिभूया। तीसे णं भद्दाए सत्थवाहीए पुत्ते धण्णे णामं दारए होत्था, अहीण जाव सुरूवे, पंचधाई-परिग्गहिए, तं जहा-खीरधाईए। जहा महब्बलो जाव बावत्तरिं कलाओ अहीए जाव अलं भोगसमत्थे साहसिए वियालचारी जाए यावि होत्था।।2।।

तए णं सा भद्दा सत्थवाही धण्णं दारयं उम्मुक्क-बालभावं जाव भोगसमत्थं यावि जाणित्ता बत्तीसं पासाय-वडिंसए कारेइ अब्भुग्गय-मूसिए जाव तेसिं मज्झे एगं भवणं अणेग-खंभ-सय-सण्णिविट्ठं। जाव बत्तीसाए इब्भवर-कण्णगाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हावेइ, गिण्हावित्ता बत्तीसाओ दाओ जाव उप्पिं पासाय-वरगए फुट्टंतेहिं जाव विहरइ।।3।।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे, परिसा णिग्गया, जहा कोणिओ तहा जियसत्तू णिग्गओ। तए णं तस्स धण्णस्स तं महया जणसद्दं वा जहा जमाली तहा णिग्गओ, णवरं पायचारेणं जाव जं णवरं अम्मयं भद्दं सत्थवाहिं आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि, जाव जहा जमाली तहा आपुच्छइ, मुच्छिया, वुत्त-पडिवुत्तिया, जहा महब्बलो जाव जाहे णो संचाएइ, जहा थावच्चापुत्तो तहा जियसत्तुं आपुच्छइ, छत्तचामराओ, सयमेव जियसत्तू णिक्खमणं करेइ, जहा थावच्चापुत्तस्स कण्हो, जाव पव्वइए, अणगारे जाए, ईरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी।।4।।

तए णं से धण्णे अणगारे, जं चेव दिवसं मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए तं चेव दिवसं समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-एवं खलु इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे जावज्जीवाए छट्ठं-छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं आयंबिल-परिग्गहिएणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरित्तए। छट्ठस्स वि य णं पारणयंसि कप्पइ मे आयंबिलं पडिग्गाहित्तए, णो

चेव णं अणायंबिलं, तं पि य संसट्ठेणं णो चेव णं असंसट्ठेणं, तं पि य णं उज्झिय-धम्मियं णो चेव णं अणुज्झिय-धम्मियं, तं पि य जं अण्णे बहवे समण-माहण- अतिहि-किवण-वणीमगा णावकंखंति। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह। तए णं से धण्णे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठ-तुट्ठ जावज्जीवाए छट्ठं-छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।।5।।

तए णं से धण्णे अणगारे पढम-छट्ठ-खमण-पारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, जहा गोयमसामी तहेव आपुच्छइ। जाव जेणेव काकंदी णयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता काकंदीए णयरीए उच्चणीय जाव अडमाणे आयंबिलं णो अणायंबिलं जाव णावकंखइ। तए णं से धण्णे अणगारे ताए अब्भुज्जयाए पयययाए पयत्ताए पग्गहियाए एसणाए एसमाणे जइ भत्तं लभइ तो पाणं ण लभइ, अह पाणं लभइ तो भत्तं ण लभइ।

तए णं से धण्णे अणगारे अदीणे अविमणे अकलुसे अविसाई अपरितंतजोगी जयण-घडण-जोग-चरित्ते अहापज्जत्तं समुदाणं पडिगाहेइ पडिगाहित्ता काकंदीओ णयरीओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता जहा गोयमे जाव पडिदंसेइ। तए णं से धण्णे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे अमुच्छिए जाव अणज्झोववण्णे बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं आहारं आहारेइ आहारित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।।6।।

तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ काकंदीओ

णयरीओ सहसंब-वणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ। तए णं से धण्णे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइय-माइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तए णं से धण्णे अणगारे तेणं उरालेणं जहा खंदओ जाव चिट्ठइ।।7।।

धण्णस्स णं अणगारस्स पायाणं अयमेयारूवे तवरूव-लावण्णे होत्था, से जहाणामए सुक्क-छल्लीइ वा, कट्ठ-पाउयाइ वा, जरग्गओवाहणाइ वा, एवामेव धण्णस्स अणगारस्स पाया सुक्का भुक्खा लुक्खा णिम्मंसा अट्ठिचम्मछिरत्ताए पण्णायंति, णो चेव णं मंससोणियत्ताए।

धण्णस्स णं अणगारस्स पायंगुलियाणं अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था से जहाणामए कलसंगलियाइ वा, मुग्गसंगलियाइ वा माससंगलियाइ वा, तरुणिया छिण्णा उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी मिलायमाणी मिलायमाणी चिट्ठइ। एवामेव धण्णस्स अणगारस्स पायंगुलियाओ सुक्काओ जाव णो मंससोणियत्ताए।।8।।

धण्णस्स णं अणगारस्स जंघाणं अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहाणामए काक-जंघाइ वा, कंक-जंघाइ वा, ढेणियालिया-जंघाइ वा, जाव णो सोणियत्ताए।

धण्णस्स णं अणगारस्स जाणूणं अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहाणामए कालिपोरेइ वा, मयूरपोरेइ

वा, ढेणियालिया-पोरेइ वा, एवं जाव णो सोणियत्ताए।

धण्णस्स णं अणगारस्स ऊरुस्स अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था से जहाणामए साम-करिल्लेइ वा, बोरी-करिल्लेइ वा, सल्लइय- करिल्लेइ वा, सामलि- करिल्लेइ, वा, तरुणिए उण्हे जाव चिट्ठइ, एवामेव धण्णस्स अणगारस्स ऊरू जाव सोणियत्ताए।।9।।

धण्णस्स णं अणगारस्स कडिपत्तस्स इमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहाणामए-उट्टपाएइ वा, जरग्ग पाएइ वा, महिसपाएइ वा, जाव णो सोणियत्ताए।

धण्णस्स णं अणगारस्स उदरभायणस्स इमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था से जहाणामए-सुक्कदिएइ वा, भज्जणय-कभल्लेइ वा, कट्ठकोलंबएइ वा, एवामेव उदरं सुक्कं जाव। धण्णस्स णं अणगारस्स पांसुलिय-कडयाणं इमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहाणामए-थासयावलीइ वा, पाणावलीइ वा, मुंडावलीइ वा, एवामेव जाव।

धण्णस्स णं अणगारस्स पिट्ठकरंडयाणं अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था,से जहाणामए-कण्णावल्लीइ वा, गोलावलीइ वा, वट्टयावलीइ वा, एवामेव जाव। धण्णस्स णं अणगारस्स उर-कडयस्स अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहाणामए-चित्तकट्टरेइ वा, वियणपत्तेइ वा, तालियंटपत्तेइ वा, एवामेव जाव।।10।।

धण्णस्स णं अणगारस्स बाहाणं अयमेयारूवे

तवरूवलावण्णे होत्था से जहाणामए-समिसंगलियाइ वा बाहाया-संगलियाइ वा, अगत्थियसंगलियाइ वा, एवामेव जाव।

धण्णस्स णं अणगारस्स हत्थाणं अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहाणामए-सुक्क-छगणियाइ वा, वडपत्तेइ वा, पलासपत्तेइ वा एवामेव जाव।

धण्णस्स णं अणगारस्स हत्थंगुलियाणं अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहाणामए-कलाय-संगलियाइ वा, मुग्ग-संगलियाइ वा मास-संगलियाइ वा, तरुणिया छिण्णा आयवे दिण्णा सुक्का समाणी एवामेव जाव।

धण्णस्स णं अणगारस्स गीवाए अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहाणामए-करग-गीवाइ वा, कुंडिया-गीवाइ वा, (कोत्थ-वणाइ वा) उच्चट्ठवणएइ वा एवामेव जाव। धण्णस्स णं अणगारस्स हणुयाए अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहाणामए-लाउय-फलेइ वा, हकुव-फलेइ वा, अंब-गट्ठियाइ वा एवामेव जाव। धण्णस्स णं अणगारस्स उट्ठाणं अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहाणामए-सुक्कजलोयाइ वा, सिलेस-गुलियाइ वा, अलत्तग- गुलियाइ वा, (अंबाडग - पेसीयाइ वा) एवामेव जाव। धण्णस्स णं अणगारस्स जिब्भाए अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहाणामए-वड-पत्तेइ वा, पलास-पत्तेइ वा (उंबरपत्तेइ वा) सागपत्तेइ वा एवामेव जाव।।11।।

धण्णस्स णं अणगारस्स णासाए अयमेयारुवे

तवरूवलावण्णे होत्था, से जहाणामए-अंबगपेसियाइ वा अंबाडग-पेसियाइ वा, माउलुंग-पेसियाइ वा, तरुणियाइ वा, एवामेव जाव।

धण्णस्स णं अणगारस्स अच्छीणं अयमेयारुवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहाणामए-वीणाछिड्डेइ वा, बद्धीसगछिड्डेइ वा, पाभाइय- तारिगाइ वा, एवामेव जाव।

धण्णस्स णं अणगारस्स कण्णाणं अयमेयारुवे तवरूवलावण्णे होत्था,से जहाणामए-मूला-छल्लियाइ वा, वालुंक-छल्लियाइ वा, कारेल्लय-छल्लियाइ वा, एवामेव जाव।

धण्णस्स णं अणगारस्स सीसस्स अयमेयारुवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहाणामए-तरुणग-लाउएइ वा, तरुणगएलालुयइ वा, सिण्हालएइ वा तरुणए जाव चिट्ठइ एवामेव।

धण्णस्स णं अणगारस्स सीसं सुक्कं-लुक्खं-णिम्मंसं अट्ठिचम्म-छिरत्ताए पण्णायइ णो चेव णं मंससोणियत्ताए। एवं सव्वत्थ णवरं, उयरभायण-कण्ण-जीहा-उट्ठा एएसिं अट्ठी ण भण्णइ, चम्म-छिरत्ताए पण्णायइ त्ति भण्णइ।।12।।

धण्णे णं अणगारे णं सुक्केणं, भुक्खेणं, पायजंघोरुणा विगय-तडि-करालेणं कडि-कडाहेणं, पिट्ठमवस्सिएणं, उदर-भायणेणं, जोइज्जमाणेहिं, पांसुलिय-कडएहिं, अक्खसुत्त- मालाइ वा, गणिज्जमालाइ वा, गणेज्जमाणेहिं पिट्ठिकरंडगसंधीहिं, गंगातरंगभूएणं उरकडगदेसभाएणं सुक्क-सप्प-समाणेहिं, बाहाहिं, सिढिल-कडाली विव लंबंतेहि य अग्गहत्थेहिं, कंपणवाइओ विव वेवमाणीए सीस-घडीए, पव्वाय- वयण-कमले, उब्भडघडामुहे, उच्छुद्ध णयणकोसे,

जीवंजीवेणं गच्छइ, जीवंजीवेणं चिट्ठइ, भासं भासित्ता गिलाइ, भासं भासमाणे गिलाइ भासं भासिस्सामित्ति गिलाइ। से जहाणामए-इंगाल- सगडियाइ वा, जहा खंदओ तहा जाव हुयासणे इव भास-रासि-पलिच्छण्णे, तवेणं तेएणं अईव अईव तवतेय-सिरीए उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ।।13।।

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया। समणे भगवं महावीरे समोसढे, परिसा णिग्गया, सेणिओ णिग्गओ, धम्मकहा। परिसा पडिगया। तए णं से सेणिए राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-इमासिं णं भंते ! इंदभूइ-पामोक्खाणं चउदसण्हं समण-साहस्सीणं कयरे अणगारे महादुक्कर-कारए चेव महाणिज्जरयराए चेव? एवं खलु सेणिया! इमासिं इंदभूइ-पामोक्खाणं चोद्दसण्हं समण-साहस्सीणं धण्णे अणगारे महादुक्कर-कारए चेव, महाणिज्जरयराए चेव।

से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ, इमासिं चउद्दसण्हं समण-साहस्सीणं धण्णे अणगारे महादुक्कर-कारए चेव महाणिज्जरयराए चेव ? एवं खलु सेणिया! तेणं कालेणं तेणं समएणं काकंदी णामं णयरी होत्था, जाव उप्पिं पासाय-वडिंसए विहरइ। तए णं अहं अण्णया कयाइं पुव्वाणुपुव्वीए चरमाणे, गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव काकंदी णयरी जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अहा-पडिरूवं उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेणं तवसा

अप्पाणं भावेमाणे विहरामि। परिसा णिग्गया, तहेव जाव पव्वइए जाव बिलमिव जाव आहारेइ। धण्णस्स अणगारस्स पायाणं सरीर वण्णओ सव्वो जाव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ। से तेणट्ठेणं सेणिया! एवं वुच्चइ-इमासिं चउदसण्हं समणसाहस्सीणं धण्णे अणगारे महादुक्कर-कारए महाणिज्जरयाए चेव।।14।।

तए णं से सेणिए राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव धण्णे अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, धण्णं अणगारं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ करित्ता वंदइ,णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी- ''धण्णेऽसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! सुपुण्णे, सुकयत्थे, कयलक्खणे, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया! तव माणुस्सए जम्म-जीविय-फले''-त्ति कट्टु वंदइ णमंसइ ,वंदित्ता, णमंसित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव,उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए।।15।।

तए णं तस्स धण्णस्स अणगारस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावररत्त-काल-समयंसि धम्म-जागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए मणोगए संकप्पे समुपज्जित्था, एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं जहा खंदओ तहेव चिंता आपुच्छणं, थेरेहिं सद्धिं विउलं दुरूहइ। मासियाए संलेहणाए णवमास-परियाओ

जाव कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम जाव णव-गेविज्जय-विमाणपत्थडे उड्ढं दूरं वीईवइत्ता सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे।

थेरा तहेव ओयरंति जाव इमे से आयारभंडए।

भंते त्ति! भगवं गोयमे तहेव आपुच्छइ जहा खंदयस्स भगवं वागरेइ जाव सव्वट्ठसिद्धे विमाणे उववण्णे।

धण्णस्स णं भंते! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा ! तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।।16।।

से णं भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिईक्खएणं कहिं गच्छिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं करेहिइ।

एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।।17।।

।।पढमं अज्झयणं सम्मत्तं।।

बीयं अज्झयणं

जइ णं भंते! उक्खेवओ एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं काकंदीए णयरीए भद्दा णामं सत्थवाही परिवसइ, अड्ढा। तीसे णं भद्दाए सत्थवाहीए पुत्ते सुणक्खत्ते णामं दारए होत्था, अहीण जाव सुरूवे, पंचधाइ-परिक्खित्ते जहा धण्णो तहा बत्तीसओ दाओ जाव उप्पिं पासाय-वडिंसए विहरइ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जहा धण्णे तहा सुणक्खत्तो वि णिग्गए जहा थावच्चापुत्तस्स तहा णिक्खमणं जाव अणगारे जाए इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी।

तए णं से सुणक्खत्ते अणगारे जं चेव दिवसं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे जाव पव्वइए तं चेव दिवसं अभिग्गहं। तहेव जाव बिलमिव पण्ण-भूएणं आहारं आहारेइ, संजमेणं जाव विहरइ। बहिया जणवयविहारं विहरइ। एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तए णं से सुणक्खत्ते अणगारे तेणं उरालेणं जहा खंदओ।।1।।

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए, सेणिए राया सामी समोसढे, परिसा णिग्गया, राया णिग्गओ, धम्मकहा, राया पडिगओ, परिसा पडिगया।

तए णं तस्स सुणक्खत्तस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्ता-वररत्तकाल-समयंसि धम्मजाागरियं जहा खंदयस्स। बहुवासा परियाओ।

गोयम पुच्छा, तहेव कहेइ जाव सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे। तेतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता से णं भंते जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ।

।। बीयं अज्झयणं सम्मत्तं।।2।।

3-10 अज्झयणं

एवं खलु जंबू ! सुणक्खत्तगमेणं सेसा वि अट्ठ भाणियव्वा, णवरं आणुपुव्वीए-दोण्णि रायगिहे, दोण्णि साएए, दोण्णि वाणियग्गामे, णवमो हत्थिणापुरे, दसमो रायगिहे।

णवण्हं भद्दाओ जणणीओ, णवण्हं वि बत्तीसओ दाओ। णवण्हं णिक्खमणं थावच्चापुत्तस्स सरिसं, वेहल्लस्स पिया करेइ, णव-मास धण्णे, वेहल्ल छमासापरियाओ, सेसाणं बहुवासा, मासं संलेहणा, सव्वट्ठसिद्धे, सव्वे महाविदेहवासे सिज्झिस्संति। एवं दस अज्झयणाणि।

एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं लोगणाहेणं लोगप्पईवेणं लोगपज्जोयगरेणं अभयदएणं सरणदएणं चक्खुदएणं मग्गदए णं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टिणा अप्पडिहय-वर-णाण-दंसण-धरेणं जिणेणं जाणएणं बुद्धेणं बोहएणं मुत्तेणं मोयगेणं तिण्णेणं तारएणं सिव-मयल-मरुय-मणंत-मक्खय- मव्वाबाह-मपुणरावत्तियं सिद्धिगइ-णामधेयं ठाणं संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। अणुत्तरोववाइय-दसाओ समत्ताओ। अणुत्तरोववाइय-दसाणं एगो सुयखंधो, तिण्णि वग्गा, तिसु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति। तत्थ पढमे वग्गे दस उद्देसगा। बिइए वग्गे तेरस उद्देसगा। तइए वग्गे दस उद्देसगा। सेसं जहा णायाधम्मकहाणं तहा णेयव्वं।। इति।।

।।अणुत्तरोववाइयदसाओ समत्ताओ।।

मोक्ष-मार्ग

कयरे मग्गे अक्खाए, माहणेणं मईमया?।
जं मग्गं उज्जु पावित्ता, ओहं तरइ दुत्तरं।।1।।

तं मग्गं अणुत्तरं सुद्धं सव्व-दुक्ख-विमोक्खणं।
जाणासि णं जहा भिक्खू! तं णो बूहि महामुणी।।2।।

जइ णो केइ पुच्छिज्जा, देवा अदुव माणुसा।
तेसिं तु कयरं मग्गं, आइक्खेज्ज कहाहि णो।।3।।

जइ वो केइ पुच्छिज्जा, देवा अदुव माणुसा।
तेसिमं पडिसाहिज्जा, मग्गसारं सुणेह मे।।4।।

अणुपुव्वेण महाघोरं, कासवेण पवेइयं।
जमायाय इओ पुव्वं, समुद्दं ववहारिणो।।5।।

अतरिंसु तरंतेगे, तरिस्संति अणागया।
तं सोच्चा पडिवक्खामि, जंतवो तं सुणेह मे।।6।।

पुढवी-जीवा पुढो सत्ता, आउ-जीवा तहाऽगणी।
वाउजीवा पुढो सत्ता, तणरुक्खा सबीयगा।।7।।

अहावरा तसा पाणा, एवं छक्काय आहिया।
एयावए जीवकाए णावरे कोइ विज्जई।।8।।

सव्वाहिं अणुजुत्तीहिं, मइमं पडिलेहिया।
सव्वे अकंतदुक्खा य, अओ सव्वे ण हिंसया।।9।।

एयं खु णाणिणो सारं, जं ण हिंसइ किंचणं।
अहिंसा समयं चेव, एयावंतं वियाणिया।।10।।

उड्ढं अहे य तिरियं, जे केइ तस-थावरा।
सव्वत्थ विरइं कुज्जा, संति णिव्वाण-माहियं।।11।।

पभू दोसे णिराकिच्चा, ण विरुज्झेज्ज केणइ।
मणसा वयसा चेव, कायसा चेव अंतसो।।12।।

संवुडे से महापण्णे, धीरे दत्तेसणं चरे।
एसणा-समिए णिच्चं, वज्जयंते अणेसणं।।13।।

भूयाइं च समारंभ, तमुद्दिस्सा य जं कडं।
तारिसं तु ण गिण्हेज्जा, अण्णपाणं सुसंजए।।14।।

पूइकम्मं ण सेविज्जा, एस धम्मे वुसीमओ।
जं किंचि अभिकंखेज्जा, सव्वसो तं ण कप्पए।।15।।

हणंतं णाणुजाणेज्जा, आयगुत्ते जिइंदिए।
ठाणाइं संति सड्ढीणं, गामेसु णगरेसु वा।।16।।

तहा गिरं समारब्भ, अत्थि पुण्णं ति णो वए।
अहवा णत्थि पुण्णं ति, एवमेयं महब्भयं।।17।।

दाणट्ठया य जे पाणा, हम्मंति तस-थावरा।
तेसिं सारक्खणट्ठाए, तम्हा अत्थि त्ति णो वए।।18।।

जेसिं तं उवकप्पंति, अण्णपाणं तहाविहं।
तेसिं लाभंतरायं ति, तम्हा णत्थि त्ति णो वए।।19।।

जे य दाणं पसंसंति, वहमिच्छंति पाणिणं।
जे य णं पडिसेहंति, वित्तिच्छेयं करंति ते।।20।।

दुहओ वि ते ण भासंति, अत्थि वा णत्थि वा पुणो।
आयं रयस्स हेच्चा णं, णिव्वाणं पाउणंति ते।।21।।

णिव्वाणं परमं बुद्धा, णक्खत्ताण व चंदिमा।
तम्हा सया जए दंते, णिव्वाणं संधए मुणी।।22।।
वुज्झ-माणाण पाणाणं, किच्चंताण सकम्मुणा।
आघाइ साहु तं दीवं, पइट्ठेसा पवुच्चइ।।23।।
आयगुत्ते सया दंते, छिण्णसोए अणासवे।
जे धम्मं सुद्ध-मक्खाइ, पडिपुण्ण-मणेलिसं।।24।।
तमेव अविजाणंता अबुद्धा बुद्धमाणिणो।
बुद्धा मो त्ति य मण्णंता, अंतए ते समाहिए।।25।।
ते य बीओदगं चेव, तमुद्दिस्सा य जं कडं।
भोच्चा झाणं झियायंति, अखेयण्णा-ऽसमाहिया।।26।।
जहा ढंका य कंका य, कुलला मग्गुका सिही।
मच्छेसणं झियायंति, झाणं ते कलुसाहमं।।27।।
एवं तु समणा एगे, मिच्छद्दिट्ठी अणारिया।
विसएसणं झियायंति, कंका वा कलुसाहमा।।28।।
सुद्धं मग्गं विराहित्ता, इहमेगे उ दुम्मई।
उम्मग्ग-गया दुक्खं, घायमेसंति तं तहा।।29।।
जहा आसाविणिं णावं, जाइअंधो दुरूहिया।
इच्छइ पारमागंतुं, अंतरा य विसीयइ।।30।।
एवं तु समणा एगे, मिच्छद्दिट्ठी अणारिया।
सोयं कसिण-मावण्णा, आगंतारो महब्भयं।।31।।
इमं च धम्ममादाय, कासवेण पवेइयं।
तरे सोयं महाघोरं अत्तताए परिव्वए।।32।।

विरए गाम-धम्मेहिं, जे केई जगई जगा।
तेसिं अत्तुवमायाए, थामं कुव्वं परिव्वए।।33।।

अइमाणं च मायं च, तं परिण्णाय पंडिए।
सव्वमेयं णिराकिच्चा, णिव्वाणं संधए मुणी।।34।।

संधए साहुधम्मं च, पावधम्मं णिराकरे।
उवहाण-वीरिए भिक्खू, कोहं माणं ण पत्थए।।35।।

जे य बुद्धा अइक्कंता, जे य बुद्धा अणागया।
संति तेसिं पइट्ठाणं, भूयाणं जगई जहा।।36।।

अह णं वयमावण्णं, फासा उच्चावया फुसे।
ण तेसु विणिहण्णेज्जा, वाएणेव महागिरी।।37।।

संवुडे से महापण्णे, धीरे दत्तेसणं चरे।
णिव्वुडे कालमाकंखी, एवं केवलिणो मयं।।38।।

।।इति सूत्रकृताङ्गे मोक्षमार्गनामकम् एकादशमध्ययनम्।।

वैराग्यकुलकम्

(श्रीमद्-देवेन्द्रसूरि-विरचित)

जम्मजरामरणजले, णाणाविहवाहिजलयराइण्णे।
भवसायरे अपारे, दुलहं खलु माणुसं जम्मं।।1।।

तम्मि वि आरियखित्तं, जाईकुलरूवसंपयाउयं।
चिंतामणिसारित्थो, दुलहो धम्मो य जिणभणिओ।।2।।

भवकोडिसएहिँ परिहिंडिऊण सुविसुद्धपुण्णजोएण।
इत्तियमित्ता संपइ सामग्गी पाविया जीव!।।3।।

रूवमसासयमेयं विज्जुलयाचंचलं जए जीयं।
संझाणुरागसरिसं खणरमणीयं च तारुण्णं।।4।।

गयकण्णचंचलाओ, लच्छीओ तियसचावसारिच्छं।
विसयसुहं जीवाणं, बुज्झसु रे जीव! मा मुज्झ।।5।।

किंपाकफलसमाणा, विसया हालाहलोवमा पावा।
मुहमहुरत्तण सारा, परिणामे दारुणसहावा।।6।।

भुत्ता य दिव्वभोगा, सुरेसु असुरेसु तह य मणुएसु।
ण य जीव! तुज्झ तित्ती, जलणस्स व कट्ठणियरेहिं।।7।।

जह संझाए सउणाण संगमो जह पहे य पहियाणं।
सयणाणं संजोगो, तहेव खणभंगुरो जीव!।।8।।

पियमाइभाइभइणी-भज्जापुत्तत्तणे वि सव्वे वि।
सत्ता अणंतवारं, जाया सव्वेसिं जीवाणं।।9।।

ता तेसिं पडिबंधं, उवरिं मा तं करेसु रे जीव!।
पडिबंधं कुणमाणो, इहयं चिय दुक्खिओ भमिसि।।10।।

जाया तरुणी आभरणवज्जिया, पाढिओ ण मे तणओ।
धूया णो परिणीया, भइणी णो भत्तुणो गमिया।।11।।

थोवो विहवो संपइ, वट्टइ य रिणं बहुव्वओ गेहे।
एवं चिंतासंतावदूमिओ, दुक्खमणुहवसि।।12।।

काऊण वि पावाइं, जो अत्थो संचिओ तए जीव!।
सो तेसिं सयणाणं, सव्वेसिं होइ उवओगी।।13।।

जं पुण असुहं कम्मं, इक्कुच्चिय जीव तं समणुहवसि।
ण य ते सयणा सरणं, कुगईए गच्छमाणस्स।।14।।

कोहेणं माणेणं, मायालोभेहिँ रागदोसेहिं।
भवरंगओ सुइरं, णडुव्व णच्चाविओ तं सि।।15।।

पंचेहिँ इंदिएहिं, मणवयकाएहिं दुट्ठजोगेहिं।
बहुसो दारुणरूवं, दुक्खं पत्तं तए जीव!।।16।।

ता एअण्णाऊणं, संसारसायरं तुमं जीव!।
सयलसुहकारणम्मि, जिणधम्मे आयरं कुणसु।।17।।

जाव ण इंदियहाणी, जाव ण जररक्खसी परिप्फुरइ।
जाव ण रोगवियारो, जाव ण मच्चू समुल्लियइ।।18।।

जह गेहम्मि पलित्ते, कूवं खणिउं ण सक्कई को वि।
तह संपत्ते मरणे, धम्मो कह कीरए जीव!।।19।।

पत्तम्मि मरणसमए, डज्झसि सोअग्गिणा तुमं जीव!।
वग्गुरपडिओव मओ, संवट्टमिउ जह वि पक्खी।।20।।

ता जीव! संपयं चिय, जिणधम्मे उज्जमं तुमं कुणसु।
मा चिंतामणिसम्मं, मणुयत्तं णिप्फलं णेसु।।21।।

ता मा कुणसु कसाए, इंदियवसगो य मा तुमं होसु।
देविंदसाहुमहियं सिवसुक्खं जेण पाविहिसि।।22।।

।।इति।।

* * *

तत्त्वार्थ-सूत्रम्
(श्री उमास्वाति कृत)
प्रथमोऽध्यायः

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः।।1।। तत्त्वार्थ-श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्।।2।। तन्निसर्गा-दधिगमाद्वा।।3।। जीवा-ऽजीवाऽस्रव-बन्ध-संवर-निर्जरा-मोक्षास्तत्त्वम्।।4।। नाम स्थापना-द्रव्य-भावतस्त-न्न्यासः।।5।। प्रमाण-नयै-रधिगमः।।6।। निर्देश-स्वामित्व-साधनाधिकरण-स्थिति-विधानतः।।7।। सत्संख्या-क्षेत्र-स्पर्शन-कालान्तर-भावाल्प-बहुत्वैश्च।।8।। मतिश्रुता-वधि-मनःपर्याय-केवलानि ज्ञानम्।।9।। तत् प्रमाणे।।10।। आद्ये परोक्षम्।।11।। प्रत्यक्ष-मन्यत्।।12।। मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताऽभिनिबोध इत्य-नर्थान्तरम्।।13।। तदिन्द्रियानिन्द्रिय-निमित्तम्।।14।। अवग्रहेहा-ऽवाय-धारणाः।।15।। बहुबहुविध-क्षिप्रा-निश्रिता- ऽसंदिग्ध-ध्रुवाणां सेतराणाम्।।16।। अर्थस्य।।17।। व्यञ्जनस्याऽवग्रहः ।।18।। न चक्षु-रनिन्द्रियाभ्याम्।।19।। श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेक -द्वादश-भेदम्।।20।। द्विविधोऽवधिः।।21।। तत्र भवप्रत्ययो नारक-देवानाम्।।22।। यथोक्त-निमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम्।।23।। ऋजु-विपुलमती मनःपर्यायः।।24।। विशुद्ध्य-प्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः।।25।। विशुद्धि-क्षेत्र-स्वामि- विषयेभ्यो-

ऽवधिमनःपर्याययोः।।26।। मतिश्रुतयो-र्निबन्धः सर्वद्रव्येष्व-सर्वपर्यायेषु।।27।। रूपिष्ववधेः।।28।। तदनन्तभागे मनःपर्यायस्य।।29।। सर्वद्रव्य-पर्यायेषु केवलस्य।।30।। एकादीनि भाज्यानि युगपदे-कस्मिन्ना चतुर्भ्यः ।।31।। मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च।।32।। सदसतोर-विशेषाद् यदृच्छोपलब्धे-रुन्मत्तवत्।।33।। नैगम-संग्रह-व्यवहारर्जु-सूत्र-शब्दा (शब्द समभिरूढैवंभूता) नयाः।।34।। आद्यशब्दौ द्वि-त्रिभेदौ।।35।।

।। इति प्रथमोऽध्यायः।।

द्वितीयोऽध्यायः

औपशमिक-क्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्व-मौदयिक-पारिणामिकौ च।।1।। द्विनवाष्टा-दशैक-विंशति-त्रिभेदा यथाक्रमम्।।2।। सम्यक्त्व-चारित्रे।।3।। ज्ञानदर्शन-दान -लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणि च।।4।। ज्ञानाज्ञान-दर्शन-दानादि-लब्धयश्-चतुस्त्रि-त्रि-पञ्चभेदाः यथाक्रमं सम्यक्त्व-चारित्र-संयमासंयमाश्च।।5।। गति-कषाय-लिङ्गमिथ्या-दर्शनाऽज्ञानाऽसंयताऽसिद्धत्व- लेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकै-कै-कैक-षड्भेदाः।।6।। जीवभव्याभव्यत्वादीनि च।।7।। उपयोगो लक्षणम्।।8।। स द्विविधोऽष्ट-चतुर्भेदः।।9।। संसारिणो मुक्ताश्च।।10।। समनस्का-मनस्काः।।11।। संसारिणस्त्रस-स्थावराः।।12।। पृथिव्यम्बु-वनस्पतयः स्थावराः।।13।। तेजोवायू द्वीन्द्रियादयश्च त्रसाः।।14।। पञ्चेन्द्रियाणि।।15।।

द्विविधानि।।16।। निर्वृत्त्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम्।।17।। लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम्।।18।। उपयोगः स्पर्शादिषु।।19।। स्पर्शन-रसन-घ्राण-चक्षुः-श्रोत्रााणि।।20।। स्पर्श-रस-गन्ध-वर्ण-शब्दास्तेषामर्थाः।।21।। श्रुतमनिन्द्रियस्य।।22।। वाय्वन्तानामेकम्।।23।। कृमि-पिपीलिका-भ्रमर-मनुष्यादीनामेकैक-वृद्धानि।।24।। संज्ञिनः समनस्काः।।25।। विग्रह-गतौ कर्मयोगः।।26।। अनुश्रेणि गतिः।।27।। अविग्रहा जीवस्य।।28।। विग्रहवती च संसारिणः प्राक्-चतुर्भ्यः।।29।। एकसमयो-ऽविग्रहः।।30।। एकं द्वौ वाऽनाहारकः।।31।। सम्मूर्च्छन-गर्भोपपाता जन्म।।32।। सचित्त-शीत-संवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः।।33।। जराय्वण्ड-पोतजानां गर्भः।।34।। नारक-देवाना-मुपपातः।।35।। शेषाणां सम्मूर्च्छनम् ।।36।। औदारिक-वैक्रियाऽऽहारक-तैजस-कार्मणानि शरीराणि।।37।। परं परं सूक्ष्मम्।।38।। प्रदेशतोऽसंख्येय-गुणं प्राक् तैजसात्।।39।। अनन्तगुणे परे।।40।। अप्रतिघाते।।41।। अनादि-सम्बन्धे च।।42।। सर्वस्य।।43।। तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्या चतुर्भ्यः।।44।। निरुपभोगमन्त्यम्।।45।। गर्भ- सम्मूर्च्छन-जमाद्यम्।।46।। वैक्रिय-मौपपातिकम्।।47।। लब्धि-प्रत्ययं च।।48।। शुभं विशुद्ध-मव्याघाति चाहारकं चतुर्दश-पूवधरस्यैव।।49।। नारक-सम्मूर्छिनो नपुंसकानि।।50।। न देवाः।।51।। औपपातिक-चरम-देहोत्तम-पुरुषाऽसंख्येय-वर्षायुषो-ऽनपवर्त्यायुषः।।52।।

।।इति द्वितीयोऽध्यायः।।

तृतीयोऽध्यायः

रत्न-शर्करा-वालुका-पङ्क-धूम-तमोमहातमःप्रभाभूमयो घनाम्बु-वाताकाश-प्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः पृथुतराः।।1।। तासु नारकाः।।2।। नित्याशुभतर-लेश्या-परिणाम- देह-वेदना-विक्रियाः।।3।। परस्परो-दीरित- दुःखाः।।4।। संक्लिष्टासुरो-दीरित-दुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः।।5।। तेष्वेक-त्रिसप्त- दश-सप्तदश-द्वाविंशति-त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाः सत्त्वानां परा स्थितिः।।6।। जम्बूद्वीप-लवणादयः शुभ-नामानो द्वीप समुद्राः।।7।। द्विर्द्वि-र्विष्कम्भाः पूर्व-पूर्व-परिक्षेपिणो वलयाकृतयः।।8।। तन्मध्ये मेरुनाभि-र्वृत्तो योजनशत-सहस्र-विष्कम्भो जम्बूद्वीपः।।9।। तत्र भरत-हैमवत-हरि-विदेह-रम्यक -हैरण्यवतैरावत-वर्षाः क्षेत्राणि।।10।। तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्-महाहिमवन्-निषध-नील-रुक्मि-शिखरिणो वर्षधर-पर्वताः।।11।। द्विर्धातकी-खण्डे।।12।। पुष्करार्धे च।।13।। प्राङ् मानुषोत्तरान् मनुष्याः।।14।। आर्या म्लेच्छाश्च।।15।। भरतैरावत-विदेहाः कर्मभूमयो-ऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः।।16।। नृस्थिती परापरे त्रिपल्योपमान्त-र्मुहूर्ते।।17।। तिर्यग्योनीनां च।।18।।

।। इति तृतीयोऽध्यायः।।

चतुर्थोऽध्यायः

देवाश्चतु-र्निकायाः।।1।। तृतीयः पीतलेश्यः।।2।। दशाष्ट-पञ्च-द्वादश-विकल्पाः कल्पोपपन्न-पर्यन्ताः।।3।। इन्द्र-सामानिक-त्रायस्त्रिंश-पारिषद्यात्मरक्ष-लोकपालानीक-प्रकीर्णकाभियोग्य-किल्विषिकाश्चैकशः।।4।। त्रायस्त्रिंश-लोकपाल-वर्ज्या व्यन्तर-ज्योतिष्काः।।5।। पूर्वयोर्द्वीन्द्राः।।6।। पीतान्त-लेश्याः।।7।। काय-प्रवीचारा आ ऐशानात्।।8।। शेषाः स्पर्श-रूप-शब्द-मनःप्रवीचारा द्वयो-र्द्वयोः।।9।। परेऽप्रवीचाराः।।10।। भवनवासिनो-ऽसुर-नाग- विद्युत्सुपर्णाऽग्नि -वात-स्तनितोदधि-द्वीप-दिक्कुमाराः।।11।। व्यन्तराः किन्नर-किम्पुरुष-महोरग-गान्धर्व-यक्ष-राक्षस- भूत-पिशाचाः।।12।। ज्योतिष्काः सूर्याश्चन्द्रमसो ग्रह-नक्षत्र- प्रकीर्ण-तारकाश्च।।13।। मेरु-प्रदक्षिणा नित्य-गतयो नृलोके।।14।। तत्कृतः कालविभागः।।15।। बहिरवस्थिताः ।।16।। वैमानिकाः।।17।। कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च।।18।। उपर्युपरि।।19।। सौधर्मैशान-सानत्कुमार-माहेन्द्र-ब्रह्मलोक- लान्तक-महाशुक्र-सहस्रारेष्वानत-प्राणतयोरारणाच्युतयो- र्नवसु ग्रैवेयकेषु विजय-वैजयन्त-जयन्ता-ऽपराजितेषु सर्वार्थसिद्धे च।।20।। स्थिति-प्रभाव-सुख-द्युति-लेश्या-विशुद्धीन्द्रियावधि-विषयतोऽधिकाः ।।21।। गतिशरीर-परिग्रहाऽभिमानतो हीनाः ।।22।। पीतपद्मशुक्ललेश्या

द्वित्रिशेषेषु।।23।। प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः।।24।। ब्रह्मलोकालया लोकान्तिकाः।।25।। सारस्वतादित्य-वह्न्यरुण-गर्दतोय-तुषिताव्याबाध-मरुतो-ऽरिष्टाश्च।।26।। विजयादिषु द्विचरमाः।।27।। औपपातिकमनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः।।28।। स्थितिः।।29।। भवनेषु दक्षिणार्धाधिपतीनां पल्योपम-मध्यर्धम्।।30।। शेषाणां पादोने।।31।। असुरेन्द्रयोः सागरोपम-मधिकं च।।32।। सौधर्मादिषु यथाक्रमम्।।33।। सागरोपमे।।34।। अधिके च।।35।। सप्त सानत्कुमारे।।36।। विशेषस्त्रि-सप्त-दशैकादश-त्रयोदश-पञ्चदशभि-रधिकानि च।।37।। आरणाच्युतादूर्ध्व-मेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धे च।।38।। अपरा पल्योपममधिकं च।।39।। सागरोपमे।।40।। अधिके च।।41।। परतः परतः पूर्वापूर्वाऽनन्तरा।।42।। नारकाणां च द्वितीयादिषु।।43।। दशवर्ष-सहस्त्राणि प्रथमायाम्।।44।। भवनेषु च।।45।। व्यन्तराणां च।।46।। परा पल्योपमम्।।47।। ज्योतिष्काणामधिकम्।।48।। ग्रहाणामेकम्।।49।। नक्षत्रणामर्द्धम्।।50।। तारकाणां चतुर्भागः।।51।। जघन्या त्वष्टभागः।।52।। चतुर्भागः शेषाणाम्।।53।।

।।इति चतुर्थोऽध्यायः।।

पञ्चमोऽध्यायः

अजीवकाया धर्माऽधर्माकाश-पुद्गलाः।।1।। द्रव्याणि जीवाश्च।।2।। नित्यावस्थितान्य-रूपाणि।।3।। रूपिणः पुद्गलाः।।4।। आऽऽकाशादेक-द्रव्याणि।।5।। निष्क्रियाणि च।।6।। असङ्ख्येयाः प्रदेशा धर्माऽधर्मयोः ।।7।। जीवस्य च।।8।। आकाशस्य-ऽनन्ताः।।9।। सङ्ख्येयाऽसङ्ख्येयाश्च पुद्गलानाम्।।10।। नाणोः।।11।। लोकाकाशेऽवगाहः।।12।। धर्माऽधर्मयोः कृत्स्ने।।13।। एक-प्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गलानाम्।।14।। असङ्ख्येय-भागादिषु जीवानाम्।।15।। प्रदेश संहार-विसर्गाभ्यां प्रदीपवत्।।16।। गतिस्थित्युपग्रहो धर्माऽधर्मयो-रुपकारः।।17।। आकाशस्या-ऽवगाहः।।18।। शरीर-वाङ्मनःप्राणापानाः पुद्गलानाम्।।19।। सुख-दुःख-जीवित - मरणोपग्रहाश्च।।20।। परस्परोपग्रहो जीवानाम्।।21।। वर्त्तना परिणामः क्रिया परत्वापरत्वे च कालस्य।।22।। स्पर्श-रस-गन्ध-वर्णवन्तः पुद्गलाः।।23।। शब्द-बन्ध-सौक्ष्म्य-स्थौल्य-संस्थान-भेद-तमश्छायाऽऽतपोद्द्योत-वन्तश्च।।24।। अणवः स्कन्धाश्च।।25।। संघात-भेदेभ्य उत्पद्यन्ते।।26।। भेदादणुः।।27।। भेद-संघाताभ्यां चाक्षुषाः।।28।। उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य-युक्तं सत्।।29।। तद्भावाव्ययं नित्यम्।।30।। अर्पितानर्पित-सिद्धेः।।31।। स्निग्ध-रूक्षत्वाद् बन्धः।।32।। न जघन्य-गुणानाम् ।।33।। गुणसाम्ये सदृशानाम्।।34।। द्व्यधिकादि-

गुणानां तु।।35।। बन्धे समाधिकौ पारिणामिकौ।।36।। गुण-पर्याय-वद् द्रव्यम्।।37।। कालश्चेत्येके।।38।। सोऽनन्त-समय:।।39।। द्रव्याश्रया निर्गुणा: गुणा:।।40।। तद्भाव: परिणाम:।।41।।अनादिरादिमांश्च।।42।। रूपिष्वादिमान्।।43।। योगोपयोगौ जीवेषु।।44।।

।। इति पञ्चमोऽध्याय:।।

षष्ठोऽध्याय:

काय-वाङ्-मन:-कर्म योग:।।1।। स आस्रव:।।2।। शुभ: पुण्यस्य।।3।। अशुभ: पापस्य।।4।। सकषायाकषाययो: साम्परायिकेर्यापथयो:।।5।। अव्रतकषायेन्द्रियक्रिया: पञ्च-चतु: -पञ्च-पञ्चविंशति-संख्या: पूर्वस्य भेदा:।।6।। तीव्रमन्द-ज्ञाताज्ञात-भाव-वीर्याधि-करण-विशेषेभ्य-स्तद्विशेष:।।7।। अधिकरणं जीवाऽजीवा:।।8।। आद्यं संरम्भ-समारम्भा-रम्भ-योग-कृत-कारिताऽनुमत-कषाय-विशेषैस्त्रि-स्त्रिस्त्रि-श्चतुश्चैकश:।।9।। निर्वतना-निक्षेप-संयोग-निसर्गा द्वि-चतु-र्द्वि-त्रि-भेदा: परम्।।10।। तत्प्रदोष-निह्नव- मात्सर्यान्त-रायासादनोप-घाता ज्ञान-दर्शनावरणयो:।।11।। दु:ख-शोकतापा -क्रन्दन-वध-परिदेवनान्यात्मपरोभयस्थान्यसद्वेद्यस्य।।12।। भूतव्रत्यनुकम्पा दानं सराग-संयमादि-योग: क्षान्ति: शौचमिति सद्वेद्यस्य।।13।। केवलिश्रुत-सङ्घ-धर्म-देवावर्णवादो दर्शनमोहस्य।।14।। कषायोदयात्तीव्रात्म-

परिणामश्चारित्रमोहस्य।।15।। बह्वारम्भ-परिग्रहत्वं च नारकस्यायुषः।।16।। माया तैर्यग्योनस्य।।17।। अल्पारम्भ-परिग्रहत्वं स्वभाव-मार्दवार्जवं च मानुषस्य।।18।। निःशील- व्रतत्वं च सर्वेषां।।19।। सरागसंयम-संयमासंयमाकाम-निर्जरा-बाल-तपांसिदेवस्य।।20।। योग-वक्रता विसंवादनं-चाशुभस्य नाम्नः।।21।। विपरीतं शुभस्य।।22।। दर्शन-विशुद्धि-र्विनय-सम्पन्नता शीलव्रतेष्वनतिचारो-ऽभीक्ष्णं ज्ञानोपयोग-संवेगौ शक्तितस्त्याग-तपसी सङ्घ-साधु-समाधि- वैयावृत्य-करण-मर्हदाचार्य-बहुश्रुत-प्रवचन-भक्तिरावश्यका-परिहाणि-र्मार्गप्रभावना प्रवचन-वत्सलत्व-मिति तीर्थकृत्त्वस्य।।23।। परात्म-निन्दा-प्रशंसे सदसद्गुणाच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य।।24।। तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य।।25।। विघ्नकरण- मन्तरायस्य।।26।।

।। इति षष्ठोऽध्यायः।।

सप्तमोऽध्यायः

हिंसाऽनृत-स्तेया-ब्रह्म-परिग्रहेभ्यो विरति-र्व्रतम्।।1।। देशसर्वतोऽणुमहती।।2।। तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च पञ्च।।3।। हिंसादिष्विहामुत्र चापायावद्य-दर्शनम्।।4।। दुःखमेव वा।।5।। मैत्री-प्रमोद-कारुण्य-माध्यस्थ्यानि सत्त्व-गुणाधिक- क्लिश्यमाना-ऽविनेयेषु।।6।। जगत्काय-स्वभावौ च संवेग-वैराग्यार्थम्।।7।।

प्रमत्त-योगात्-प्राणव्यपरोपणं हिंसा।।8।। असदभिधान-मनृतम्।।9।। अदत्तादानं स्तेयम्।।10।। मैथुनमब्रह्म ।।11।। मूर्च्छा परिग्रहः।।12।। निःशल्यो व्रती।।13।। अगार्यनगारश्च।।14।। अणुव्रतोऽगारी ।।15।। दिग्देशाऽनर्थदण्ड-विरति-सामायिक-पौषधोपवासोपभोगपरिभोग-परिमाणाऽतिथिसंविभाग-व्रत-सम्पन्नश्च ।।16।। मारणान्तिकीं संलेखनां जोषिता।।17।। शङ्का-काङ्क्षा-विचिकित्सा-ऽन्यदृष्टि-प्रशंसा-संस्तवाः सम्यग्दृष्टे-रतिचाराः।।18।। व्रतशीलेषुपञ्च पञ्च यथाक्रमम्।।19।। बन्ध-वध-च्छविच्छेदाऽतिभारारोपणा-ऽन्नपाननिरोधाः।।20।। मिथ्योपदेश-रहस्याभ्याख्यान-कूटलेख-क्रियान्यासापहार- साकार-मन्त्रभेदाः।।21।। स्तेन-प्रयोग-तदाहृतादान- विरुद्ध-राज्यातिक्रम-हीनाधिक-मानोन्मान-प्रतिरूपक- व्यवहाराः।।22।। परविवाह-करणेत्वर-परिगृहीता- ऽपरिगृहीता-गमनाऽनङ्गक्रीडा-तीव्रकामाभिनिवेशाः।।23।। क्षेत्र-वास्तु-हिरण्य-सुवर्ण-धनधान्य-दासी-दास- कुप्य-प्रमाणातिक्रमाः।।24।। ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्-व्यतिक्रम- क्षेत्रवृद्धि-स्मृत्यन्तर्धानानि।।25।। आनयन-प्रेष्य-प्रयोग-शब्द-रूपानुपात-पुद्गल-क्षेपाः।।26।। कन्दर्प-कौत्कुच्य-मौखर्याऽसमीक्ष्याधिकरणोपभोगाधिकत्वानि।।27।। योग-दुष्प्रणिधानानादर-स्मृत्यनुपस्थापनानि।।28।। अप्रत्यवेक्षिता -प्रमार्जितोत्सर्गादान-निक्षेप-संस्तारोपक्रमणानादर-स्मृत्यनुप-स्थापनानि।।29।। सचित्त-सम्बद्ध-सम्मिश्राऽभिषव -

दुष्पक्वाहारा:।।30।। सचित्त-निक्षेप-पिधान-परव्यपदेश-मात्सर्य-कालातिक्रमा:।।31।। जीवित-मरणाशंसा-मित्रानूराग-सुखानुबन्ध-निदान-करणानि।।32।। अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम्।।33।। विधि-द्रव्य-दातृ-पात्र- विशेषात्तद्विशेष:।।34।।

।। इति सप्तमोध्याय:।।

अष्टमोऽध्याय:

मिथ्यादर्शनाऽविरति-प्रमाद-कषाय-योगा बन्ध हेतव:।।1।। सकषायत्वाज्जीव: कर्मणो योग्यान् पुद्गलानादत्ते।।2।। स बन्ध:।।3।। प्रकृति-स्थित्यनुभाव-प्रदेशास्तद्विधय:।।4।। आद्यो ज्ञान-दर्शनावरण-वेदनीय-मोहनीयाऽयुष्क-नाम- गोत्रान्तराया:।।5।। पञ्च-नव-द्वयष्टाविंशति-चतु-र्द्वि-चत्वारिंशद् -द्वि-पञ्चभेदा-यथाक्रमम्।।6।। मत्यादीनाम् ।।7।। चक्षु-रचक्षुरवधि-केवलानां निद्रानिद्रा-प्रचला-प्रचलाप्रचला-स्त्यानगृद्धि-वेदनीयानि च।।8।। सदसद्वेद्ये ।।9।। दर्शन-चारित्र-मोहनीय-कषाय-नोकषाय-वेदनीयाख्या-स्त्रि-द्वि-षोडश-नवभेदा: सम्यक्त्व-मिथ्यात्व-तदुभयानि कषाय-नोकषायावनन्तानु-बन्ध्यप्रत्याख्यान प्रत्याख्यानावरण-संज्वलन-विकल्पाश्चैकश: क्रोध-मान-माया-लोभा हास्य-रत्यरति-शोक-भय-जुगुप्सा-स्त्री-पुंनपुंसक-वेदा:।।10।। नारकतैर्यग्योन -मानुष-दैवानि।।11।। गतिजाति-शरीराङ्गोपाङ्ग-निर्माण-बन्धन-सङ्घात संस्थान-संहनन-स्पर्श-रस-गन्ध-वर्णानुपूर्व्यगुरुलघूपघात-पराघातातपोद्यो-तोच्छ्वास-

विहायोगतयः प्रत्येक-शरीर-त्रस-सुभग-सुस्वर-शुभ-सूक्ष्म-पर्याप्त-स्थिरादेय-यशांसि सेतराणि तीर्थकृत्त्वं च।।12।। उच्चै-र्नीचैश्च।।13।। दानादीनाम्।।14।। आदितस्तिसृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपम-कोटीकोट्यः परा स्थितिः।।15।। सप्तति-र्मोहनीयस्य।।16।। नामगोत्रयो-र्विंशतिः।।17।। त्रयस्त्रिंशत् सागरोपमाण्यायुष्कस्य।।18। अपरा द्वादश-मुहूर्त्ता वेदनीयस्य।।19।। नामगोत्रयो-रष्टौ।।20।। शेषाणामन्तर्मुहूर्त्तम्।।21।। विपाकोऽनु-भावः।।22।। स यथानाम।।23।। ततश्च निर्जरा।।24।। नाम - प्रत्यया: सर्वतो योग-विशेषात्सूक्ष्मैक-क्षेत्रावगाढ-स्थिता: सर्वात्म-प्रदेशेष्वनन्तानन्त-प्रदेशाः।।25।। सद्वेद्य-सम्यक्त्व-हास्य-रति-पुरुषवेद-शुभायु-र्नामगोत्राणि पुण्यम्।।26।।

।। इति अष्टमोऽध्यायः।।

नवमोऽध्यायः

आस्रव-निरोधः संवरः।।1।। स गुप्ति-समिति-धर्मानु-प्रेक्षा-परीषह-जय-चारित्रैः।।2।। तपसा निर्जरा च।।3।। सम्यग्योग-निग्रहो गुप्तिः।।4।। ईर्या-भाषैषणादान-निक्षेपोत्सर्गाः समितयः।।5।। उत्तमः क्षमा-मार्दवार्जव-शौच-सत्य-संयम-तपस्त्यागाऽऽकिञ्चन्य-ब्रह्मचर्याणि धर्मः।।6।। अनित्याशरण-संसारैकत्वान्यत्वाशुचित्वाऽस्रवसंवर-निर्जरा-लोक-बोधिदुर्लभ-धर्मस्वाख्याततत्त्वानुचिन्तन-मनुप्रेक्षाः।।7।। मार्गा-च्यवन- निर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः।।8।। क्षुत्पिपासा-शीतोष्ण- दंशमशक-

नाग्न्यारति-स्त्री-चर्या-निषद्या-शय्याक्रोश-वध- याचनाऽलाभ-रोग-तृणस्पर्श-मल-सत्कारपुरस्कार-प्रज्ञा-ऽज्ञाना-ऽदर्शनानि।।9।। सूक्ष्मसम्पराय-च्छद्मद्मस्थ- वीतरागयोश्चतुर्दश।।10।। एकादश जिने।।11।। बादरसम्पराये सर्वे।।12।। ज्ञानावरणे प्रज्ञाऽज्ञाने।।13।। दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ।।14।। चारित्रमोहे नाग्न्यारति-स्त्री-निषद्या-क्रोश-याचना-सत्कारपुरस्काराः।।15।। वेदनीये शेषाः।।16।। एकादयो भाज्या युगपदैकोनविंशतेः।।17।। सामायिक-च्छेदोपस्थाप्य-परिहार-विशुद्धि-सूक्ष्मसम्पराय-यथाख्यातानि चारित्रम्।।18।। अनशनावमौदर्य-वृत्तिपरिसङ्ख्यान -रसपरित्याग-विविक्त- शय्यासन-कायक्लेशा बाह्यं तपः।।19।। प्रायश्चित्त-विनय-वैयावृत्य-स्वाध्याय-व्युत्सर्ग-ध्यानान्युत्तरम्।।20।। नव -चतुर्दश-पञ्च-द्विभेदं यथाक्रमं प्राग्ध्यानात्।।21।। आलोचन-प्रतिक्रमण-तदुभय-विवेक-व्युत्सर्ग-तपश्छेद-परिहारो-पस्थापनानि।।22।। ज्ञान-दर्शन-चारित्रोपचाराः।।23।। आचार्योपाध्याय-तपस्वि-शैक्षक-ग्लान-गण-कुल-सङ्घ-साधु-समनोज्ञानाम्।।24।। वाचना-प्रच्छना-ऽनुप्रेक्षाऽऽम्नाय-धर्मोपदेशाः।।25।। बाह्याभ्यन्तरोपध्योः।।26।। उत्तम - संहननस्यैकाग्र-चिन्तानिरोधो-ध्यानम्।।27।। आ मुहूर्त्तात्।।28।। आर्त्तरौद्रधर्म-शुक्लानि।।29।। परे मोक्षहेतू।।30।। आर्त्तममनोज्ञानां सम्प्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृति-समन्वाहारः।।31।। वेदनायाश्च।।32।। विपरीतं मनोज्ञानाम्।।33।। निदानं च।।34।। तदविरत-देशविरत-

प्रमत्त-संयतानाम्।।35।। हिंसाऽनृत-स्तेय-विषय-संरक्षणेभ्यो रौद्रमविरत-देशविरतयोः।।36।। आज्ञाऽपाय -विपाक-संस्थान-विचयाय धर्म-मप्रमत्तसंयतस्य।।37।। उपशान्त-क्षीणकषाययोश्च।।38।। शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः।।39।। परे केवलिनः।।40।। पृथक्त्वैकत्व-वितर्क-सूक्ष्म-क्रिया-प्रतिपाति-व्युपरत-क्रियाऽनिवृत्तीनि।।41।। तत् त्र्येक-काययोगाऽयोगानाम् ।।42।। एकाश्रये सवितर्के पूर्वे।।43।। अविचारं द्वितीयम् ।।44।। वितर्कः श्रुतम्।।45।। विचारोऽर्थ-व्यञ्जनयोगसंक्रान्तिः ।।46।। सम्यग्दृष्टि-श्रावकविरतानन्तवियोजक-दर्शनमोहक्षपकोपशम-कोपशान्तमोह-क्षपक-क्षीणमोह जिनाः-क्रमशो- ऽसङ्ख्येय-गुण-निर्जराः।।47।। पुलाक-बकुश-कुशील-निर्ग्रन्थ-स्नातका निर्ग्रन्थाः।।48।। संयम-श्रुत-प्रतिसेवना-तीर्थ-लिङ्ग-लेश्योपपात-स्थान-विकल्पतः साध्याः।।49।।

।।इति नवमोऽध्यायः।।

दशमोऽध्यायः

मोहक्षयाज्ज्ञान-दर्शनावरणान्तराय-क्षयाच्च-केवलम्।।1।। बन्धहेत्वभाव-निर्जराभ्याम्।।2।। कृत्स्न-कर्मक्षयो मोक्षः।।3।। औपशमिकादि-भव्यत्वाभावाच्चान्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञान-दर्शनसिद्धत्वेभ्यः।।4।। तदनन्तर-मूर्ध्वं गच्छत्या लोकान्तात्।।5।। पूर्वप्रयोगादसङ्गत्वाद्-बन्ध-

च्छेदात्तथागतिपरिणामाच्च तद्गतिः।।6।। क्षेत्र-काल-गति-लिङ्गतीर्थ-चारित्र-प्रत्येकबुद्ध - बोधित ज्ञानावगाहनान्तर-सङ्ख्याल्पबहुत्वतः साध्याः।।7।।

।। इति दशमोऽध्यायः।।

।। इति तत्त्वार्थसूत्रं सम्पूर्णम्।।

भक्तामरस्तोत्रम्

(आचार्यमानतुङ्गकृतम्)

(वसन्ततिलका छन्द)

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित-पाप-तमो-वितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिन-पादयुगं युगादा-
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम्।।1।।

य: संस्तुत: सकल-वाङ्मय-तत्त्व-बोधा-
दुद्भूत-बुद्धि-पटुभि: सुरलोक-नाथै:।
स्तोत्रैजगत्-त्रितय-चित्त-हरै-रुदारै:,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्।।2।।(युग्मम्)

बुद्धया विनाऽपि विबुधार्चित-पादपीठ,
स्तोतुं समुद्यत-मति-र्विगत-त्रपोऽहम्।
बालं विहाय जल-संस्थित-मिन्दु-बिम्ब-
मन्य: क इच्छति जन: सहसा ग्रहीतुम्।।3।।

वक्तुं गुणान् गुण-समुद्र! शशाङ्क-कान्तान्,
कस्ते क्षम: सुर-गुरु-प्रतिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-नक्र-चक्रं,
को वा तरीतुमल-मम्बु-निधिं भुजाभ्याम्।।4।।

सोऽहं तथापि तव भक्ति-वशान् मुनीश!
कर्तुं स्तवं विगत-शक्ति-रपि प्रवृत्तः
प्रीत्याऽऽत्म-वीर्य-मविचार्य मृगो मृगेन्द्रम्,
नाभ्येति किं निज-शिशोः परिपालनार्थम्।।5।।

अल्प-श्रुतं श्रुतवतां परिहास-धाम,
त्वद्-भक्ति-रेव मुखरी-कुरुते बलान्-माम्।
यत्-कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्र-चारु-कलिका-निकरैक-हेतुः।।6।।

त्वत्-संस्तवेन भव-सन्तति-सन्निबद्धं,
पापं क्षणात् क्षय-मुपैति शरीर-भाजाम्।
आक्रान्त-लोक-मलि-नील-मशेष-माशु,
सूर्यांशु-भिन्न-मिव शार्वर-मन्धकारम्।।7।।

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनु-धियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु,
मुक्ता-फल-द्युति-मुपैति ननूद-बिन्दुः।।8।।

आस्तां तव स्तवन-मस्त-समस्त-दोषं,
त्वत्-सङ्कथापि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्र-किरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकास-भाञ्जि।।9।।

नात्यद्भुतं भुवन-भूषण! भूतनाथ!
भूतै-र्गुणै-र्भुवि भवन्त-मभिष्टुवन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्म-समं करोति।।10।।

दृष्ट्वा भवन्त-मनिमेष-विलोकनीयं
नान्यत्र तोष-मुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकर-द्युति-दुग्ध-सिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधे-रसितुं क इच्छेत्।।11।।

यैः शान्त-राग-रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापितस्-त्रिभुवनैक-ललाम-भूत!
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति।।12।।

वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरग-नेत्रहारि,
निःशेष-निर्जित-जगत्-त्रितयोपमानम्।
बिम्बं कलङ्क-मलिनं क्व निशा-करस्य,
यद्-वासरे भवति पाण्डु-पलाश-कल्पम्।।13।।

सम्पूर्ण-मण्डल-शशाङ्क-कला-कलाप!
शुभ्रा गुणास्-त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति।
ये संश्रितास्-त्रि-जगदीश्वर! नाथमेकं
कस्तान् निवारयति सञ्चरतो यथेष्टम्।।14।।

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभिर्-
नीतं मनागपि मनो न विकार-मार्गम्।
कल्पान्त-काल-मरुता चलिता-चलेन,
किं मन्दराद्रि-शिखरं चलितं कदाचित्?।।15।।

निर्धूम-वर्ति-रपवर्जित-तैलपूरः,
कृत्स्नं जगत्-त्रय-मिदं प्रकटी-करोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिता-चलानाम्
दीपो-ऽपरस्-त्वमसि नाथ! जगत्-प्रकाशः।।16।।

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहु-गम्यः,
स्पष्टी-करोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भोधरोदर-निरुद्ध-महा-प्रभावः,
सूर्यातिशायि-महिमासि मुनीन्द्र! लोके।।17।।

नित्योदयं दलित-मोह-महान्धकारं,
गम्यं न राहु-वदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्प-कान्ति,
विद्योतयज्जगदपूर्व-शशाङ्क-बिम्बम्।।18।।

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा?
युष्मन्मुखेन्दु-दलितेषु तमस्सु नाथ।
निष्पन्न-शालि-वन-शालिनि जीव-लोके
कार्यं कियज्जलधरै-र्जल-भार-नम्रैः।।19।।

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरि-हरादिषु नायकेषु।
तेजः स्फुरन्-मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काच-शकले किरणाकुलेऽपि।।20।।

मन्ये वरं हरि-हरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि।।21।।

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मिं,
प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशु-जालम्।।22।।

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्य-वर्णममलं तमसः परस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिव-पदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः।।23।।

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं,
ब्रह्माणमीश्वर-मनन्त-मनङ्ग-केतुम्।
योगीश्वरं विदित-योग-मनेक-मेकं
ज्ञान-स्वरूप-ममलं प्रवदन्ति सन्तः।।24।।

बुद्धस्-त्वमेव विबुधार्चित! बुद्धि-बोधात्,
त्वं शङ्करोऽसि भुवनत्रयशङ्करत्वात्,।
धाताऽसि धीर! शिव-मार्ग-विधे-र्विधानात्
व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि।।25।।

तुभ्यं नमस्-त्रिभुवनार्ति-हराय नाथ!
तुभ्यं नमः क्षितितलामल-भूषणाय।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय।।26।।

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैर्-शेषैस्-
त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश!
दोषै-रुपात्त-विविधाश्रय-जात-गर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि।।27।।

उच्चैरशोक-तरु-संश्रितमुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत्-किरणमस्त-तमो वितानम्,
बिम्बं रवेरिव पयोधर-पार्श्ववर्ति।।28।।

सिंहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद्-विलसदंशु-लता-वितानं,
तुङ्गोदयाद्रि-शिरसीव सहस्र-रश्मेः।।29।।

कुन्दावदात-चल-चामर-चारु-शोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत-कान्तम्।
उद्यच्छशाङ्क -शुचि-निर्झर-वारिधार-
मुच्चैस्-तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम्।।30।।

छत्र-त्रयं तव विभाति शशाङ्क-कान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानुकर-प्रतापम्।
मुक्ताफल-प्रकर-जाल-विवृद्ध-शोभं,
प्रख्यापयत्-त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्।।31।।

गम्भीर-तार-रव-पूरित-दिग्-विभागस्-
त्रैलोक्य-लोक-शुभ-संगम-भूति-दक्षः।
सद्धर्म-राज-जय-घोषण-घोषकः सन्,
खे दुन्दुभि-र्ध्वनति ते यशसः प्रवादी।।32।।

मन्दार-सुन्दर-नमेरु-सुपारिजात-
सन्तानकादि-कुसुमोत्कर-वृष्टि-रुद्धा।
गन्धोदबिन्दु-शुभ-मन्द-मरुत्-प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा।।33।।

शुम्भत्प्रभा-वलय-भूरि-विभा विभोस्ते,
लोक-त्रय-द्युतिमतां द्युति-माक्षिपन्ती।
प्रोद्यद्-दिवाकर-निरन्तर-भूरि-सङ्ख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोमसौम्याम्।।34।।

स्वर्गापवर्ग-गममार्ग-विमार्गणेष्टः,
सद्धर्म-तत्त्व-कथनैक-पटुस्-त्रिलोक्याः।
दिव्य-ध्वनि-र्भवति ते विशदार्थ-सर्व-
भाषा-स्वभाव-परिणाम-गुणैः प्रयोज्यः।।35।।

उन्निद्र-हेम-नव-पङ्कज-पुञ्ज-कान्ति,
पर्युल्ल सन्नख-मयूख-शिखाऽभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति।।36।।

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र!
धर्मोपदेशन-विधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् -कुतो ग्रह-गणस्य विकाशिनोऽपि।।37।।

श्च्योतन्-मदाविल-विलोल-कपोल-मूल-
मत्त-भ्रमद्-भ्रमर-नाद-विवृद्ध-कोपम्।
ऐरावताभमिभमुद्धत-मापतन्तं
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदा-श्रितानाम्।।38।।

भिन्नेभ-कुम्भ-गल-दुज्वल-शोणिताक्त-
मुक्ताफल-प्रकर-भूषित-भूमि-भागः।
बद्धक्रमः क्रम-गतं हरिणाधिपोऽपि
नाक्रामति क्रम-युगाचल-संश्रितं ते।।39।।

कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वह्नि-कल्पं
दावानलं ज्वलित-मुज्ज्वल-मुत्स्फुलिङ्गम्।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं
त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम्।।40।।

रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कण्ठ-नीलं
क्रोधोद्धतं फणिन-मुत्फण-माप-तन्तम्।
आक्रामति क्रम-युगेन निरस्त-शङ्कस्-
त्वन्नाम-नाग-दमनी हृदि यस्य पुंसः।।41।।

वल्ग-त्तुरङ्ग-गज-गर्जित-भीम-नाद-
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम्।।
उद्यद्-दिवाकर-मयूख-शिखा-पविद्धं,
त्वत्-कीर्तनात्तम इवाशु भिदा-मुपैति।।42।।

कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित-वारि-वाह-
वेगावतार-तरणातुर-योध-भीमे।
युद्धे जयं विजित-दुर्जय-जेय-पक्षास्-
त्वत्-पाद-पङ्कजवना-श्रयिणो लभन्ते।।43।।

अम्भोनिधौ क्षुभित-भीषण-नक्र-चक्र-
पाठीन-पीठ भयदोल्वण-वाडवाग्नौ।
रङ्गत्तरङ्ग-शिखर-स्थित-यान-पात्रास्-
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्-व्रजन्ति।।44।।

उद्भूत-भीषण-जलोदर-भार-भुग्नाः,
शोच्यां दशामुपगताश्-च्युत-जीविताशाः।
त्वत्पाद-पङ्कज-रजोऽमृत-दिग्ध-देहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-तुल्य-रूपाः।।45।।

आपाद-कण्ठ-मुरु-शृङ्खल-वेष्टिताङ्गा,
गाढं बृहन्-निगड-कोटि-निघृष्ट-जङ्घाः।
त्वन्-नाम-मन्त्र-मनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति।।46।।

मत्त-द्विपेन्द्र-मृगराज-दवानलाहि-
सङ्ग्राम-वारिधि-महोदर-बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते।।47।।

स्तोत्र-स्रजं तव जिनेन्द्र! गुणैर्-निबद्धां,
भक्त्या मया रुचिर-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठ-गता-मजस्रं
तं मानतुङ्ग-मवशा समुपैति लक्ष्मीः।।48।।

श्री कल्याणमन्दिर-स्तोत्रम्

(वसन्ततिलका छन्द)

कल्याण-मन्दिर-मुदार-मवद्य-भेदि,
भीता-भयप्रद-मनिन्दित-मङ्घ्रि-पद्मम्।
संसार-सागर-निमज्ज-दशेष-जन्तु-
पोतायमान-मभिनम्य जिनेश्वरस्य।।1।।
यस्य स्वयं सुरगुरु-र्गरिमाम्बु-राशेः,
स्तोत्रं सुविस्तृत-मतिर्न विभु-र्विधातुम्।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मय-धूमकेतोस्-
तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये।।2।।
सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-
मस्मादृशाः कथमधीश ! भवन्त्यधीशाः।
धृष्टोऽपि कौशिक-शिशु-र्यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ?।।3।।
मोह-क्षयादनुभवन्नपि नाथ ! मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत।
कल्पान्त-वान्त-पयसः प्रकटोऽपि यस्मान्-
मीयेत केन जलधे-र्ननु रत्नराशिः ?।।4।।
अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लसदसङ्ख्य-गुणाकरस्य ?।

बालोऽपि किं न निज बाहुयुगं वितत्य।
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाऽम्बुराशेः?।।5।।
ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश,
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः?।
जाता तदेव-मसमीक्षितकारितेयं,
जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि।।6।।
आस्ता-मचिन्त्य-महिमा जिन ! संस्तवस्ते,
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति।
तीव्रातपोपहत-पान्थ-जनान्निदाघे,
प्रीणाति पद्म-सरसः सरसो-ऽनिलोऽपि।।7।।
हृद्वर्तिनि त्वयि विभो ! शिथिलीभवन्ति,
जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबन्धाः।
सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभाग-
मभ्यागते वन-शिखण्डिनि चन्दनस्य।।8।।
मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र!
रौद्रै-रुपद्रव-शतैस्-त्वयि वीक्षितेऽपि।
गोस्वामिनि स्फुरित-तेजसि दृष्टमात्रे,
चौरै-रिवाशु पशवः प्रपलायमानैः।।9।।
त्वं तारको जिन ! कथं भविनां त एव,
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः।
यद्वा दृतिस्तरति यज्जल-मेष नून-
मन्त-र्गतस्य मरुतः स किलानुभावः।।10।।

यस्मिन् हर-प्रभृतयोऽपि हत-प्रभावाः,
सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन।
विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन,
पीतं न किं तदपि दुर्धर-वाडवेन?।।11।।

स्वामिन्ननल्प-गरिमाण-मपि प्रपन्नास्
त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः?
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यति-लाघवेन,
चिन्त्यो न हन्त! महतां यदि वा प्रभावः।।12।।

क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथमं निरस्तो,
ध्वस्तास्-तदा बत कथं किल कर्मचौराः?
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके,
नील-द्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी।।13।।

त्वां योगिनो जिन ! सदा परमात्म-रूप-
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुज-कोशदेशे
पूतस्य निर्मल-रुचे-र्यदि वा किमन्य-
दक्षस्य सम्भवि-पदं ननु कर्णिकायाः।।14।।

ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविनः क्षणेन,
देहं विहाय परमात्म-दशां व्रजन्ति।
तीव्रानलादुपल-भाव-मपास्य लोके,
चामीकरत्व-मचिरादिव धातुभेदाः।।15।।

अन्तः सदैव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्वं,
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम्।

एतत्स्वरूपमथ मध्य-विवर्तिनो हि,
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः।।16।।
आत्मा मनीषिभि-रयं त्वदभेद-बुद्ध्या,
ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभावः।
पानीय-मप्यमृत-मित्यनुचिन्त्यमानं,
किं नाम नो विष-विकार-मपाकरोति।।17।।
त्वामेव वीत-तमसं परवादिनोऽपि,
नूनं विभो ! हरिहरादि-धिया प्रपन्नाः।
किं काच-कामलिभिरीश ! सितोऽपि शङ्खो,
नो गृह्यते विविध-वर्ण-विपर्ययेण।।18।।
धर्मोपदेश-समये सविधानुभावा-
दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि,
किं वा विबोध-मुपयाति न जीवलोकः।।19।।
चित्रं विभो ! कथमवाङ्मुखवृन्तमेव,
विष्वक्-पतत्य-विरला सुर-पुष्पवृष्टिः ?
त्वद् गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !
गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि।।20।।
स्थाने गभीर-हृदयोदधि-सम्भवायाः,
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति।
पीत्वा यतः परमसम्मद-सङ्गभाजो,
भव्या व्रजन्ति तरसाऽप्य-जरामरत्वम्।।21।।

स्वामिन् ! सुदूर-मवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्ये वदन्ति शुचयः सुर-चामरौघाः।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनि-पुङ्गवाय,
ते नून-मूर्ध्व-गतयः खलु शुद्धभावाः।।22।।
श्यामं गभीर-गिर-मुज्ज्वल-हेमरत्न-
सिंहासनस्थमिह भव्य-शिखण्डिन-स्त्वाम्।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चैश्-
चामीकराद्रि-शिरसीव नवाम्बु-वाहम्।।23।।
उद्-गच्छता तव शिति-द्युति मण्डलेन,
लुप्त-च्छद-च्छविरशोक-तरुर्बभूव।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग !,
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि।।24।।
भो भोः ! प्रमादमवधूय भजध्वमेन-
मागत्य निर्वृति-पुरीं प्रति सार्थवाहम्।
एतन्निवेदयति देव ! जगत्त्रयाय,
मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते।।25।।
उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ !
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः।
मुक्ता-कलाप-कलितोच्छ्वसितातपत्र-
व्याजात्-त्रिधा धृत-तनु-र्ध्रुव-मभ्युपेतः।।26।।
स्वेन प्रपूरित-जगत्-त्रिय-पिण्डितेन,
कान्ति-प्रताप-यशसा-मिव सञ्चयेन।

माणिक्य-हेम-रजत-प्रविनिर्मितेन,
साल-त्रयेण भगवन्नभितो विभासि।।27।।
दिव्यस्रजो जिन ! नमत्-त्रिदशाधिपाना-
मुत्सृज्य रत्न-रचितानपि मौलि-बन्धान्।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र,
त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव।।28।।
त्वं नाथ ! जन्म-जलधे-र्विपराङ्मुखोऽपि,
यत्तारयस्यसुमतो निज-पृष्ठ-लग्नान्।
युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव,
चित्रं विभो ! यदसि कर्मविपाक-शून्यः।।29।।
विश्वेश्वरोऽपि जनपालक ! दुर्गतस्त्वं,
किं वाक्षर-प्रकृतिरप्य-लिपिस्त्वमीश !।
अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्व-विकासहेतुः।।30।।
प्राग्भार-सम्भृत-नभांसि रजांसि रोषा-
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि।
छायापि तैस्तव न नाथ ! हता हताशो,
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा।।31।।
यद्-गर्जदूर्जित-घनौघ-मदभ्र-भीमं,
भ्रश्यत्-तडिन्-मुसल-मांसल-घोर-धारम्।
दैत्यैन मुक्त-मथ दुस्तर-वारि दध्रे,
तेनैव तस्य जिन ! दुस्तर-वारि-कृत्यम्।।32।।

ध्वस्तोर्ध्व-केश-विकृताकृति-मर्त्यमुण्ड-
प्रालम्ब-भृद्-भयद-वक्त्र-विनिर्यदग्निः।
प्रेतव्रजः प्रतिभवन्तमपीरितो यः,
सोऽस्याऽभवत् प्रतिभवं भव-दुःख-हेतुः।।33।।

धन्यास्त एव भुवनाधिप ! ये त्रिसन्ध्य-
माराधयन्ति विधिवद्-विधुतान्य-कृत्याः।
भक्त्योल्लसत्-पुलक-पक्ष्मल-देहदेशाः!
पाद-द्वयं तव विभो ! भुवि जन्मभाजः।।34।।

अस्मिन्नपार-भव-वारिनिधौ मुनीश !,
मन्ये न मे श्रवण-गोचरतां गतोऽसि।
आकर्णिते तु तव गोत्र-पवित्र-मन्त्रे,
किं वा विपद्-विषधरी सविधं समेति?।।35।।

जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव !,
मन्ये मया महित-मीहित-दान-दक्षम्।
तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवानां,
जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम्।।36।।

नूनं न मोह-तिमिरावृत-लोचनेन,
पूर्वं विभो ! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि।
मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः
प्रोद्यत्-प्रबन्ध-गतयः कथमन्यथैते?।।37।।

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।

जातोऽस्मि तेन जन-बान्धव ! दुःखपात्रं,
यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः।।38।।
त्वं नाथ ! दुःखिजनवत्सल ! हे शरण्य !,
कारुण्य-पुण्य-वसते ! वशिनां वरेण्य !।
भक्त्या नते मयि महेश ! दयां विधाय,
दुःखाङ्कुरोद्दलन-तत्परतां विधेहि।।39।।
निःसख्य-सार-शरणं शरणं शरण्य-
मासाद्य सादित-रिपु-प्रथितावदातम्।
त्वत्पाद-पङ्कजमपि प्रणिधान-वन्ध्यो,
वध्योऽस्मि चेद् भुवन-पावन ! हा हतोऽस्मि।।40।।
देवेन्द्र-वन्द्य ! विदिताखिल-वस्तुसार !,
संसार-तारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ !।
त्रायस्व देव ! करुणाह्रद ! मां पुनीहि,
सीदन्त-मद्य भयद-व्यसनाम्बु-राशेः।।41।।
यद्यस्ति नाथ ! भवदङ्घ्रि-सरोरुहाणां,
भक्तेः फलं किमपि सन्तत-सञ्चितायाः।
तन्मे त्वदेक-शरणस्य शरण्य ! भूयाः,
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि।।42।।
इत्थं समाहित-धियो विधिवज्जिनेन्द्र!
सान्द्रोल्लसत्-पुलक-कञ्चुकिताङ्गभागाः।
त्वद्-बिम्ब-निर्मल-मुखाम्बुज-बद्धलक्ष्या,

ये संस्तवं तव विभो ! रचयन्ति भव्याः।।43।।

जननयन-कुमुदचन्द्र-प्रभास्वरा स्वर्गसंपदो भुक्त्वा।

ते विगलित-मल-निचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते।।44।।

रत्नाकर-पञ्चविंशतिः

(श्री रत्नाकर-सूरिकृतः)

श्रेयः श्रियां मङ्गल-केलि-सद्म!, नरेन्द्र-देवेन्द्र-नताङ्घ्रि-पद्म!
सर्वज्ञ! सर्वातिशय-प्रधान!, चिरञ्जय! ज्ञान-कलानिधान!।।1।।
जगत्त्रयाधार! कृपावतार!, दुर्वार-संसार-विकार-वैद्य!।
श्रीवीतराग! त्वयि मुग्धभावाद्-विज्ञ प्रभो! विज्ञपयामि किञ्चित्।।2।।
किं बाललीला-कलितो न बालः, पित्रोः पुरो जल्पति निर्विकल्पः।
तथा यथार्थं कथयामि नाथ!, निजाशयं सानुशय-स्तवाग्रे।।3।।
दत्तं न दानं परिशीलितं च, न शालि शीलं न तपोऽभितप्तम्।
शुभो न भावोऽप्यभवद् भवेऽस्मिन्, विभो मया भ्रान्तमहो मुधैव।।4।।
दग्धोऽग्निना क्रोध-मयेन दष्टो, दुष्टेन लोभाख्य-महोरगेण।
ग्रस्तोऽभिमानाजगरेण माया-जालेन बद्धोऽस्मि कथं भजे त्वाम्।।5।।
कृतं मयाऽमुत्र हितं न चेह, लोकेऽपि लोकेश! सुखं न मेऽभूत्।
अस्मादृशां केवलमेव जन्म, जिनेश ! जज्ञे भवपूरणाय।।6।।
मन्ये मनो यन्न मनोज्ञवृत्त !, त्वदास्य-पीयूष-मयूख-लाभात्।
द्रुतं महाऽऽनन्द-रसं कठोर-मस्मादृशां देव! तदश्मतोऽपि।।7।।

त्वत्तः सुदुष्प्राप्य-मिदं मयाऽऽप्तं, रत्नत्रयं भूरि-भवभ्रमेण।
प्रमाद-निद्रा-वशतो गतं तत्, कस्याऽग्रतो नायक! पुत्करोमि।।8।।
वैराग्यरङ्गः परवञ्चनाय, धर्मोपदेशो जनरञ्जनाय।
वादाय विद्याऽध्ययनं च मेऽभूत्, कियद् ब्रुवे हास्यकरं स्वमीश!।।9।।
परापवादेन मुखं सदोषं, नेत्रं परस्त्रीजन-वीक्षणेन।
चेतः परापाय-विचिन्तनेन, कृतं भविष्यामि कथं विभोऽहं।।10।।
विडम्बितं यत्स्मर-घस्मरार्ति-दशा-वशात्स्वं विषयान्धलेन।
प्रकाशितं तद् भवतो ह्रियैव, सर्वज्ञ ! सर्वं स्वयमेव वेत्सि।।11।।
ध्वस्तोऽन्य-मन्त्रैः परमेष्ठि-मन्त्रः कुशास्त्रवाक्यै-र्निहतागमोक्तिः।
कर्तुं वृथा कर्म कुदेव-सङ्गादवाञ्छि हि... नाथ ! मतिभ्रमो मे।।12।।
विमुच्य दृग्लक्ष्यगतं भवन्तं, ध्याता मया मूढधिया हृदन्तः।
कटाक्ष-वक्षोज-गभीर-नाभि-कटी-तटीयाः सुदृशां विलासाः।।13।।
लोलेक्षणा-वक्त्र-निरीक्षणेन, यो मानसे राग-लवो विलग्नः।
न शुद्धसिद्धान्त-पयोधि-मध्ये, धौतोप्यगात्-तारक! कारणं किं।।14।।
अङ्गं न चङ्गं न गणो गुणानां, न निर्मलः कोऽपि कलाविलासः।
स्फुरत्प्रभा न प्रभुता च कापि, तथाप्यहङ्कार-कदर्थितोऽहं।।15।।
आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धि-र्गतं वयो नो विषयाभिलाषः।
यत्नश्च भैषज्यविधौ न धर्मे स्वामिन् ! महामोह-विडम्बना मे।।16।।
नात्मा न पुण्यं न भवो न पापं, मया विटानां कटुगीरपीयं।
अधारि कर्णे त्वयि केवलार्के, परिस्फुटे सत्यपि देव धिग्माम्।।17।।

न देवपूजा न च पात्रपूजा, न श्राद्धधर्मश्च न साधुधर्मः।
लब्ध्वापि मानुष्यमिदं समस्तं, कृतं मयाऽरण्य-विलाप-तुल्यं।।18।।
चक्रे मया सत्स्वऽपि कामधेनु-कल्पद्रु चिन्तामणिषु स्पृहार्त्तिः।
न जैनधर्मे स्फुट-शर्मदेऽपि, जिनेश ! मे पश्य विमूढभावं।।19।।
सद्भोग-लीला न च रोगकीला, धनागमो नो निधनागमश्च।
दारा न कारा नरकस्य चित्ते, व्यचिन्ति नित्यं मयकाऽधमेन।।20।।
स्थितं न साधो-र्हृदि साधुवृत्तात्, परोपकारान्न यशोऽर्जितं च।
कृतं न तीर्थोद्धरणादि-कृत्यं, मया मुधा हारितमेव जन्म।।21।।
वैराग्यरङ्गो न गुरूदितेषु, न दुर्जनानां वचनेषु शान्तिः।
नाध्यात्मलेशो मम कोऽपिदेव, तार्यः कथङ्कारमयम्भवाब्धिः।।22।।
पूर्वे भवेऽकारि मया न पुण्य-मागामिजन्मन्यपि नो करिष्ये।
यदीदृशोऽहं मम तेन नष्टा, भूतोद्भवद्-भावि-भवत्रयीश!।।23।।
किं वा मुधाऽहं बहुधा सुधाभुक्, पूज्य! त्वदग्रे चरितं स्वकीयं।
जल्पामि यस्मात् त्रिजगत्स्वरूप-निरूपकस्त्वं कियदेतदत्र।।24।।
दीनोद्धार-धुरन्धर-स्त्वदपरो ! नास्ते मदन्यः कृपा।
पात्रं नात्र जने जिनेश्वर! तथाऽप्येतां न याचे श्रियं।
किं त्वर्हन्निदमेव केवलमहो सद्बोधिरत्नं शिवं।
श्रीरत्नाकर-मंगलैक निलय ! श्रेयस्करं प्रार्थये।।25।।

श्री चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तोत्रम्

किं कर्पूर-मयं सुधा-रसमयं, किं चन्द्र-रोचिर्र्मयं,
किं लावण्य-मयं महा-मणिमयं, कारुण्य-केलि-र्मयंम्।
विश्वानन्द-मयं महोदय-मयं, शोभा-मयं चिन्मयं,
शुक्ल-ध्यानमयं वपु-र्जिनपते-र्भूयाद्-भवालम्बनम्।।1।।

पातालं कलयन् धरां धवलयन्-नाकाश-मापूरयन्,
दिक्-चक्रं क्रमयन् सुरासुर-नर-श्रेणिं च विस्मापयन्।
ब्रह्माण्डं सुखयन् जलानि जलधेः, फेनच्छलाल्लोलयन्,
श्री-चिन्तामणि-पार्श्व-सम्भव-यशो-हंसश्चिरं राजते।।2।।

पुण्यानां विपणिस्तमो-दिनमणिः, कामेभकुम्भे सृणिः,
मोक्षे निस्सरणिः सुरेन्द्र-करिणी, ज्योतिःप्रकाशारणिः।
दाने देव-मणिर्-नतोत्तम-जन-श्रेणिः कृपा-सारिणी,
विश्वानन्द-सुधा-घृणिर्-भव-भिदे, श्री पार्श्व-चिन्तामणिः।।3।।

श्री-चिन्तामणि-पार्श्व ! विश्व-जनता-सञ्जीवनस्त्वं मया,
दृष्टस्तात! ततः श्रियः समभवन्नाशक्रमा-चक्रिणम्।
मुक्तिः क्रीडति हस्तयो-र्बहुविधं, सिद्धं मनोवाञ्छितं,
दुर्दैवं दुरितं च दुर्दिनभयं, कष्टं प्रणष्टं मम।।4।।

यस्य प्रौढतम-प्रताप-तपनः, प्रोद्दाम-धामा-जगज्-
जङ्घालः कलिकाल-केलि-दलनो, मोहान्ध-विध्वंसकः।

1-8 = शार्दूलविक्रीडित

नित्योद्योत-पदं समस्त-कमला-केलि-गृहं राजते,
सश्री-पार्श्वजिनो जने हितकरश्चिन्तामणिः पातु माम्।।5।।

विश्व-व्यापि-तमो हिनस्ति तरणिर्बालोऽपि कल्पाङ्कुरो,
दारिद्राणि गजावलीं हरि-शिशुः, काष्ठानि वह्नेः कणः।
पीयूषस्य लवोऽपि रोग-निवहं, यद्-वत्-तथा ते विभो,
मूर्तिः स्फूर्ति-मती सती त्रिजगतीकष्टानि हर्तुं क्षमा।।6।।

श्री चिन्तामणि-मन्त्र-मोङ्कृति-युतं, ह्रीङ्कारसाराश्रितं,
श्रीमर्हन्-नमिऊण-पास-कलितं, त्रैलोक्यवश्यावहम्।
द्वेधाभूत-विषापहं विसहरं, श्रेयः प्रभावाश्रयं,
सोल्लासं-वसहाङ्कितं जिण फुल्लिङ्गा-नन्ददं देहिनाम्।।7।।

ह्रींश्रीङ्कारवरं नमोक्षरपरं, ध्यायन्ति ये योगिनो-
हृत्-पद्मे विनिवेश्य पार्श्वमधिपं, चिन्तामणि-संज्ञकम्।
भाले वामभुजे च नाभि- करयोभूयो भुजे दक्षिणे,
पश्चादष्टदलेषु ते शिवपदं, द्वित्रैर्-भवैर्यान्त्यहो।।8।।

नो रोगा, नैव शोका, न कलह-कलना, नारि-मारि-प्रचारा,
नैवाधिर्नासमाधिर्न च दर-दुरिते, दुष्ट-दारिद्रता नो।
नो शाकिन्यो ग्रहा नो, न हरि-करि-गणा, व्यालवैतालजाला
जायन्ते पार्श्व-चिन्तामणि-नति-वशतः, प्राणिनां भक्ति-भाजाम्।।9।।

गीर्वाण-द्रुम-धेनु-कुम्भमणयस्तस्याङ्गणे रिङ्गिणो,
देवा दानवमानवाः सविनयं, तस्मै हितध्यायिनः।

9 = स्रग्धरा, 10 = शार्दूलविक्रीडित

लक्ष्मीस्तस्य वशाऽवशेव गुणिनां, ब्रह्माण्डसंस्थायिनी,
श्री-चिन्तामणि-पार्श्वनाथमनिशं, संस्तौति यो ध्यायति।।10।।

इति जिनपति-पार्श्वः पार्श्व-पार्श्वाख्य-यक्षः,
प्रदलित-दुरितौघः प्रीणित-प्राणि-सार्थः।
त्रिभुवन-जनवाञ्छा-दान-चिन्तामणिकः,
शिव-पद-तरुबीजं, बोधि-बीजं ददातु।।11।।

श्रीअमितगतिसूरिविरचिता
भावनाद्वात्रिंशतिका

सत्त्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं, क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम्।
माध्यस्थ्यभावं विपरीतवृत्तौ, सदा ममात्मा विदधातु देव!।।1।।
शरीरतः कर्त्तुमनन्तशक्तिं, विभिन्नमात्मानमपास्तदोषम्।
जिनेन्द्र! कोषादिव खड्गयष्टिं तव प्रसादेन ममास्तु शक्तिः।।2।।
दुःखे सुखे वैरिणि बन्धुवर्गे, योगे वियोगे भुवने वने वा।
निराकृताशेषममत्वबुद्धे!, समं मनो मेऽस्तु सदाऽपि नाथ।।3।।
मुनीश! लीनाविव कीलिताविव, स्थिरौ निखाताविव बिम्बिताविव।
पादौ त्वदीयौ मम तिष्ठतां सदा, तमो धुनानौ हृदि दीपकाविव।।4।।
एकेन्द्रियाद्या यदि देव! देहिनः, प्रमादतः संचरता इतस्ततः।
क्षता विभिन्ना मिलिता निपीडिताः, तदस्तु मिथ्या दुरनुष्ठितं तदा।।5।।
विमुक्तिमार्गप्रतिकूलवर्तिना, मया कषायाक्षवशेन दुर्धिया।
चारित्रशुद्धेर्यदकारि लोपनं, तदस्तु मिथ्या मम दुष्कृतं प्रभो!।।6।।

11= मालिनी भावनाद्वात्रिंशिका-1

विनिन्दनालोचनगर्हणैरहं, मनोवचःकायकषायनिर्मितम्।
निहन्मि पापं भवदुःखकारणं, भिषग् विषं मन्त्रगुणैरिवाखिलम्।।7।।
अतिक्रमं यं विमतेर्व्यतिक्रमं, जिनातिचारं सुचरित्रकर्मणः।
व्यधामनाचारमपि प्रमादतः, प्रतिक्रमं तस्य करोमि शुद्धये।।8।।
क्षतिं मनःशुद्धिविधेरतिक्रमं, व्यतिक्रमं शीलवृतेर्विलङ्घनम्।
प्रभोऽतिचारं विषयेषु वर्तनं, वदन्त्यनाचारमिहातिसक्तताम्।।9।।
यदर्थमात्रापदवाक्यहीनं, मया प्रमादाद्यदि किञ्चनोक्तम्।
तन्मे क्षमित्वा विदधातु देवी, सरस्वती केवलबोधलब्धिम्।।10।।
बोधिः समाधिः परिणामशुद्धिः, स्वात्मोपलब्धिः शिवसौख्यसिद्धिः।
चिन्तामणिश्चिन्तित-वस्तु-दाने, त्वां वन्द्यमानस्य ममास्तु देवि!।।11।।
यः स्मर्यते सर्वमुनीन्द्र-वृन्दैर्-यः स्तूयते सर्वनरामरेन्द्रैः।
यो गीयते वेद-पुराण-शास्त्रैः स देवदेवो हृदये ममास्ताम्।।12।।
यो दर्शन-ज्ञान-सुख-स्वभावः, समस्तसंसार-विकार-बाह्यः।
समाधिगम्यः परमात्म-संज्ञः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम्।।13।।
निषूदते यो भवदुःख-जालं, निरीक्षते यो जगदन्तरालम्।
योऽन्तर्गतो योगिनिरीक्षणीयः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम्।।14।।
विमुक्ति-मार्ग-प्रतिपादको यो, यो जन्ममृत्यु-व्यसनाद् व्यतीतः।
त्रिलोकलोकी विकलोऽकलङ्कः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम्।।15।।
क्रोडीकृताशेषशरीरि-वर्गाः, रागादयो यस्य न सन्ति दोषाः।
निरिन्द्रियो ज्ञानमयोऽनपायः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम्।।16।।
यो व्यापको विश्वजनीनवृत्तिः, सिद्धो विबुद्धो धुत-कर्मबन्धः।
ध्यातो धुनीते सकलं विकारं, स देवदेवो हृदये ममास्ताम्।।17।।

न स्पृश्यते कर्मकलङ्कदोषैर्, यो ध्वान्तसङ्घैरिव तिग्मरश्मिः।
निरञ्जनं नित्यमनेकमेकं, तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये।।18।।
विभासते यत्र मरीचिमालिन्यविद्यमाने भुवनावभासि।
स्वात्मस्थितं बोधमयप्रकाशं, तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये।।19।।
विलोक्यमाने सति यत्र विश्वं, विलोक्यते स्पष्टमिदं विविक्तम्।
शुद्धं शिवं शान्तमनाद्यनन्तं, तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये।।20।।
येन क्षता मन्मथ-मान-मूर्च्छा-विषाद-निद्रा-भय-शोक-चिन्ताः।
क्षय्योऽनलेनेव तरु-प्रपञ्चस्-तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये।।21।।
न संस्तरोऽश्मा न तृणं न मेदिनी, विधानतो नो फलको विनिर्मितः।
यतो निरस्ताक्षकषाय-विद्विषः, सुधीभिरात्मैव सुनिर्मलो मतः।।22।।
न संस्तरो भद्र! समाधिसाधनं, न लोकपूजा न च सङ्घमेलनम्।
यतस्ततोऽध्यात्मरतो भवानिशं, विमुच्य सर्वामपि बाह्यवासनाम्।।23।।
न सन्ति बाह्या मम केचनार्थाः, भवामि तेषां न कदाचनाहम्।
इत्थं विनिश्चित्य विमुच्य बाह्यं, स्वस्थः सदा त्वं भव भद्र! मुक्त्यै।।24।।
आत्मानमात्मन्यवलोक्यमानस्-त्वं दर्शन-ज्ञानमयो विशुद्धः।
एकाग्रचित्तः खलु यत्र तत्र, स्थितोऽपि साधुर्लभते समाधिम्।।25।।
एकः सदा शाश्वतिको ममात्मा, विनिर्मलः साधिगमस्वभावः।
बहिर्भवाः सन्त्यपरे समस्ताः, न शाश्वताः कर्मभवाः स्वकीयाः।।26।।
यस्यास्ति नैक्यं वपुषाऽपि सार्द्धं, तस्यास्ति किं पुत्र-कलत्र-मित्रैः ?
पृथक्कृते चर्मणि रोमकूपाः, कुतो हि तिष्ठन्ति शरीरमध्ये।।27।।
संयोगतो दुःखमनेकभेदं, यतोऽश्नुते जन्मवने शरीरी।
ततस्त्रिधाऽसौ परिवर्जनीयो, यियासुना निर्वृतिमात्मनीनाम्।।28।।

सर्वं निराकृत्य विकल्पजालं, संसार-कान्तार-निपातहेतुम्।
विविक्तमात्मानमवेक्ष्यमाणो, निलीयसे त्वं परमात्म-तत्त्वे।।29।।
स्वयं कृतं कर्म यदात्मना पुरा, फलं तदीयं लभते शुभाशुभम्।
परेण दत्तं यदि लभ्यते स्फुटं, स्वयंकृतं कर्म निरर्थकं तदा।।30।।
निजार्जितं कर्म विहाय देहिनो, न कोऽपि कस्यापि ददाति किञ्चन।
विचारयन्नेवमनन्य-मानसः, परो ददातीति विमुञ्च शेमुषीम्।।31।।
यैः परमात्माऽमितगतिवन्द्यः, सर्व-विविक्तो भृशमनवद्यः।
शश्वदधीतो मनसि लभन्ते, मुक्तिनिकेतं विभववरं ते।।32।।

* * *

उपसर्गहर-स्तोत्रम्

(आचार्य भद्रबाहुस्वामीकृत)

(गाथा-आयां छन्द)

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्म-घण-मुक्कं।
विसहर-विस-निन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं।।1।।

विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ।
तस्स गह-रोग-मारी-दुट्ठ-जरा जंति उवसामं।।2।।

चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ।
नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोहग्गं।।3।।

तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कप्पायवब्भहिए।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं।।4।।

इअ संथुओ महायस, भत्तिब्भर-निब्भरेण हियएण।
ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास! जिणचंद!।।5।।

लघु-साधु वन्दना

(मुनि आसकरण जी कृत)

साधुजी ने वंदना नित नित कीजे,
प्रात: उगंते सूर रे प्राणी।
नीच गति मां ते नहीं जावे,
पावे ऋद्धि भरपूर रे प्राणी ।।साधु.।।1।।

मोटा ते पंच महाव्रत पाले,
छह काया रा प्रतिपाल रे प्राणी।
भ्रमर भिक्षा मुनि सूझती लेवे,
दोष बियालीस टाल रे प्राणी।साधु.।।2।।

ऋद्धि सम्पदा मुनि कारमी जाणी,
दीधी संसार ने पूठ रे प्राणी।
एवा पुरुषां री सेवा करता, आठ करम जाय टूट रे प्राणी।साधु.।।3।।
एक एक मुनिवर रसना त्यागी, एक एक ज्ञान भण्डार रे प्राणी।
एक एक मुनिवर वैयावच वैरागी, जेना गुणानो नावे पार रे प्राणी।साधु.।।4।।
गुण सत्तावीस करीने दीपे, जीत्या परीसह बावीस रे प्राणी।
बावन तो अनाचार जो टाले, तेने नमावुं मारूँ शीश रे प्राणी।साधु.।।5।।
जहाज समान ते संत मुनीश्वर, भव्य जीव बैठे आय रे प्राणी।

पर उपकारी मुनि दाम न मांगे, देवे मुक्ति पहुंचाय रे प्राणी।साधु.।।6।।
इण चरणे जीव साता पावे, पावे ते लीलविलास रे प्राणी।
जन्म जरा ने मरण मिटावे, नावे फरी गर्भावास रे प्राणी।साधु.।।7।।
एक वचन श्री सतगुरु केरो, जो पैठे दिल मांय रे प्राणी।
नरक निगोद माँ ते नहीं जावे, एम कहे जिनराय रे प्राणी।साधु.।।8।।
प्रातः उठी ने उत्तम प्राणी, सुणे साधुजी रो व्याख्यान रे प्राणी।
एहवा पुरुषां री सेवा करताँ, पावे अमर विमान रे प्राणी।साधु.।।9।।
संवत अठार ने वर्ष अड़तीसे, बूसी गाँव चौमास रे प्राणी।
मुनि आसकरणजी इण पर जंपे, हूं तो उत्तम साधाँ रो दास रे प्राणी।
साधु.।।10।।

बड़ी-साधु वन्दना

(आचार्य श्री जयमलजी कृत)

नमूँ अनन्त चौबीसी, ऋषभादिक महावीर।
आरज क्षेत्रमाँ, घाली धर्म नी सीर।।1।।
महा अतुल बली नर, शूर वीर ने धीर।
तीरथ प्रवर्तावी, पहुंच्या भवजल तीर।।2।।
सीमंधर प्रमुख, जघन्य तीर्थंकर बीश।
छे अढी द्वीप मां, जयवंता जगदीश।।3।।
एक सौ ने सित्तर, उत्कृष्ट पदे जगीश।
धन्य मोटा प्रभुजी, तेह ने नमाऊँ शीश।।4।।

केवली दोय कोडी, उत्कृष्टा नव कोड़।
मुनि दोय सहस्त्र कोडी, उत्कृष्टा नव सहस्त्र कोड़।।5।।
विचरे विदेह में, मोटा तपसी घोर।
भावे करी वन्दूं, टाले भवनी खोड।।6।।
चौबीसे जिनना, सघला ही गणधार।
चौदह सौ ने बावन, ते प्रणमूं सुखकार।।7।।
जिनशासन नायक, धन्य श्री वीर जिनंद।
गौतमादिक गणधर, वर्तायो आनन्द।।8।।
श्री ऋषभदेव ना, भरतादिक सौ पूत।
वैराग्य मन आणी, संयम लियो अद्भूत।।9।।
केवल उपजाव्यूं, कर करणी करतूत।
जिनमत दीपावी, सघला मोक्ष पहूँत।।10।।
श्री भरतेश्वर ना, हुआ पटोधर आठ।
आदित्य जशादिक, पहुंच्या शिवपुर वाट।।11।।
श्री जिन अंतर ना, हुआ पाट असंख्य।
मुनि मुक्ति पहुंच्या, टाली कर्म नो वंक।।12।।
धन्य कपिल मुनिवर, नमि नमूं अणगार।
जेणे तत्क्षण त्याग्यो, सहस्त्र रमणी परिवार।।13।।
मुनिवर हरिकेशी, चित्त मुनिश्वर सार।
शुद्ध संयम पाली, पाम्या भव नो पार।।14।।
वली इक्षुकार राजा, घर कमलावती नार।
भग्गू ने जशा, तेहना दोय कुमार।।15।।

छये छति ऋद्धि छांडी ने लीधो संयम भार।
इण अल्पकाल माँ, पाम्या मोक्ष द्वार।।16।।

वलि संयति राजा, हिरण आहिड़े जाय।
मुनिवर गर्दभाली, आण्यो मारग ठाय।।17।।

चारित्र लईने, भेट्या गुरुना पाय।
क्षत्रिराज ऋषीश्वर, चर्चा करी चित्तलाय।।18।।

वलि दशे चक्रवर्ती, राज्य रमणी ऋद्धि छोड़।
दशे मुक्ति पहुँच्या, कुल ने शोभा चहोड़।।19।।

इण अवसर्पिणी माँ, आठ राम गया मोक्ष।
बलभद्र मुनीश्वर, गया पंचमे देवलोक।।20।।

दशार्णभद्र राजा, वीर वाँद्या धरी मान।
पछि इन्द्र हटायो, दियो छह काय अभयदान।।21।।

करकण्डू प्रमुख, चारे प्रत्येक बुद्ध।
मुनि मुक्ति पहुंच्या, जीत्या कर्म महाजुद्ध।।22।।

धन्य मोटा मुनिवर, मृगापुत्र जगीश।
मुनिवर अनाथी, जीत्या राग ने रीश।।23।।

वलि समुद्रपाल मुनि, राजमति रहनेम।
केशी ने गौतम पाम्या शिवपुर क्षेम।।24।।

धन्य विजयघोष मुनि, जयघोष वलि जाण।
श्री गर्गाचार्य पहुंच्या छे निर्वाण।।25।।

श्री उत्तराध्ययन माँ, जिनवर कर्या बखाण।
शुद्ध मन से ध्यावो, मन में धीरज आण।।26।।

वलि खंदक सन्यासी, राख्यों गौतम स्नेह।
महावीर समीपे, पंच महाव्रत लेह।।27।।
तप कठिन करीने, झोंसी आपणी देह।
गया अच्युत देवलोके, चवि लेसे भव-छेह।।28।।
वलि ऋषभदत्त मुनि, सेठ सुदर्शन सार।
शिवराज ऋषीश्वर, धन्य गांगेय अणगार।।29।।
शुद्ध संयम पाली, पाम्या केवल सार।
ये चारे मुनिवर, पहुंच्या मोक्ष मँझार।।30।।
भगवन्त नी माता, धन धन सती देवानन्दा।
वलि सती जयन्ती, छोड़ दिया घर फंदा।।31।।
सती मुक्ति पहुंच्या, वलि ते वीरनी नंद।
महासती सुदर्शना, घणी सतियों ना वृन्द।।32।।
वलि कार्तिक सेठे, पड़िमा वही शूरवीर।
जीम्यो मोरा-ऊपर, तापस बलती खीर।।33।।
पछी चारित्र लीधू, मित्र एक सहस्त्र आठ धीर।
मरी हुआ शक्रेन्द्र, चवि लेसे भव तीर।।34।।
वलि राय उदायन, दियो भाणेज ने राज।
पछी चारित्र लेइने, सार्या आतम काज।।35।।
गंगदत्त मुनि आनन्द, तिरण तारण री जहाज।
कौशल मुनि रोहा, दियो घणां ने साज।।36।।
धन्य सुनक्षत्र मुनिवर, सर्वानुभूति अनगार।
आराधक होइ ने, गया देवलोक मंझार।।37।।

चवी मुक्ति जासे, वलि सिंह मुनीश्वर सार।
बीजा पण मुनिवर, भगवती माँ अधिकार।।38।।

श्रेणिक ना बेटा, मोटा मुनिवर मेघ।
तजी आठ अन्तेउरी, आण्यो मन संवेग।।39।।

वीर पे व्रत लइने, बांधी तप नी तेग।
गया विजय विमाने, चवी लेसे शिव वेग।।40।।

धन्य थावच्चापुत्र, तजी बत्तीसे नार।
तेनी साथे निकल्या, पुरुष एक हजार।।41।।

शुकदेव सन्यासी, एक सहस्त्र शिष्य लार।
पंचशय सुं शैलक, लीधो संजम भार।।42।।

सब सहस्त्र अढाई, घणा जीवों ने तार।
पुंडरिक गिरि ऊपर, कियो पादुपोपगमन संथार।।43।।

आराधक हुई ने, कीधो खेवो पार।
हुआ मोटा मुनिवर, नाम लियां निस्तार।।44।।

धन्य जिनपाल मुनिवर, दोय धन्ना हुआ साध।
गया प्रथम देवलोके, मोक्ष जासे आराध।।45।।

मल्लिनाथ ना छह मित्र, महाबल प्रमुख मुनिराय।
सर्वे मुक्ति सिधाव्या, मोटी पदवी पाय।।46।।

वलि जितशत्रु राजा, सुबुद्धि नामे प्रधान।
पोते चारित्र लईने, पाम्या मोक्ष निधान।।47।।

धन्य तेतली मुनिवर, दियो छकाय अभयदान।
पोटिला प्रतिबोध्या, पाम्या केवलज्ञान।।48।।

धन्य पाँचे पांडव, तजी द्रोपदी नार।
थेवरांनी पासे, लीधो संयम भार।।49।।
श्री नेमि वन्दन नो, एहवो अभिग्रह कीध।
मास-मास खमण तप, शत्रुंजय जई सिद्ध।।50।।
धर्मघोष तणा शिष्य, धर्मरुचि अणगार।
कीडियों नी करुणा, आणी दया अपार।।51।।
कड़वा तुंबा नो, कीधो सगलो आहार।
सर्वार्थ सिद्ध पहुँच्या, चवी लीधो भवपार।।52।।
वलि पुंडरीक राजा, कंडरीक डिगियो जाण।
पोते चारित्र लईने, न घाली धर्म माँ हाण।।53।।
सर्वार्थ सिद्ध पहुंच्या, चवी लेसे निर्वाण।
श्री ज्ञातासूत्र माँ, जिनवर कर्या वखाण।।54।।
गौतमादिक कुंवर, सगा अठारह भ्रात।
सर्व अंधकवृष्णि सुत, धारिणी ज्यांरी मात।।55।।
तजी आठ अन्तेउर, काढ़ी दीक्षा नी बात।
चारित्र लईने, कीधो मुक्ति नो साथ।।56।।
श्री अनीकसेनादिक, छये सहोदर भाय।
वसुदेव ना नन्दन, देवकी ज्यांरी माय।।57।।
भद्दिलपुर नगरी, नाग गाहावई जाण।
सुलसा घर वधिया, सांभली नेमि नी वाण।।58।।
तजी बत्तीस बत्तीस अन्तेउर, निकलिया छिटकाय।
नल कूब्बर समाणा, भेट्या श्री नेमि ना पाय।।59।।

करी छठ छठ पारणा, मन में वैराग्य लाय।
एक मास संथारे, मुक्ति विराज्या जाय।।60।।

वली दारुक सारण, सुमुख दुमुख मुनिराय।
कुँवर अनादृष्टि, गया मुक्तिगढ़ मांय।।61।।

वसुदेवना नन्दन, धन्य धन्य गजसुकुमाल।
रूपे अति सुन्दर, कलावन्त वय बाल।।62।।

श्री नेमि समीपे, छोड्यो मोह जंजाल।
भिक्षु नी पडिमा, गया मसाण महाकाल।।63।।

देखी सोमिल कोप्यो, मस्तक बांधी पाल।
खेराना खीरा, शिर ठविया असराल।।64।।

मुनि नजर न खंडी, मेटी मननी झाल।
परीषह सहीने, मुक्ति गया तत्काल।।65।।

धन्य जाली मयाली, उवयालादिक साध।
शाम्ब ने प्रद्युम्न, अनिरुद्ध साधु अगाध।।66।।

वलि सत्यनेमि दृढ़नेमि, करणी कीधी निर्बाध।
दशे मुक्ति पहुंच्या, जिनवर वचन आराध।।67।।

धन्य अर्जुनमाली, कियो कदाग्रह दूर।
वीर पै व्रत लेईने, सत्यवादी हुआ शूर।।68।।

करी छठ छठ पारणा, क्षमा करी भरपूर।
छह मासा मांही, कर्म किया चकचूर।।69।।

कुँवर अहमुत्ते, दीठा गौतम स्वाम।
सुणी वीर नी वाणी, कीधो उत्तम काम।।70।।

चारित्र लईने, पहुंच्या शिवपुर ठाम।
धुर आदि मकाई, अन्त अलक्ष मुनि नाम।।71।।
बलि कृष्णराय नी, अग्रमहिषी आठ।
पुत्र-बहू दोये, संच्या पुण्य ना ठाठ।।72।।
जादव कुल सतियाँ, टाली दुख उच्चाट।
पहुंची शिवपुर मां, ए छे सूत्र नो पाठ।।73।।
श्रेणिक नी राणी, काली आदिक दशे जाण।
दशे पुत्र वियोगे, सांभली वीरनी वाण।।74।।
चन्दन बाला पै, संयम लेई हुई जाण।
तप करी देह झोंसी, पहुंची छे निर्वाण।।75।।
नंदादिक तेरह, श्रेणिक नृप नी नार।
सघली चन्दनबाला पै, लीधो संयम भार।।76।।
एक मास संथारे, पहुंची मुक्ति मंझार।
ए नेवुं जणा नो, अन्तगड मां अधिकार।।77।।
श्रेणिक ना बेटा, जालियादिक तेवीश।
वीर पै व्रत लेईने, पाल्यो विश्वावीश।।78।।
तप कठिन करी ने, पूरी मन जगीश।
देवलोके पहुंच्या, मोक्ष जासे तजी रीश।।79।।
काकन्दी नो धन्नो, तजी बत्तीसे नार।
महावीर समीपे, लीधो संयम भार।।80।।
करी छठ छठ पारणा, आयम्बिल उज्झित आहार।
श्री वीर वखाण्यो, धन धन्नो अणगार।।81।।

एक मास संथारे, सर्वार्थ सिद्ध पहुंत।
महाविदेह क्षेत्र मां, करसे भव नो अन्त।।82।।
धन्नानी रीते, हुआ नव ही संत।
श्री अनुत्तरोववाइय मां, भाँखी गया भगवंत।।83।।
सुबाहु प्रमुख, पांच पांचसौ नार।
तजी वीर पै लीधा, पांच महाव्रत सार।।84।।
चारित्र लेई ने, पाल्यो निरतिचार।
देवलोके पहुंच्या, सुख विपाके अधिकार।।85।।
श्रेणिक ना पौत्र, पउमादिक हुआ दस।
वीर पै व्रत लेईने, काढ्यो देह नो कस।।86।।
संयम आराधी, देवलोक मां जइ वस।
महाविदेह क्षेत्र मां, मोक्ष जासे लेई जस।।87।।
बलभद्र ना नन्दन, निषधादिक हुआ बार।
तजी पचास अन्तेउरी, त्याग दियो संसार।।88।।
सहु नेमि समीपे, चार महाव्रत लीध।
सर्वार्थसिद्ध पहुंच्या, होशे विदेहे सिद्ध।।89।।
धन्नो ने शालिभद्र, मुनीश्वरों नी जोड़।
नार्यां ना बन्धन, तत्क्षण नाख्यां तोड़।।90।।
घर कुटुम्ब कबिलो, धन कंचन नी कोड़।
मास मास खमण तप, टालसे भव नी खोड़।।91।।
श्री सुधर्मा स्वामी ना शिष्य, धन धन जम्बू स्वामी।
तजी आठ अन्तेउरी, माता पिता धन धाम।।92।।

प्रभवादिक तारी, पहुंच्या शिवपुर ठाम।
सूत्रा प्रवर्तावी, जग मां राख्युँ नाम।।93।।

धन्य ढंढण मुनिवर, कृष्ण राय ना नन्द।
शुद्ध अभिग्रह पाली, टाल दियो भव फन्द।।94।।

वलि खन्दक ऋषि नी, देह उतारी खाल।
परीषह सहीने, भव फेरा दिया टाल।।95।।

वलि खन्दक ऋषि ना, हुआ पांचसौ शिष्य।
घणी मां पील्या, मुक्ति गया तजी रीश।।96।।

संभूतिविजय तणा-शिष्य, भद्रबाहु मुनिराय।
चौदह पूर्वधारी, चन्द्रगुप्त आण्यो ठाय।।97।।

वलि आर्द्र कुमार मुनि, स्थूलिभद्र नन्दिषेण।
अरणक अइमुत्तो, मुनिश्वरों नी श्रेण।।98।।

चौबीसे जिनना, मुनिवर संख्या अठावीश लाख।
ऊपर सहस्त्र अडतालीस, सूत्र परम्परा भाख।।99।।

कोइ उत्तम वांचो, मोंढे जयणा राख।
उघाड़े मुख बोल्यां, पाप लगे इम भाख।।100।।

धन्य मरुदेवी माता, ध्यायो निर्मल ध्यान।
गज होदे पायो, निर्मल केवलज्ञान।।101।।

धन्य आदीश्वर नी पुत्री ब्राह्मी सुन्दरी दोय।
चारित्र लेईने, मुक्ति गई सिद्ध होय।।102।।

चौबीसे जिननी, बड़ी शिष्यणी चौबीस।
सती मुक्ति पहुंच्या, पूरी मन जगीश।।103।।

चौबीसे जिननां, सर्व साधवी सार।
अड़तालीस लाख ने, आठ से सित्तर हजार।।104।।

चेडा नी पुत्री, राखी धर्म सुं प्रीत।
राजीमती विजया, मृगावती सुविनीत।।105।।

पावती मयणरेहा, द्रौपदी दमयन्ती सीत।
इत्यादिक सतियां, गई जमारो जीत।।106।।

चौबीसे जिनना, साधु साधवी सार।
गया मोक्ष देवलोके, हृदय राखो धार।।107।।

इण अढ़ाई द्वीप मां, घरड़ा तपसी बाल।
शुद्ध पंच महाव्रत धारी, नमो नमो त्रिकाल।।108।।

इण जतियों सतियों ना, लीजे नित्य प्रति नाम।
शुद्ध मन थी ध्यावो, एह तिरण नो ठाम।।109।।

इण जतियों सतियों शुं, राखो उज्वल भाव।
इम कहे ऋषि जयमल, एह तिरणो नो दाव।।110।।

संवत अठारह ने, वर्ष साते सिरदार।
गढ़ जालोर माँही, एह कह्यो अधिकार।।111।।

।। इति बड़ी साधु वन्दना।।

बृहदालोयणा

(श्रावक लालाजी श्री रणजीतसिंह जी कृत)

सिद्ध श्री परमात्मा, अरिगंजन अरिहंत।
इष्टदेव वंदूं सदा, भयभंजन भगवंत।।1।।

अरिहंत सिद्ध समरूं सदा, आचारज उवज्झाय।
साधु सकल के चरण को, वंदूं शीश नमाय।।2।।

शासन नायक सुमरिये, भगवंत वीर जिनंद।
अलिय विघन दूरे हरे, आपे परमानंद।।3।।

अंगुठे अमृत बसे, लब्धि तणा भंडार।
श्रीगुरु गौतम सुमरिये, वांछित फल दातार।।4।।

श्रीगुरुदेव प्रसाद से, होत मनोरथ सिद्ध।
ज्यूं घन वरसत वेलि तरु, फूल फलन की वृद्ध।।5।।

पंच परमेष्ठी देव को भजनपुर पंचान।
कर्म अरि भाजे सभी, होवे परम कल्याण।।6।।

श्रीजिन युग पद कमल में, मुझ मन भ्रमर बसाय।
कब ऊगे वो दिन करूँ, श्रीमुख दरिसन पाय।।7।।

प्रणमी पद पंकज भणी, अरिगंजन अरिहंत।
कथन करूँ अब जीव को, किंचित् मुझ विरतंत।।8।।

आरंभ विषय कषाय वस, भमियो काल अनंत।
लख चोराशी योनि से, अब तारो भगवंत।।9।।

देव गुरु धर्म सूत्र में, नवतत्त्वादिक जोय।
अधिका ओछा जे कह्या, मिच्छा दुक्कडं मोय।।10।।

मोह अज्ञान मिथ्यात्व को, भरियो रोग अथाग।
वैद्यराज गुरु शरण से, औषध ज्ञान वैराग।।11।।

जे मैं जीव विराधिया, सेव्या पाप अठार।
प्रभु तुम्हारी साख से, बारबार धिक्कार।।12।।

बुरा बुरा सब को कहूँ, बुरा न दीसे कोय।
जो घट शोधूँ आपणों, तो मोसुं बुरो न कोय।।13।।

कहेवा में आवे नहीं, अवगुण भरया अनन्त।
लिखवा में क्युं कर लिखूँ, जानो श्री भगवंत।।14।।

करुणानिधि कृपा करी, कठिन कर्म मोय छेद।
मोह अज्ञान मिथ्यात्व को, करजो ग्रंथी भेद।।15।।

पतित उद्धारन नाथजी, अपनो विरुद विचार।
भूल चूक सब माहरी, खमिये बारंबार।।16।।

माफ करो सब माहरा, आज तलक ना दोष।
दीनदयाल देवो मुझे, श्रद्धा शील संतोष।।17।।

आतम निंदा शुद्ध भणी, गुणवंत वंदन भाव।
रागद्वेष पतला करी, सबसे खमत खमाव।।18।।

छूटूं पिछला पाप से, नवा न बांधु कोय।
श्रीगुरुदेव प्रसाद से, सफल मनोरथ होय।।19।।

परिग्रह ममता तजी करी, पंच महाव्रत धार।
अंत समय आलोयणा, करूँ संथारो सार।।20।।

तीन मनोरथ ए कह्या, जो ध्यावे नित्य मन्न।
शक्ति सार वरते सही, पावे शिव सुख धन।।21।।
अरिहंत देव निर्ग्रन्थ गुरु, संवर निर्जरा धर्म।
केवली भाषित शास्त्र, यही जैन मत मर्म।।22।।
आरंभ विषय कषाय तज, शुद्ध समकित व्रत धार।
जिन आज्ञा परमाण कर, निश्चय खेवो पार।।23।।
खण निकमो रहनो नहीं, करनो आतम काम।
भणनो गुणनो सीखनो, रमनो ज्ञान आराम।।24।।
अरिहंत सिद्ध सब साधुजी, जिन आज्ञा धर्म सार।
मांगलिक उत्तम सदा, निश्चय शरणा चार।।25।।
घडी घड़ी पल पल सदा, प्रभु सुमरण को चाव।
नरभव सफलो जो करे, दान शील तप भाव।।26।।

2

सिद्धां जैसो जीव है, जीव सोही सिद्ध होय।
कर्म मैल का आंतरा, बूझे विरला कोय।।1।।
कर्म पुद्गल रूप है, जीव रूप है ज्ञान।
दो मिलकर बहु रूप है, बिछड़्याँ पद निर्वाण।।2।।
जीव करम भिन्न-भिन्न करो, मनुष्य जन्म को पाय।
ज्ञानातम वैराग्य से धीरज ध्यान जगाय।।3।।
द्रव्य थकी जीव एक है, क्षेत्र असंख्य प्रमाण।
काल थकी सर्वदा रहे, भावे दर्शन ज्ञान।।4।।

गर्भित पुद्गल पिंड में, अलख अमूरति देव।
फिरे सहज भव चक्र में, यह अनादि की टेव।।5।।

फूल अतर घी दूध में, तिल में तेल छिपाय।
यूं चेतन जड़ करम संग, बंध्यो ममत दुःख पाय।।6।।

जो जो पुद्गल की दिशा, ते निज माने हंस।
याही भरम विभावते, बढ़े करम को वंस।।7।।

रतन बंध्यो गठड़ी विषै, सूर्य छिप्यो घन मांहि।
सिंह पिंजरा में दियो, जोर चले कछु नांहि।।8।।

ज्यूं बंदर मदिरा पियाँ, बिच्छू डंकित गात।
भूत लग्यो कौतुक करे, त्यूं कर्मों का उत्पात।।9।।

कर्म संग जीव मूढ है, पावे नाना रूप।
कर्मरूप मल के टले, चेतन सिद्ध स्वरूप।।10।।

शुद्ध चेतन उज्ज्वल दरब, रह्यो कर्म मल छाय।
तप संयम सुं धोवतां, ज्ञान ज्योति बढ़ जाय।।11।।

ज्ञान थकी जाने सकल, दर्शन श्रद्धा रूप।
चारित्र से आवत रुके, तपस्या क्षपन स्वरूप।।12।।

कर्म रूप मल के शुधे, चेतन चांदी रूप।
निर्मल ज्योति प्रगट भयां, केवल ज्ञान अनूप।।13।।

मूसी पावक सोहगी, फूँकां तणो उपाय।
रामचरण चारों मिल्यां, मैल कनक को जाय।।14।।

कर्मरूप बादल मिटे, प्रगटे चेतन चंद।
ज्ञानरूप गुण चांदनी, निर्मल ज्योति अमंद।।15।।

राग द्वेष दो बीज से, कर्म बंध की व्याध।
ज्ञानातम वैराग्य से, पावे मुक्ति समाध।।16।।

अवसर बीत्यो जात है, अपने बस कछु होत।
पुण्य छतां पुण्य होत है, दीपक दीपक ज्योत।।17।।

कल्पवृक्ष चिंतामणि, इण भव में सुखकार।
ज्ञान वृद्धि इन से अधिक, भवदुःख भंजनहार।।18।।

राइ मात्र घट बध नहीं, देख्या केवलज्ञान।
यह निश्चय कर जानके, तजिये प्रथम ध्यान।।19।।

दूजा भी नहीं चिंतिये, कर्म बंध बहु दोष।
तीजा चौथा ध्याय के, करिये मन संतोष।।20।।

गई वस्तु सोचे नहीं, आगम वांछा नांहि।
वर्तमान वर्ते सदा, सो ज्ञानी जग मांही।।21।।

अहो समदृष्टि जीवड़ा, करे कुटुम्ब प्रतिपाल।
अंतर्गत न्यारो रहे, ज्युं धाय खिलावे बाल।।22।।

सुख दुःख दोनुं बसत है, ज्ञानी के घट मांहि।
गिरि सर दीसे मुकर में, भार भींजवो नांहि।।23।।

जो जो पुद्गल फरसना, निश्चय फरसे सोय।
ममता समता भाव से, करम बंध क्षय होय।।24।।

बांध्या सोही भोगवे, कर्म शुभाशुभ भाव।
फल निर्जरा होत है, यह समाधि चित्त चाव।।25।।

बांध्या बिन भुगते नहीं, बिन भुगत्यां न छुड़ाय।
आप ही करता भोगता, आप ही दूर कराय।।26।।

पथ कुपथ घट वध करी, रोग हानि वृद्धि थाय।
यूं पुण्य पाप किरिया करी, सुख दुःख जग में पाय।।27।।

सुख दिया सुख होत है, दुख दिया दुख होय।
आप हणे नहीं अवर कूं, तो आपकूं हणे न कोय।।28।।

ज्ञान गरीबी गुरु वचन, नरम वचन निर्दोष।
इन को कभी न छोड़िये, श्रद्धा शील संतोष।।29।।

सत मत छोडो. हो नरां, लक्ष्मी चौगुनी होय।
सुख दुःख रेखा कर्म की, टाली टले न कोय।।30।।

गोधन गज धन रत्न धन, कंचन खान सुखान।
जब आवे संतोष धन, सब धन धूल समान।।31।।

शील रतन मोटो रतन, सब रतनां की खान।
तीन लोक की संपदा, रही शील में आन।।32।।

शीले सर्प न आभडे, शीले शीतल आग।
शीले अरि करि केसरी, भय जावे सब भाग।।33।।

शील रतन के पारखुं, मीठे बोले वैन।
सब जग से उंचा रहे जो नीचा राखे नैन।।34।।

तन कर मन कर वचन कर, देत न काहु दुःख।
कर्म रोग पातक झडे, देखत वांका मुख।।35।।

पान खरंतो इम कहे, सुन तरुवर वनराय।
अब के बिछुडे कब मिले, दूर पडेगें जाय।।36।।

तब तरुवर उत्तर दियो, सुनो पत्र इक बात।
इस घर एही रीत है, एक आवत एक जात।।37।।

वरस दिना की गांठ को, उत्सव गाय बजाय।
मूरख नर समझे नहीं, बरस गांठ को जाय।।38।।

सोरठा- पवन तणो विश्वास, किण कारण ते दृढ कियो ।
इनकी एही रीत, आवे के आवे नहीं।।

दोहा

करज बिरानां काढ़ के, खरच किया बहु नाम।
जब मुद्दत पूरी हुई, देना पड़शे दाम।।1।।

बिन दियां छूटे नहीं यह निश्चय कर मान।
हँस हँस के क्यों खरचिये, दाम बिराना जान।।2।।

जीव हिंसा करतां थकां, लागे मिष्ट अज्ञान।
ज्ञानी इम जाने सही, विष मिलियो पकवान।।3।।

काम भोग प्यारा लगे, फल किम्पाक समान।
मीठी खाज खुजावतां, पीछे दुःख की खान।।4।।

जप तप संजम दोहिलो, औषध कड़वी जान।
सुख कारण पीछे घणो, निश्चय पद निर्वाण।।5।।

डाभ अणी जल बिंदुवो, सुख विषयन को चाव।
भवसागर दुःख जल भर्‌यो, यह संसार स्वभाव।।6।।

चढ़ उत्तंग जहां से पतन, शिखर नहीं वो कूप।
जिस सुख भीतर दुःख बसे, सो सुख भी दुःख रूप।।7।।

जब लग जिसके पुण्य का, पहोंचे नहीं करार।
तब लग उसको माफ है, अवगुण करे हजार।।8।।

पुण्य क्षीण जब होत है, उदय होत है पाप।
दाझे बन की लाकड़ी, प्रजले आपो आप।।9।।

पाप छिपाया नां छिपे, छिपे तो मोटा भाग।
दाबी दूबी नां रहे, रुई लपेटी आग।।10।।

बहु बीती थोड़ी रही, अब तो सुरत संभार।
पर भव निश्चय जावनो, वृथा जन्म मत हार।।11।।

चार कोस ग्रामान्तरे, खरची बांधे लार।
परभव निश्चय जावणो, करिये धर्म विचार।।12।।

रज विरज ऊँची गई, नरमाइ के पान।
पत्थर ठोकर खात है, करडाइ के तान।।13।।

अवगुन उर धरिये नहीं, जो हुवे वृक्ष बबूल।
गुण लीजे 'कालू' कहे, नहीं छाया में शूल।।14।।

जैसी जापे वस्तु है वैसी दे दिखलाय।
वाका बुरा न मानिये, वो लेन कहां से जाय।।15।।

गुरु कारीगर सारीखा, टांची वचन विचार।
पत्थर की प्रतिमा करे, पूजा लहे अपार।।16।।

संतन की सेवा कियां, प्रभु रींझत है आप।
जाका बाल खिलाइये, ताका रींझत बाप।।17।।

भवसागर संसार में, दीपा श्रीजिनराज।
उद्यम करी पहोंचे तीरे, बैठी धर्म जहाज।।18।।

निज आतम को दमन कर, पर आतम को चीन।
परमातम को भजन कर, सो ही मत परवीन।।19।।

समझु शंके पाप से, अणसमझू हरषंत।
वे लूखा वे चीकणां, इण विध कर्म बंधंत।।20।।

समझ सार संसार में, समझूं टाले दोष।
समझ समझ कर जीवड़ा, गया अनंता मोक्ष।।21।।

उपशम विषय कषाय नो, संवर तीनों योग।
किरिया जतन विवेक से, मिटे कुकर्म दुःख रोग।।22।।

रोग मिटे समता बधे, समकित व्रत आराध।
निर्वेरी सब जीव को, पावे मुक्ति समाध।।23।।

।।इति भूल चूक मिच्छा मि दुक्कडं।।

सिद्ध श्री परमात्मा, अरिगंजन अरिहंत।
इष्टदेव वंदूं सदा, भयभंजन भगवंत।।1।।

अनंत चौवीसी जिन नमूं, सिद्ध अनंता क्रोड़।
वर्तमान जिनवर सबे, केवली दो कोड़ी नव कोड़।।2।।

गणधरादिक सर्व साधुजी, समकित व्रत गुणधार।
यथायोग्य वंदन करूँ, जिन आज्ञा अनुसार।।3।।

(यहां एक बार नमस्कार मंत्र का स्मरण करना चाहिए।)

पंच परमेष्ठि देवनो, भजन पुर पंचान।
कर्म अरि भाजै सभी शिवसुख मंगल थान।।4।।

अरिहंत सिद्ध सुमरूं सदा, आचारज उवज्झाय।
साधु सकल के चरन को, वंदू शीश नमाय।।5।।

शासन नायक सुमरिये वर्धमान जिनचंद।
अलिय विघ्न दूर हरे, आपे परमानंद।।6।।

अंगुठे अमृत बसे, लब्धि तणा भंडार।
श्री गुरु गौतम सुमरिये, वांछित फल दातार।।7।।

श्रीजिन युगपद कमल में, मुझ मन अलिय बसाय।
कब उगे वो दिन करूँ, श्रीमुख दरिसन पाय।।8।।

प्रणमी पदपंकज भणी, अरिगंजन अरिहंत।
कथन करूं अब जीव को, किंचित् मुझ विरतंत।।9।।

गाथा

हूं अपराधी अनादि को, जनम जनम गुना किया भरपूर के।
लूटिया प्राण छ काय नां, सेविया पाप अठारे करूर के।
श्री मुनिसुव्रत साहिबा।

आज दिन तक इस भव में और पहिले संख्यात, असंख्यात अनंत भवों में, कुगुरु कुदेव और कुधर्म की सद्दहणा प्ररूपना फरसना सेवानादि संबंधी पाप दोष लगा, उनका मिच्छा मि दुक्कडं। मैंने अज्ञानपन से, मिथ्यात्वपन से, अव्रतपन से, कषायपन से, अशुभयोग से, प्रमाद करके अपछंदा अविनीतपना किया, श्री अरिहंत भगवंत वीतरागदेव, केवलज्ञानी, गणधरदेव, आचार्यजी महाराज, धर्माचार्यजी महाराज, उपाध्यायजी महाराज, साधुजी महाराज, आर्याजी महाराज तथा सम्यक्दृष्टि स्वधर्मी श्रावक और श्राविका, इन उत्तम पुरूषों की तथा शास्त्र सूत्रपाठ अर्थ परमार्थ और धर्म संबंधी समस्त पदार्थों की अविनय अभक्ति आशातना आदि की, कराई अनुमोदी, मन वचन काया से, द्रव्य

क्षेत्र काल भाव से, सम्यक् प्रकार विनय भक्ति आराधना पालना फरसना सेवनादिक यथायोग्य अनुक्रम से नहीं की, नहीं कराई, नहीं अनुमोदी, तो मुझे धिक्कार-धिक्कार बारंबार मिच्छा मि दुक्कडं। मेरी भूल चूक अवगुण अपराध सब मुझे माफ करो। मैं मन वचन काया करके खमाता हूँ।

दोहा

मैं अपराधी गुरुदेव को, तीन भवन को चोर।
ठगूं बिराना माल मैं, हा हा कर्म कठोर।।1।।

कामी कपटी लालची, अपछंदा अविनीत।
अविवेकी क्रोध कठिन, महापापी (रणजीत) ।।2।।
(यहां अपना नाम बोलें)

जे मैं जीव विराधिया, सेव्या पाप अठार।
नाथ तुम्हारी साख से, बार-बार धिक्कार।।3।।

मैंने छकायपन से छकाय की विराधना की, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, सन्नी, असन्नी, गर्भज, चौदह प्रकार के सम्मूर्छिम आदि त्रस स्थावर जीवों की विराधना मन वचन काया से की, कराई, अनुमोदी। उठते, बैठते, सोते, हालते, चालते, शस्त्र वस्त्र मकानादि उपकरण उठाते, धरते, लेते, देते, वर्तते, वर्त्तावते, अप्पडिलेहणा दुप्पडिलेहणा संबंधी, अप्रमार्जना दु:प्रमार्जना संबंधी न्यूनाधिक विपरीत पडिलेहणा संबंधी और

आहार विहार आदि अनेक प्रकार के कर्त्तव्यों में संख्यात असंख्यात और निगोद आश्रयी अनंत जीवों के जितने प्राण लूटे उन सब जीवों का मैं पापी अपराधी हूँ। निश्चय करके बदले का देनदार हूँ। सब जीव मेरे को माफ करो, मेरी भूल चूक अवगुण अपराध सब माफ करो।

देवसी, राई, पक्खी, चौमासी और सम्वत्सरी संबंधी बारंबार मिच्छा मि दुक्कडं। मैं बारंबार क्षमाता हूँ। आप सब क्षमा करो।

गाथा

खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं ण केणई।।1।।

वह दिन धन्य होगा जिस दिन मैं छह काय का वैर बदला से निवृत्त होउंगा। समस्त चौरासी लाख जीवयोनि को अभयदान देऊंगा, वह दिन मेरा परम कल्याण का होगा।

दोहा

सुख दिया सुख होत है, दुःख दिया दुःख होय।
आप हणे नहीं अवर को, आपको हणे न कोय।।1।।

दूजा पाप मृषावाद-झूठ बोलना। क्रोध के वश, मान के वश, माया के वश, लोभ के वश, हास्य करके, भय के वश, मृषा (झूठ) वचन बोला, निंदा विकथा की, कर्कश कठोर मरम वचन बोला, इत्यादि अनेक प्रकार से मृषावाद (झूठ) बोला,

बोलवाया और अनुमोदा, उसका मन वचन काया से मिच्छा मि दुक्कडं।

दोहा

थापनमोसा मैं किया, करी विश्वास घात।
परनारी धन चोरिया, प्रकट कह्यो नहीं जात।।1।।

मुझे धिक्कार-धिक्कार बारंबार मिच्छा मि दुक्कडं। वह दिन धन्य होगा, जिस दिन मैं सर्व प्रकार से मृषावाद का त्याग करूँगा। वह दिन मेरा कल्याण रूप होवेगा।।2।।

तीसरा पाप अदत्तादान-बिना दी हुई वस्तु चोरी करके लेना। यह बड़ी चोरी लौकिक विरुद्ध है। अल्प चोरी मकान संबंधी अनेक प्रकार के कर्त्तव्यों में उपयोग सहित या बिना उपयोग से। अदत्तादान, मन वचन काया से चोरी की, कराई और अनुमोदी तथा धर्म संबंधी, ज्ञान दर्शन चारित्र और तप श्री भगवंत गुरुदेव की बिना आज्ञा किया, उसका मुझे धिक्कार धिक्कार बारंबार मिच्छा मि दुक्कडं। वह दिन मेरा धन्य होगा जिस दिन सर्व प्रकार से अदत्तादान का त्याग करूंगा। वह दिन मेरा परम कल्याण को होवेगा।

चौथा मैथुन-सेवन करने के लिये मन वचन और काया के योग प्रवर्त्ताया। नववाड़ सहित ब्रह्मचर्य नहीं पाला। नववाड़ में अशुद्धपन से प्रवृत्ति हुई। मैंने मैथुन सेवन किया, दूसरों से सेवन करवाया और सेवन करने वाले को अच्छा समझा, उसका मन वचन काया से मुझे धिक्कार धिक्कार बारंबार मिच्छा मि दुक्कडं। वह

दिन मेरा धन्य होगा, जिस दिन मैं नववाड़ सहित ब्रह्मचर्य शीलरत्न आराधूँगां, याने सर्वथा सर्वथा प्रकार से काम विकार से निवर्तूंगा। वह दिन मेरा परम कल्याण का होवेगा।।4।।

पांचवां परिग्रह - सचित्त परिग्रह तो दास दासी, द्विपद, चतुष्पद (पशु) आदि अनेक प्रकार के और अचित्त परिग्रह-सोना, चाँदी, वस्त्र, आभूषण आदि अनेक प्रकार के हैं। उनकी ममता मूर्च्छा की, क्षेत्र घर आदि नव प्रकार के बाह्य परिग्रह और चौदह प्रकार के अभ्यान्तर परिग्रह को रखा, रखवाया और अनुमोदा, तथा रात्रि-भोजन, अभक्ष्य आहारादि संबंधी पाप दोष सेव्या हो, वह मुझे धिक्कार-धिक्कार बारंबार मिच्छा मि दुक्कडं। वह दिन मेरा धन्य होवेगा, जिस दिन सभी प्रकार के परिग्रह का त्याग कर संसार के प्रपंच से निवर्तूंगा, वह दिन मेरा परम कल्याण रूप होवेगा।।5।।

छठा क्रोध-क्रोध करके अपनी आत्मा को तथा पर आत्मा को दुःखी किया।।6।।

सातवां मान-अहंकार भाव लाया, तीन गारव और आठ मद आदि किया।।7।।

आठवां माया-धर्म संबंधी तथा संसार संबंधी अनेक कर्त्तव्यों में कपट किया।।8।।

नवमां लोभ-मूर्च्छाभाव लाया, आशा तृष्णा वांछा आदि की।।9।।

दसवां राग-मनपंसद वस्तु से स्नेह किया।।10।।

ग्यारहवां द्वेष-अपसंद वस्तु देखकर उस पर द्वेष किया।।11।।

बारहवां कलह - अप्रशस्त (खराब) वचन बोलकर क्लेश उत्पन्न किया।।12।।

तेरहवां अभ्याख्यान - झूठा कलंक लगाया।।13।।

चौदहवां पैशुन्य - दूसरे की चुगली की।।14।।

पन्द्रहवां परपरिवाद- दूसरे का अवगुणवाद (अवर्णवाद) बोला-निंदा की।।15।।

सोलहवां रति अरति - पांच इन्दियों के 23 विषय और 240 विकार हैं। इनमें मनपसंद पर राग किया और अपसंद पर द्वेष किया तथा संयम तप आदि पर अरति की तथा आरंभादिक असंयम और प्रमाद में रति भाव किया।।16।।

सतरहवां माया मृषावाद -कपट सहित झूठ बोला।।17।।

अठारहवां मिथ्यादर्शनशल्य - श्री जिनेश्वर देव के मार्ग में शंका, कंखा आदि विपरीत श्रद्धा प्ररूपणा की।।18।।

(यहां 18 पाप स्थानों की आलोयणा विशेष रूप से एवं विस्तारपूर्वक अपने उपयोग अनुसार कहना चाहिए।)

इस प्रकार अठारह पाप का द्रव्य से, क्षेत्र से, काल से, भाव से, जानते, अजानते, मन वचन और काया से सेवन किया, कराया और अनुमोदा, दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ

या सुत्ते वा जागरमाणे वा इस भव में पहिले के संख्यात असंख्यात अनंत भवों में भवभ्रमण करते आज दिन...,मिति...,तिथि...,संवत्..., तक रागद्वेष, विषय, कषाय, आलस, प्रमाद आदि; पौद्गलिक प्रपंच, परगुण पर्याय की विकल्प भूल की, ज्ञान की विराधना की, दर्शन की विराधना की, चारित्र की विराधना की, चारित्राचारित्र की व तप की विराधना की। शुद्ध श्रद्धा, शील, संतोष, क्षमा, आदि निज स्वरूप की विराधना की। उपशम, विवेक, संवर सामायिक, पौषध, प्रतिक्रमण, ध्यान, मौन आदि व्रत पच्चक्खाण दान, शील, तप वगैरह की विराधना की। परम कल्याणकारी इन बोलों की आराधना पालनादिक मन वचन और काया से नहीं की, नहीं कराई और नहीं अनुमोदी। छह आवश्यक सम्यक् प्रकार से विधि उपयोग सहित आराधा नहीं, पाला नहीं, फरसा नहीं, विधि उपयोग रहित निरादरपने से किया, किंतु आदर सत्कार भाव भक्ति सहित नहीं किया। ज्ञान के चौदह, समकित के पांच, बारह व्रत के साठ, कर्मादान के पंद्रह, संलेखणा के पांच, इन 99 अतिचार में तथा 124 अतिचारो में तथा साधुजी के 125 अतिचार में तथा 52 अनाचार का श्रद्धानादिक में विराधना आदि जो कोई अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार आदि सेवन किया, सेवन कराया, अनुमोदना की, जानते, अजानते, मन वचन काया से उनका मुझे धिक्कार धिक्कार बारंबार मिच्छा मि दुक्कडं।

मैंने जीव को अजीव श्रद्दह्या प्ररूप्या, अजीव को जीव श्रद्दह्या परूप्या, धर्म को अधर्म और अधर्म को धर्म श्रद्दह्या परुप्या, तथा साधु को असाधु और असाधु को साधु श्रद्दह्या परुप्या तथा उत्तम पुरुष साधु मुनिराज महासतियांजी की सेवा भक्ति मान्यता आदि यथाविधि नहीं की, नहीं कराई, नहीं अनुमोदी तथा असाधुओं की सेवा-भक्ति मान्यता आदि का पक्ष किया, मुक्ति-मार्ग में संसार का मार्ग, यावत् पच्चीस मिथ्यात्व का सेवन किया, सेवन कराया, अनुमोदा, मन वचन और काया से, पच्चीस कषाय संबंधी, पच्चीस क्रिया संबंधी, तैतीस आशातना संबंधी, ध्यान के 19 दोष, वंदना के 32 दोष, सामायिक के 32 दोष, पौषध के 18 दोष संबंधी मन वचन और काया से जो कोई पाप दोष लगा लगाया अनुमोदा, उसका मुझे धिक्कार धिक्कार बारंबार मिच्छा मि दुक्कडं। महामोहनीय कर्मबंध के 30 स्थानक को मन वचन और काया से सेवन किया, सेवन कराया, अनुमोदा, शील की नवबाड तथा 8 प्रवचन माता की विराधनादि, श्रावक के 21 गुण और 12 व्रत की विराधनादि मन वचन ओर काया से की, कराई, अनुमोदी तथा 3 अशुभ लेश्या के लक्षणों की ओर अन्य बोलों की विराधना की, चर्चा वार्ता वगैरह में श्री जिनेश्वर देव का मार्ग लोपा, गोपा, नहीं माना, अछते की थापना की, छते की थापना नहीं की और अछते की निषेधना नहीं की, छते की थापना और अछते का निषेधना करने का नियम नहीं

किया, कलुषता की तथा 6 प्रकार के ज्ञानावरणीय बंध के बोल, ऐसे 6 प्रकार के दर्शनावरणीय बंध के बोल, 8 कर्म की अशुभ प्रकृति बंध का पचपन कारणों से पाप की 82 प्रकृति बांधी, बंधाई, अनुमोदी, मन वचन काया करके उनका मुझे धिक्कार धिक्कार बारंबार मिच्छा मि दुक्कडं। एक एक बोल से लगाकर कोड़ाकोड़ी यावत् संख्याता असंख्याता अनंता बोलों में से जानने योग्य बोलों को सम्यक् प्रकार जाना नहीं, श्रद्दह्या नहीं और परुप्या नहीं, तथा विपरीतपने से श्रद्धा आदि की, कराई, अनुमोदी, मन वचन काया से, उनका मुझे धिक्कार-धिक्कार बारंबार मिच्छा मि दुक्कडं।

एक-एक बोल से यावत् अनंता अनंता बोलों में छोड़ने योग्य बोल को छोड़ा नहीं, उनको मन वचन काया से सेवन किया, सेवन कराया और अनुमोदा, उनका मुझे धिक्कार धिक्कार बारंबार मिच्छा मि दुक्कडं। एक एक बोल से लगा कर जाव अनंता अनंता बोलों में आदरने योग्य बोलों को आदरा नहीं, आराधा नहीं, पाला नहीं, फरसा नहीं, विराधना खंडना आदि की, कराई, अनुमोदी, मन वचन काया से उनका मुझे धिक्कार धिक्कार बारंबार मिच्छ मि दुक्कडं। श्री जिन भगवंतजी महाराज आपकी आज्ञा में जो जो प्रमाद किया और सम्यक् प्रकार उद्यम नहीं किया, नही कराया, नहीं अनुमोदा मन वचन काया करके तथा अनाज्ञा में उद्यम किया, कराया, अनुमोदा। एक अक्षर के अनन्तवें भाग

मात्र दूसरा कोई स्वप्न मात्र में भी भगवंत महाराज आपकी आज्ञा से न्यूनाधिक विपरीत प्रवर्त्ता हो, तो उसका मुझे धिक्कार-धिक्कार बारंबार मिच्छा मि दुक्कडं।

दोहा

श्रद्धा अशुद्ध प्ररूपणा, करी फरसना सोय।
अनजाने पक्षपात में, मिथ्या दुष्कृत मोय ।।1।।

सूत्र अर्थ जानूं नहीं, अल्प बुद्धि अनजान।
जिनभाषित सब शास्त्र का, अर्थ पाठ परमान।।2।।

देव गुरु धर्म सूत्र को, नव तत्वादिक जोय।
अधिका ओछा जो कह्या, मिथ्या दुष्कृत मोय।।3।।

हूं मगसेलियो हो रह्यो, नहीं ज्ञान रस भींज।
गुरु सेवा न करी शकुं, किम मुझ कारज सीज।।4।।

जाने देखे जे सुने, देवे सेवे मोय।
अपराधी उन सबन का, बदला देशुं सोय।।5।।

गबन करूँ बुगचा रतन, दरब भाव सब कोय।
लोकन में प्रकट करूँ, सूई पाई मोय।।6।।

जैन धर्म शुद्ध पाय के, वरतुं विषय कषाय।
यह अचंभा हो रह्या, जल में लागी लाय।।7।।

जितनी वस्तु जगत में, नीच-नीच से नीच।
सबसे मैं पापी बुरो, फँसु मोह के बीच।।8।।

एक कनक अरु कामिनी, दो मोटी तलवार।
उठ्यो थो जिन भजन को, बीच में लिनो मार।।9।।

सवैया

मैं महापापी छांड के संसार छार, छार ही का विहार करूँ, अगला कुछ धोय कीच, फेर कीच बीच रहूं, विषय सुख चाहूं मन्न, प्रभुता वधारी है। करत फकीरी ऐसी, अमीरी की आस करूँ, काहे को धिक्कार सिर, पगड़ी उतारी है।।10।।

दोहा

त्याग न कर संग्रह करूं, विषय वमन जिम आहार।
तुलसी ए मुझ पतित को, बारंबार धिक्कार।।11।।

राग द्वेष दो बीज है, कर्म बंध फल देत।
इनकी फांसी में बंध्यो, छूटूँ नहीं अचेत।।12।।

रतन बांध्यों गठड़ी विषे, भानु छिप्यो घन माहिं।
सिंह पिंजरा में दियो, जोर चले कछु नाँहि।।13।।
बुरा-बुरा सब को कहूं, बुरा न दीसे कोय।
जो घट शोधूं आपनो, तो मोसूँ बुरो न कोय।।14।।
कामी कपटी लालची, कठण लोह को दाम।
तुम परस परसंग थी, सुवरण थासुं स्वाम।।15।।

श्लोक

मैं जपहीन हूँ तपहीन हूँ, प्रभु हीन संवर समगतं,
हें दयाल कृपाल करुणानिधि, आयो तुम शरणागतं।
प्रभु आयो तुम शरणागतं।।16।।

दोहा

नहीं विद्या नहीं वचन बल, नहीं धीरज गुण ज्ञान।
तुलसीदास गरीब की, पत राखो भगवान्।।17।।

विषय कषाय अनादि को, भरियो रोग अगाध।
वैद्यराज गुरु शरण से, पाऊं चित्त समाध।।18।।

कहवा में आवे नहीं, अवगुण भर्या अनंत।
लिखवा में क्यूं कर लिखूं, जाणो श्री भगवंत।।19।।

आठ कर्म प्रबल करी, भमियो जीव अनादि।
आठ कर्म छेदन करी, पावे मुक्ति समाधि।।20।।

पथ कुपथ कारण करी, रोग हानि वृद्धि थाय।
इम पुण्य पाप किरिया करी, सुख दुःख जग में पाय।।21।।

बांध्या बिन भुगते नहीं, बिन भुगत्यां न छुडाय।
आप ही करता भोगता, आप ही दूर कराय।।22।।

हूं अविवेकी मोहवश, आंख मीच अंधियार।
मकड़ी जाल बिछाय के, फसुं आप धिक्कार।।23।।

सर्व भक्षी जिम अग्नि हूँ, तपियो विषय कषाय।
स्वच्छन्दी अविनीत मैं, धर्मी ठग दुःखदाय।।24।।

कहां भयो घर छांड के, तज्यो न माया संग।
नाग तजी जिम कांचली, विषय नहीं तजियो अंग।।25।।

आलस विषय कषाय वश, आरंभ परिग्रह काज।
योनि चौरासी लख भम्यो, अब तारो महाराज।।26।।

आतम निंदा शुद्ध भणी, गुणवंत वंदन भाव।
राग द्वेष उपशम करी, सब से खमत खमाव।।27।।

पुत्र-कुपुत्र जो मैं हुओ, अवगुण भर्यो अनंत।
अपनो विरद विचार के, माफ करो भगवंत।।28।।

शासनपति वर्द्धमानजी, तुम लग मेरी दौड़।
जैसे समुद्र जहाज बिन, सूझत और न ठौर।।29।।

भव भ्रमण संसार दुःख, ताका वार न पार।
निर्लोभी सतगुरु बिना, कौन उतारे पार।।30।।

भवसागर संसार में, दीपा श्री जिनराज।
उद्यम करि पहुँचे तीरे, बैठी धर्म जहाज।।31।।

पतित उद्धारन नाथजी, अपनो विरुद विचार।
भूल चूक सब माहरी, खामिये बारंबार।।32।।

माफ करो सब माहरा, आज तलक ना दोष।
दीनदयाल देवो मुझे, श्रद्धा शील संतोष।।33।।

देव अरिहंत गुरु निर्ग्रंथ, संवर निर्जरा धर्म।
केवली भाषित शास्त्र है, ये ही जैन मत मर्म।।34।।

इस अपार संसार में, अवर शरण नहीं कोय।
या ते तुम पद कमल ही, भक्त सहायी होय।।35।।

छूटुं पिछला पाप से, नवा न बांधु कोय।
श्री गुरुदेव प्रसाद से, सफल मनोरथ होय।।36।।

आरंभ परिग्रह त्यजी करी, समकित व्रत आराध।
अन्त समय आलोय के, अनशन चित्त समाध।।37।।

तीन मनोरथ ए कह्या, जे ध्यावे नित्य मन्न।
शक्ति सार वरते सही, पावे शिव सुख धन्न।।38।।

श्री पंच परमेष्ठि भगवंत गुरुदेव महाराजजी आपकी आज्ञा है, सम्यग्ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, संयम, संवर, निर्जरा और मुक्तिमार्ग यथा शक्ति से शुद्ध उपयोग सहित आराधने, पालने, फरसने, सेवने की आज्ञा है। बारंबार शुभयोग संबंधी, सज्झाय, ध्यानादिक अभिग्रह, नियम, पच्चक्खाणादिक करने की, करवाने की, समिति गुप्ति प्रमुख आराधने की सर्व प्रकार आज्ञा है।

दोहा

निश्चिय चित्त शुद्ध मुख पढ़त, तीन योग थिर थाय।
दुर्लभ दीसे कायरा, हलुकर्मी चित्त भाय।।1।।

अक्षर पद हीणो अधिक, भूल चूक जो होय।
अरिहंत सिद्ध आत्म साख से मिच्छा दुष्कृत मोय।।2।।

भूल चूक मिच्छा मि दुक्कडं।

।। इति श्री श्रावक लालाजी
रणजीतसिंहजी कृत बृहदलोयणा संपूर्ण।।

मेरी-भावना

(युगवीरकृत)

जिसने राग द्वेष कामादिक जीते, सब जग जान लिया।
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया।।
बुद्ध, वीर, जिन, हरिहर ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो।
भक्तिभाव से प्रेरित हो, यह चित्त उसी में लीन रहो।।1।।
विषयों की आशा नहीं जिनके, साम्य भाव धन रखते हैं।
निज-पर के हित-साधन में जो, निश-दिन तत्पर रहते हैं।।
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुःख समूह को हरते हैं।।2।।
रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उन्हीं जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे।।
नहीं सताऊँ किसी जीव को, झूठ कभी नहीं कहा करूँ।
परधन-वनिता पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ।।3।।
अहंकार का भाव न रक्खूँ, नहीं किसी पर क्रोध करूँ।
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ।।
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूँ।
बने जहाँ तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूँ।।4।।
मैत्री-भाव जगत में मेरा, सब जीवों पर नित्य रहे।
दीन-दुःखी जीवों पर मेरे, उर से करूणा-स्त्रोत बहे।।

दुर्जन-क्रूर-कुमार्ग रतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे।
साम्यभाव रखूँ मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे।।5।।

गुणीजनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहां तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे।।
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे।।6।।

कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊँ या मृत्यु आज ही आ जावे।।
अथवा कोई कैसा भी भय, या लालच देने आवे।
तो भी न्याय-मार्ग से मेरा, कभी न पथ डिगने पावे।।7।।

होकर सुख में मग्न न फूलें, दुःख में कभी न घबरायें।
पर्वत नदी-श्मशान-भयानक, अटवी से नहीं भय खावें।।
रहे अडोल अकम्प निरन्तर यह मन दृढ़तर बन जावे।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग में सहनशीलता दिखलाये।।8।।

सुखी रहे सब जीव जगत् के कोई कभी न घबरावे।
वैर पाप अभिमान छोड़ जग, नित्य नए मंगल गावे।।
घर-घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावे।
ज्ञान-चरित उन्नत कर अपना, मनुज जन्म फल सब पावे।।9।।

इति-भीति व्यापे नहीं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करे।
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे।।
रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शान्ति से जिया करे।
परम अहिंसा धर्म जगत् में, फैले सर्व हित किया करे।।10।।

फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करे।
अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहीं, कोई मुख से कहा करे।।
बनकर सब 'युगवीर' हृदय से देशोन्नति रत रहा करे।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दुःख संकट सहा करे।।11।।

संघ-समर्पणा

(आचार्य श्री रामेश द्वारा प्रस्तुत)

संघ हमारा अविचल मंगल, नन्दन वन सा महक रहा।
हम सब इसके फूल व कलियाँ, सुन्दरतम निज संघ अहा!।1।
वीर प्रभु के उपदेशों ने, संघ की महिमा गाई है।
सुर-नर वन्दन करे संघ को, संघ साधना भाई है।।2।।
संघ समष्टि का हित करता, व्यष्टि उसमें शामिल है।
संघ हेतु निज स्वार्थ तजे जो, वही प्रशंसा काबिल है।3।
व्यक्तिवाद विद्वेष बढाता, संघवाद दे प्रेम सदा।
व्यक्तिभाव को छोड़ समर्पण, संघ भाव में रहे सदा।।4।।
व्यक्ति अकेला निर्बल होता, संघ सबल होता माने।
'संघे शक्तिः कलौयुगे' की, सत्य भावना पहचाने।5।
एक सूत्र कोई भी तोड़े, रस्सी हस्ती को बांधे।
एक-एक मिल बना संघ यह, दुस्सम्भव को भी साधे।।6।।
संघ श्रेय में आत्म श्रेय है, ऐसा दृढ़ विश्वास मेरा।
संघ में मुझमें भेद न कोई, बोल रहा हर श्वास मेरा।7।
संघ परम उपकारी हमको, संघ ने सम्यक् बोध दिया।
संघ न होता हम क्या होते, संघ ने हमको गोद लिया।।8।।

शैशव, यौवन, वृद्धावस्था, सदा संघ उपकारी है।
भवसागर से तारणहारा, हम इसके आभारी है।9।
नगर, चक्र, रथ, पद्म, चंद्र, रवि, सागर, मेरु की उपमा।
सूत्र नन्दी में संघ गौरव की, क्या कोई है कम महिमा।।10।।
प्रेम सूत्र से बंधा संघ है, हिल मिल आगे बढ़ते हैं।
निन्दा विकथा तज गुणीजन के, गुणगण मन में धरते हैं।11।
दूर हटा छल, छद्म, अहं को, सरल सहज सद्भाव धरें।
पर हित हेतु तज निज इच्छा, सहज सुकोमल भाव वरें।।12।।
नाम अमर है उन वीरों का, जिनने संघ सेवा धारी।
अपना कुछ ना सोच किया, सर्वस्व संघ पे बलिहारी।13।
यही प्रार्थना वीर प्रभु से, ऐसी शक्ति दो हमको।
संघ सेवा में झोंके जीवन, और न कुछ सूझे हमको।।14।।
संघ हेतु कुर्बान हमारा, तन-मन-जीवन सारा है।
संघ हमारा ईश्वर हमको, संघ प्राण से प्यारा है।15।
चमड़ी कागज खून की स्याही, अस्थि लेखनी लेकर के।
रचे भले संघ गौरव गाथा, उऋण न हो उपकारों से।।16।।
अरिहंत सिद्ध सुदेव हमारे, गुरु निर्ग्रन्थ मुनीश्वर है।
जिन भाषित सद् धर्म दया मय, नित्य यही अन्तर स्वर है।17।
सद्गुरु आज्ञा ही प्रभु आज्ञा, इसमें भेद न कोई है।
शास्त्र-शास्त्र में जगह-जगह पर, वीर वचन भी वो ही है।।18।।
संघ नायक ! संघ मालिक, हम सब साधुमार्ग अनुयायी है।
और नहीं दूजे हम कोई, बस तेरी परछाई है।19।

रत्नत्रय शुद्ध पालन करके, तोड़े कर्मों की कारा।
नाना गुण का धाम संघ है, घर-घर गूंजे यह नारा।।20।।
स्वार्थ-मान को छोड़ संघ की, सेवा जो नर करता है।
इह-परलौकिक कष्ट दूर कर, सौख्य संपदा वरता है।21।

प्रत्याख्यान-सूत्र

नवकारसी-सूत्र

उग्गए सूरे नमोक्कारसहियं पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमंअन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि।

पौरुषी-सूत्र

उग्गए सूरे पोरिसिं पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमंअन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहि- वत्तियागारेणं वोसिरामि।

पूर्वार्ध-सूत्र (दो पौरुषी)

उग्गए सूरे पुरिमड्ढं पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमंअन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहि- वत्तियागारेणं वोसिरामि।

एकासन-सूत्र

एगासणं पच्चक्खामि तिविहं पि आहारं-असणं, खाइमं, साइमंअन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं, आउंटणपसारणेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि।

एकस्थान-सूत्र

एगट्ठाणं पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमंअन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि।

आयम्बिल-सूत्र

आयंबिलं पच्चक्खामि, अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं लेवालेवेणं, उक्खित्तविवेगेणं, गिहत्थसंसट्ठेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तारागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि।

उपवास-सूत्र

उग्गए सूरे अभत्तट्ठं पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमंअन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि।

दिवस चरिम-सूत्र

दिवसचरिमं पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं-असणं,

पाणं, खाइमं, साइमंअन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि।

अभिग्रह-सूत्र

अभिग्गहं पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमंअन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि।

निर्विकृतिक-सूत्र

निव्विगइयं पच्चक्खामि, अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्च-मक्खिएणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि।

उपवास, दिवसचरिम, अभिग्रह आदि में यदि पानी का आगार रखना हो तो 'चउव्विहं' के स्थान पर 'तिविहं' पाठ बोलना चाहिये और आगे 'पाणं' का पाठ नहीं बोलना चाहिये।

प्रत्याख्यान पारणा-सूत्र

उग्गए सूरे < नमोक्कारसहियं >/< पोरिसं >/< पुरिमड्ढं >/ ...पच्चक्खाणं कयं तं सम्मं काएणं न फासियं, न पालियं, न तीरियं, न किट्टियं, न सोहियं, न आराहियं आणाए अणुपालियं न भवइ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

* * *

सूत्र पढ़ने की तालिका

क्र.सं.	शास्त्र का नाम	गाथा प्रमाण	कालिक उत्कालिक	दीक्षा पर्याय	आय-म्बिल
1.	आचारांग	2500	कालिक	3 वर्ष	50
2.	सूत्रकृतांग	2100	कालिक	4 वर्ष	30
3.	स्थानांग	3770	कालिक	8 वर्ष	18
4.	समवायांग	1667	कालिक	8 वर्ष	3
5.	भगवती	15752	कालिक	10 वर्ष	186
6.	ज्ञाताधर्मकथा	5500	कालिक	गुरु अनुज्ञा	33
7.	उपासकदशा	812	कालिक	गुरु अनुज्ञा	14
8.	अंतकृतद्दशा	900	कालिक	गुरु अनुज्ञा	12
9.	अनुत्तरौपपातिकदशा	192	कालिक	गुरु अनुज्ञा	7
10.	प्रश्नव्याकरण	1250	कालिक	गुरु अनुज्ञा	14
11.	विपाक सूत्र	1216	कालिक	गुरु अनुज्ञा	24
12.	औपपातिक	1167	उत्कालिक	गुरु अनुज्ञा	3
13.	राजप्रश्नीय	2100	कालिक	गुरु अनुज्ञा	3
14.	जीवाजीवाभिगम	4750	कालिक	गुरु अनुज्ञा	3
15.	प्रज्ञापना	7787	कालिक	गुरु अनुज्ञा	3
16.	जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति	4146	कालिक	गुरु अनुज्ञा	3
17.	चन्द्रप्रज्ञप्ति	2200	कालिक	गुरु अनुज्ञा	3
18.	सूर्यप्रज्ञप्ति	2200	उत्कालिक	गुरु अनुज्ञा	3
19.	निरयावलिका	1109	कालिक	गुरु अनुज्ञा	7
20.	कल्पावतंसिका	1109	कालिक	गुरु अनुज्ञा	7
21.	पुष्पिका	1109	कालिक	गुरु अनुज्ञा	7
22.	पुष्पचूलिका	1109	कालिक	गुरु अनुज्ञा	7

क्र.सं.	शास्त्र का नाम	गाथा प्रमाण	कालिक उत्कालिक	दीक्षा पर्याय	आय-म्बिल
23.	वृष्णिदशा	1109	कालिक	गुरु अनुज्ञा	7
24.	उत्तराध्ययन	2100	कालिक	गुरु अनुज्ञा	20
25.	दशवैकालिक	700	उत्कालिक	गुरु अनुज्ञा	15
26.	नन्दीसूत्र	700	उत्कालिक	गुरु अनुज्ञा	3
27.	अुयोमद्वार	1899	उत्कालिक	5 वर्ष	3
28.	दशानुश्रुतस्कंध	1835	कालिक	5 वर्ष	20
29.	बृहत्कल्प	473	कालिक	5 वर्ष	20
30.	व्यवहारसूत्र	600	कालिक	5 वर्ष	20
31.	निशीथ सूत्र	1600	कालिक	3 वर्ष	3
32.	आवश्यक सूत्र	100	नौकालिक		
			नोउत्कालिक	उसी दिन	6